Aansuon Ka Dariya (Hindi)

सफ़रे आख़िरत की तय्यारी के लिये नसीहतों और हिकायात का अनमोल ख़ज़ाना

بَحرُ الدُّمُوعِ

तरजमा बनाम

आंसूओं का दरिया

मुअल्लिफ़ :

इमाम अबुल फ़रज अब्दुर्रहमान बिन अली अल जूज़ी عليه رحمة الله القوى

अल मु-तवफ़्फ़ा 597 सि.हि.

المدينة العلمية (دعوت اسلامی)

شعبہ تراجم کتب

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج۱ ص۴۰ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)।

(تاريخ دمشق لابن عساكر ج۵۱ ص۱۳۸ دار الفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह किताब (**बह़रुद्दुमूअ़**)

इमाम अबुल फ़रज **अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली अल जूज़ी** عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی ने **अ़-रबी** ज़बान में तह़रीर फ़रमाई है। मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने इस का **उर्दू** तरजमा और तख़्रीज कर के "**आंसूओं का दरिया**" के नाम से पेश किया है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआ़-मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है **:**

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) ह़ुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस ह़ुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है। मा'लूमात के लिये "**ह़ुरूफ़ की पहचान**" नामी चार्ट मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

(2) जहां जहां तलफ़्फ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये जुम्लों में डेश (–) और साकिन ह़र्फ़ के नीचे खोड़ा (्) लगाने का एहतिमाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां ع साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। म-सलन دَعْوت، اِسْتِعْمَال (दा'वत, इस्ति'माल) वग़ैरा।

www.dawateislami.net

इस किताब में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लती पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ژ	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ز
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی / ئ	इ = اِ	ऐ = اَے	ए = ے	य = ی

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

सफ़रे आख़िरत की तय्यारी के लिये नसीह़तों और ह़िकायात का अनमोल ख़ज़ाना

बह़रुद्दुमूअ़

तरजमा बनाम

आंसूओं का दरिया

मुअल्लिफ़

इमाम अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली अल जूज़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی

अल मु-तवफ़्फ़ा 597 सि.हि.

: पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शो'बए तराजिमे कुतुब)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

www.dawateislami.net

नाम किताब : बहरुद्दुमूअ़
तरजमा : आंसूओं का दरिया
मुअल्लिफ़ : इमाम इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی
पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(शो'बए तराजिम कुतुब)
सिने तबाअ़त : अक्तूबर 2016
नाशिर : मक-त-बतुल मदीना

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

अजमेर शरीफ़ : 19/216, फ़लाहे दारैन मस्जिद, स्टेशन रोड, दरगाह अजमेर शरीफ़, राजस्थान। फ़ोन : 0145-2629385

बरेली शरीफ़ : दरगाह आ'ला हज़रत, महल्ला सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यूपी। फ़ोन : 09313895994

गुलबर्गा शरीफ़ : फ़ैज़ाने मदीना मस्जिद, तीमा पूर चौक, गुलबर्गा शरीफ़, कर्नाटक। फ़ोन : 09241277503

बनारस : अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तक्या, मदन पूरा, बनारस, यूपी। फ़ोन : 09369023101

कानपूर : मस्जिद मख़्दूम सिमनानी, नज़्द गुर्बत पार्क, डिप्टी पड़ाव चौराहा, कानपूर, यूपी। फ़ोन : 09619214045

कलकत्ता : 35A/H/2, मोमिन पूर रोड, दो तल्ला मस्जिद के पास, कलकत्ता, बंगाल। फ़ोन : 033-32615212

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर, महाराष्ट्र। फ़ोन : 09326310099

अनन्त नाग : म-दनी तरबिय्यत गाह, टाउन हॉल के सामने, अनन्त नाग, कश्मीर। फ़ोन : 09797977438

इन्दौर : 13, बोम्बे बाज़ार, उदापूरा, इन्दौर, एमपी। फ़ोन : 09303230692

बेंगलोर : 13, हज़रत बिलाल मस्जिद कोम्पलेक्स, नवां मेन पल्लाना गार्डन, 3rd स्टेज, अ़रबिक कोलेज, बेंगलोर-45 कर्नाटक। फ़ोन : 08088264783

हुबली : A.J. मुधल कोम्पलेक्स, A.J. मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक। फ़ोन : 08363244860

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"मह़ब्बत में अपनी गुमा या इलाही" के 20 ह़ुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "20 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : " نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِه मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

(المعجم الكبير للطبرانی، الحديث: ٥٩٤٢، ج٦، ص١٨٥)

दो म-दनी फूल : ﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ा-लआ़ करूंगा। ﴾6﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा। ﴾8﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा। ﴾10﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾11﴿ जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴾12﴿ इस रिवायत "عِنْدَ ذِكْرِ الصّٰلِحِيْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَةُ" या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है।" (حِلْيَةُ الاولياء، حديث ١٠٧٥٠، ج ٧، ص ٣٣٥) पर अ़मल करते हुए

www.dawateislami.net

इस किताब में दिये गए वाक़िआ़त दूसरों को सुना कर ज़िक्रे सालिह़ीन की ब-र-कतें लूटूंगा ﴾13﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा। ﴾14﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) "याद दाश्त" वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा। ﴾15﴿ दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करूंगा। ﴾16﴿ म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करते हुए इस का कार्ड भी जम्अ़ करवाया करूंगा। ﴾17﴿ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। ﴾18,19﴿ इस ह़दीसे पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوْا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी।" (موطا امام مالک، ج۲،ص۴۰۷،الحدیث:۱۷۳۱) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा। ﴾20﴿ किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी तौर पर मुत्तलअ़ करूंगा। (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता।)

अच्छी अच्छी **निय्यतों** से मु-तअ़ल्लिक़ रहनुमाई के लिये, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का मुन्फ़रिद सुन्नतों भरा बयान "**निय्यत का फल**" और निय्यतों से मु-तअ़ल्लिक़ आप के मुरत्तब कर्दा **कार्ड** या **पेम्फ़लेट** मक-त-तबुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन ह़ासिल फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छ6 शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
(2) शो'बए तराजिमे कुतुब
(3) शो'बए दर्सी कुतुब
(4) शो'बए इस्लाही़ कुतुब
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
(6) शो'बए तख़्रीज

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल

www.dawateislami.net

मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **"दा'वते इस्लामी"** की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए। اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِين صَلَّی اللّٰهُ تعالٰی علیه واٰله وسلَّم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

दीनी कुतुब का मुत़ा-लआ़ भी हुसूले इ़ल्म का एक अहम ज़रीआ़ है। मगर इसे ह़ालात की सितम ज़रीफ़ी कहिये या कुछ और कि आज से चन्द बरस पहले तक दीनी कुतुब के मुत़ा-लए़ का ज़ौक़ अ़वाम में ख़ाल ख़ाल दिखाई देता था बल्कि इसे भी मशाग़िले उ़-लमा में से ही शुमार किया जाता था। जब कि दूसरी जानिब फ़ोह़्श व फ़ुज़ूल क़िस्म के नाविल व डायजेस्ट की भरमार थी। यूं मुसल्मान उस राहे इ़ल्म से दूर होते चले गए जिस पर हमारे अकाबिरीन ख़ुद भी चले और हमें भी चलने की तल्क़ीन फ़रमाते रहे। फिर ह़ालात ने करवट ली और मुख़्तलिफ़ मज़्हबी तह़रीकें वुजूद में आईं और मुसल्मानों में हुसूले इ़ल्म का शौक़ बेदार हुवा, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस सिल्सिले में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** ने कलीदी किरदार अदा किया और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा **मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तस्नीफ़ कर्दा कुतुबो रसाइल बिल ख़ुसूस **फ़ैज़ाने सुन्नत** ने मुसल्मानों में मुत़ा-ल-अ़ए कुतुब की ज़ौक़ अफ़्ज़ा तह़रीक चला दी और यूं बोह़राने मुत़ा-लआ़ से काफ़ी ह़द तक नजात मिली। येही वज्ह है कि अब दीनी कुतुब की इशाअ़त की त़रफ़ भरपूर तवज्जोह दी जा रही है, नए नए तह़क़ीक़ी व इशाअ़ती इदारे वुजूद में आ रहे हैं, मुसन्निफ़ीन की सफ़ बन्दी हो रही है।

दा'वते इस्लामी का इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती इदारा **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** भी ता दमे तह़रीर तक़रीबन 85 कुतुब व रसाइल मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ कर चुका है। अपने अकाबिरीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين की अ़-रबी तसानीफ़ को उर्दू में मुन्तक़िल करना भी अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के अहदाफ़ में से है ता कि उर्दू ख़्वां त़ब्क़ा भी इन

www.dawateislami.net

कुतुब में मौजूद वा'ज़ो नसीह़त के अनमोल मोतियों से अपना दामन भर सके। इस काम के लिये **तराजिमे कुतुब** के नाम से बा क़ाइदा एक शो'बा क़ाइम है। ता ह़ाल दर्जे ज़ैल कुतुब व रसाइल का तरजमा शाएअ़ हो चुका है : (येह तराजिम मक-त-बतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल किये जा सकते हैं)

(1) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (اَلْمَتْجَرُ الرَّابِحْ فِیْ ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِحِ) (कुल सफ़ह़ात : 743)

(2) शाहराहे औलिया (مِنْهَا جُ الْعَارِفِیْنَ) (कुल सफ़ह़ात : 36)

(3) हुस्ने अख़्लाक़ (مَكَارِمُ الْاَخْلَاق) (कुल सफ़ह़ात : 74)

(4) राहे इ़ल्म (تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّم طَرِيْقَ التَّعَلُّمْ) (कुल सफ़ह़ात : 102)

(5) बेटे को नसीह़त (اَيُّهَاالْوَلَد) (कुल सफ़ह़ात : 64)

ज़ेरे नज़र किताब "**आंसूओं का दरिया**" **इमाम अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने जूज़ी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی की पुर असर तालीफ़ "**बह़रुद्दुमूअ़**" का तरजमा है। अ़ल्लामा इब्ने जूज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने इस किताब में इन मौज़ूआ़त को शामिल किया है : ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ की फ़ज़ीलत, तौबा के फ़ज़ाइलो ब-रकात, गुनाहों के नुक़्सानात, फ़ित्नए दुन्या, ह़िफ़ाज़ते निगाह, तरबियते नफ़्स, औलिया رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی के अह़वाल, ज़िना की हलाकत ख़ैज़ियां, ख़ामोश रहने की फ़ज़ीलत, ग़ीबत और चुग़ुल ख़ोरी की मज़म्मत, सूद, चोरी, ख़ियानत, और शराब नोशी का वबाल वग़ैरहा। हर मज़मून का आग़ाज़ रिक़्क़त व सोज़ में डूबे हुए नसीह़त आमोज़ कलिमात से होता है, फिर मुअल्लिफ़ उस मौज़ूअ़ के मुत़ाबिक़ आयाते क़ुरआनी व अह़ादीसे मुबा-रका और ह़िकायात ज़िक्र करते हैं, मौक़अ़ के मुना-सबत से जा बजा अश्आ़र भी रक़म फ़रमाए हैं।

"**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के लिये इस किताब में कसीर मवाद है। चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** के **शो'बए तराजिम** के म-दनी उ़-लमा دَامَتْ فُيُوْضُهُم ने इस

www.dawateislami.net

किताब के तरजमे का बारे गिरां अपने सर लिया। वाक़िफ़ाने हाल से मख़्फ़ी नहीं कि तरजमे का काम तस्नीफ़ व तालीफ़ से क़दरे मुश्किल होता है। मुस्तक़िल तस्नीफ़ करने वाला शर-ई एहतियातें पेशे नज़र रखते हुए मवाद के इन्तिख़ाब, तरतीब, हज्म वग़ैरा में क़दरे आज़ाद होता है जब कि मुतर्जिम को साहिबे किताब की तरजुमानी करना होती है। फिर इस दौरान मक़्सूदे मुसन्निफ़ को पेशे नज़र रखना, मुसन्निफ़ के लिखे हुए अ-रबी अल्फ़ाज़ के मुरादी मआनी मु-तअय्यन करना, मतालिब की मुन्तक़िली के लिये उर्दू ज़बान के मौज़ूं अल्फ़ाज़ का इन्तिख़ाब करना, ख़व्वास के ज़ौक़ को सलामत रखने के साथ साथ अवाम की ज़ेहनी सत्ह को मद्दे नज़र रखते हुए मज़ामीन की ता'बीर आसान अल्फ़ाज़ में करना और फिर जामेइय्यत को भी पेशे नज़र रखना, ऐसी चीज़ें नहीं हैं जिन से बा आसानी ओहदा बरआ हुवा जा सके। मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अता, उस के **प्यारे हबीब, हबीबे लबीब** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहे करम और **उ-लमाए किराम** رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی बिल ख़ुसूस शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अत्तार** क़ादिरी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی का फ़ैज़ है कि तरजमे का काम हत्तल मक्दूर एहतियात के साथ मुकम्मल कर लिया गया। दौराने तरजमा इन उमूर का इल्तिज़ाम किया गया :

(1) ...... कोशिश की गई है कि पढ़ने वालों तक वोही कैफ़िय्यत मुन्तक़िल की जाए जो अस्ल किताब में जल्वे लुटा रही है।

(2) इस सिल्सिले में बा'ज़ मक़ामात पर तम्हीदी जुम्लों का इज़ाफ़ा किया गया है। इस तरह इस किताब की हैसियत महज़ तहतुल्लफ़्ज़ तरजमा की नहीं, बल्कि तरजुमानी की है।

(3) ...... इन सब के बा वुजूद हिकायात व वाक़िआत की अस्ल रूह बर क़रार रखी गई है और मुका-लमात को बि ऐनिही नक़्ल करने की

www.dawateislami.net

कोशिश की गई है।

(4) ...... अ़-रबी अश्आ़र पर ए'राब लगा दिये गए हैं। इन अश्आ़र और इन के तरजमे का फ़ोंट साइज़ आ़म किताब से ज़रा छोटा रखा गया है।

(5) ...... मुसन्निफ़ के लिखे हुए अश्आ़र की तासीर बर क़रार रखने के लिये तरजमे के लिये मौज़ूं अल्फ़ाज़ का इन्तिख़ाब किया गया है।

(6) ...... अहले ज़ौक़ की तस्कीन के सामान के त़ौर पर बा'ज़ मक़ामात पर उर्दू अश्आ़र का इज़ाफ़ा किया गया है।

(7) ...... अ़-रबी उ़न्वानात को सामने रखते हुए मुस्तक़िल उर्दू उ़न्वानात क़ाइम किये गए हैं।

(8) ...... जिन रिवायात के ह़वाले दस्त-याब हो सके, उन्हें मु-तअ़ल्लिक़ा रिवायत के साथ लिख दिया गया है।

(9) ...... आयात का तरजमा इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن के तर-ज-मए कुरआन ''कन्ज़ुल ईमान'' से दर्ज किया गया है।

(10) ...... दौराने कम्पोज़िंग अ़लामाते तरक़ीम का भी ख़याल रखा गया है।

(11) ...... किताब के आख़िर में मआख़िज़ो मराजेअ़ की फ़ेहरिस्त दे दी गई है।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि हमें ''**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**'' करने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **म-दनी क़ाफ़िलों** का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और **दा'वते इस्लामी** की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए तराजिमे कुतुब (मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

नम्बर	उ़न्वान	सफ़्ह़ा
1	तआ़रुफ़े मुअल्लिफ़	14
2	इन्तिसाब	18
3	इब्तिदाए सुख़न	19
4	ज़िक्रुल्लाह की फ़ज़ीलत	22
5	क़रीबुल मर्ग शख़्स की तौबा	27
6	क़ाबिले रश्क मौत	29
7	तौबा के फ़ज़ाइल और इस की ब-र-कतें	34
8	जन्नत की हूरों का कलाम	35
9	जैसा करोगे वैसा भरोगे	38
10	तौबा के तीन इन्आ़मात	39
11	फ़िरिश्ते की सदाएं	40
12	गुनाहों का अन्जाम	52
13	गुनाह के दस नुक़्सानात	52
14	गुनाहों से तौबा	60
15	सारे घर वाले मुसल्मान हो गए	65
16	ग़फ़्लत से बेदारी	68
17	नज़्अ़ के आ़लम में मुस्कुराहट	72
18	फ़ित्नए दुन्या	76

www.dawateislami.net

19	फ़िक्रे आख़िरत से ग़ाफ़िल हो जाने वालों को तम्बीह	81
20	मुफ़्लिस कौन ?	81
21	निगाह की हिफ़ाज़त	89
22	ग़ैबी थप्पड़	91
23	दुन्या से रुख़्सती की तय्यारी	99
24	तरबियते नफ़्स	106
25	इन्सान के छ⁶ सफ़र	106
26	तक़्वा व मुजा–हदा बाइसे नजात है	112
27	**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली की तलाश	113
28	इबादत की पाकीज़गी और मीनारे तक़्वा	118
29	नेक सीरत दामाद	123
30	इबादत गुज़ारों का रास्ता और ताइबीन का त़रीक़ा	125
31	इबादत गुज़ार कैसा हो ?	126
32	आख़िरत के त़लब गारों का रास्ता	127
33	लोगों की चार अक़्साम	134
34	नफ़्सानी ख़्वाहिशात का वबाल	137
35	एक आ़लिम का इम्तिह़ान	139
36	हुब्बे दुन्या का नुक़्सान	146
37	लज़्ज़तों का ख़ातिमा और गुनाह का बाक़ी रह जाना	154
38	दुन्या के धोके से बचने का बयान	163
39	सआ़दत मन्द दुल्हन	164

www.dawateislami.net

40	ग़फ़्लत और ख़्वाहिशाते नफ़्स का इलाज	166
41	तीन ख़्वाहिशात	171
42	मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ की बुन्याद	176
43	**अल्लाह** तआ़ला से मह़ब्बत करने वाले	185
44	बेहतरीन हम-सफ़र	186
45	मुहि़ब्बीन की अ़लामात	193
46	गुनाहों के इज़ाले का त़रीक़ा	202
47	मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ	212
48	औलिया के अह़वाल	221
49	इन्आ़माते इलाहिय्यह	228
50	ताइबीन और सालिह़ीन की अ़लामात	239
51	ज़िना का अन्जाम	247
52	मोमिन और मुनाफ़िक़ की पहचान	250
53	ख़ामोश रहने की फ़ज़ीलत	260
54	ग़ीबत और चुग़ुल ख़ोरी की मज़म्मत	270
55	ग़ीबत की सज़ा	280
56	ख़ामोशी के फ़वाइद	288
57	ह़ाफ़िज़े क़ुरआन कैसा हो ?	298
58	सूद, चोरी, ख़ियानत और शराब नोशी का वबाल	300
59	नमाज़ न पढ़ना	318

www.dawateislami.net

तआ़रुफ़े मुअल्लिफ़

(इमाम अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली अल जूज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى)

नाम व नसब :

इमाम, अ़ल्लामा, ह़ाफ़िज़, मुह़द्दिस, मुफ़स्सिर जमालुद्दीन अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली बिन मुह़म्मद बिन अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ह़म्मादी बिन अह़मद बिन मुह़म्मद बिन जा'फ़र अल जूज़ी अल क़-रशी अल तीमी अल ब-करी अल बग़दादी अल ह़म्बली बिन **अ़ब्दुल्लाह** बिन क़ासिम बिन नज़र बिन क़ासिम बिन मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अल फ़क़ीह अ़ब्दुर्रह़मान बिन क़ासिम बिन मुह़म्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم ।

विलादत :

आप 511 हि. में पैदा हुए।

ता'लीम :

आप ने 516 हि. में समाए ह़दीस शुरूअ़ कर दिया था। उस वक़्त आप की उ़म्र तक़्रीबन पांच साल थी। आप तीन साल के थे कि आप के वालिदे मोह़तरम का इन्तिक़ाल हो गया फिर आप की परवरिश आप की फूफी ने की थी। उन्हों ने आप को ह़ज़रते अबुल फ़ज़्ल बिन नासिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में भेजा जिन से इमाम इब्ने जूज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने कसीर इ़ल्म ह़ासिल किया। उ़लूमे ह़दीस ह़ज़रते अबुल फ़ज़्ल बिन नासिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से ह़ासिल किये और उ़लूमे क़ुरआन और उ़लूमे अदब ह़ज़रते सिब्तुल ख़य्यात़ और इब्नुल जवालीक़ी से ह़ासिल किये। आप के दीगर

www.dawateislami.net

असातिज़ा येह हैं : अ़ली बिन अ़ब्दुल वाह़िद अल दैनूरी, अबुल वक़्त सजज़ी, क़ाज़ी अबू या'ला अल फ़राअ, अबुल ह़सन बिन अज़्ज़ागूनी, इब्नुस्सिब्त़ी, अह़मद बिन अह़मद अल मु–वक्किली।

आप के शागिर्द :

आप के साहिब ज़ादे मुह़य्युद्दीन यूसुफ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه, आप के नवासे अबुल मुज़फ़्फ़र رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه, ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुल ग़नी अल मक़्दसी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه, मौफ़िक़ुद्दीन इब्ने क़िदामा मक़्दसी ह़म्बली رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه, ज़ियाउद्दीन मक़्दसी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه वग़ैरा।

इमाम इब्ने जूज़ी عَلَیْهِ الرَّحْمَه अइम्मए इस्लाम की नज़र में :

इमाम इब्ने क़िदामा ह़म्बली عَلَیْهِ رَحْمَةُاللهِ الْعَلِی फ़रमाते हैं :

इमाम इब्ने जूज़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی अपने ज़माने में वा'ज़ो ख़ित़ाबत के इमाम थे, मुख़्तलिफ़ उ़लूमो फ़ुनून में उन्हों ने बेहतरीन किताबें तस्नीफ़ फ़रमाई हैं, तदरीस भी करते थे और आप ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस थे। (एक लाख अह़ादीसे मुबा–रका सनद के साथ याद करने वाला ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस होता है)

ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِیْر फ़रमाते हैं :

मुह़द्दिस इब्ने जूज़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی का शुमार उन उ़–लमा में होता है जिन्हों ने कसीर उ़लूम ह़ासिल किये और दूसरों से मुमताज़ हो गए और फ़न्ने ख़ित़ाबत में ऐसा मुमताज़ मक़ाम पाया कि न इन से पहले कोई उस द–रजे तक पहुंचा और न ही कोई बा'द में पहुंचेगा।

www.dawateislami.net

मुअर्रिख़ **इब्ने ख़ल्कान** عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡمَنَّان फ़रमाते हैं :

इमाम इब्ने जूज़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی अपने ज़माने के बहुत बड़े आ़लिम, ह़दीस में वक़्त के इमाम और ज़बर दस्त वाइज़ थे।

हाफ़िज़ुल ह़दीस **इमाम ज़हबी** عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡوَالِی के कलाम का ख़ुलासा :

इमाम, अ़ल्लामा, हाफ़िज़, मुफ़स्सिर, शैख़ुल इस्लाम, फ़ख़्रे इराक़, जमालुद्दीन, वाइज़, साहि़बे तसानीफ़ और वा'ज़ो नसीह़त के ताजदार थे, फ़िल बदीह बेहतरीन शाइरी और आ'ला द-रजे की नस्र के कहने का म-लका रखने थे, फ़सीह़ो बलीग़ कलाम कर के ह़ैरान कर देते थे, त़वील गुफ़्त-गू कर सकते थे, एक माहिर फ़क़ीह और इज्माअ़ व इख़्तिलाफ़ के जानने वाले थे, फ़ह्मो फ़िरासत और हि़फ़्ज़ो इस्तिह़ज़ार से मुत्तसिफ़ थे (इमाम ज़हबी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं) मैं किसी को नहीं जानता जिस ने इन से ज़ियादा किताबें तस्नीफ़ की हों।

वा'ज़ की इब्तिदा :

बीस साल की उ़म्र से वा'ज़ कहने शुरूअ़ किये। उन की मजलिसे वा'ज़ हज़ारों से कम न होती थी, दूर दूर तक इन की ख़ित़ाबत व वा'ज़ का शोहरा था, आप की मजलिस में बादशाहाने वक़्त, वु-ज़रा, बा'ज़ ख़ु-लफ़ा और बड़े बड़े अइम्मा शरीक होते थे, इन के हाथ पर लाखों अफ़राद ने तौबा की, हज़ारहा अफ़राद ने इस्लाम क़बूल किया।

ता'दादे कुतुब :

इमाम अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली अल जूज़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی ने इ़ल्मे क़ुरआन, इ़ल्मे ह़दीस, इ़ल्मे फ़िक़्ह, जुग़राफ़िया,

www.dawateislami.net

इल्मे तिब, तारीख़, तफ़्सीर, इल्मे नुजूम, हिसाब, लुग़त, नह्व और दीगर कई उ़लूमो फुनून में क़ाबिले क़द्र किताबें लिखीं, आप की तसानीफ़ कई कई जिल्दों में भी हैं और एक एक जिल्द में भी और मुख़्तसर रिसालों की शक्ल में भी जिन की ता'दाद तीन सो300 से ज़ियादा बताई जाती है, एक तह्क़ीक़ के मुताबिक़ इमाम इब्ने जूज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى का रोज़ाना चालीस अवराक़ तस्नीफ़ करने का मा'मूल था।

वफ़ात :

आप आख़िर उ़म्र में पांच यौम बीमार रहे, और शबे जुमुआ़ 13 र-मज़ानुल मुबारक 597 हि. में वफ़ात पाई। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के जनाज़े में बहुत ज़ियादा लोग शरीक हुए, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की नमाज़े जनाज़ा आप के बेटे अबू क़ासिम अ़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने पढ़ाई और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम अह़मद बिन ह़म्बल** رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के मक़्बरे में उन के पहलू में दफ़्न कर दिया गया। लोगों ने कई रातें मुसलसल आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की क़ब्रे अत़्हर पर क़ुरआन की तिलावत की।

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِىِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم﴿

तआ़रुफ़े मुअल्लिफ़ माख़ूज़ अज़

बुस्तानुल वाइज़ीन, ज़म्मुल हवा, उ़यूनुल ह़िकायात,

सि-यरु आ'लामुन्नु-बला।

www.dawateislami.net

इन्तिसाब

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी

ह़ज़रत अ़ल्लामा

मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی

के पीरो मुर्शिद

मेज़बाने मेहमानाने मदीना, क़ुत़्बे मदीना ह़ज़रते अ़ल्लामा

मौलाना ज़ियाउद्दीन म-दनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْغَنِی

के नाम

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

इब्तिदाए सुख़न

तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के लिये हैं जिस ने अश्या को अपनी कुदरते लतीफ़ के लताइफ़ और सन्अ़ते बदीअ़ से इन्तिहाई ख़ूबी के साथ पैदा फ़रमाया,...... उस ने मौजूदात को बिग़ैर किसी साबिक़ा मिसाल के पैदा किया और इस तख़्लीक़ में उस का कोई शरीक नहीं,...... उस ने मुख़्तलिफ़ अक़्साम के लत़ीफ़ व कसीर जवाहिर को जम्अ़ फ़रमाया ताकि उस की वह़दानियत का इक़्रार किया जाए और बनी हुई अश्या से बनाने वाले के वुजूद पर दलील क़ाइम की जा सके,...... उस की मा'रिफ़त रखने वाली हस्तियां, तौबा और तक़्वा के आ'ला मरातिब पर फ़ाइज़ हैं,...... अगर वोह अपने मत़्लूब तक पहुंचने की कोशिश करें तो क़ह्रो हैबत उन्हें ख़ौफ़ व घबराहट में मुब्तला कर देती है,...... अगर वोह वहां से निकलने का इरादा करते हैं तो ग़ैबी ताक़तें उन का रास्ता रोक लेती हैं जिस की वज्ह से उन्हें वापस लौटना पड़ता है।

चन्द अश्आ़र

فَمِنْهُمْ كَاتِمٌ مَحَبَّتَهٗ	قَدْ كَفَّ شَكْوٰى لِسَانِهٖ وَقَطَعْ
وَمِنْهُمْ بَائِحٌ يَقُوْلُ اِذَا	لَامَ عَذُوْلٌ: ذَرِالْمَلَامَ وَدَعْ
اَلَيْسَ قَلْبِىْ مَحَلَّ مِحْنَتِهٖ	وَكَيْفَ يَخْفٰى مَافِيْهِ وَهُوَ قَطَعْ
اَيْنَ الْمُحِبُّوْنَ وَالْمُحِبُّ لَهُمْ	وَاَيْنَ مَنْ شَتَّتَ الْهَوٰى وَجَمَعْ
لَهُمْ عُيُوْنٌ تَبْكِىْ فَوَاعَجَبًا	لِجَفْنٍ صَبَّ اِذَا هَمَا وَ دَمَعْ !
قَدْ حَرَّمُوا النَّوْمَ وَالْمُتَيَّمُ لَا	يَهْوِىْ هُجُوْعًا اِذَا الْخَلِىُّ هَجَعْ

www.dawateislami.net

بِـالْبَـابِ يَبْـكُوْنَ وَالْبُكَـاءُ اِذَا　　كَـانَ خَـلِيًّـامِنَ النِّفَـاقِ نَفَـعْ

تَشْـفَـعُ فِيهِـمْ دُمُـوْعُهُـمْ وَاِذَا　　شَـفَـعَ دَمْـعُ الْمُتَيَّـمِيْـنَ شَفَـعْ

तरजमा : (1) उन में से कोई तो वोह है जिस ने अपनी मह़ब्बत को छुपाए रखा और अपनी ज़बान को शिक्वा व शिकायत से रोक कर ख़ामोश रहा।

(2) और उन में से कोई बे मुरव्वत है जो आ़र व मलामत करने वाले की आ़र के वक़्त कह देता है कि मलामत न कर।

(3) क्या मेरा दिल उस के लिये आज़माइश की जगह नहीं, जो कुछ इस में छुपा है वोह उस से कैसे ओझल हो सकता है क्यूं कि वोह छुपी बात तो मेरे दिल ही का ह़िस्सा है।

(4) मह़ब्बत वाले और इन से मह़ब्बत करने वाला कहां ! और जो अपनी ख़्वाहिशात को बिखेरता और जम्अ़ करता है वोह कहां !

(5) उन की आंखें तो हैं ही रोने वाली, तअ़ज्जुब तो उस आंख पर है कि जब तक्लीफ़ व ग़म में हो तो रोती और आंसू बहाती है।

(6) उन्हों ने (ख़ुद पर) नींद को ह़राम कर लिया इस लिये कि सोने वाला ऊंघने वाले को जगा नहीं सकता क्यूं कि वोह ख़ुद क़ैदे ग़म से आज़ाद है।

(7) वोह दरवाज़े से लग कर रोते हैं और रोना जब निफ़ाक़ से ख़ाली हो तो फ़ाएदा देता है।

(8) उन के आंसू उन के ह़क़ में सिफ़ारिश करते हैं और जब किसी वलिय्युल्लाह के आंसू सिफ़ारिश करते हैं तो सिफ़ारिश क़बूल होती है।

www.dawateislami.net

वोह ख़ौफ़े इ़ताब और उम्मीदे रह़मत के आ़लम में खोए रहते हैं और ना उम्मीदी व ह़िर्स की शराब के नशे में मख़्मूर रहते हैं,...... उन के क़ुलूब के आस्माने इरादत व सआ़दत से चांद ज़ाहिर होता और रोशनी फैलाता है और उन पर उन्स की ख़ल्अ़तों की बरसात होती है,...... हर ख़ल्अ़त में ईमान की दो अ़लामतें होती हैं, इन दोनों से मुज़य्यन होने वाला बुलन्द मर्तबा पा लेता है दाईं अ़लामत की तह़रीर येह है :

سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰۤى ۙ (پ۱۷،الانبیآء:۱۰۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिन के लिये हमारा वा'दा भलाई का हो चुका।

जब कि बाईं अ़लामत की तह़रीर येह है :

لَا یَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ (پ۱۷،الانبیآء:۱۰۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उन्हें ग़म में न डालेगी वोह सब से बड़ी घबराहट।

पाक है वोह ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ जो गुनहगार की तौबा क़बूल फ़रमाता है और जब कोई उस की बारगाह में तौबा करे तो वोह उसे मुआ़फ़ फ़रमा देता है। मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं, वोह एक है उस का कोई शरीक नहीं। मेरी येह गवाही उस शख़्स की गवाही की त़रह़ है जो उस की वह़दानियत का इक़रार और उस की रबूबियत और उलूहियत का ए'तिराफ़ करते हुए उस के जलाल व जमाल की अ़-ज़मत की वज्ह से उस के सामने झुक गया और मैं गवाही देता हूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बन्दे

www.dawateislami.net

और रसूल हैं जिन्हों ने सुन्नतें जारी कीं और फ़राइज़ बयान फ़रमाए और ईद व जुमुआ़ को नाफ़िज़ फ़रमाया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर और आप की आल व अस्ह़ाब عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان पर उस वक़्त तक रह़मतें नाज़िल फ़रमाए जब तक पानी के बहने और रुकने का सिल्सिला रहे, और सत़्ह़े आस्मान पर चमक्ते सितारे ज़ाहिर व तुलूअ़ होते रहें और ख़ूब सलाम भेजे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ (پ۲۷، الذاریات:۵۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और समझाओ कि समझाना मुसल्मानों को फ़ाएदा देता है।

www.dawateislami.net

ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ की फ़ज़ीलत

प्यारे इस्लामी भाइयो !

हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि **अल्लाह** तबा-र-क व तआला फ़रमाता है : "मैं अपने बन्दे के गुमान के गुमान के मुताबिक़ मुआ-मला करता हूं और जब वोह मुझे याद करता है तो मैं उस के साथ होता हूं। पस अगर वोह मुझे जमाअत में याद करे तो मैं उसे उस से बेहतर जमाअत में याद करता हूं और अगर वोह मुझे दिल में याद करे मैं भी उस को अकेला याद करता हूं, अगर वोह एक बालिश्त मेरे क़रीब आता है तो मेरी रहमत एक हाथ उस के क़रीब आ जाती है, और अगर वोह एक हाथ मेरे क़रीब आता है तो मेरी रहमत दोनों बाज़ूओं के फैलाव के ब क़दर उस के क़रीब हो जाती है। और अगर वोह चल कर मेरी तरफ़ आता है तो मेरी रहमत दौड़ती हुई उस की तरफ़ आती है।"

(صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب الحث علی ذکر اللہ تعالٰی، رقم ۲۶۷۵، ص ۱۴۳۹)

हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह** बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "तुम में से जो शख़्स रात में इबादत करने से आजिज़ हो और दुश्मन से जिहाद करने में कमज़ोर हो और माल ख़र्च करने में कन्जूस हो तो उसे चाहिये कि **अल्लाह** तआला का ज़िक्र कसरत से करे।"

(شعب الایمان، باب فی محبۃ اللہ عزوجل، فصل فی ادامۃ ذکر اللہ عزوجل، رقم ۵۰۸، ج ۱، ص ۳۹۱)

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि हम मस्जिदे न-बवी शरीफ़ में बैठे हुए थे कि

www.dawateislami.net

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला के कुछ फ़िरिश्ते ज़मीन पर घूम फिर कर ज़िक्र की मजलिसों में ठहरते हैं लिहाज़ा जब तुम जन्नत की क्यारियां देखो तो उन में से कुछ फूल चुन लिया करो।" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जन्नत की क्यारियां क्या हैं ?" फ़रमाया : "ज़िक्र की मजालिस, सुब्ह़ व शाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहो और जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक अपना मर्तबा जानना चाहे तो वोह देखे कि उस के नज़्दीक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मर्तबा क्या है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे को उसी मर्तबे में रखता है जितनी बन्दे ने **अल्लाह** तआ़ला की याद को अपने दिल में जगह दी।"

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی مجالس الذکر، رقم ۱۶۷۲۸، ج۱۰، ص۷۶ بتصرّف)

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन बुसर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इस्लाम के अह़काम मुझ पर कसीर हो गए हैं लिहाज़ा आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे ऐसी चीज़ का हुक्म दीजिये जिसे मैं ख़ुद पर लाज़िम कर लूं।" तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हारी ज़बान हर वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से तर रहे।" (سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی فضل الذکر، رقم ۳۳۸۶، ج۵، ص۲۴۵ بتصرّف)

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विर्दे ज़बां रहे
मेरी फ़ुज़ूल गोई की आ़दत निकाल दो

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल

www.dawateislami.net

उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ज़मीन के हि़स्से रोज़ाना एक दूसरे को मुख़ात़ब कर के कहते हैं "ऐ मेरे पड़ोसी ! क्या आज तुझ पर किसी ज़िक्रुल्लाह करने वाले का गुज़र हुवा ?"

(المعجم الاوسط، من اسمه احمد، رقم ۵۶۲، ج۱، ص۱۷۱ بتصرّف، دون صلّی علیک وفان قالت...الخ)

मेरे इस्लामी भाइयो ! जब फ़िरिश्ते मजालिसे ज़िक्र से उठते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! तुम कहां गए थे ?" ह़ालां कि वोह ख़ूब जानता है तो फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : "ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! तू ख़ूब जानता है, हम तेरे उन बन्दों के पास थे जो तेरी पाकी बयान कर रहे थे, तेरी तक़्दीस बयान करते थे, तेरी अ़-ज़मत व बुज़ुर्गी बयान कर रहे थे, तुझ से मांग रहे थे, तेरी बारगाह में इस्तिग़्फ़ार कर रहे थे और तेरी पनाह चाहते थे ।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दरयाफ़्त फ़रमाता है : "ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! वोह क्या चीज़ त़लब करते थे और किस चीज़ से पनाह मांग रहे थे ?" तो फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : "ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! तू ख़ूब जानने वाला है, वोह जन्नत त़लब कर रहे थे और जहन्नम से पनाह चाहते थे ।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "ऐ फ़िरिश्तो ! गवाह हो जाओ कि मैं ने उन की त़लब उन्हें अ़त़ा फ़रमा दी और जिस चीज़ से वोह ख़ौफ़ज़दा थे उस से उन्हें अमान अ़त़ा फ़रमा दी और अपनी रह़मत से उन्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमाऊंगा ।"

(صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب فضل ذکر اللہ، الحدیث ۶۴۰۸، ج۴، ص۲۲۰ بتصرّف)

ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला फ़रमाता है : "ऐ मेरे बन्दे ! तू एक घड़ी सुब्ह़ और एक घड़ी शाम मेरा ज़िक्र कर, मैं इन दोनों के दरमियान तुझे किफ़ायत करूंगा ।"

(اتحاف السادۃ المتقین، کتاب الاذکار والدعوات، الباب الاول فی فضیلۃ الذکر وفائدتہ...الخ، ج۵، ص۱۹۳)

www.dawateislami.net

बा'ज़ आस्मानी किताबों में है कि **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है : "ऐ इब्ने आदम ! तू कितना मजबूर है ! मुझ से सुवाल करता है तो मैं मन्अ़ कर देता हूं क्यूं कि जो तेरे ह़क़ में बेहतर है मैं उसे जानता हूं, फिर तू मेरी बारगाह में गिड़गिड़ा कर सुवाल करता है तो मैं तुझ पर अपनी रह़मत और करम से इनायत फ़रमाता हूं और तुझे तेरा सुवाल अ़त़ा फ़रमाता हूं, फिर तू मेरी अ़त़ा कर्दा शै से मेरी ना फ़रमानी पर मदद मांगता है तो मैं तुझे ज़लीलो रुस्वा कर देता हूं मैं तेरी किस क़दर बेहतरी चाहता हूं और तू मेरी कितनी ना फ़रमानियां करता है, क़रीब है कि मैं तुझ से ऐसा नाराज़ हो जाऊं कि इस के बा'द कभी राज़ी न होउं।"

और बा'ज़ आस्मानी किताबों में येह भी है कि **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है : "ऐ मेरे बन्दे ! तू कब तक मेरी ना फ़रमानी करता रहेगा ह़ालां कि मैं ने तुझे अपना रिज़्क़ खिलाया और तुझ पर एह़सान किया, क्या मैं ने तुझे अपने दस्ते क़ुदरत से पैदा नहीं फ़रमाया ? क्या मैं ने तुझ में रूह़ नहीं फूंकी ? क्या तू नहीं जानता कि मैं अपनी इत़ाअ़त करने वालों के साथ कैसा मुआ़-मला फ़रमाता हूं और अपनी ना फ़रमानी करने वालों की कैसी गिरिफ़्त फ़रमाता हूं ? क्या तुझे ह़या नहीं आती कि मसाइब में मुझे याद करता है मगर ख़ुशह़ाली में भूल जाता है, नफ़्सानी ख़्वाहिशात ने तेरी चश्मे बसीरत को अन्धा कर दिया है, तू कब तक सुस्ती करेगा ? अगर तू अपने गुनाह से तौबा करेगा तो मैं तुझे अपनी अमान अ़त़ा फ़रमाऊंगा, ऐसे घर को छोड़ दे जिस की सफ़ाई (ह़क़ीक़त में) मैली है और इस की उम्मीदें झूटी हैं। तू ने मेरे क़ुर्ब को घटिया लोगों के हाथों बेच दिया ह़ालां कि मेरा कोई शरीक नहीं, तेरे पास उस वक़्त क्या जवाब होगा जब तेरे आ'ज़ा तेरे ख़िलाफ़

www.dawateislami.net

गवाही देंगे जिसे तू सुनेगा और देखेगा।"

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۚ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन हर जान ने जो भला काम किया ह़ाज़िर पाएगी।

चन्द अश्आ़र

تَعْصِيْ الْإِلٰهَ وَاَنْتَ تَزْعَمُ حُبَّهُ ۔ هٰذَا مَحَالٌ فِي الْقِيَاسِ بَدِيْعُ

لَوْ كَانَ حُبُّكَ صَادِقًا لَأَطَعْتَهُ ۔ اِنَّ الْمُحِبَّ لِمَنْ يُّحِبُّ مُطِيْعُ

तरजमा : (1) तू **अल्लाह** की ना फ़रमानी करने के बा वुजूद उस की मह़ब्बत का दा'वा करता है, येह अ़जीब व अनोखी बात अ़क़्ल में आने वाली नहीं।

(2) अगर तेरी मह़ब्बत में सदाक़त होती तो तू ज़रूर उस की इत़ाअ़त करता क्यूं कि मुह़िब तो अपने मह़बूब की बात माना करता है।

क़रीबुल मर्ग शख़्स की तौबा :

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि मैं अपने एक पड़ोसी के पास गया। वोह मौत की सख़्तियों में मुब्तला था, कभी उस पर ग़शी त़ारी होती और कभी इफ़ाक़ा हो जाता। उस के सीने से गर्म सांसें निकल रही थीं। वोह अपनी दुन्या में मुन्हमिक रहा करता और अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में ग़फ़्लत किया करता था। मैं ने उसे मश्वरा दिया : "ऐ मेरे भाई ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कर और ग़फ़्लत से अपना दामन छुड़ा ले, शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे दर्द में कमी फ़रमा दे और तुझे शिफ़ा दे दे और अपने करम से तेरे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दे।" तो वोह कहने लगा : "हाए अफ़्सोस ! मौत सर पर खड़ी है

www.dawateislami.net

और अन्क़रीब मैं मरने वाला हूं, अफ़्सोस है इस ज़िन्दगी पर जिसे मैं ने फ़ुज़ूल कामों में गंवा दिया, मैं अपने गुनाहों से तौबा करता हूं।'' ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : ''उसी वक़्त मैं ने उस के घर के कोने से ग़ैबी आवाज़ सुनी, कोई कहने वाला कह रहा था कि हम ने तुझे कई बार अमान दी मगर तुझे बहुत बड़ा धोकेबाज़ पाया।''

हम बुरे ख़ातिमे से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहते हैं और उस की बारगाह में अपने पिछले गुनाहों की बख़्शिश का सुवाल करते हैं। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मेरे इस्लामी भाई !

अपने मौला عَزَّوَجَلَّ (की रिज़ा के हुसूल) को अपनी तवज्जोह का मर्कज़ बना ले,...... ग़फ़्लत और नफ़्सानी ख़्वाहिशात से बाज़ आ जा,...... अपनी बक़िय्या उ़म्र पैहम इत़ाअ़त में गुज़ार और दुन्यावी ख़्वाहिशात से बचने पर सब्र कर,...... ऐ अह़कामे शरीअ़त के पाबन्द इन्सान ! ना फ़रमानियों और गुनाहों से दूर भाग क्यूं कि दुन्या में इत़ाअ़त पर सब्र करना जहन्नम की आग पर सब्र करने से ज़ियादा आसान है।

चन्द अश्आ़र

أَمَوْلَایَ اِنِّیْ عَبْدٌ ضَعِیْفٌ — اَتَیْتُکَ اَرْغَبُ فِیْمَا لَدَیْکَ

اَتَیْتُکَ اَشْکُوْ مُصَابَ الذُّنُوْبِ — وَهَلْ یُشْتَکٰی الضُّرُّ اِلَّا اِلَیْکَ

فَمَنْ بِعَفْوِکَ یَاسَیِّدِیْ — فَلَیْسَ اِعْتِمَادِیْ اِلَّا عَلَیْکَ

तरजमा : (1) ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं कमज़ोर व ना तुवां बन्दा हूं, तेरी बारगाह में तेरे इन्आ़मात व इकरामात की उम्मीद लिये ह़ाज़िर हूं।

www.dawateislami.net

(2) तेरी बारगाह में गुनाहों के मरज़ की फ़रियाद ले कर आया हूं, और मरज़ की फ़रियाद तेरी ही बारगाह में की जाती है।

(3) ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! अ़फ़्वो दर गुज़र फ़रमा कर मुझ पर एह़सान कर दे कि मेरा भरोसा तुझी पर है।

गु-नहे रज़ा का ह़िसाब क्या वोह अगर्चे लाख से हैं सिवा
मगर ऐ अ़फ़ू तेरे अ़फ़्व का न ह़िसाब है न शुमार है

क़ाबिले रश्क मौत :

औलियाए कामिलीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی में से जब एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की मौत का वक़्त क़रीब आया तो उन्हों ने अपने बेटे से फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! मेरी वसिय्यत ग़ौर से सुनो और इस पर ज़रूर अ़मल करना।" उस ने अ़र्ज़ की : "बहुत बेहतर अब्बाजान !" फ़रमाया : "बेटे मेरी गरदन में एक रस्सी डाल कर मुझे मेह़राब की त़रफ़ घसीटो और मेरे चेहरे को ख़ाक आलूद कर दो, और येह कहते जाओ : "येह उस शख़्स का अन्जाम है जिस ने अपने मौला عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी की, अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात को तरजीह़ दी और अपने मालिक की इत़ाअ़त से ग़ाफ़िल रहा।"

जब उन की इस ख़्वाहिश को पूरा कर दिया गया तो उन्हों ने अपनी निगाह आस्मान की त़रफ़ उठाई और अ़र्ज़ की :

"ऐ मेरे मा'बूद, ऐ मेरे आक़ा व मौला عَزَّوَجَلَّ ! तेरी बारगाह में ह़ाज़िरी का वक़्त आ पहुंचा,...... मेरे पास ऐसा कोई उ़ज़्र नहीं जिसे तेरी बारगाह में पेश कर सकूं,...... मगर ऐ मौला عَزَّوَجَلَّ ! मैं गुनहगार हूं और तू बख़्शने वाला है, मैं मुजरिम हूं और तू रह़्म

www.dawateislami.net

फ़रमाने वाला है, मैं तेरा बन्दा हूं और तू मेरा आक़ा है,...... मेरी आ़जिज़ी और ज़िल्लत पर रह़्म फ़रमा क्यूं कि गुनाह से बचने और नेकी करने की कु़व्वत तू ही अ़त़ा फ़रमाता है।"

येह कहने के बा'द उस बुजु़र्ग رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। उसी लम्ह़े घर के एक कोने से एक आवाज़ सुनाई दी जिसे घर में मौजूद तमाम लोगों ने सुना, मुनादी कह रहा था : "इस बन्दे ने अपने मौला عَزَّوَجَلَّ के सामने खु़द को ज़लीलो रुस्वा किया और उस की बारगाह में अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ किया तो रब عَزَّوَجَلَّ ने इसे अपना कु़र्ब अ़त़ा फ़रमा कर अपना मुक़र्रब बना लिया और जन्नत को इस का ठिकाना बना दिया।"

﴿अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो﴾ ﴿اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم﴾

चन्द अश्आ़र

اِلٰھِیْ اِنْ کُنْتُ الْغَرِیْقَ وَعَاصِیًا   فَعَفُوُکَ یَاذَا الْجُوْدِ وَالسَّعَةِ الرَّحَبُ

بِشِدَّةِ فَقْرِیْ، بِاِضْطِرَارِیْ، بِحَاجَتِیْ   اِلَیْکَ اِلٰھِیْ حِیْنَ یَشْتَدُّ بِیَ الْکُرَبُ

بِمَا بِیْ مِنْ ضُعْفٍ وَعِجْزٍ وَفَاقَةٍ   بِمَا ضَمَّنَتْ مِنْ وُسْعِ رَحْمَتِکَ الْکُتُبُ

صَلَاةٌ وَتَسْلِیْمٌ وَرَوْحٌ وَرَاحَةٌ   عَلَی الصَّادِقِ الْمَصْدُوْقِ مَا انْفَلَقَ الْحَبُّ

اَبِیْ الْقَاسِمِ الْمَاحِیِ الْاَبَاطِیْلِ کُلِّهَا   وَاَصْحَابِهِ الْاَخْیَارِ سَادَاتِنَا النُّجُبُ

तरजमा : (1) ऐ मेरे मा'बूद عَزَّوَجَلَّ ! अगर्चे मैं गुनाहों (के समुन्दर) में ग़र्क़ और गुनहगार हूं, मगर ऐ जूदो करम और वसीअ़ रह़मत वाले ! तेरी बख़्शिश इस से कहीं ज़ियादा वसीअ़ है।

www.dawateislami.net

(2) इलाही عَزَّوَجَلَّ ! जब मेरी तकालीफ़ शदीद हो जाती हैं तो मैं अपनी बे क़रारी, मोहताजी और ह़ाजात की शिद्दत में तेरी ही बारगाह में ह़ाज़िर होता हूं।

(3) अपने कमज़ोर, आ़जिज़ और फ़क़्रो फ़ाक़ा में मुब्तला होने के सबब, क्यूं कि तेरी वसीअ़ रह़मत के बयान में किताबें भरी पड़ी हैं।

(4) दुरूदो सलाम और राह़त व सुकून हो जनाब सादिक़ो मस्दूक़ (या'नी सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर जब तक दाने उगते रहें।

(5) (दुरूदो सलाम हो) अबुल क़ासिम (या'नी नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर) जो कि तमाम बात़िल व बुरे कामों को मिटाने वाले हैं और आप के अख़्यार सह़ाबा पर जो कि हमारे सरदार और क़ौल व अ़मल में बर्गुज़ीदा हैं।

मेरे इस्लामी भाइयो !

तौबा की येह क़बूलिय्यत, नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करने वालों को पुकार पुकार कर कह रही है कि तौबा करने वाला नौ जवान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मह़बूब है और उधेड़ उ़म्री में गुनाह करने वालों को झन्झोड़ रही है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की तौबा क़बूल फ़रमा लेगा और इज़्हारे नदामत करने वाले बूढ़ों को आवाज़ दे रही है कि **अल्लाह** तआ़ला अपनी मह़ब्बत में टूटने वाले दिलों के क़रीब है।

नूर का चराग़ :

मरवी है कि "जब बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में

www.dawateislami.net

कामिल तौबा करता है और रात में अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात करता है तो फ़िरिश्ते नूर का एक चराग़ रोशन कर के ज़मीन व आस्मान के दरमियान लटका देते हैं। दीगर फ़िरिश्ते पूछते हैं : "येह क्या है ?" तो उन से कहा जाता है कि फ़ुलां बिन फ़ुलां ने आज की रात अपने रब عَزَّوَجَلَّ के साथ राज़ी हो कर गुज़ारी है।"

जिस्मानी आ'ज़ा की गुफ़्त-गू :

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ-ज़मत निशान है कि "जब बन्दा रात में इबादत के लिये खड़ा होता है तो उस के आ'ज़ा ख़ुश हो कर एक दूसरे को पुकारते हैं कि हमारा रफ़ीक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दगी के लिये खड़ा हुवा है।"

रह़मतों की बरसात :

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन अबुल ह़वारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास गया तो उन्हें रोते हुए पाया। मैं ने उन से पूछा कि "किस चीज़ ने आप को रुलाया ?" कहने लगे : जब रात की तारीकी अपनी चादर बिछा देती है तो अहले मह़ब्बत क़ियाम (या'नी नमाज़) में खड़े हो जाते हैं। उन के आंसू रुकूअ़ और सज्दे की ह़ालत में उन के रुख़्सारों पर बह रहे होते हैं। फिर जब **अल्लाह** جَلَّ جَلَالُهٗ उन पर निगाहे करम करता है तो इर्शाद फ़रमाता है, "ऐ जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ! मेरे सामने वोह खड़ा है जिस ने मेरे कलाम से लज़्ज़त ह़ासिल की और मुझ से मुनाजात की राह़त पाई, बेशक मैं इस से बा ख़बर हूं और इस के कलाम को सुन रहा हूं और इस के

www.dawateislami.net

रोने और आहो ज़ारी को देख रहा हूं, ऐ जिब्रईल इस से कहो : "मैं जो येह तुम्हारा ग़म देख रहा हूं येह क्या है ? क्या तुम्हें किसी ने ख़बर दी है कि कोई दोस्त अपने दोस्तों को आग का अ़ज़ाब देता है या क्या मैं गवारा करूंगा कि मैं किसी क़ौम को रात गुज़ारने के लिये ठिकाना फ़राहम करूं फिर उन्हें नींद की ह़ालत में जहन्नम में डालने का हुक्म दूं । येह काम तो किसी बदकार बन्दे के भी मुनासिब नहीं तो करीम बादशाह عَزَّوَجَلَّ के लाइक़ कैसे हो सकता है । मुझे अपनी इ़ज़्ज़त की क़सम ! कि मैं इन्हें ज़रूर एक तोह़फ़ा अ़ता फ़रमाऊंगा, वोह इस त़रह़ कि मैं इन पर नज़्रे रह़मत फ़रमाऊंगा और वोह मेरा दीदार करेंगे ।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने बा'ज़ आस्मानी किताबों में पढ़ा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है, जो लोग मेरी ख़ात़िर तकालीफ़ बरदाश्त करते और मेरी रिज़ा की त़लब में ग़मगीन रहते हैं वोह मेरी ह़िफ़ाज़त में हैं । वोह मेरे क़ुर्ब और मेरी जन्नत के बाग़ात में मज़े ले रहे हैं । अपने आ'माल में हमा-तन गोश रहने वाले मुक़र्रब मह़बूब के दीदार की ख़ुश ख़बरी सुन लें क्या तुम येह समझते हो कि मैं इन के आ'माल को ज़ाएअ़ कर दूंगा ? मैं येह कैसे कर सकता हूं ह़ालां कि मैं दोस्तों पर जूदो करम करता और गुनहगारों की तौबा क़बूल फ़रमाता हूं और मैं इन पर सब से ज़ियादा रह़्म फ़रमाने वाला हूं" । (حلیۃ الاولیاء، ابوسلیمان الدارانی، رقم ۱۳۸۴۱، ج۹، ص ۲۶۸)

www.dawateislami.net

तौबा के फ़ज़ाइल और इस की ब-र-कतें

ऐ दुन्या की महब्बत में गिरिफ़्तार होने वाले ! ऐ ख़्वाहिशाते नफ़्सानी के गुलाम, ऐ ख़ताओं में मुन्हमिक रहने वाले, याद कर तूने आगे क्या भेजा है और अपने आक़ा व मौला عَزَّوَجَلَّ से इस बात पर डर कि वोह तेरी बातिनी लग़्ज़िशों और ज़ियादतियों से बा ख़बर है, कहीं ऐसा न हो कि वोह तुझे बाबे रहमत में दाख़िले से रोक दे और तुझे अपनी बारगाह से धुत्कार दे और अपने महबूब बन्दों की रफ़ाक़त से महरूम कर दे फिर तू रुस्वाई के जंगल में जा गिरे और ख़सारे की रस्सी में बंध जाए, फिर जब तू अपनी गुमराही और सर्कशी से छुटकारा चाहे तो तुझे ग़ैब से यूं निदा दी जाए :

اِلَيْکَ عَنَّا فَمَا تَحْظٰى بِنَجْوَانَا   يَا غَادِرًا قَدْ لَهَا عَنَّا وَقَدْ خَانَا

اَعْرَضْتَ عَنَّا وَلَمْ تَعْمَلْ بِطَاعَتِنَا   وَجِئْتَ تَبْغِىْ الرِّضَا وَالْوَصْلُ قَدْ بَانَا

بِاَىِّ وَجْهٍ نَرَاکَ الْيَوْمَ تَقْصِدُنَا   وَطَالَ مَا كُنْتَ فِى الْاَيَّامِ تَنْسَانَا

يَانَاقِضَ الْعَهْدِ مَافِىْ وَصْلِنَا طَمَعٌ   اِلَّا لِمُجْتَهِدٍ بِالْجِدِّ قَدْ دَانَا

तरजमा : (1) हम से दूर हो जा, हमारी दोस्ती से तूने कोई फ़ाएदा नहीं उठाया, ऐ धोका देने वाले ! तूने हम से मज़ाक़ किया और ख़ियानत की।

(2) तूने हम से मुंह मोड़ लिया और हमारी इताअ़त भी नहीं की इस के बा वुजूद भी तू हमारी रिज़ा का मु-तलाशी है, अब विसाल का वक़्त नहीं रहा।

(3) हम किस लिये तेरी रिआ़यत करें कि आज तू हमारी त़रफ़ बढ़ता है ह़ालां कि त़वील ज़माने तक तूने हम को भुलाए रखा।

(4) ऐ अ़हद तोड़ने वाले ! हमारी मुलाक़ात की ख़्वाहिश न

www.dawateislami.net

रख येह तो इ़बादत की कोशिश करने वाले के लिये है और वोह कोशिश कर के हमारा कुर्ब पा चुका है।

ऐ बाक़ी रहने वाली ने'मतों को फ़ानी आसाइशों के बदले बेच डालने वाले ! क्या तुझे इस का नुक़्सान नहीं मा'लूम ?...... विसाल के दिन कितने अच्छे हैं और जुदाई के अय्याम कितने सख़्त,...... क़ौम की ज़िन्दगी उस वक़्त तक अच्छी नहीं होती जब तक वोह (राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र के लिये) अपना वत़न न छोड़ दे और रातें तिलावते कुरआन में बसर न करे,...... इसी लिये नेक लोग अपनी रातें अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर सज्दा और क़ियाम करते हुए गुज़ारते हैं।

जन्नत की हूरों का कलाम :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सलमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुत़ह्हर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (जो साठ साल तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गिर्या कुनां रहे) ने मुझ से फ़रमाया कि मैं ने देखा कि मुश्क की खुश्बूदार नह्‌र के किनारे पर हूं जिस के किनारे पर मोतियों के दरख़्त हैं और उस की मिट्टी अ़म्बर की है और उस में सोने के टीले हैं। यकायक मेरी नज़र कुछ लड़कियों पर पड़ी जो ब-यक ज़बान हो कर येह कह रही थीं :

"पाक है वोह ज़ात, पाक है वोह ज़ात जिस की हर ज़बान में तस्बीह़ की जाती है, वोह ज़ात पाक है, पाक है, मौजूद है, पाक है, वोह ज़ात जो दाइमी है। वोह पाक है, हम **अल्लाह** तआ़ला की मख़्लूक़ में से एक मख़्लूक़ हैं हम हमेशा रहेंगी कभी न मरेंगी हम (जन्नती शोहरों से) राज़ी रहने वालियां हैं (उन पर कभी) नाराज़ न

www.dawateislami.net

होंगी, हम तरो ताज़ा रहने वालियां हैं कभी ज़वाल न पाएंगी।"

हज़रते सय्यिदुना मुतह्हर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने उन से कहा तुम कौन हो ? कहने लगीं हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ात में से एक मख़्लूक़ हैं मैं ने कहा तुम क्या कर रही हो ? तो उन्हों ने यक ज़बान हो कर ख़ूब सूरत अन्दाज़ में जवाब दिया,

ذَرَانَا اِلٰـهُ النَّـاسِ رَبُّ مُـحَمَّدٍ   لِقَوْمٍ عَلَى الْاَطْرَافِ بِـاللَّيْلِ قُوَّمُ

يُنَـاجُوْنَ رَبَّ الْعَالَمِيْنَ اِلٰهَهُمْ   وَتَسْرِىْ هُمُوْمُ الْقَوْمِ وَالنَّاسُ نُوَّمُ

तरजमा : (1) हमें लोगों के मा'बूद, रब्बे मुहम्मद عَزَّوَجَلَّ ने ऐसे बन्दों के लिये पैदा फ़रमाया है जो रात के हिस्सों में उस के लिये क़ियाम (इबादत) करते हैं।

(2) और वोह जो अपने मा'बूद, तमाम जहानों के पालने वाले से मुनाजात करते हैं और उन की हाजतें पूरी हो होती हैं जब कि ग़ाफ़िल लोग सोते रह जाते हैं।

हज़रते सय्यिदुना मुतह्हर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने येह सुन कर कहा : "ख़ूब बहुत ख़ूब ! वोह लोग कौन हैं जिन की आंखों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ठन्डा किया है ?" वोह कहने लगीं : "क्या आप उन्हें नहीं जानते ?" मैं ने कहा : "ख़ुदा की क़सम ! नहीं जानता।" तो उन लड़कियों ने बताया कि येह वोह लोग हैं जो अपनी रात इबादत और तिलावते क़ुरआन में गुज़ारते हैं।

तौबा का इन्आम :

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जब बन्दा गुनाह करता है फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करता है और उस पर क़ाइम रहता है तो **अल्लाह**

www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ उस का हर नेक अ़मल क़बूल फ़रमा लेता है और उस से सरज़द होने वाला हर गुनाह बख़्श देता है और (मुआफ़ हो जाने वाले) हर गुनाह के बदले जन्नत में उस का एक द–रजा बुलन्द फ़रमा देता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की हर नेकी के बदले उसे जन्नत में एक मह़ल अ़त़ा फ़रमाता है और हूरों में से एक हूर से उस का निकाह़ फ़रमा देता है।"

(حلیۃ الاولیاء، احمد بن ابی الحواری، الحدیث ۱۴۳۳۲، ج۱۰، ص۱۴)

मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ के ह़ुसूल का त़रीक़ा :

शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद (عَلَيْهِ السَّلَام) की त़रफ़ वह़्य भेजी कि "ऐ दावूद (عَلَيْهِ السَّلَام) ! गुनहगारों को ख़ुश ख़बरी दे दो और सिद्दीक़ीन को डर सुनाओ।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام को इस बात पर बड़ा तअ़ज्जुब हुवा, तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रब عَزَّوَجَلَّ मैं गुनहगारों को क्या ख़ुश ख़बरी दूं और सिद्दीक़ीन को क्या डर सुनाऊं ?"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "ऐ दावूद (عَلَيْهِ السَّلَام) ! गुनहगारों को येह ख़ुश ख़बरी सुना दो कि कोई गुनाह मेरी बख़्शिश से बड़ा नहीं और सिद्दीक़ीन को इस बात का डर सुनाओ कि वोह अपने नेक आ'माल पर ख़ुश न हों क्यूं कि मैं जिस से भी अपनी ने'मतों का ह़िसाब लूंगा वोह तबाहो बरबाद हो जाएगा, ऐ दावूद (عَلَيْهِ السَّلَام) ! अगर तू मुझ से मह़ब्बत करना चाहता है तो दुन्या की मह़ब्बत को अपने दिल से निकाल दे क्यूं कि मेरी और दुन्या की मह़ब्बत एक दिल में जम्अ़ नहीं हो सकतीं, ऐ दावूद (عَلَيْهِ السَّلَام) ! जो मुझ से मह़ब्बत

www.dawateislami.net

करता है वोह रात को मेरे हुज़ूर तहज्जुद अदा करता है जब कि लोग सो रहे होते हैं, वोह तन्हाई में मुझे याद करता है जब कि ग़ाफ़िल लोग मेरे ज़िक्र से ग़फ़्लत में पड़े होते हैं, वोह मेरी ने'मतों पर शुक्र अदा करता है जब कि भूलने वाले मुझ से ग़फ़्लत इख़्तियार करते हैं।"

(حلیۃ الاولیاء، عبد العزیز بن ابی رواد، رقم ۱۱۹۰۶، ج ۸، ص ۲۱۱۔ الی قولہ الاھلک)

﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो** اٰمین بجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم﴿

चन्द अश्आर

طُوْبٰی لِمَنْ سَهِرَتْ بِاللَّيْلِ عَيْنَاهُ   وَبَاتَ فِیْ قَلَقٍ مِنْ حُبِّ مَوْلَاهُ

وَقَامَ يَرْعٰی نُجُوْمَ اللَّيْلِ مُنْفَرِدًا   شَوْقًا اِلَيْهِ وَعَيْنُ اللّٰهِ تَرْعَاهُ

तरजमा : (1) ख़ुश ख़बरी है उस के लिये जिस की आंखें रात को जागती हों और वोह अपने रब عَزَّوَجَلَّ की महब्बत में बे क़रार रात गुज़ारता हो।

(2) और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात का शौक़ लिये सितारों के छुपने का इन्तिज़ार करते हुए तन्हाई में क़ियाम करता है, और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निगाहे रहमत उस की त़रफ़ मु-तवज्जेह रहती है।

जैसा करोगे वैसा भरोगे :

सरकारे वाला तबार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि "नेकी पुरानी नहीं होती और गुनाह भुलाया नहीं जाता, जज़ा देने वाला (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) कभी फ़ना नहीं होगा, लिहाज़ा जो चाहे कर, तू जैसा करेगा वैसा भरेगा।"

(المصنف للامام عبد الرزاق، کتاب الجامع باب الاغتیاب والشتم، رقم ۲۰۴۳۰، ج ۱۰، ص ۱۸۹)

www.dawateislami.net

ऐ इस्लामी भाई ! क्या तुझे मा'लूम है तूने क्या कर दिया है ? तूने कुर्बत को दूरी के बदले, अ़क्ल को ख़्वाहिशात के बदले और दीन को दुन्या के बदले बेच दिया है।

चन्द अश्आ़र

قُمْ فَارْثِ نَفْسَکَ وَابْکِھَا مَادُمْتَ وَابْکِ عَلٰی مَھَلْ

فَاِذَا اتَّقَی اللّٰہَ الْفَتٰی فِیْمَا یُرِیْدُ فَقَدْ کَمَلْ

तरजमा : (1) उठ (या'नी तय्यार हो जा) और अपने नफ़्स पर अफ़्सोस कर और जब तक तू ज़िन्दा रहे इस पर रोता रह और अपने राह़त व आराम पर आंसू बहा,

(2) कि जब कोई नौ जवान अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता है, तो वोह (ईमान में) कामिल हो जाता है।

नेकियों की तौफ़ीक़ मिलना :

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है कि "जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे की मग़्फ़िरत फ़रमाना चाहता है तो उसे गुनाह से रोक देता है और जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे का अ़मल क़बूल करना चाहता है तो उसे नेक अ़मल की त़रफ़ माइल कर देता है।"

तौबा के तीन इन्आ़मात :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "तौबा करने वाले जब अपनी क़ब्रों से निकलेंगे तो उन के सामने से मुश्क की ख़ुश्बू फैलेगी, वोह जन्नत के दस्तर ख़्वान पर आ कर उस में से खाएंगे और वोह अ़र्श के साए में होंगे जब कि दीगर लोग ह़िसाब की सख़्ती में मुब्तला होंगे।"

ख़ौफ़े ख़ुदा में बहने वाले आंसू :

एक शख़्स ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या **रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं किस चीज़ के ज़रीए़ जहन्नम से नजात पा सकता हूं ?" फ़रमाया : "अपनी आंखों के आंसूओं से।" अ़र्ज़ की : "मैं अपनी आंखों के आंसूओं के ज़रीए़ जहन्नम से नजात कैसे पाऊंगा ?" फ़रमाया : "इन दोनों के आंसूओं को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से बहाओ क्यूं कि जो आंख **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोए उसे जहन्नम का अ़ज़ाब नहीं होगा।"

(الترغیب والترھیب، کتاب التوبۃ والزھد، الترغیب فی البکاء، الحدیث۹، ج۴، ص۹۸ بتصرف)

या रब मैं तेरे ख़ौफ़ से रोता रहूं हर दम

दीवाना शहन्शाहे मदीना का बना दे

(वसाइले बख़्शिश)

फ़िरिश्ते की सदाएं :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है कि

www.dawateislami.net

"**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से मोमिन की आंख से निकलने वाला क़तरा उस के लिये दुन्या और इस की हर चीज़ से बेहतर है और एक साल की इबादत से बेहतर है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़-ज़मत और क़ुदरत में एक घड़ी ग़ौरो फ़िक्र करना साठ दिन के रोज़ों और साठ रातों की इबादत से बेहतर है, सुन लो कि बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एक फ़िरिश्ता हर दिन और रात में निदा करता है कि चालीस साल की उ़म्र वालो ! फ़स्ल काटने का वक़्त आ गया, ऐ पचास साल वालो ! ह़िसाब की तय्यारी कर लो, ऐ साठ साल वालो ! तुम ने आगे क्या भेजा और पीछे क्या छोड़ा है ? ऐ सत्तर साल वालो ! तुम्हें किस चीज़ का इन्तिज़ार है ? काश कि मख़्लूक़ पैदा न होती और जब पैदा हो गई है तो काश अपना मक़्सदे ह़यात जान लेती फिर उस के मुत़ाबिक़ अ़मल करती, ख़बरदार ! क़ियामत तुम्हारे क़रीब आ गई होशियार हो जाओ ।"

(حلیۃ الاولیاء، وھیب بن الورد، رقم:۱۱۷۴۸، ج۸، ص۱۶۷، بتغیر)

نَـزِّہْ مَشِیْبَکَ عَـنْ شَیْئٍ یُدَنِّسُـہٗ　　　اِنَّ الْبَیَـاضَ قَلِیْـلُ الْـحَمْلِ لِلدَّنَسِ

तरजमा : अपने बुढ़ापे को हर उस चीज़ से बचा जो उसे मैला कर दे क्यूं कि सफ़ेदी मैल कुचैल को कम ही बरदाश्त करती है ।

ऐ बदी के ग़ुलाम ! तू कितने गुनाह करता है और हम पर्दा पोशी कर देते हैं, मम्नूआ़त के कितने दरवाज़े तू तोड़ डालता है और हम उसे दुरुस्त कर देते हैं । हम कब तक तेरी आंखों से ख़ौफ़ के आंसू त़लब करें ह़ालां कि वोह नहीं गिरते, हम कब तक चाहेंगे कि तू त़ाअ़त इख़्तियार करे ह़ालां कि तू इस से भागता है और जुदाई इख़्तियार करता है, हम ने तुझे कितनी ने'मतें अ़त़ा फ़रमाईं मगर तू इस का शुक्र अदा नहीं करता, तुझे दुन्या और ख़्वाहिशात की पैरवी

www.dawateislami.net

ने धोके में डाल दिया कि तू न तो सुनता है और न हि देखता है, हम ने तेरे लिये काएनात को मुसख़्ख़र कर दिया फिर भी तू सर्कशी और ना शुक्री इख़्तियार करता है और दुन्या ही में रहना चाहता है ह़ालां कि येह तो नसीह़त क़बूल करने वाले के लिये पुल की हैसिय्यत रखती है।

चन्द अश्आ़र

مَنَعُوْکَ مِنْ شُرْبِ الْمَوَدَّةِ وَالصَّفَا   لَمَّا رَأَوْکَ عَلٰی الْخِیَانَةِ وَالْجَفَا

اِنْ اَنْتَ اَرْسَلْتَ الْعِنَانَ اِلَیْھِمْ   جَادُوْا عَلَیْکَ تَکَرُّمًا وَتَعَطُّفًا

حَاشَاھُمْ اَنْ یَّظْلِمُوْکَ وَاِنَّمَا   جَعَلُوْا الْوَفَا مِنْھُمْ لِاَرْبَابِ الْوَفَا

तरजमा : (1) वोह तुझे मह़ब्बत व पाकीज़गी का जाम पीने से रोकते हैं, जब वोह तुझे ख़ियानत व ज़ियादती का मुर-तकिब देखते हैं।

(2) अगर तुम उन के साथ भलाई से पेश आओ तो वोह तुम से नरमी व शफ़्क़त का बरताव करेंगे।

(3) वोह तुझ पर ज़ुल्म करने से बरी हैं, बल्कि वोह तो वफ़ादारों के साथ वफ़ा निभाने वाले हैं।

मरने से पहले ईमान नसीब हो गया :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی से मन्क़ूल है कि मैं एक मजूसी की मौत के वक़्त उस के पास गया। उस का घर मेरे घर से क़रीब था, वोह अच्छा पड़ोसी, अच्छी सीरत वाला और ख़ुश अख़्लाक़ इन्सान था। मेरी ख़्वाहिश थी कि **अल्लाह** तआ़ला उसे मौत के वक़्त हिदायत क़बूल करने और ह़ालते इस्लाम में मरने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए। मैं ने उस से पूछा : "तू कैसा मह़सूस

www.dawateislami.net

कर रहा है ? तेरा क्या ह़ाल है ?" उस ने जवाब दिया : "मेरा दिल बीमार है, मैं सिह़्ह़त मन्द मैं भी नहीं, बदन कमज़ोर है त़ाक़त बिल्कुल नहीं, क़ब्र वह़शत नाक है और कोई हमदर्द भी नहीं, सफ़र त़वील है और मेरे पास तोशा नहीं, पुल सिरात़ बहुत बारीक है और मेरे पास इजाज़त नामा भी नहीं, आग शो'ला ज़न है और मेरा बदन कमज़ोर है, जन्नत बुलन्द मर्तबा मक़ाम है और मेरा उस में कोई ह़िस्सा नहीं और परवर्द गार (عَزَّوَجَلَّ) आ़दिल है और मेरे पास कोई हुज्जत व उ़ज़्र नहीं ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं कि मैं ने (दिल ही दिल में) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस मजूसी के मुसल्मान हो जाने की दुआ़ की । फिर मैं उस मजूसी के क़रीब आया और उस से पूछा कि "तुम सलामती पाने के लिये मुसल्मान क्यूं नहीं हो जाते ?" उस मजूसी ने कहा : "चाबी तो फ़त्ताह़ عَزَّوَجَلَّ के पास है, फिर अपने सीने की त़रफ़ इशारा कर के कहा कि यहां कुफ़्ल (ताला) लगा हुवा है ।" येह कहने के बा'द उस पर ग़शी त़ारी हो गई और वोह बेहोश हो गया ।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं कि मैं ने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे **अल्लाह** ! मेरे आक़ा ! मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! अगर तेरे पास इस का कोई अच्छा अ़मल बाक़ी है तो इस की रूह़ के निकलने और उम्मीद टूट जाने से पहले उस का बदला इसे जल्द अ़त़ा फ़रमा ।" तो उसे ग़शी से इफ़ाक़ा हुवा आंखें खोलीं और मेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह हो कर कहने लगा :

www.dawateislami.net

"ऐ शैख़ ! फ़त्ताह़ عَزَّوَجَلَّ ने चाबी भेज दी है, अपना हाथ बढ़ाइये ताकि मैं गवाही दूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं।" येह कहते ही उस की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत में ग़ोत़ा ज़न हो गया।

चन्द अश्आ़र

يَا ثِقَتِیْ یَا اَمَلِیْ اَنْتَ الرَّجَا اَنْتَ الْوَلِیْ

اِخْتِمْ بِخَیْرٍ عَمَلِیْ وَحَقِّقِ التَّوْبَۃَ لِیْ

قَبْلَ حُلُوْلِ اَجَلِیْ وَکُنْ لِّیْ یَا رَبِّ وَلِیْ

तरजमा : (1) ऐ मेरे ए'तिमाद ! ऐ मेरी उम्मीद ! तू ही मेरी ख़्वाहिश है और तू ही मेरा मददगार है।

(2) मेरी ज़िन्दगी का ख़ातिमा नेक आ'माल पर फ़रमा, और मुझे तौबा की तौफ़ीक़ दे।

(3) क़ब्ल इस के कि मुझे मौत आ ले, या रब عَزَّوَجَلَّ ! तू ही मेरा मददगार है।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह ग़फ़्लत कैसी ? ह़ालां कि तुम्हें कई मर्तबा समझाया जा चुका है,...... येह ह़ैरत कैसी ? तुम्हें तो मोहलत दी जा चुकी है,...... येह बेहोशी क्यूं है ? ह़ालां कि तुम चीख़ते चिल्लाते हो,...... येह सुकून क्यूं है ? तुम से तो ह़िसाब लिया जाएगा,...... येह दिल्लगी क्यूं ? तुम ने तो कूच कर जाना है,...... क्या सोने वालों के लिये अभी वक़्त नहीं आया कि वोह बेदार हो जाएं,...... क्या बन्दगाने ग़फ़्लत पर अभी वोह वक़्त

www.dawateislami.net

नहीं आया कि नसीह़त पकड़ें,...... याद रखो कि इस दुन्या में हर शख़्स मुसाफ़िर है लिहाज़ा अपने लिये ऐसे अ़मल करो जो तुम्हें क़ियामत के दिन जहन्नम के अ़ज़ाब से नजात दिला सकें।

चन्द अश्आ़र

آنَ الرَّحِيْلُ فَكُنْ عَلٰى حَذَرٍ ‏ مَاقَدْ تَرٰى يُغْنِىْ عَنِ الْحَذَرِ

لَاتَغْتَرِرْ بِالْيَوْمِ اَوْ بِغَدٍ ‏ فَلَرُبَّ مَغْرُوْرٍ عَلٰى خَطَرٍ

तरजमा : (1) कूच (या'नी मौत) का वक़्त आ पहुंचा, कुछ इस के लिये फ़िक्र कर कि तूने बे ख़ौफ़ कर देने वाली चीज़ों को नहीं देखा।

(2) आज या कल पर घमन्ड न कर क्यूं कि बहुत से घमन्ड करने वाले ख़त़रे से दो चार हैं।

अवराद में मश्ग़ूलिय्यत :

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना सरी स-क़त़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَالِى हर वक़्त वज़ाइफ़ व अवराद में मश्ग़ूल रहते थे और जब उन का कोई विर्द रह जाता तो उसे दोहराने पर क़ुदरत न पाते।

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِىِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم﴿

आराम न फ़रमाते :

इसी त़रह़ अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को आराम का वक़्त नहीं मिलता था, लिहाज़ा आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه पर बैठे बैठे ग़ुनू-दगी त़ारी हो जाती।

www.dawateislami.net

सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان ने अ़र्ज़ की : “ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! क्या आप सोते नहीं हैं ?” तो उन्हों ने फ़रमाया : “मैं कैसे सो सकता हूं, अगर मैं दिन में सोता हूं तो लोगों के हुक़ूक़ ज़ाएअ़ कर बैठूंगा और अगर रात में सोता हूं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से अपना हि़स्सा ज़ाएअ़ कर बैठूंगा ।”

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علیه واٰله وسلَّم

लैटे हुए नहीं देखा :

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡهَادِی फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सरी स-क़ती़ عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی से ज़ियादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करने वाला किसी को नहीं पाया । आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه पर 78 साल ऐसे गुज़रे कि आप को कभी लैटे हुए नहीं देखा गया, आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه सिर्फ़ म-रज़ुल मौत में लैटे थे ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علیه واٰله وسلَّم

घर से न निकलता :

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡهَادِی फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सरी स-क़ती़ رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه को फ़रमाते हुए सुना कि अगर जुमुआ़ और जमाअ़त वाजिब न होती तो मैं कभी अपने घर से न निकलता और मरते दम तक अपने घर ही को लाज़िम पकड़ता ।

www.dawateislami.net

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके़ हमारी मग्फ़िरत हो । ﴿اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ख़ौफे़ ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से रोने का इन्आम :

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सैदलानी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَفَّار को फ़रमाते हुए सुना कि मैं ने ख़्वाब में अपने वालिद को देखा तो पूछा : "مَافَعَلَ بِکَ رَبُّکَ" या'नी आप के रब عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला किया ?" उन्हों ने जवाब दिया कि रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपना कुर्ब अ़ता फ़रमाया फिर मुझ से पूछा : "ऐ बदकार बुड्ढे ! क्या तू जानता है कि मैं ने तुझे क्यूं बख़्शा ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं नहीं जानता ।" फ़रमाया : "एक दिन तूने एक इज्तिमाअ़ में लोगों को रुलाया था उन में मेरा एक ऐसा बन्दा भी रो पड़ा था जो मेरे ख़ौफ़ से कभी नहीं रोया तो मैं ने उस की मग्फ़िरत फ़रमा दी और उस के सदके़ तमाम अहले मजलिस की मग्फ़िरत फ़रमा दी तुम भी उन में शामिल थे जिन की मैं ने उस के सदके़ मग्फ़िरत फ़रमाई ।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके़ हमारी मग्फ़िरत हो । ﴿اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

यौमे ह़िसाब की दहशत :

हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मुहम्मद बिन इब्राहीम सफ़्फ़ार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَفَّار से रिवायत है कि एक रात मैं हज़रते सय्यिदुना अस्वद बिन सालिम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा

www.dawateislami.net

आप मुसलसल येह अश्आर पढ़े जा रहे थे और रोते जा रहे थे :

اَمَــامِــيْ مَــوْقِفٌ قُــدَّامَ رَبِّــيْ ... يُسَــائِلُنِيْ وَيَنْكَشِفُ الْغِطَا

وَحَسْبِــيْ أَنْ اَمُــرَّ عَــلٰى صِرَاطٍ ... كَــحَـدِّ السَّيْفِ اَسْــفَلُــهٗ لَظٰى

तरजमा : (1) अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मह़शर का मैदान मेरे सामने है, वोह मुझ से सुवाल करेगा और पोशीदा राज़ खुल जाएगा।

(2) और मेरे लिये तो इतना ही काफ़ी है कि उस पुल (सिरात़) से गुज़रूं जो कि तलवार की धार की त़रह़ है और उस के नीचे दोज़ख़ है।

फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक चीख़ मारी और सुब्ह़ तक आप पर ग़शी त़ारी रही। (تاریخ بغداد للخطیب اسود بن سالم، رقم ۳۴۹۸، ج ۷، ص ۴۰، بتصرف)

नदामत से गुनाहों का इज़ाला कुछ तो हो जाता
हमें रोना भी तो आता नहीं हाए नदामत से

(वसाइले बख़्शिश)

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** ﴿اٰمِین بِجَاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللهُ تعالٰی علیه واٰله وسلَّم﴾

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़ाक बिन मज़ाह़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि एक रात मैं कूफ़ा की मस्जिद की त़रफ़ चला। जब मैं मस्जिद के क़रीब पहुंचा तो एक नौ जवान को सज्दे में गिरे हुए पाया। वोह गिर्या व ज़ारी में मश्ग़ूल था। मैं समझ गया कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वलियों में से कोई वली है तो मैं उस नौ जवान के क़रीब गया ताकि सुन सकूं कि वोह क्या कह रहा है तो मैं ने उसे येह अश्आर पढ़ते हुए पाया :

www.dawateislami.net

عَلَیْکَ یَا ذَاالْجَلَالِ مُعْتَمَدِیْ　　طُوْبٰی لِمَنْ کُنْتَ اَنْتَ مَوْلَاہُ

طُوْبٰی لِمَنْ بَاتَ خَائِفاً وَجِلاً　　یَشْکُوْاِلٰی ذِیْ الْجَلَالِ بَلْوَاہُ

وَمَا بِہٖ عِلَّۃٌ وَلَا سَقَمٌ　　اَکْثَرُ مِنْ حُبِّہٖ لِمَوْلَاہُ

اِذَا خَلَا فِیْ ظَلَامِ اللَّیْلِ مُبْتَھِلًا　　اَجَابَہُ اللّٰہُ ثُمَّ لَبَّاہُ

وَمَنْ یَنَلْ ذَا مِنَ الْاِلٰہِ فَقَدْ　　فَازَ بِقُرْبٍ تَقِرُّ عَیْنَاہُ

तरजमा : (1) ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरा भरोसा व ए'तिमाद तुझ ही पर है, खु़श ख़बरी है उस के लिये जिस का तू मददगार है।

(2) खु़श ख़बरी है उस के लिये जो ख़ौफे़ (खु़दा عَزَّوَجَلَّ) में रात गुज़ारता है, अपनी मुसीबतों की फ़रियाद उसी रब्बे जु़ल जलाल की बारगाह में करता है।

(3) उसे कोई बीमारी या तक्लीफ़ अपने मौला عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत से बढ़ कर नहीं है।

(4) जब रात के अंधेरे में तन्हा आ़जिज़ी करता है तो **अल्लाह** तआ़ला उस की (दुआ़) सुनता और क़बूल करता है।

(5) और जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से येह सआ़दत मिली वोह ऐसा कु़र्ब पा लेने में काम्याब हो गया जिस से उस की आंखें ठन्डी होंगी।

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़ाक बिन मज़ाह़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि वोह मुसलसल इन अश्आ़र की तकरार कर रहा था और रोए जा रहा था। उस की गिर्या व ज़ारी पर तर्स खा कर मैं भी रोने लगा। इसी अस्ना में मेरे सामने नज़रें उचक लेने वाली कड़क दार बिजली जैसी रोशनी चमकी तो मैं ने फ़ौरन अपने हाथ अपनी आंखों पर

www.dawateislami.net

रख लिये फिर मैं ने अपने सर पर एक मुनादी को निदा देते हुए सुना जो इन्सानों के कलाम के मुशाबेह न थी, वोह निदा येह थी :

لَبَّیْکَ عَبْدِیْ وَاَنْتَ فِیْ کَنَفِیْ   وَکُلُّ مَاقُلْتَ قَدْ قَبِلْنَاہُ

صَوْتُکَ تَشْتَاقُہُ مَلَائِکَتِیْ   وَحَسْبُکَ الصَّوْتُ قَدْ سَمِعْنَاہُ

اِنْ هَبَّتِ الرِّیْحُ مِنْ جَوَانِبِهٖ   خَرَّ صَرِیْعًا لَّمَّا تَغَشَّاہُ

ذَاکَ عَبْدِیْ یَجُوْلُ فِیْ حُجُبِیْ   وَذَنْبُکَ الْیَوْمَ قَدْ غَفَرْنَاہُ

तरजमा : (1) ऐ मेरे बन्दे ! मैं मौजूद हूं और तू मेरे ह़िफ़्ज़ो अमान में है और तूने जो भी दुआ़ की हम ने उसे क़बूल फ़रमा लिया है।

(2) मेरे मलाएका तेरी आवाज़ सुनने का इश्तियाक़ रखते हैं, और तुझे येह सदा काफ़ी है जिसे हम ने सुन लिया।

(3) अगर इस (सदा) के गिर्दा गिर्द हवा चल पड़े तो इस में पछाड़ने वाले की त़रह़ आवाज़ पैदा हो जाए क्यूं कि तूने (इस सदा में) ऐसी ही कैफ़िय्यत को पोशीदा कर रखा है।

(4) मेरा येह बन्दा मेरे क़ुर्ब के पर्दों में रहता है, और आज हम ने तेरा गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दिया।

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़ाक बिन मज़ाह़म رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡه फ़रमाते हैं येह सुन कर मैं ने कहा : ''रब्बे का'बा की क़सम ! येह तो ह़बीब की अपने ह़बीब से मुनाजात है।'' फिर मैं उस की हैबत से ग़श खा कर मुंह के बल गिर पड़ा। जब मुझे इफ़ाक़ा हुवा तो मैं फ़ज़ा में फ़िरिश्तों की आवाज़ सुन रहा था और ज़मीन व आस्मान के दरमियान उन के परों की फड़-फड़ाहट सुनाई दे रही थी। मैं समझा कि शायद आस्मान ज़मीन के क़रीब हो गया है और मैं ने ऐसा नूर देखा जो चांद की रोशनी पर ग़ालिब आ चुका था ह़ालां कि वोह

www.dawateislami.net

तेज़ रोशनी वाली एक चांदनी रात थी। फिर मैं उस नौ जवान के क़रीब हुवा और उसे सलाम किया। उस ने मेरे सलाम का जवाब दिया तो मैं ने उस से पूछा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें ब-र-कत दे और तुम पर रह़्म फ़रमाए, तुम कौन हो ?" उस ने जवाब दिया : "मैं राशिद बिन सुलैमान (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان) हूं।" तो मैं ने उन्हें पहचान लिया क्यूं कि मैं उन के बारे में सुन चुका था। फिर मैं ने उन से कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए क्या आप मुझे अपनी सोह़बत में रहने की इजाज़त देंगे ताकि मैं आप से उन्स ह़ासिल कर सकूं।" तो उन्हों ने कहा : "हाए अफ़्सोस ! हाए अफ़्सोस ! जो अपने रब عَزَّوَجَلَّ की मुनाजात की लज़्ज़त पा चुका है क्या वोह मख़्लूक़ से उन्स ह़ासिल कर सकेगा ?" फिर वोह मुझे तन्हा छोड़ कर चले गए।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। ﴾اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم﴿

﴾......इ़ल्म सीखने से आता है......﴿

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

"इ़ल्म सीखने से ही आता है और फ़िक़्ह ग़ौरो फ़िक्र से ह़ासिल होती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन में समझ बूझ अ़त़ा फ़रमाता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं।"

(المعجم الكبير، ج١٩، ص ٥١١، الحديث:٧٣١٢)

www.dawateislami.net

गुनाहों का अन्जाम

प्यारे इस्लामी भाइयो !

कब तक (नेक) आ'माल में सुस्ती करोगे ? और कब तक झूटी ख़्वाहिशात की तक्मील की ह़िर्स रखोगे ? तुम मोहलत से धोका खाते हो और मौत के ह़म्ले को याद नहीं करते हो, जिसे तुम ने जना है (या'नी औलाद) वोह मिट्टी के लिये है और जो कुछ ता'मीर किया है (या'नी मकान वग़ैरा) वोह वीरान होने के लिये है और जो कुछ तुम ने जम्अ़ किया है (या'नी मालो दौलत) वोह ख़त्म होने के लिये है और तुम्हारे अ़मल क़ियामत के दिन के लिये एक आ'माल नामे में मह़फ़ूज़ हैं।

चन्द अश्आ़र

وَلَوْاَنَّا اِذَا مُتْنَا تُرِكْنَا   لَكَانَ الْمَوْتُ رَاحَةَ كُلِّ حَيّ

وَلٰكِنَّا اِذَا مُتْنَا بُعِثْنَا   وَنُسْأَلُ بَعْدَهَا عَنْ كُلِّ شَيْءٍ

तरजमा : (1) अगर हम मरने के बा'द (यूंही) छोड़ दिये जाएं तो फिर मौत हर ज़िन्दा के लिये राह़त बन जाए।

(2) मगर जब हम मरेंगे तो दोबारा उठाए जाएंगे और इस के बा'द हर शै के बारे में हम से पूछा जाएगा।

गुनाह के दस नुक़्सानात :

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान से हरगिज़ धोके में न पड़ना :

www.dawateislami.net

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो एक नेकी लाए तो उस के लिये उस जैसी दस हैं और जो बुराई लाए तो उसे बदला न मिलेगा मगर उस के बराबर ।

مَنۡ جَآءَ بِالۡحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشۡرُ اَمۡثَالِهَا ۚ وَمَنۡ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجۡزٰۤى اِلَّا مِثۡلَهَا (پ۸،الانعام:۱۶۰)

क्यूं कि गुनाह अगर्चे एक ही हो अपने साथ दस बुरी ख़स्लतें ले कर आता है :

(1) जब बन्दा गुनाह करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ग़ज़ब दिलाता है और वोह उसे पूरा करने पर क़ुदरत रखता है।

(2) वोह (या'नी गुनाह करने वाला) इब्लीस मल्ऊन को ख़ुश करता है।

(3) जन्नत से दूर हो जाता है।

(4) जहन्नम के क़रीब आ जाता है।

(5) वोह अपनी सब से प्यारी चीज़ या'नी अपनी जान को तक्लीफ़ देता है।

(6) वोह अपने बातिन को नापाक कर बैठता है ह़ालां कि वोह पाक होता है।

(7) आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों या'नी किरामन कातिबीन को ईज़ा देता है।

(8) वोह नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रौज़ए मुबा-रका में रन्जीदा कर देता है।

www.dawateislami.net

(9) ज़मीनो आस्मान और तमाम मख़्लूक़ को अपनी ना फ़रमानी पर गवाह बना लेता है।

(10) वोह तमाम इन्सानों से ख़ियानत और रब्बुल आ़-लमीन عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करता है।

वीराने में मुलाक़ात :

हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि मैं हिजाज़े मुक़द्दस के इरादे से सफ़र पर निकला तो मैं ने किसी को अपना हम-सफ़र न बनाया। सफ़र के दौरान जब मैं एक बयाबान में पहुंचा तो मेरा ज़ादे राह ख़त्म हो गया। जब मैं हलाकत के क़रीब पहुंच गया तो अचानक मुझे सह़रा में एक घना दरख़्त नज़र आया जिस की शाख़ें ज़मीन पर लटक रही थीं। मैं ने सोचा कि मुझे उस दरख़्त के साए में बैठ जाना चाहिये यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हुक्म पूरा हो जाए (या'नी मुझे मौत आ जाए)। जब मैं उस दरख़्त के क़रीब पहुंचा और उस के साए में बैठने का इरादा किया तो उस की टहनियों में से एक टहनी ने मेरे चमड़े का थैला पकड़ लिया जिस की वज्ह से उस में बचा खुचा पानी बह गया जिस से मुझे बचने की कुछ उम्मीद थी। अब तो मुझे अपनी हलाकत का यक़ीन हो गया, लिहाज़ा मैं उस दरख़्त के साए में गिर कर म-लकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام का इन्तिज़ार करने लगा ताकि वोह आ कर मेरी रूह़ क़ब्ज़ फ़रमा लें।

www.dawateislami.net

अचानक मैं ने एक ग़मगीन आवाज़ सुनी जो किसी ग़मज़दा के दिल से निकल रही थी वोह शख़्स कह रहा था कि "ऐ मेरे **अल्लाह**, ऐ मेरे आक़ा व मौला عَزَّوَجَلَّ ! अगर तेरी रिज़ा इसी में है तो इस में इज़ाफ़ा फ़रमा, ताकि ऐ अर-ह़मर्राहि़मीन ! तू मुझ से राज़ी हो जाए ।" येह सुन कर मैं उठा और उस आवाज़ की सम्त चल दिया तो मैं ने एक ह़सीनो जमील शख़्स को देखा जो रेत पर पड़ा हुवा था और बहुत से गिध उसे घेरे हुए थे और उस का गोश्त नोचना चाहते थे । मैं ने उसे सलाम किया तो उस ने सलाम का जवाब दे कर कहा कि "ऐ ज़ुन्नून ! जब ज़ादे राह ख़त्म हो गया और पानी बह गया तो तूने हलाकत और फ़ना का यक़ीन कर लिया ।"

मैं उस के सिरहाने बैठ गया और उस की ह़ालत देख कर मेरा दिल भर आया और मैं रोने लगा । अचानक खाने का एक पियाला मेरे सामने रख दिया गया फिर उस शख़्स ने अपनी एड़ी ज़मीन पर रगड़ी तो एक चश्मा फूट पड़ा उस का पानी दूध से ज़ियादा सफ़ेद और शह्द से ज़ियादा मीठा था । उस ने मुझ से कहा : "ऐ ज़ुन्नून ! खा पी लो क्यूं कि तुम्हारा बैतुल ह़राम पहुंचना निहायत ज़रूरी है, मगर ऐ ज़ुन्नून ! मेरा एक काम ज़रूर करना अगर तुम मेरा काम कर दोगे तो तुम्हें इस का अज्रो सवाब मिलेगा ।" मैं ने पूछा : "वोह काम क्या है ?" फ़रमाया : "जब मैं मर जाऊं तो मुझे ग़ुस्ल दे कर दफ़्ना देना और इन वह़शी परिन्दों से छुपा कर यहां से चले जाना फिर जब तुम ह़ज अदा कर लो तो बग़दाद शह्र चले जाना, जब तुम बाबे ज़ा'फ़रान में दाख़िल होगे तो तुम्हें वहां कुछ बच्चे खेलते हुए नज़र आएंगे उन्हों ने मुख़्तलिफ़

www.dawateislami.net

रंगों के लिबास पहन रखे होंगे तुम वहां एक कमसिन जवान को पाओगे जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से कोई चीज़ ग़ाफ़िल न करती होगी, उस ने एक कपड़ा कमर पर बांध रखा होगा और दूसरा कन्धे पर रखा होगा, उस के चेहरे पर आंसूओं की वज्ह से लकीरें पड़ गई होंगी, तुम उस से मिलना वोह मेरा बेटा और मेरी आंखों की ठन्डक है उसे मेरा सलाम कहना।"

हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "जब वोह बात कर के फ़ारिग़ हुए तो मैं ने उन्हें येह कलिमा اَشْهَدُ اَنْ لَّآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ पढ़ते हुए सुना फिर उन्हों ने एक आह भरी और इस फ़ानी दुन्या से रुख़्सत हो गए।"

मैं ने اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ पढ़ा। मेरे सामान में एक क़मीस थी जिसे मैं ने बहुत संभाल कर रखा था। फिर मैं ने उन्हें उस पानी से ग़ुस्ल दिया और क़फ़न पहना कर रेत में दफ़्ना दिया और बैतुल ह़राम की त़रफ़ चल दिया। मनासिके ह़ज अदा करने के बा'द हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर की ज़ियारत के लिये रवाना हुवा। ज़ियारत से फ़ारिग़ होने के बा'द मैं ने बग़दाद शह्‌र का रुख़ किया और ईद के दिन बग़दाद पहुंचा। मैं ने वहां कुछ बच्चों को खेलते हुए पाया, उन्हों ने मुख़्तलिफ़ रंगों के लिबास पहन रखे थे। जब मैं ने नज़र दौड़ाई तो उस नौ जवान को एक जगह बैठे हुए पाया जिसे कोई क़ीमती चीज़ भी अ़ल्लामुल ग़ुयूब عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न कर सकती थी। उस के चेहरे पर ग़म के आसार

www.dawateislami.net

वाज़ेह़ थे और उस के रुख़्सारों पर आंसूओं की वज्ह से दो लकीरें पड़ गई थीं वोह येह अश्आ़र पढ़ रहा था :

اَلنَّاسُ كُلُّهُمْ لِلْعِيْدِ قَدْ فَرِحُوْا   وَقَدْ فَرِحْتُ اَنَا بِالْوَاحِدِ الصَّمَدِ

اَلنَّاسُ كُلُّهُمْ لِلْعِيْدِ قَدْ صَبَغُوْا   وَقَدْ صَبَغْتُ ثِيَابَ الذُّلِّ وَالْكَمَدِ

اَلنَّاسُ كُلُّهُمْ لِلْعِيْدِ قَدْ غَسَلُوْا   وَقَدْ غَسَلْتُ اَنَا بِالدَّمْعِ لِلْكَبِدِ

तरजमा : (1) तमाम लोग ई़द की ख़ुशियों में मगन हो गए और मैं वाहि़द व बे नियाज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ख़ुश हूं।

(2) सब लोगों ने ई़द के लिये कपड़े रंगे और मैं ने ज़िल्लत और बदली रंगत वाले कपड़े रंगे हैं।

(3) तमाम लोगों ने ई़द के लिये ग़ुस्ल किया है और मैं ने जिगर को आंसूओं के साथ ग़ुस्ल दिया है।

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि जब मैं ने उसे सलाम किया तो उस ने सलाम का जवाब दिया और कहा : "वालिदे गिरामी के क़ासिद को ख़ुश आ-मदीद।" मैं ने पूछा : "तुम्हें किस ने बताया कि मैं तुम्हारे वालिद साहि़ब का क़ासिद हूं ?" उस ने जवाब दिया : "उसी ने जिस ने मुझे येह बताया है कि आप ने उन्हें सह़रा में दफ़्न किया है।" फिर वोह कहने लगा : "ऐ ज़ुन्नून ! क्या आप येह गुमान कर रहे हैं कि आप ने उन्हें सह़रा में दफ़्न कर दिया है, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरे वालिद साहि़ब को सिद-रतुल मुन्तहा पर उठा लिया गया है, अब आप मेरे साथ मेरी दादी के पास चलिये।"

www.dawateislami.net

फिर उस ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे अपने घर ले गया जब वोह मकान के दरवाज़े पर पहुंचा तो आहिस्ता से दस्तक दी। एक बूढ़ी औ़रत बाहर निकली, जब उस ने मुझे देखा तो बोली : "मेरे ह़बीब और मेरी आंखों की ठन्डक की ज़ियारत से मुशर्रफ़ होने वाले को ख़ुश आ-मदीद।" मैं ने पूछा : "आप को किस ने बताया कि मैं ने उन्हें देखा है ?" वोह कहने लगी : "उसी ने जिस ने येह बताया कि तुम ने उसे दफ़्न किया है और तुम्हारा कफ़न तुम्हें वापस लौटा दिया जाएगा। ऐ ज़ुन्नून ! मुझे अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे बेटे के बोसीदा लिबास पर फ़िरिश्तों के सामने फ़ख़्र फ़रमा रहा है।" फिर उस ने पूछा : "ऐ ज़ुन्नून ! येह तो बताओ कि तुम ने मेरे बेटे, मेरी आंखों की ठन्डक और दिल के टुकड़े को कैसे रुख़्सत किया था ?" मैं ने कहा कि "मैं ने उसे बे आबो गियाह जंगल में रेत और पथ्थरों के दरमियान तन्हा छोड़ दिया था, उस ने अपने परवर्द गार, रब्बे ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ से जो उम्मीद बांध रखी थी वोह पूरी हो गई।"

जब उस बुढ़िया ने येह बात सुनी तो उस नौ जवान को अपने सीने से चिमटा लिया और वोह मेरी नज़रों से ओझल हो गए। मैं नहीं जानता कि उन्हें आस्मान ने उठा लिया, या ज़मीन शक़ हुई और दोनों उस में समा गए। मैं उन्हें घर के मुख़्तलिफ़ गोशों में तलाश करता रहा मगर वोह न मिले। फिर मैं ने ह़ातिफ़े ग़ैब से आवाज़ सुनी, एक कहने वाला कह रहा था : "ऐ ज़ुन्नून ! ख़ुद को

www.dawateislami.net

मत थकाओ।" मैं ने पूछा : "वोह कहां चले गए ?" जवाब मिला : "शु-हदा मुश्रिकीन की तलवारों से मरते हैं जब कि येह मुहिब्बीन रब्बुल आ़-लमीन عَزَّوَجَلَّ के शौक़ में मरते हैं तो उन्हें नूर की सुवारियों पर बिठा कर इ़ज़्ज़त वाले बादशाह की बारगाह में ले जाया जाता है।" ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "फिर मुझे मेरा चमड़े का गुमशुदा थैला भी मिल गया और जिस त़रह़ का कफ़न मैं ने उस बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को पहनाया था वोह भी उसी त़रह़ लिपटा हुवा मिल गया जैसे पहले था।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلّم

=== === ===

......गुनाहों से नफ़रत करने का ज़ेह्न......

"**दा'वते इस्लामी**" के सुन्नतों की तरबियत के "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र और रोज़ाना "**फ़िक्रे मदीना**" के ज़रीए "**म-दनी इन्आ़मात**" का रिसाला पुर कर के हर म-दनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से "**पाबन्दे सुन्नत**" बनने, "**गुनाहों से नफ़रत**" करने और "**ईमान की ह़िफ़ाज़त**" के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

www.dawateislami.net

गुनाहों से तौबा

ऐ गुनाहों पर क़ाइम रहने और अह़कामे ख़ुदा वन्दी को छोड़ देने वाले ! फ़ितने और गुमराही की पैरवी करने वाले ! तू अपने जुर्म पर कब तक इसरार करता रहेगा ? और तू रब عَزَّوَجَلَّ के क़ुर्ब का ज़रीआ़ बनने वाले आ'माल से कब तक भागता रहेगा ? तू दुन्या से ऐसी चीज़ त़लब करता है जो तुझे मिलने वाली नहीं, क्या तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तक़्सीम कर्दा रिज़्क़ पर भरोसा नहीं है कि तू उस के हुक्म पर अ़मल नहीं करता।

मेरे इस्लामी भाई ! ख़ुदा की क़सम ! अगर तेरा येही ह़ाल रहा तो नसीह़त तुझ पर असर न करेगी और ह़वादिसात तुझे रोक न सकेंगे और न ही ज़माना तुझे आवाज़ देगा और न ही मौत का क़ासिद तुझे ख़बरदार करेगा, ऐ मिस्कीन ! गोया तू येह समझता है कि तू हमेशा ज़िन्दा रहेगा और कभी न भुलाया जाएगा। ख़ुदा की क़सम ! गुनाहों से डरने वाले काम्याब हो गए और परहेज़ गार जहन्नम के अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ हो गए जब कि तू जुर्म और गुनाह कमाने में लगा हुवा है।

चन्द अश्आ़र

عِيْلَ صَبْرِىْ وَحَقَّ لِىْ اَنْ اَنُوْحَ   لَمْ تَدَعْ لِىَ الذُّنُوْبُ قَلْبًا صَحِيْحًا
اَخْلَقَتْ مُهْجَتِىْ اَكُفُّ الْمَعَاصِىْ   وَنَعَانِىَ الْمَشِيْبُ نَعْيًا صَرِيْحًا
كُلَّمَا قُلْتُ قَدْ بَرِئَ جُرْحُ قَلْبِىْ   عَادَقَلْبِىْ مِنَ الذُّنُوْبِ جَرِيْحًا
اِنَّمَا الْفَوْزُوَالنَّعِيْمُ لِعَبْدٍ   جَاءَ الْحَشْرَ آمِنًا مُّسْتَرِيْحًا

www.dawateislami.net

तरजमा : (1) मेरा सब्र कमज़ोर पड़ गया और अब मुझे अफ़्सोस करना लाज़िम हो गया, गुनाहों ने मेरे दिल को दुरुस्त ह़ालत पर नहीं रहने दिया।

(2) मेरी रूह़ानियत ख़त्म हो गई क्यूं कि मैं गुनाहों में पड़ गया, ह़ालां कि बुढ़ापे ने मुझे मौत की वाज़ेह़ ख़बर दे दी है।

(3) जब भी मैं येह समझता हूं कि मेरे दिल का ज़ख़्म ठीक हो गया है, मगर गुनाहों के सबब मेरा दिल फिर ज़ख़्मी हो जाता है।

(4) नजात और ने'मतें उसी बन्दे के लिये हैं जो बरोज़े मह़शर इस ह़ालत में आए कि (अ़ज़ाब से) मामून और राह़त में हो।

मेरे इस्लामी भाइयो ! दुन्या से इसी त़रह़ बे रग़बती इख़्तियार कर लो जिस त़रह़ सालिह़ीन ने इस से बे रग़बती इख़्तियार की और सफ़रे आख़िरत के लिये तोशा तय्यार करो जो तुम्हें पेश आने वाला है और तुम गुज़रने वाले माह व साल से इ़ब्रत ह़ासिल करो।

चन्द अश्आ़र

يَامَنْ غَدَافِىْ الْغَىِّ وَالتِّيْهِ وَغَـــرَّهُ طُــوْلُ تَـمَـــادِيْـــهِ

اَمْـلٰـى لَکَ الـلّٰـهُ فَبَارَزْتَـهُ وَلَـمْ تَـخَفْ غِـبَّ مَـعَـاصِيْـهِ

तरजमा : (1) ऐ वोह शख़्स जो गुमराही और ग़ुरूर में सुब्ह़ करता है और जिसे उस की मोहलत की त़वालत ने धोके में डाल रखा है।

(2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुझे मोहलत दी तो तूने उस को मुक़ाबले की दा'वत दे दी और तू उस की ना फ़रमानियों के अन्जाम से नहीं डरता।

www.dawateislami.net

शिकायत कैसे करूं ?

हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं कि "जब हज़रते सय्यिदुना सरी स-क़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى बीमार हुए और मैं उन की इयादत के लिये ह़ाज़िर हुवा तो मैं ने अ़र्ज़ की आप कैसा मह़सूस कर रहे हैं ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया :

كَيْفَ اَشْكُوْ اِلٰى طَبِيْبِىْ مَا بِىْ وَالَّذِىْ قَدْ اَصَابَنِىْ مِنْ طَبِيْبِىْ

तरजमा : मैं अपनी तक्लीफ़ की शिकायत अपने त़बीब से कैसे करूं क्यूं कि मुझे जो तक्लीफ़ आई वोह मेरे त़बीब ही की त़रफ़ से है।

फिर मैं ने पंखा उठाया ताकि उन्हें हवा दे सकूं तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "जिस का पेट अन्दर से जल रहा हो वोह भला पंखे की हवा (से सुकून) कैसे पा सकता है।"

(حلية الاولياء، رقم ۱۵۲۷۰، جنيد بن محمد الجنيد، ج۱۰، ص۲۹۱، معناً)

फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने येह अश्आ़र पढ़े :

اَلْقَلْبُ مُحْتَرِقٌ وَالدَّمْعُ مُسْتَبِقٌ وَالْكَرْبُ مُجْتَمِعٌ وَالصَّبْرُ مُفْتَرِقٌ

كَيْفَ الْقَرَارُ عَلٰى مَنْ لَا قَرَارَ لَهٗ مِمَّا جَنَاهُ الْهَوٰى وَالشَّوْقُ وَالْقَلَقُ

يَا رَبِّ اِنْ كَانَ شَيْئٌ فِيْهِ لِىْ فَرَجٌ فَامْنُنْ عَلَىَّ بِهٖ مَادَامَ بِىْ رَمَقٌ

तरजमा : (1) दिल जल रहा है, आंसू बहने में मुक़ाबला कर रहे हैं, ग़म तुवाना हो चुका है और सब्र मुझ से जुदा हो गया है।

(2) वोह शख़्स जिसे नफ़्सानी ख़्वाहिश, शौक़ और इज़्तिराब ने गुनाह में डाल कर बे क़रार कर दिया अब उस को किस त़रह़ क़रार आए।

www.dawateislami.net

(3) या रब عَزَّوَجَلَّ ! अगर किसी शै में मेरे लिये कुछ राह़त है तो जब तक मेरी ज़िन्दगी थोड़ी सी भी बाक़ी है मुझ पर उस के ज़रीए एह़सान फ़रमाता रह ।

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । ﴿اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

फ़क़्रो तंगदस्ती से डरने वाले को तम्बीह :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मौफ़िक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "एक दिन मैं अज़ान देने के लिये निकला तो मैं ने एक काग़ज़ देखा और उसे उठा कर अपनी आस्तीन में रख लिया फिर मैं ने नमाज़ की इक़ामत कही और नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बा'द जब काग़ज़ पढ़ा तो उस में लिखा था कि "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ऐ अ़ली बिन मौफ़िक़ ! क्या तू फ़क़्रो तंगदस्ती से डरता है ह़ालां कि तेरा परवर्द गार (عَزَّوَجَلَّ) मैं हूं ।"

सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى की फ़िक्रे आख़िरत :

इमाम मुज़नी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि जब मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के पास उन के म-रज़ुल मौत में ह़ाज़िर हुवा तो पूछा : "आप का ह़ाल कैसा है ?" फ़रमाया : "दुन्या से रुख़्सत होने वाला हूं, दोस्तों से जुदा होने वाला हूं, मौत का पियाला पीने वाला हूं, अपने बुरे आ'माल से मिलने वाला हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर होने वाला हूं और मुझे येह भी

www.dawateislami.net

मा'लूम नहीं कि मेरी रूह़ जन्नत में दाख़िल होगी कि मैं उसे मुबारक बाद दूं या जहन्नम में डाली जाएगी कि उस से ता'ज़ियत करूं।" फिर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रो दिये और येह अश्आ़र पढ़ने लगे :

وَلَمَّا قَسَا قَلْبِیْ وَضَاقَتْ مَذَاھِبِیْ جَعَلْتُ الرَّجَا مِنِّیْ لِعَفْوِکَ سُلَّمَا
تُعَاظِمُنِیْ ذَنْبِیْ فَلَمَّا قَرَنْتُہٗ بِعَفْوِکَ رَبِّیْ کَانَ عَفْوُکَ اَعْظَمَا
فَمَازِلْتَ ذَا عَفْوٍ عَنِ الذَّنْبِ لَمْ تَزَلْ تَجُوْدُوْتَعْفُوْمِنَّۃً وَّتَکَرُّمَا
فَلَوْلَاکَ لَمْ یَنْجُ مِنْ اِبْلِیْسَ عَابِدٌ وَکَیْفَ وَقَدْ اَغْوٰی صَفِیَّکَ آدَمَا

तरजमा : (1) जब मेरा दिल सख़्त हो गया और मेरे रास्ते तंग हो गए तो मैं ने तुझ से मुआ़फ़ी की उम्मीद को वासित़ा बना लिया है।

(2) मुझे अपने गुनाह बहुत बड़े लगते थे, मगर ऐ रब عَزَّوَجَلَّ! जब मैं ने इन को तेरे अ़फ़्वो दर गुज़र से मिलाया तो तेरे अ़फ़्वो दर गुज़र को बहुत बड़ा पाया।

(3) तू हमेशा मेरे गुनाहों को मुआ़फ़ करता रहा, तूने हमेशा जूदो करम के साथ मुझे मुआ़फ़ी अ़त़ा फ़रमाई।

(4) अगर तेरा येह करम न होता तो इब्लीस से कोई इ़बादत गुज़ार न बच पाता, क्यूं कि उस लईन ने तो तेरे सफ़ी ह़ज़रते आदम (عَلَیْہِ السَّلَام) को भी बहकाने की कोशिश की थी।

मेरे इस्लामी भाइयो ! जल्द अज़ जल्द गुनाहों से तौबा कर लो और उन के नक़्शे क़दम पर चलो जिन्हों ने तौबा की और बख़्शिश पा गए और जिन्हों ने अपने आप को रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के हुसूल में थका दिया, काश कि तुम उन्हें रातों की तारीकियों में

www.dawateislami.net

देखो कि वोह इबादत में मश्ग़ूल होंगे और अपने रब عَزَّوَجَلَّ की किताब की तिलावत करते होंगे और जिन्हों ने अपनी पेशानियां अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर झुका दीं और अपनी हाजात उस रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश कर दीं जो देखता है मगर ख़ुद नज़र नहीं आता।

चन्द अश्आर

أَلَاقِفْ بِبَابِي عِنْدَ قَرْعِ النَّوَائِبِ وَثِقْ بِي تَجِدْنِي خَيْرَ خِلٍّ وَّصَاحِبِ

وَلَا تَلْتَفِتْ غَيْرِي فَتُصْبِحَ نَادِمًا وَمَنْ يَّلْتَفِتْ غَيْرِي يَعِشْ عَيْشَ خَائِبِ

तरजमा : (1) सुन ! मुसीबतों और परेशानियों में मेरी बारगाह में रुजूअ़ कर, और मुझ पर भरोसा कर, तू मुझे बेहतरीन दोस्त और बेहतरीन साथी पाएगा।

(2) मेरे इलावा किसी और से लौ न लगा वरना तू नादिम व शरमिन्दा होगा और जो भी मेरे इलावा किसी और से लौ लगाता है वोह नुक़्सान व ख़सारे की ज़िन्दगी बसर करता है।

सारे घर वाले मुसल्मान हो गए :

हज़रते सय्यिदुना अबू महफ़ूज़ मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के बचपन ही में अपनी विलायत से सरफ़राज़ फ़रमा दिया था। चुनान्चे उन के भाई हज़रते ईसा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहते हैं कि ''मैं और मेरे भाई मा'रूफ़ एक मक्तब में पढ़ते थे। हम उस वक़्त ईसाई थे, हमारा ईसाई उस्ताद बच्चों को बाप और बेटे का दर्स देता (या'नी येह कहता कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बेटे हैं, مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ) तो मेरे भाई

www.dawateislami.net

मा'रूफ़ चीख़ चीख़ कर अह़द, अह़द (या'नी वोह एक है, वोह एक है) कहते तो ईसाई उस्ताद उन्हें ख़ूब मारता यहां तक कि एक दिन उस ने उन्हें इतना मारा कि वोह मक्तब से भाग गए।

मेरी मां रोती और कहती कि "अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे मा'रूफ़ वापस कर दे तो वोह जिस दीन पर होगा मैं भी उसी दीन की पैरवी करूंगी।" तो कई साल के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी वालिदा के पास आए तो वालिदा ने पूछा कि "बेटा तुम किस दीन पर हो ?" उन्हों ने बताया कि "दीने इस्लाम पर।" मेरी मां ने اَشْهَدُ اَنْ لَّآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ पढ़ा। इस त़रह़ मेरी मां मुसल्मान हुई और हम सब भी मुसल्मान हो गए।"

﴿अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन फ़त्ह़ رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "मैं ने सय्यिदुना बिश्र बिन ह़ारिस رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़्वाब में देखा कि वोह एक बाग़ीचे में बैठे हैं। उन के सामने एक दस्तर ख़्वान है और वोह उस में से खा रहे हैं। मैं ने उन से पूछा : "ऐ अबू नस्र ! **अल्लाह** तआ़ला ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ?" जवाब दिया : "उस ने मुझ पर रह़्म फ़रमाया और मुझे बख़्श दिया और सारी जन्नत को मेरे लिये मुबाह़ फ़रमा दिया और मुझ से फ़रमाया कि "जन्नत के हर फल से खाओ और इस की नहरों से पियो और इस की तमाम ने'मतों से फ़ाएदा उठाओ कि तुम दुन्या में अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात से बचाया करते थे।"

www.dawateislami.net

मैं ने पूछा : "आप के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन ह़म्बल رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ कहां हैं ?" फ़रमाया कि "वोह जन्नत के दरवाज़े पर खड़े हैं और उन सुन्नियों की शफ़ाअ़त कर रहे हैं जो येह कहते थे कि "कुरआन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कलाम है मख़्लूक़ नहीं है ।" मैं ने पूछा कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ?" तो उन्हों ने कहा कि अफ़्सोस ! हाए अफ़्सोस ! हमारे और उन के दरमियान बहुत से पर्दे ह़ाइल हैं । ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ जन्नत के शौक़ और जहन्नम के ख़ौफ़ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत नहीं करते थे बल्कि कुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ के शौक़ में इ़बादत करते थे लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें रफ़ीक़े आ'ला की त़रफ़ उठा लिया और अपने और उन के दरमियान के ह़िजाबात उठा लिये ।"

येही वोह मुजर्रब इक्सीर है लिहाज़ा जिस ने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में कोई ह़ाजत पेश करनी हो तो उसे चाहिये कि ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के मज़ार पर ह़ाज़िर हो कर **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ मांगे तो اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस की दुआ़ ज़रूर क़बूल होगी ।

﴿अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो । اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم﴾

www.dawateislami.net

ग़फ़्लत से बेदारी

ऐ ग़ाफ़िलो ! बेदार हो जाओ, ऐ गुनाहों पर क़ाइम रहने वालो ! बाज़ आ जाओ और नसीह़त ह़ासिल करो,...... ख़ुदा के वासिते ज़रा मुझे येह तो बताओ कि इस से बुरा ह़ाल किस का होगा जिसे उस की ख़्वाहिशात ने (फ़िक्रे आख़िरत से) दूर कर दिया हो,...... उस से ज़ियादा ख़सारा पाने वाला कौन होगा जिस ने अपनी आख़िरत दुन्या के बदले बेच डाली । येह कैसी ग़फ़्लत है जो तुम्हारे दिलों पर छा गई है,...... येह कैसी जहालत है जिस ने तुम्हारे ऐ़बों को तुम्हारी निगाहों से ओझल कर दिया है ?...... क्या तुम अपने इर्द गिर्द मौत की तलवारों को चमक्ते हुए नहीं देखते ह़ालां कि मौत की आहटें तुम्हारे दरमियान वाक़ेअ़ होती रहती हैं और उस की निगाहें तुम पर जमी हुई हैं और उस की आज़्माइश तुम्हारे उ़म्र को मिटाने वाली हैं और उस के तीर तुम में से बहुत सारों को लग चुके हैं और येह तुम्हें भी घेरे में ले चुकी है,...... तो कब तक और किस लिये तुम पीछे रह गए ?...... क्या तुम हमेशा बक़ा की त़मअ़ रखते हो ?...... हरगिज़ नहीं **वाह़िद व समद** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मौत ताक में है येह न किसी बाप को छोड़ती है और न बेटे को । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए अपने मौला عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में ख़ूब कोशिश करो और गुनाहों से दूर हो जाओ ताकि वोह तुम से मह़ब्बत फ़रमाए ।

आख़िरत का ख़ौफ़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन क़िदामा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिस رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की एक मदहोश शख़्स से मुलाक़ात हुई तो वोह उन्हें चूमने लगा और कहने लगा : "ऐ अबू नस्र ! मेरे सरदार।" ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने उसे खु़द से अलग न फ़रमाया। जब आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ लौटने लगे तो आप का चेहरा आंसूओं से तर हो गया और आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़रमाया : "येह वोह शख़्स है जो अपने गुमान के मुत़ाबिक़ एक आदमी से उस की नेकी की वज्ह से मह़ब्बत करता है शायद येह मह़ब्बत करने वाला तो नजात पा जाए जब कि मह़बूब (या'नी मैं) नहीं जानता कि इस का क्या ह़ाल होगा।" फिर आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फल फ़रोशों के पास रुक कर फल देखने लगे मैं ने पूछा : "शायद आप को फलों की ख़्वाहिश है ?" फ़रमाया : "नहीं बल्कि मैं तो येह देख रहा हूं कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने ना फ़रमान को येह ने'मतें खिला रहा है तो अपने फ़रमां बरदार को क्या कुछ नहीं खिलाएगा और जन्नत में उसे क्या कुछ खिलाएगा पिलाएगा।"

﴿अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। ﴿اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم﴾

मेरे इस्लामी भाई ! हाए अफ़्सोस ! ऐ ग़ाफ़िल ! कब तक सोता रहेगा ? क्या गुज़रने वाले दिन और रातें तुझे नहीं जगातीं ? मह़ल्लात और खै़मों के मकीन कहां गए ? खु़दा की क़सम ! मौत का पियाला उन पर घूम गया और मौत ने उन्हें इस त़रह़ उठा लया जिस त़रह़ कबूतर गन्दुम का दाना उठाता है। मख़्लूक़ को दुन्या में दवाम नहीं, सह़ीफ़े लपेट दिये गए और क़लम खु़श्क हो गए।

www.dawateislami.net

चन्द अश्आ़र

دَعُوْنِیْ عَلٰی نَفْسِیْ اَنُوْحُ وَاَنْدُبُ ‏ بِدَمْعٍ غَزِیْرٍ وَّاکِفٍ یَّتَصَبَّبُ

دَعُوْنِیْ عَلٰی نَفْسِیْ اَنُوْحُ لِاَنَّنِیْ ‏ اَخَافُ عَلٰی نَفْسِیْ الضَّعِیْفَۃِ تُعْطَبُ

فَمَنْ لِیْ اِذَا نَادَی الْمُنَادِیْ بِمَنْ عَصٰی ‏ اِلٰی اَیْنَ اَلْجَا اَمْ اِلٰی اَیْنَ اَذْھَبُ

فَیَا طُوْلَ حُزْنِیْ ثُمَّ یَاطُوْلَ حَسْرَتِیْ ‏ اِذَا کُنْتُ فِیْ نَارِ الْجَحِیْمِ اُعَذَّبُ

وَقَدْظَھَرَتْ تِلْکَ الْقَبَائِحُ کُلُّھَا ‏ وَقَدْ قُرِّبَ الْمِیْزَانُ وَالنَّارُ تَلْھَبُ

وَلٰکِنَّنِیْ اَرْجُوْ الْاِلٰہَ لَعَلَّہٗ ‏ بِحُسْنِ رَجَائِیْ فِیْہِ لِیْ یَتَوَھَّبُ

وَیُدْخِلُنِیْ دَارَالْجِنَانِ بِفَضْلِہٖ ‏ فَلَا عَمَلٌ اَرْجُوْ بِہٖ اَتَقَرَّبُ

سِوٰی حُبِّ طٰہٰ الْھَاشِمِیِّ مُحَمَّدٍ ‏ وَاَصْحَابِہٖ وَالْاٰلِ مَنْ قَدْ تَرَھَّبُوْا

तरजमा : (1) मुझे अपनी जान पर अफ़्सोस करने दो और थोड़ा थोड़ा कर के बहुत ज़ियादा आंसू बहाने वाले की त़रह़ नादिम होने दो।

(2) मुझे अपने नफ़्स पर अफ़्सोस करने दो क्यूं कि मैं अपनी कमज़ोर जान के हलाकत में डाले जाने से डरता हूं।

(3) जब मुनादी गुनहगारों को पुकारेगा उस वक़्त मेरा कौन होगा ? मैं कहां पनाह लूंगा, या मैं किस त़रफ़ भागूंगा ?

(4) हाए ! मेरा त़वील ग़म और फिर लम्बी ह़सरत, जब कि मैं नारे दोज़ख़ में अ़ज़ाब दिया जाऊंगा। (وَالعِیَاذُبِاللہ عَزَّوَجَلَّ)

(5) तमाम बुराइयां ज़ाहिर हो चुकी हैं, मीज़ाने अ़मल भी क़रीब कर दिया गया और आग भड़क रही है।

(6) मगर मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उम्मीद करता हूं, शायद वोह मेरे हुस्ने ज़न के सबब मुझ पर करम फ़रमाए।

www.dawateislami.net

(7) और अपने फ़ज़्ल से मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे, मेरे पास तो कोई हुस्ने अ़मल ऐसा नहीं जिस के सबब कुर्ब की उम्मीद रखूं।

(8) बस ताहा व हाशिमी हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप की आल व अस्हाब की महब्बत है जो हक़ीक़ी इबादत गुज़ार थे।

दिला ग़ाफ़िल न हो यकदम येह दुन्या छोड़ जाना है — बाग़ीचे छोड़ कर ख़ाली ज़मीन अन्दर समाना है

तेरा नाज़ुक बदन भाई जो लैटे सैज फूलों पर — येह होगा एक दिन बे जां इसे कीड़ों ने खाना है

तू अपनी मौत को मत भूल कर सामान चलने का — ज़मीं की ख़ाक पर सोना है ईंटों का सिरहाना है

न बेली हो सके भाई न बेटा बाप ते माई — तो क्यूं फिरता है सौदाई अ़मल ने काम आना है

कहां है ज़ोरे नमरूदी कहां है तख़्ते फ़िरऔ़नी — गए सब छोड़ येह फ़ानी अगर नादान दाना है

अ़ज़ीज़ा याद कर जिस दिन कि इ़ज़्राईल आएंगे — न जावे कोई तेरे संग अकेला तूने जाना है

जहां के शग़्ल में शाग़िल ख़ुदा के ज़िक्र से ग़ाफ़िल — करे दा'वा कि येह दुन्या मेरा दाइम ठिकाना है

ग़ुलाम इक दम न कर ग़फ़्लत हयाती पर न हो ग़ुर्रा — ख़ुदा की याद कर हर दम कि जिस ने काम आना है

ह़िसाबे दुन्या :

हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि "क़ियामत के दिन माले ह़लाल जम्अ़ करने वाले और उसे ह़लाल जगह ख़र्च करने वाले एक शख़्स को लाया जाएगा फिर उस से कहा जाएगा कि "ह़िसाब के लिये खड़े रहो।" फिर उस से हर दाने, ज़र्रे और हर हर दानिक़ (दिरहम के छटे हिस्से) का ह़िसाब लिया जाएगा कि उस ने उसे कहां से ह़ासिल किया और कहां ख़र्च किया।"

फिर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ इब्ने आदम ! तू ऐसी दुन्या का क्या करेगा जिस के ह़लाल का ह़िसाब देना पड़ेगा और ह़राम की सज़ा भुगतना पड़ेगी।" (كنز العمال، كتاب الاخلاق، قسم الاقوال، رقم ٦٣٢٥، ج ٣، ص ٩٧)

चन्द अश्आर

فَلَا تَأْمَنْ لِذِى الدُّنْيَا صَلَاحًا　　فَاِنَّ صَلَاحَهَا عَيْنُ الْفَسَادِ

وَلَا تَفْرَحْ لِمَالٍ تَقْتَنِيْهِ　　فَاِنَّكَ فِيْهِ مَعْكُوْسُ الْمُرَادِ

तरजमा : (1) दुन्यादार की ख़ुशह़ाली पर मुत़्मइन न होना, क्यूं कि उस की ख़ुशह़ाली तो मह़्ज़ फ़साद है।

(2) और अपने कमाए हुए माल पर ख़ुशी मत कर क्यूं कि इस से तू अपनी मुराद ह़ासिल नहीं कर सकता।

नज़्अ़ के आ़लम में मुस्कुराहट :

ह़ज़रते सय्यिदुना बा यज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने इन्तिक़ाल के वक़्त रोने लगे फिर हंस दिये फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه येह दुन्या छोड़ कर रुख़्सत हो गए तो उन के इन्तिक़ाल के बा'द किसी ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो पूछा : "आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इन्तिक़ाल से क़ब्ल क्यूं रोए और फिर क्यूं हंसे ?" तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "जब मैं नज़्अ़ के आ़लम में था तो शैत़ान मल्ऊ़न मेरे पास आया और मुझ से कहने लगा : "ऐ बा यज़ीद तुम मेरे जाल से आज़ाद हो गए।" तो मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गिर्या व ज़ारी करने लगा पस आस्मान से एक फ़िरिश्ता मेरे पास उतरा और मुझ से कहने लगा : "ऐ बा यज़ीद ! रब्बुल आ़-लमीन عَزَّوَجَلَّ तुझ से फ़रमाता है : "डरो मत और ग़म

www.dawateislami.net

न करो और जन्नत की ख़ुश ख़बरी सुन लो।" तो मैं हंसने लगा और दुन्या से रुख़्सत हो गया।"

﴿**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** ﴿اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم﴾

चन्द अश्आ़र

وَقَفْتُ وَاَجْفَانِیْ تَفِیْضُ دُمُوْعُهَا وَقَلْبِیْ مِنْ خَوْفِ الْقَطِیْعَةِ هَائِمٌ

وَكُلُّ مُسِیْءٍ اَوْبَقَتْهُ ذُنُوْبُهُ ذَلِیْلٌ حَزِیْنٌ مُطْرِقُ الطَّرْفِ نَادِمٌ

فَیَارَبِّ ذَنْبِیْ قَدْ تَعَاظَمَ قَدْرُهُ وَاَنْتَ بِمَا اَشْكُوْهُ یَارَبِّ عَالِمٌ

وَاَنْتَ رَؤُوْفٌ بِالْعِبَادِ مُهَیْمِنٌ حَلِیْمٌ كَرِیْمٌ وَاسِعُ الْعَفْوِ رَاحِمٌ

तरजमा : (1) मैं रुक गया और मेरी आंखें अपने आंसू बहा रही हैं और दिल जुदाई के ग़म से हैरान व परेशान है।

(2) हर रुस्वा शख़्स को उस के गुनाहों ने हलाक व बरबाद कर दिया, वोह ज़लील, ग़मगीन और नदामत से आंखें झुकाए हुए है।

(3) ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ! मेरा गुनाह बहुत ज़ियादा तुवाना हो गया है, और ऐ रब عَزَّوَجَلَّ! तू मेरी फ़रियाद को ख़ूब जानता है।

(4) तू अपने बन्दों पर मेह्रबान है, (उन की) हि़फ़ाज़त फ़रमाने वाला, ह़लीम, करीम और बहुत ज़ियादा अ़फ़्वो दर गुज़र करने वाला मेह्रबान है।

मेरे इस्लामी भाई !

तूने कितने दिन उम्मीद में गुज़ार दिये और तूने शरीअ़त के कितने अह़काम ज़ाएअ़ कर दिये और बहुत से सुनने वाले कान ऐसे हैं जिन पर ख़ौफ़ दिलाने से कोई असर नहीं होता।

www.dawateislami.net

आख़िरी ख़्वाहिश :

जब ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात का वक़्त हुवा तो उन से पूछा गया : "क्या आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को किसी चीज़ की ख़्वाहिश है ?" इर्शाद फ़रमाया : "ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखना चाहता हूं ।"

(حلیۃ الاولیاء، جابر بن عبد زید، رقم ۳۳۴۴، ج ۳، ص ۱۰۵، بدون فبلغ ذالک...الخ)

जब येह बात ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तक पहुंची तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन के पास तशरीफ़ लाए और पूछा : "कैसा मह़सूस कर रहे हैं ।" जवाब दिया : "मैं समझता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हुक्म पूरा होने वाला है, ऐ अबू सईद ! मुझे **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी हुई कोई ह़दीसे मुबा-रका सुनाइये ।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ऐ जाबिर ! सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "मोमिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से किसी भलाई पर होता है, अगर वोह तौबा करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे क़बूल फ़रमाता है और अगर उ़ज़्र पेश करता है तो उस का उ़ज़्र क़बूल फ़रमाता है और इस की अ़लामत येह है कि वोह मोमिन रूह़ निकलने से पहले अपने दिल में ठन्डक मह़सूस करता है ।"

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "**अल्लाहु** अक्बर ! बेशक मैं अपने दिल में ठन्डक मह़सूस कर रहा हूं ।" फिर दुआ़ की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! बेशक मैं तेरे सवाब की त़मअ़ रखता हूं, लिहाज़ा तू मेरे गुमान को सच कर दे और मेरे ख़ौफ़

www.dawateislami.net

और घबराहट को दूर फ़रमा दे।" फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कलिमए शहादत पढ़ा और इन्तिक़ाल फ़रमा गए।"

तौबा का सबब :

हज़रते सय्यिदुना दावूद ताई رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तौबा का सबब येह था कि आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक क़ब्रिस्तान में दाख़िल हुए तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक क़ब्र के क़रीब किसी औ़रत[1] को रोते हुए पाया और येह अश्आ़र पढ़ते हुए सुना :

تَزِیْدُ بِلٰی فِیْ کُلِّ یَوْمٍ وَّلَیْلَۃٍ — وَتَسْأَلُ لِمَ تَبْلٰی وَاَنْتَ حَبِیْبُ

مُقِیْمٌ اِلٰی اَنْ یَّبْعَثَ اللّٰہُ خَلْقَہٗ — لِقَاؤُکَ لَا یُرْجٰی وَاَنْتَ قَرِیْبُ

तरजमा : (1) हर दिन रात मेरे ग़म में इज़ाफ़ा हो रहा है और तू पूछता है क्यूं ग़मज़दा है, ह़ालां कि तू ही मेरा मह़बूब है।

(2) तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के (बरोज़े क़ियामत) अपनी मख़्लूक़ को खड़ा करने तक यहीं रहोगे, बा वुजूद क़रीब होने के तुम्हारी मुलाक़ात की कोई उम्मीद नहीं।

---

1 : हज़रते सदरुश्शरीअ़ह मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ के ह़वाले से तह़रीर फ़रमाते हैं : "और अस्लम येह है कि औ़रतें मुत्लक़न मन्अ़ की जाएं कि अपनों की क़ुबूर की ज़ियारत में तो वोही जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ है और सालिह़ीन की क़ुबूर पर या ता'ज़ीम में ह़द से गुज़र जाएंगी या बे अ-दबी करेंगी कि औ़रतों में दोनों बातें ब कसरत पाई जाती हैं।" (बहारे शरीअ़त, जिल्द 1, ह़िस्सा : 4, स. 89)

www.dawateislami.net

फ़ित्नए दुन्या

प्यारे इस्लामी भाइयो !

इन नुफ़ूस को लगाम दो और दिलों को गुनाहों से रोक लो और समझदारी से इब्रत के सहीफ़ों को पढ़ो,...... ऐ ख़्वाहिशात में मुब्तला रहने वालो ! तुम्हारे पीछे मौत लगी हुई है,...... ऐ गुनाहों में मुन्हमिक रहने वालो ! ऐ सोने वालो ! बेदार हो जाओ,...... तुम ने कितने साल बरबाद कर दिये,...... सारी दुन्या ख़्वाबे ग़फ़्लत में है क्यूं कि इस के झूटे ख़्वाब बहुत सुहाने हैं और बूढ़े की अ़क़्ल बच्चों की सी है लेकिन जिस ने अपने नफ़्स पर क़ाबू पा लिया ह़क़ीक़त में वोही अ़क़्ल मन्द है,...... ग़फ़्लत इन्तिहा को पहुंच चुकी है और सज़ाएं क़रीब आ गईं...... पस हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं और हमें उसी की त़रफ़ लौट कर जाना है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सलामती अ़त़ा फ़रमाए ।

दुन्या से महब्बत का अन्जाम :

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा **रूहुल्लाह** عَلَيْهِ السَّلَام एक बस्ती पर से गुज़रे तो उस के तमाम बाशिन्दों को गलियों में मुंह के बल गिरे हुए मुर्दा ह़ालत में पाया । आप عَلَيْهِ السَّلَام को बहुत तअ़ज्जुब हुवा और फ़रमाया : "ऐ ह़वारियो ! येह लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब और ग़ज़ब में मुब्तला हो गए हैं ।" तो ह़वारियों ने अ़र्ज़ की : "ऐ रूह़ल्लाह ! عَلَيْهِ السَّلَام हम इन का वाक़िआ़ जानना चाहते हैं ।" ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उन के बारे में जानने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की त़रफ़ वह्य फ़रमाई : "जब रात का वक़्त हो तो बस्ती वालों को आवाज़ देना येह तुम्हें जवाब देंगे ।" फिर जब रात हुई तो ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام एक टीले पर तशरीफ़ लाए और बस्ती

www.dawateislami.net

वालों को पुकारा तो उन में से एक शख़्स ने जवाब दिया : "लब्बैक या **रूहल्लाह** ।" तो हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उस से पूछा : "तुम्हारा वाक़िआ क्या है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "ऐ **रूहल्लाह** عَلَيْهِ السَّلَام ! रात को हम चैन से सोए हुए थे और सुब्ह़ को हलाकत में मुब्तला हो गए।" पूछा : "ऐसा क्यूंकर हुवा ?" अ़र्ज़ की : "दुन्या की महब्बत और बदकारों की पैरवी की वज्ह से।" हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने पूछा : "दुन्या से तुम्हारी महब्बत कैसी थी ?" अ़र्ज़ की : "जैसी एक बच्चे को अपनी मां से होती है जब वोह हमारे पास आती तो हम ख़ुश होते और जब हम से जुदा होती तो हम ग़मगीन होते और रोने लगते।"

फिर हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने पूछा : "ऐ फुलां ! तुम्हारे साथियों को क्या हुवा वोह क्यूं नहीं जवाब देते ?" अ़र्ज़ की : "इन के जबड़ों में बहुत त़ाक़त वर फ़िरिश्तों ने आग की लगामें डाल रखी हैं।" फ़रमाया : "तू इन में से कैसे जवाब दे रहा है ?" अ़र्ज़ की : "मैं इन के साथ तो हूं मगर ह़क़ीक़त में इन में से नहीं, जब इन पर अ़ज़ाब आया तो इन के साथ साथ मैं भी अ़ज़ाब में मुब्तला हो गया मैं इस वक़्त जहन्नम के किनारे पर लटका हुवा हूं और मैं नहीं जानता कि मुझे इस से नजात मिलेगी या मैं जहन्नम में धकेल दिया जाऊंगा।" وَالعِيَاذُ بِاللّٰه

(حلیۃ الاولیاء، وھب بن منبہ، رقم ۴۷۶۲، ج۴، ص۶۴۔ بتصرفٍ)

ऐ ज़िन्दगी के मुसाफ़िर ! तू ह़द से गुज़र चुका है,...... अपनी आज़्माइश पर आंसू बहा कहीं ऐसा न हो कि तुझे धुत्कार दिया जाए, ऐ वोह शख़्स ! जिस की अक्सर उ़म्र गुज़र गई और गुज़रा हुवा वक़्त लौट नहीं सकता,...... नसीह़तों ने तेरी रहनुमाई की और बुढ़ापे ने तुझे ख़बरदार कर दिया कि मौत क़रीब है और

www.dawateislami.net

ज़बाने ह़ाल से पुकार पुकार कर कह रही है :

يٰۤاَیُّهَا الۡاِنۡسَانُ اِنَّکَ کَادِحٌ اِلٰی رَبِّکَ کَدۡحًا (پ۳۰،الانشقاق:٦)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ आदमी बेशक तुझे अपने रब की त़रफ़ ज़रूर दौड़ना है।

चन्द अश्आ़र

لَمَّا انۡقَضٰی زَمَنُ التَّوَاصُلِ وَالرِّضَا   قَدۡ صِرۡتَ تَطۡلُبُ رَدَّ اَمۡرٍ قَدۡ مَضٰی

هَلَّا اَتَیۡتَ وَوَقۡتُ وَصۡلِکَ مُمۡکِنٌ   وَبَیَاضُ شَیۡبِکَ فِی الۡعَوَارِضِ مَا اَضَا

तरजमा : (1) जब मिलने और राज़ी होने का ज़माना गुज़र गया तो तू गुज़रे हुए मुआ़-मले को लौटाने का मुत़ा-लबा करने लगा।

(2) तू क्यूं न आया ह़ालां कि तुझ से मुलाक़ात का वक़्त मौजूद था और तेरे बुढ़ापे की सफ़ेदी दांतों (की सफ़ेदी) से ज़ियादा चमकदार थी।

प्यारे इस्लामी भाई !

येह तौबा व इस्तिग़फ़ार करने और गुनाहों से बाज़ आ जाने का वक़्त है, एक रिवायत में है कि "जिस की ज़िन्दगी के चालीस साल गुज़र गए और उस की भलाई उस की बुराई पर ग़ालिब नहीं आई तो उसे चाहिये वोह जहन्नम के लिये तय्यार हो जाए।"

(تنزیہ الشریعۃ المرفوعۃ، کتاب المبتداء، الفصل الثانی، ج۱،ص۲۰۵، رقم ٦٨، بتصرفٍ)

चन्द अश्आ़र

اَتَیۡتُکَ رَاجِیًا یَا ذَا الۡجَلَالِ   فَفَرِّجۡ مَا تَرٰی مِنۡ سُوۡءِ حَالِیۡ

عَصَیۡتُکَ سَیِّدِیۡ وَیۡلِیۡ بِجَهۡلِیۡ   وَعَیۡبُ الذَّنۡبِ لَمۡ یَخۡطُرۡ بِبَالِیۡ

اِلٰی مَنۡ یَّشۡتَکِی الۡمَمۡلُوۡکُ اِلَّا   اِلٰی مَوۡلَاهُ یَا مَوۡلَی الۡمَوَالِیۡ

فَوَیۡلِیۡ، لَیۡتَ اُمِّیۡ لَمۡ تَلِدۡنِیۡ   وَلَا اَعۡصِیۡکَ فِیۡ ظُلَمِ اللَّیَالِیۡ

www.dawateislami.net

وَهَا اَنَا ذَا عُبَيْدُكَ عَبْدُ سُوْءٍ — بِبَابِكَ وَاقِفٌ يَا ذَا الْجَلَالِ
فَاِنْ عَاقَبْتَ يَا رَبِّىْ، فَاِنِّىْ — مُحِقٌّ بِالْعَذَابِ وَبِالنَّكَالِ
وَاِنْ تَعْفُ فَعَفْوُكَ اَرْتَجِيْهِ — وَيَحْسُنُ اِنْ عَفَوْتَ قَبِيْحُ حَالِىْ

तरजमा : (1) ऐ ज़ुल जलाल ! मैं तुझ से उम्मीद लगाए तेरी बारगाह में ह़ाज़िर हूं, मेरी बदह़ाली तुझ पर इयां है, इस को दूर फ़रमा दे।

(2) (ऐ) मेरे आक़ा ! मैं ने तेरी ना फ़रमानी की, मुझे अपनी जहालत पर अफ़्सोस है क्यूं कि मेरे दिल पर गुनाह के ऐ़ब का खटका तक न गुज़रा।

(3) ऐ आक़ाओं के आक़ा ! ग़ुलाम अपने आक़ा के सिवा किस से फ़रियाद करे।

(4) ऐ काश ! मुझे मेरी मां न जनती और मैं रात की तारीकी में तेरी ना फ़रमानी न करता।

(5) मैं तेरा वोही अदना सा गुनाहगार बन्दा हूं, ऐ ज़ुल जलाल ! तेरी बारगाह में ह़ाज़िर हुवा हूं।

(6) ऐ मेरे परवर्द गार ! अगर तू मेरी पकड़ फ़रमाए तो बेशक मैं अ़ज़ाब और सज़ा के लाइक़ हूं।

(7) और अगर तू मुआ़फ़ कर दे तो मैं तो तेरे अ़फ़्व ही का उम्मीद वार हूं और अगर तू मेरी बद आ'माली से दर गुज़र फ़रमाए (तो मेरे ह़क़ में) बहुत अच्छा होगा।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "ऐ मेरे बन्दो ! क्या तुम नहीं जानते कि मैं ने दुन्या को तक्लीफ़ और इम्तिह़ान का घर बनाया है और मैं फ़ज़्लो एह़सान के मरातिब उसी को बख़्शता हूं जो दुन्या में

www.dawateislami.net

लग्ज़िश और गुनाह की जगहों से दूर रहता है,...... फिर तुम्हें क्या हुवा कि तुम मेरे दरवाज़े पर नहीं आए और तुम ने मेरे फ़ज़्लो सवाब में रग़बत नहीं की और न ही मेरी पकड़ और अ़ज़ाब से ख़ौफ़ ज़दा हुए।''

ऐ वोह शख़्स जिस की ग़फ़्लत ज़ाहिर और मदहोशी त़वील हो गई ! ख़ुद पर मौला عَزَّوَجَلَّ के एह़सान व करम को याद कर,...... ख़ुदा की क़सम ! तुम पर लाज़िम है कि तुम तौबा के ज़रीए अपनी पीठ से गुनाहों को झाड़ दो और दिल से अ़ल्लामुल ग़ुयूब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मु–तवज्जेह हो जाओ और अपने चेहरों को आंसूओं से धो डालो और आ़जिज़ी व इन्किसारी की चादरें ओढ़ लो।

चन्द अश्आ़र

رَكِبْتُ مَآثِمِىْ فَلَقِيْتُ ذُلًّا ‏ وَسَالَتْ عَبْرَتِىْ طَلًّا وَّوَبْلًا

وَصِرْتُ اُعَاتِبُ الْقَلْبَ الْمُبَلَّا ‏ اِلٰى مَنْ يَّشْتَكِى الْمَمْلُوْكُ اِلَّا

اِلٰى مَوْلَاهُ يَامَوْلَى الْمَوَالِىْ ‏ فَلُطْفُكَ بِىْ اِلٰهَ الْعَرْشِ اَوْلٰى

तरजमा : (1) मैं गुनाहों पर गुनाह करता रहा ह़त्ता कि रुस्वाई को जा पहुंचा और मेरे आंसू हलकी और तेज़ बारिश की मानिन्द बह पड़े।

(2) मैं परागन्दा दिल को मलामत करने लग गया, येह बन्दा किस की बारगाह में फ़रियाद करे।

(3) हां ! अपने मौला عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में, ऐ आक़ाओं के आक़ा ! ऐ अ़र्श के मा'बूद ! मुझे तेरे लुत़्फ़ो करम की बेह़द ज़रूरत है।

www.dawateislami.net

फ़िक्रे आख़िरत से ग़ाफ़िल हो जाने वालों को तम्बीह

मेरे इस्लामी भाइयो !

ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो जाओ क्यूं कि ग़फ़्लत की नींद बहुत महंगी पड़ेगी और आख़िरत की तय्यारी के लिये कमर बांध लो क्यूं कि दुन्या तो एक मुसाफ़िर ख़ाना है और मुसाफ़िर ख़ाने में पहर को (मह्‌ज़) आराम किया जाता है।

मन्क़ूल है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने किसी नबी عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह्‌य फ़रमाई कि "ऐ मेरे नबी عَلَيْهِ السَّلَام ! मेरे अह्‌काम की ना फ़रमानी और मुख़ा-लफ़त करने वालों और मेरे अह्‌काम की पैरवी करने और मेरा ज़िक्र करने वालों, मेरे दरवाज़े को लाज़िम पकड़ने वालों, मेरे काम में सारी ज़िन्दगी गुज़ार देने वालों और अपने रुख़्सार को मेरे दरवाज़े पर रगड़ने वालों में फ़र्क़ करो।" **हाए** गुनहगारों की रुस्वाई और हाए बात़िल परस्तों की नदामत......

चन्द अश्आर

أُخْلُ بِنَفْسِكَ اِنْ اَرَدْتَّ تَقَرُّبًا ۔۔۔ وَدَعِ الْاَنَامَ بِمَعْزِلٍ يَاعَانِىْ

وَاعْمَلْ عَلٰى قَطْعِ الْعَلَائِقِ جُمْلَةً ۔۔۔ فِى الْعَيْشِ فِىْ خَرْقِ الْحِجَابِ الْفَانِىْ

तरजमा : (1) ऐ फ़िक्र मन्द ! अगर तू क़ुर्ब चाहता है तो तन्हाई इख़्तियार कर ले और लोगों को एक त़रफ़ छोड़ दे।

(2) और पर्दए फ़ानी को चाक करने के लिये सारी ज़िन्दगी तमाम तअ़ल्लुक़ात से अ़ला-ह़दा हो जा।

मुफ़्लिस कौन ?

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

ने एक दिन अपने सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان से इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो कि मुफ़्लिस कौन है ?" अ़र्ज़ की : "या **रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हमारे नज़्दीक मुफ़्लिस वोह है जिस के पास न तो दीनार हों न ही दिरहम हों।" तो हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया : "ऐसा नहीं है बल्कि मुफ़्लिस तो वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़े, ज़कात और स-दक़ा ले कर आएगा लेकिन उस ने किसी को गाली दी होगी, किसी को थप्पड़ मारा होगा, किसी का माल दबा लिया होगा और किसी का ख़ून बहाया होगा तो उसे इस की नेकियां दी जाएंगी और फिर एक शख़्स आएगा उसे भी इसी त़रह़ इस की नेकियां दे दी जाएंगी यहां तक कि लोगों के हुक़ूक़ अदा करने से पहले ही इस की नेकियां ख़त्म हो जाएंगी फिर इसे उन के गुनाह दे दिये जाएंगे तो इसे उन लोगों के गुनाहों की वज्ह से जहन्नम में फेंक दिया जाएगा, येही शख़्स मुफ़्लिस है।"

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب تحریم الظلم، رقم ۲۵۸۱، ص ۱۳۹۴ بتغیرٍ قلیلٍ)

نَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الۡحِرۡمَانِ या'नी हम ऐसी मह़रूमी से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहते हैं।

ख़िदमत गार अज़्दहा :

एक बुज़ुर्ग رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيۡه फ़रमाते हैं कि "मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡاَكۡرَم के पास मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर हुवा तो उन्हें मस्जिद में तलाश किया मगर वोह मुझे न मिले तो मुझे बताया गया कि "वोह अभी अभी मस्जिद से

www.dawateislami.net

निकले हैं।" मैं उन की तलाश में निकला और देखा कि वोह सख़्त गरमी के मौसिम में वादी के बीच में सोए हुए हैं। उन के सिरहाने एक बहुत बड़ा अज़्दहा बैठा हुवा था। उस के मुंह में यास्मीन की एक टहनी थी जिस के ज़रीए वोह आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मख्खियां उड़ा रहा था मुझे इस पर तअ़ज्जुब हुवा उसी वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (जिस ने हर चीज़ को बोलना सिखाया) ने अज़्दहे को कुव्वते गोयाई अ़ता फ़रमाई तो उस अज़्दहे ने मुझ से कहा : "ऐ शख़्स ! तुम क्यूं हैरान हो ?" मैं ने कहा : "तुम्हारे इस फ़े'ल पर हैरान हूं और इस से ज़ियादा तुम्हारे बोलने पर हैरान हूं कि तू तो आदमी का दुशमन है।" तो अज़्दहे ने जवाब दिया : "ख़ुदाए अ़ज़ीम की क़सम ! हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़क़त गुनाहगारों का दुशमन बनाया है जब कि नेकोकारों के तो हम ताबेअ़ दार हैं।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

चन्द अश्आ़र

فِعَالِیْ قَبِیْحٌ وَّظَنِّیْ حَسَنْ ‏ ‏ وَرَبِّیْ غَفُوْرٌ كَثِیْرُ الْمِنَنْ
تُبَارِزُ مَوْلَاكَ یَامَنْ عَصٰی ‏ ‏ وَتَخْشٰی مِنَ الْجَارِ لَمَّا فَطِنْ
رَكِبْتُ الْمَعَاصِیَ وَشَیْبِیْ مَعِیَ ‏ ‏ فَوَاللّٰهِ یَانَفْسُ مَاذَا حَسَنْ
فَقُوْمِیْ الدَّیَاجِیْ لَهٗ وَارْغَبِیْ ‏ ‏ وَقُوْلِیْ لَهٗ یَاعَظِیْمَ الْمِنَنْ
وَقُوْلِیْ لَهٗ یَاعَظِیْمَ الرَّجَا ‏ ‏ اِذَااَنْتَ لَمْ تَعْفُ عَنِّیْ فَمَنْ
بِحَقِّ النَّبِیِّ هُوَالْمُصْطَفٰی ‏ ‏ بِحَقِّ الْحُسَیْنِ بِحَقِّ الْحَسَنْ
اَیُدْفَعُ مِثْلِیْ اِلٰی مَالِكٍ ‏ ‏ وَتَعْلَمُ اَنِّیْ ضَعِیْفُ الْبَدَنْ

www.dawateislami.net

तरजमा : (1) मेरे आ'माल बुरे हैं और (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से) गुमान अच्छा है, और मेरा रब बख़्शने वाला, बहुत ज़ियादा एह़सान फ़रमाने वाला है।

(2) ऐ गुनाह के मुर-तकिब ! तू अपने मौला عَزَّوَجَلَّ को (मुक़ाबले का) चेलेन्ज करता है और पड़ोसी कोई होशियारी दिखाए तो तू उस से डरता है।

(3) बूढ़ा होने के बा वुजूद मैं गुनाहों पर गुनाह करता रहा, ऐ मेरे नफ़्स ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह अच्छी बात नहीं है।

(4) तो (ऐ मेरे नफ़्स !) तू उस की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ कर : "ऐ बड़े एह़सान के मालिक !"

(5) और उस से दुआ़ कर : "ऐ बड़ी से बड़ी उम्मीद को पूरा करने वाले ! जब तू अ़फ़्वो दर गुज़र नहीं फ़रमाएगा तो कौन फ़रमाएगा ?"

(6) हु़ज़ूर नबिय्ये मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े और ह़ज़रते ह़सन व हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के तु़फ़ैल मग़्फ़िरत फ़रमा दे।

(7) क्या मेरे जैसा ना तुवां, सय्यिदुना मालिक عَلَیْہِ السَّلَام (दारोग़ए जहन्नम) के सिपुर्द करने के क़ाबिल है ? तू तो जानता है कि मेरा बदन कमज़ोर है।

मां बेटे की मौत :

एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی लोगों को वा'ज़ो नसीह़त करने बैठे तो लोग उन के क़रीब आने के लिये एक दूसरे को धकेलने लगे तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उन की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो कर फ़रमाया : "ऐ मेरे भाइयो ! आज तुम मेरा

www.dawateislami.net

कुर्ब पाने के लिये एक दूसरे को धकेल रहे हो, कल क़ियामत में तुम्हारा क्या ह़ाल होगा जब परहेज़ गारों की मजालिस क़रीब होंगी जब कि गुनहगारों की मजालिस को दूर कर दिया जाएगा, जब कम बोझ वालों (या'नी नेकोकारों) से कहा जाएगा कि "पुल सिरात़ उ़बूर कर लो।" और ज़ियादा बोझ वालों (या'नी गुनाहगारों) से कहा जाएगा कि "जहन्नम में गिर जाओ।" आह ! मैं नहीं जानता कि मैं ज़ियादा बोझ वालों के साथ जहन्नम में गिर पड़ूंगा या थोड़े बोझ वालों के साथ पुल सिरात़ उ़बूर कर जाऊंगा।"

फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه रोने लगे यहां तक कि आप पर ग़शी त़ारी हो गई। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के क़रीब बैठे हुए लोग भी रोने लगे। फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उन की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और पुकार कर फ़रमाया : "ऐ भाइयो ! क्या तुम जहन्नम के ख़ौफ़ से नहीं रो रहे ? सुन लो कि जो शख़्स जहन्नम के ख़ौफ़ से रोता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस दिन जहन्नम से आज़ाद फ़रमाएगा जिस दिन मख़्लूक़ को ज़न्जीरों और बेड़ियों से खींचा जा रहा होगा, ऐ भाइयो ! क्या तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के शौक़ में नहीं रो रहे ? सुन लो कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के शौक़ में रोएगा क़ियामत के दिन जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रह़मत और मग़्फ़िरत के साथ तजल्ली फ़रमाएगा और जब गुनहगारों पर उस का ग़ज़ब सख़्त होगा तो वोह उस दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की न-ज़रे रह़मत से मह़रूम न रहेगा। ऐ भाइयो ! कहीं तुम क़ियामत की प्यास की वज्ह से तो नहीं रो रहे ? जिस दिन मख़्लूक़ का ह़श्र होगा तो उन के होंट ख़ुश्क होंगे तो वोह

www.dawateislami.net

मुस्त़फ़ा करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हौज़े कौसर के इ़लावा कहीं पानी न पा सकेंगे तो एक क़ौम उस हौज़ से पानी पियेगी जब कि दूसरों को उस से रोक दिया जाएगा। सुन लो कि जो उस दिन की प्यास के ख़ौफ़ से रोएगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे फ़िरदौस के चश्मों से पानी पिलाएगा।''

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने पुकार कहा : ''हाए ! अगर क़ियामत के दिन मेरी प्यास मुस्त़फ़ा करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हौज़ से न बुझाई गई तो मेरे ख़सारे का क्या आ़लम होगा ? '' फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه रोते हुए फ़रमाने लगे कि ''ख़ुदा की क़सम ! एक दिन मेरा गुज़र एक इ़बादत गुज़ार औ़रत के पास से हुवा, वोह कह रही थी : ''या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने तेरे शौक़ और उम्मीद में अपने आप को थका दिया।'' तो मैं ने उस से कहा : ''ऐ ख़ातून ! क्या तू अपने अ़मल पर यक़ीन रखती है ?'' तो औ़रत ने जवाब दिया : ''जिस की मह़ब्बत और शौक़ ने मुझे ख़ुशह़ाल कर रखा है तेरा क्या ख़याल है कि वोह मुझे अ़ज़ाब में मुब्तला करेगा ह़ालां कि मैं उस से मह़ब्बत करती हूं।'' आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ''इसी दौरान मेरे अहले ख़ाना में से एक बच्चा मेरे पास से गुज़रा तो मैं ने उसे अपने बाज़ूओं में भर लिया और अपने सीने से चिमटा कर चूमने लगा।'' उस ख़ातून ने मुझ से पूछा : ''क्या तुम इस से मह़ब्बत करते हो ?'' मैं ने कहा : ''हां।'' तो वोह औ़रत रोने लगी और कहा : ''अगर मख़्लूक़ जान ले कि कल क़ियामत में उन्हें किन

www.dawateislami.net

ह़ालात का सामना करना पड़ेगा तो दुन्या की किसी चीज़ से न तो कभी उन की आंखें ठन्डी हों और न ही उन के दिल कभी लज़्ज़त पा सकें।"

फिर कुछ देर बा'द उस औ़रत का बेटा जिस का नाम ज़ैग़म था, उस के पास आया तो उस ने कहा : "ऐ ज़ैग़म ! तेरा क्या ख़याल है कि क्या मैं कल क़ियामत के दिन तुझे मह़शर में देख सकूंगी या हमारे दरमियान कोई रुकावट होगी ?" ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि "येह बात सुन कर बच्चे ने ऐसी ज़ोरदार चीख़ मारी कि मुझे गुमान हुवा कि शायद उस का दिल फट गया है।" फिर वोह बच्चा ग़श खा कर गिर गया तो वोह ख़ातून रोने लगीं और उन को रोते देख कर मैं भी रोने लगा फिर जब बच्चे को कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो उस ने बच्चे को पुकारा : "ऐ ज़ैग़म !" बच्चे ने जवाब दिया : "मैं ह़ाज़िर हूं, अम्मीजान।" पूछा : "क्या तुम मौत को पसन्द करते हो ?" उस ने कहा : "हां।" मां ने पूछा : "बेटा ! मौत को क्यूं पसन्द करते हो ?" बेटे ने जवाब दिया : "ताकि मैं आप से बेहतर या'नी **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ के पास चला जाऊं क्यूं कि वोह सब से ज़ियादा रह़्म फ़रमाने वाला है, उस ने मुझे आप के पेट के अंधेरे में ग़िज़ा दी और तंग तरीन रास्तों से मुझे बाहर निकाला, अगर वोह चाहता तो मुझे इन तंग रास्तों से निकालते वक़्त मौत दे देता यहां तक कि आप भी दर्द की शिद्दत से मर जातीं मगर उस ने अपनी रह़मत और लुत़्फ़ से हम दोनों पर इस मर्ह़ले को आसान कर दिया, क्या आप ने सुना नहीं

www.dawateislami.net

है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

نَبِّئْ عِبَادِیْۤ اَنِّیْۤ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ۝ وَاَنَّ عَذَابِیْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِیْمُ۝ (پ۱۴،الحجر:۴۹۔۵۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ख़बर दो मेरे बन्दों को कि बेशक मैं ही हूं बख़्शने वाला मेहरबान और मेरा ही अ़ज़ाब दर्दनाक अ़ज़ाब है।

फिर उस बच्चे ने रोना शुरूअ़ कर दिया और पुकारता रहा : "अगर क़ियामत के दिन मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से नजात न पा सका तो हलाकत ही हलाकत है।" वोह मुसल्सल रोता रहा ह़त्ता कि बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर पड़ा। उस की मां ने क़रीब आ कर उसे हाथ से टटोला तो वोह फ़ौत हो चुका था (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर रह़म फ़रमाए)। वोह औ़रत रोने लग गई और कहने लगी : "ऐ ज़ैग़म ! ऐ अपने मौला عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत के शहीद," वोह येही कहती रही यहां तक कि उस ने एक चीख़ मारी और ज़मीन पर गिर गई।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मैं ने उस औ़रत को हिलाया तो वोह भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को प्यारी हो चुकी थी।"

﴿अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم﴾

www.dawateislami.net

निगाह की ह़िफ़ाज़त

प्यारे इस्लामी भाइयो !

येह दुन्या ज़ह़रे क़ातिल है मगर लोग इस की हलाकतों से बे ख़बर हैं,...... कितनी निगाहें ऐसी होती हैं जो इब्तिदा में बड़ी प्यारी लगती हैं मगर बा'द में उन का तीखापन सहा नहीं जाता,...... ऐ इब्ने आदम ! तेरा दिल बहुत कमज़ोर है और तेरी राय ह़क़ीक़त में नाक़िस है, तेरी आंख आज़ाद है और तेरी ज़बान गुनाहों से आलूदा है,...... तेरा जिस्म गुनाह कर कर के थक जाता है,...... कितनी निगाहें ऐसी हैं जिन्हें मा'मूली समझा जाता है मगर उन से क़दम फिसल जाता है ।

चन्द अश्आ़र

عَاتَبْتُ قَلْبِیْ لَمَّا　　رَاَیْتُ جِسْمِیْ نَحِیْلًا

فَلَامَ قَلْبِیْ طَرْفِیْ　　وَقَالَ کُنْتَ الرَّسُوْلَا

فَقَالَ طَرْفِیْ لِقَلْبِیْ　　بَلْ کُنْتَ اَنْتَ الدَّلِیْلَا

فَقُلْتُ کُفَّا جَمِیْعًا　　تَرَکْتُمَانِیْ قَتِیْلًا

तरजमा : (1) जब मैं ने अपने जिस्म के दुब्ला पतला होने पर ग़ौर किया तो अपने दिल को मलामत करने लगा ।

(2) तो मेरे दिल ने मेरी आंख को मलामत की और कहा कि "तू ही पैग़ाम देती है ।"

(3) तो मेरी आंख ने मेरे दिल को जवाब दिया "रहनुमाई तो तू ही करता है ।"

(4) तो मैं ने (इन दोनों से) कहा : "तुम दोनों ही (अपनी बुराइयों से) रुक जाओ, तुम दोनों ने मुझे हलाक कर डाला है ।"

www.dawateislami.net

बद निगाही का वबाल :

हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام फ़रमाया करते थे कि "बद निगाही दिल में शह्वत का बीज बो देती है।"

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि "जिस ने अपनी आंख को आज़ाद कर दिया उस के रन्ज बढ़ गए।"

और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

وَمَنْ كَانَ يُؤْتٰى مِنْ عَدُوٍّ وَّحَاسِدٍ   فَاِنِّىْ مِنْ عَيْنَىَّ اُوْتٰى وَمِنْ قَلْبِىْ

या'नी : और जो नुक़्सान किसी दुश्मन और ह़ासिद से पहुंचता है मुझे वोही नुक़्सान अपनी आंख और दिल से होता है।

बद निगाही की सज़ा :

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि "एक शख़्स नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा उस का ख़ून बह रहा था तो सरवरे कौनैन, दुखी दिलों के चैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुझे क्या हुवा ?" उस ने अ़र्ज़ की : "मेरे पास से एक औ़रत गुज़री तो मैं ने उस की त़रफ़ देखा और मेरी निगाहें मुसल्सल उस का पीछा करती रहीं कि अचानक मेरे सामने एक दीवार आ गई जिस ने मुझे ज़ख़्मी कर दिया और मेरा येह ह़ाल कर दिया जिसे आप मुला-ह़ज़ा फ़रमा रहे हैं।" तो नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब किसी बन्दे से भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे दुन्या ही में उस की सज़ा दे देता है।"

(مجمع الزوائد، کتاب التوبۃ، باب فیمن عوقب بذنبہ فی الدنیا، رقم ۱۷۴۷۱، ج ۱۰، ص ۳۱۳)

www.dawateislami.net

गै़बी थप्पड़ :

हज़रते सय्यिदुना अबू या'कूब जौरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने त़वाफ़ के दौरान एक आंख से मा'ज़ूर शख़्स को देखा जो त़वाफ़ के दौरान येही दुआ़ मांग रहा था : ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से तेरी पनाह मांगता हूं।'' मैं ने उस से पूछा : ''येह कैसी दुआ़ है ?'' तो उस ने जवाब दिया : ''मैं पचास साल से बैतुल्लाह शरीफ़ का ख़िदमत गुज़ार हूं, एक दिन मैं ने एक शख़्स को देखा तो मैं ने उस की ता'रीफ़ कर दी अचानक मुझे एक थप्पड़ आ लगा जिस से मेरी आंख मेरे रुख़्सार पर बह गई, तक्लीफ़ की शिद्दत से मेरे मुंह से आह निकल गई तो दूसरा थप्पड़ आ लगा और किसी कहने वाले ने कहा : ''अगर तूने फिर आह की तो हम और मारेंगे।''

चन्द अश्आ़र

دَعُوْنِیْ اُنَاجِیْ مَوْلًی جَلِیْلًا ۔۔۔ اِذَا اللَّیْلُ اَرْخٰی عَلَیَّ السُّدُوْلَا

نَظَرْتُ اِلَیْکَ بِقَلْبٍ ذَلِیْلٍ ۔۔۔ لَاَرْجُوْبِهٖ یَا اِلٰھِیْ الْقَبُوْلَا

لَکَ الْحَمْدُ وَالْمَجْدُ وَالْکِبْرِیَاءُ ۔۔۔ وَاَنْتَ الْاِلٰهُ الَّذِیْ لَنْ یَّزُوْلَا

وَاَنْتَ الْاِلٰهُ الَّذِیْ لَمْ یَزَلْ ۔۔۔ حَمِیْدًا کَرِیْمًا عَظِیْمًا جَلِیْلًا

تُمِیْتُ الْاَنَامَ وَتُحْیِیْ الْعِظَامَ ۔۔۔ وَتُنْشِیُٔ الْخَلَائِقَ جِیْلًا فَجِیْلًا

عَظِیْمُ الْجَلَالِ کَرِیْمُ الْفِعَالِ ۔۔۔ جَزِیْلُ النَّوَالِ تُنِیْلُ السُّؤُوْلَا

حَبِیْبُ الْقُلُوْبِ غَفُوْرُ الذُّنُوْبِ ۔۔۔ تُوَارِیْ الْعُیُوْبَ تُقِیْلُ الْجَھُوْلَا

وَتُعْطِیْ الْجَزِیْلَ وَتُوْلِیْ الْجَمِیْلَ ۔۔۔ وَتَاْخُذُ مِنْ ذَا وَذَاکَ الْقَلِیْلَا

خَزَائِنُ جُوْدِکَ لَا تَنْقَضِیْ ۔۔۔ تَعُمُّ الْجَوَادَ بِهَا وَالْبَخِیْلَا

www.dawateislami.net

तरजमा : (1) मुझे अपने रब्बे जलील عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात करने दो जब कि रात ने मुझ पर पर्दे (अंधेरे) डाल दिये हैं।

(2) या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! मैं तवाज़ोअ़ करने वाले दिल से तेरी त़रफ़ देख रहा हूं ताकि इस के ज़रीए क़बूलिय्यत की उम्मीद करूं।

(3) सब ख़ूबियां, बुज़ुर्गी और किब्रियाई तेरे ही लिये हैं और तू ऐसा मा'बूद है जो कभी फ़ना नहीं होगा।

(4) तू ही वोह मा'बूद है जो हमेशा (हर वक़्त) ह़मीद, करीम, अ़ज़ीम और जलील है।

(5) तू ही लोगों को मारता है और (बरोज़े क़ियामत) हड्डियों को ज़िन्दा फ़रमाएगा और सारी मख़्लूक़ को गुरौह दर गुरौह उठाएगा।

(6) तू अ़ज़ीम जलाल वाला, करीम अफ़्आ़ल वाला, बड़ी अ़त़ा वाला और हर सुवाल को पूरा करने वाला है।

(7) तू ही दिलों का मह़बूब है, गुनाहों को मिटाता, ऐ़बों को छुपाता और जहालतों को दूर फ़रमाता है।

(8) और तू बड़ा इन्आ़म अ़त़ा फ़रमाने वाला, ख़ूबी का मालिक बनाने वाला और इन (इन्आ़म याफ़्ता बन्दों) से छोटी सी नेकी भी क़बूल फ़रमा लेता है।

(9) तेरी इनायत के ख़ज़ाने ख़त्म नहीं होते, तू सख़ी व बख़ील सब को इन (ख़ज़ानों) से नवाज़ता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल :

एक आ़रिफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि हम इराक़ से मक्कए मुकर्रमा और मुस्त़फ़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शह्र मदीनए मुनव्वरह (زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا) के इरादे से निकले।

www.dawateislami.net

हमारे क़ाफ़िले में बहुत से लोग थे। जैसे ही हम इराक़ से निकले तो एक इराक़ी शख़्स भी हमारे साथ चल पड़ा। उस का गन्दुमी रंग कस्रते इ़बादत की वज्ह से पीला पड़ चुका था। उस ने पैवन्द दार पुराना लिबास पहन रखा था। उस के हाथ में अ़सा था और एक थैली थी जिस में थोड़ा सा तोशा था। दर अस्ल वोह आ़बिदो ज़ाहिद, इमामुल आ़शिक़ीन ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ थे जब क़ाफ़िले वालों ने उन्हें इस ह़ालत में देखा तो पहचान न पाए और उन से कहा : "हमारा गुमान है कि तुम एक ग़ुलाम हो।" ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "हां मैं एक ग़ुलाम हूं।" लोगों ने कहा : "हमारा गुमान है कि तुम एक बुरे ग़ुलाम हो और अपने आक़ा से भाग कर आए हो।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "हां ऐसा ही है।" लोगों ने कहा : "जब तुम अपने आक़ा को छोड़ कर भागे तो अपने आप को कैसा पाया और तुम्हारी येह क्या ह़ालत है अगर तुम अपने आक़ा के पास रहते तो तुम्हारी येह ह़ालत हरगिज़ न होती और बेशक तुम बहुत बुरे और क़ुसूर वार ग़ुलाम हो।" तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं एक गुनहगार ग़ुलाम हूं, मेरा आक़ा बहुत ही अच्छा है और क़ुसूर मेरा ही है अगर मैं उस की इत़ाअ़त करता और उस की रिज़ा चाहता तो मेरी येह ह़ालत हरगिज़ न होती।"

येह कह कर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रोने लगे और इतना रोए कि क़रीब था कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की रूह़ परवाज़ कर जाती। लोगों को उन पर बहुत तर्स आया और उन्हों ने आक़ा से मुराद

www.dawateislami.net

दुन्यवी आक़ा लिया जब कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आक़ा से मुराद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को लिया था। क़ाफ़िले वालों में से एक शख़्स ने कहा : ''डरो मत ! मैं तुम्हारे लिये तुम्हारे आक़ा से अमान ले लूंगा, तुम उस की त़रफ़ लौट जाओ और तौबा कर लो।'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''मैं उस की त़रफ़ लौटता हूं और उस के इन्आ़मात में रग़बत रखता हूं।''

दर अस्ल ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सरकारे अबद क़रार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर की ज़ियारत के लिये क़ाफ़िले में शामिल हुए थे। बहर ह़ाल, उसी दिन क़ाफ़िला चल पड़ा और तेज़ी से सफ़र करने लगा। रात को जब उस क़ाफ़िले ने एक पथरीली जगह पर पड़ाव किया, वोह रात इन्तिहाई सर्द और बारिश वाली थी। वोह बुज़ुर्ग رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ''क़ाफ़िले वालों में से हर शख़्स ने अपने कजावे और ख़ैमे में पनाह ली, जब कि सय्यिदुना उवैस क़रनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास न तो कजावा था, न ख़ैमा और न ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किसी से कुछ मांगा।'' क्यूं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह बात ना पसन्द थी कि आप दुन्यवी उमूर में से कोई चीज़ मख़्लूक़ से त़लब करें बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तो अपनी ह़ाजतें **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ से मांगा करते थे। उस रात आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सख़्त सर्दी लगी यहां तक कि सर्दी की वज्ह से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के आ'ज़ाए मुबा-रका कांपने लगे। जब सर्दी ज़ियादा ग़ालिब आ गई तो उस आ़शिक़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़ियादा सर्दी लगने की वज्ह से इन्तिक़ाल हो गया।''

www.dawateislami.net

जब क़ाफ़िले वाले बेदार हुए और कूच का इरादा किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पुकारा : "ऐ शख़्स उठो, लोग कूच कर रहे हैं ।" मगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कोई जवाब न दिया तो एक शख़्स आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़रीब आया । जब उस ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को झन्झोड़ा तो देखा कि आप की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर चुकी है । उस शख़्स ने क़ाफ़िले वालों को पुकार कर कहा : "ऐ क़ाफ़िले वालो ! अपने आक़ा से भागा हुवा ग़ुलाम इन्तिक़ाल कर गया है और इसे दफ़्न किये बिग़ैर सफ़र करना मुनासिब नहीं ।" क़ाफ़िले वालों ने कहा : "इस के मुआ़-मले (या'नी आक़ा से भागने) का क्या होगा ?" क़ाफ़िले में मौजूद एक नेक शख़्स ने कहा : "येह ग़ुलाम तौबा कर के अपने आक़ा की त़रफ़ लौटने का इरादा रखता था और अपने अ़मल पर नादिम था और हमें उम्मीद है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस के ज़रीए़ हमें नफ़अ़ पहुंचाएगा क्यूं कि इस की तौबा क़बूल हो चुकी है और अगर हम इसे दफ़्न किये बिग़ैर चल पड़े तो कहीं हम से इस के बारे में सुवाल न किया जाए, तुम्हारे लिये इस के सिवा कोई चारा नहीं कि इस के लिये क़ब्र खोदने और इसे क़ब्र में दफ़्न करने तक सब्र करो ।" तो लोगों ने कहा : "येह ऐसी जगह है जहां पानी मौजूद नहीं है ।"

एक शख़्स ने कहा : "किसी जानने वाले से पूछ लो ।" चुनान्चे लोगों ने एक शख़्स से पूछा तो उस ने बताया कि "पानी यहां से एक घन्टे की मसाफ़त पर मिलेगा तुम मेरे साथ किसी आदमी को भेज दो मैं तुम्हें पानी ला दूंगा ।" उस शख़्स ने डोल लिया और पानी की त़रफ़ चल दिया जब वोह क़ाफ़िले से निकला

www.dawateislami.net

तो अचानक सामने पानी की एक नह्र नज़र आई उस ने कहा : "बड़ा अ़जीब मुआ़-मला है मैं ने पहले कभी इस नह्र को नहीं देखा येह तो वोह जगह है जहां पानी मिलता ही नहीं और न ही किसी क़रीबी जगह में होता है।" बहर ह़ाल वोह शख़्स क़ाफ़िले की त़रफ़ लौट आया और क़ाफ़िले वालों से कहने लगा : "तुम्हारी मशक़्क़त टल गई लकड़ियां जम्अ़ करो।" तो उन्हों ने पानी गर्म करने के लिये लकड़ियां जम्अ़ कर दीं। फिर जब पानी लेने के लिये नह्र पर आए तो पानी को खौलता हुवा पाया, तो उस के तअ़ज्जुब में मज़ीद इज़ाफ़ा हुवा। येह सब कुछ देख कर शु-रकाए क़ाफ़िला उस शख़्स या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से घबरा गए और कहने लगे : "बेशक येह शख़्स बड़ी अ़-ज़मत वाला है।"

फिर उन लोगों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये क़ब्र खोदना शुरूअ़ की तो मिट्टी को मख्खन से ज़ियादा नर्म पाया और ज़मीन से ख़ुश्बू की लपटें आ रही थीं। क़ाफ़िले वालों ने दुन्या में इस से ज़ियादा पाकीज़ा ख़ुश्बू न सूंघी थी। इस सूरते ह़ाल में उन के ख़ौफ़ में मज़ीद इज़ाफ़ा हो गया और वोह रो'ब व घबराहट में मुब्तला हो गए। जब वोह क़ब्र से निकलने वाली मिट्टी को देखते तो उसे मिट्टी की त़रह़ पाते और जब उसे सूंघते तो मुश्क की ख़ुश्बू पाते। फिर उन लोगों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये एक ख़ैमा नस्ब किया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज-सदे अक़्दस को उस में मुन्तक़िल कर दिया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कफ़न के मुआ़-मले में बह्स करने लगे एक शख़्स ने कहा कि "इन्हें कफ़न मैं दूंगा।" दूसरे ने कहा : "मैं दूंगा।" फिर उन सब की राय इस बात पर मुत्तफ़िक़

www.dawateislami.net

हुई कि हर शख़्स कफ़न के लिये एक एक कपड़ा दे। फिर उन लोगों ने काग़ज़ और क़लम पकड़ा और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हुल्यए मुबारक और सिफ़ाते मुबा-रका लिखने लगे और कहने लगे : "اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जब हम मदीने पहुंचेंगे तो शायद वहां हमें इन का कोई जानने वाला मिल जाए।"

फिर उन लोगों ने उस परचे को अपने सामान में रख लिया। जब उन्हों ने हज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को गुस्ल दे दिया और कफ़न पहनाने के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिबास को उतारना चाहा तो आप को जन्नती कफ़न में लिपटा हुवा पाया। देखने वालों ने कभी ऐसा कफ़न न देखा था। उस कफ़न पर मुश्को अम्बर लगा हुवा था जिस की खुश्बू ने फ़ज़ा को मुअत्तर कर दिया था और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जबीने अत्हर और मुबारक क़दमों पर मुश्क की मोहर लगी हुई थी। येह देख कर लोग कहने लगे : "गुनाह से बचने और नेकी करने की कुव्वत रब عَزَّوَجَلَّ ही देता है कि रब عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें कफ़न पहना दिया और बन्दों के कफ़न से बे नियाज़ कर दिया, हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उम्मीद रखते हैं कि वोह अपने इस बर्गुज़ीदा और मक़्बूल शख़्स के वसीले से हमें जन्नत अ़ता फ़रमाएगा और हम पर रह़्म फ़रमाएगा।"

फिर उन क़ाफ़िले वालों को हज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सख़्त सर्दी की रात में तन्हा छोड़ने पर सख़्त नदामत व शरमिन्दगी हुई। फिर उन लोगों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दफ़्न करने के लिये उठाया और नमाज़े जनाज़ा अदा करने के लिये एक हमवार जगह पर रखा। जब उन लोगों ने तक्बीर कही तो आस्मान से ज़मीन तक मशरिक से मग़रिब तक तक्बीर कहने की

www.dawateislami.net

आवाज़ें सुनीं तो उन के कलेजे दहल गए और आंखें फटी की फटी रह गईं। वोह अपने सरों से सुनी जाने वाली आवाज़ों से मरऊ़ब होने और घबराहट की शिद्दत की वज्ह से येह न समझ पाए कि नमाज़े जनाज़ा किस त़रह़ अदा की जाए। फिर जब उन्हें क़ब्र की त़रफ़ ले जाने का इरादा किया तो उठाते वक़्त उन्हे यूं मह़सूस हुवा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज-सदे अक़्दस किसी और मख़्लूक़ ने थाम रखा है और उन्हें आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वज़्न तक मह़सूस न हुवा। बहर ह़ाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दफ़्न करने के लिये क़ब्र की त़रफ़ लाए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिस्मे अक़्दस को क़ब्र में दफ़्न कर दिया।

इस के बा'द क़ाफ़िले वाले ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में ह़ैरान व परेशान होते हुए सफ़र पर रवाना हो गए। जब वोह अपना सफ़र पूरा कर के लौटे तो कूफ़ा की मस्जिद में आए और लोगों को आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वाक़िआ़ सुनाया और वहां हुल्या बयान किया तो हुल्या बयान करने पर लोगों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पहचान लिया। मस्जिद में रोने की आवाज़ें बुलन्द हुईं और अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल के बा'द आप की करामात ज़ाहिर न होतीं तो ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल की ख़बर किसी को न होती और न ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मज़ारे पुर अन्वार का पता चलता क्यूं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों से पोशी-दगी और किनारा कशी इख़्तियार कर रखी थी।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

दुन्या से रुख़्सती की तय्यारी

प्यारे इस्लामी भाइयो !

कब तक ग़फ़्लत में रहोगे ?...... तुम्हें मोहलत दिये बिग़ैर त़लब कर लिया जाएगा,...... तुम्हें अपने रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अपने अय्याम को तय्यारिये आख़िरत में इस्ति'माल कर लो और अपने बुरे आ'माल की इस्लाह़ कर लो और अपनी मौत के इन्तिज़ार में रहो,...... दुन्या ने तुम्हारे कूच का ए'लान कर दिया जब कि तुम ने दुन्यवी ज़िन्दगी को खेलकूद बना रखा है,...... ह़िसाब का दिन तुम्हारे सामने है, गुनाहों के बोझ और बुरे साथी पर ह़सरत है और तोशे की क़िल्लत और मन्ज़िल की दूरी पर अफ़्सोस है,...... ऐ दुन्या की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो कर धोके में पड़ने वाले ! और इस की झूटी ख़्वाहिशात के फ़ितने में पड़ने वाले ! तू तो रास्ता भटक गया है और अपने अ़मल में झूटा है,...... ऐ बदकार ! कब तक तौबा को टालता रहेगा ह़ालां कि तौबा में ताख़ीर करने का तेरे पास आख़िरत में कोई उ़ज़्र नहीं,...... कब तक तेरे बारे में येह कहा जाता रहेगा कि येह फ़रेब ख़ूरदा और फ़ितने में मुब्तला है,...... ऐ मिस्कीन ! भलाई के अय्याम गुज़र गए और तू महीने ही शुमार करता जा रहा है, तू ख़ुद को मक़्बूल समझता है या मरदूद ?...... विसाल पाने वाला समझता है या धुत्कारा हुवा ?...... क्या तू कल क़ियामत के दिन बेहतरीन सुवारियों पर सुवार होगा या मुंह के बल घसीटा जाएगा ?...... तू ख़ुद को जहन्नमियों में शुमार करता है या जन्नत की ने'मतें और इस के मह़ल्लात पाने वालों में ?...... ख़ुदा

www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हलके फुलके (गुनाहों से पाक) लोग काम्याब होंगे और बदकार लोग नुक़्सान उठाएंगे,...... बिल आख़िर तमाम उमूर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ लौटने वाले हैं।

चन्द अश्आ़र

مَالِیْ اَرَاکَ عَلٰی الذُّنُوْبِ مُوَاظِبًا ۔ اَ اَخَذْتَ مِنْ سُوْءِ الْحِسَابِ اَمَانًا

لَا تَغْفُلَنَّ کَاَنَّ یَوْمَکَ قَدْ اَتٰی ۔ وَلَعَلَّ عُمْرَکَ قَدْ دَنَا اَوْحَانَا

وَمَضٰی الْحَبِیْبُ لِحَفْرِ قَبْرِکَ مُسْرِعًا ۔ وَاَتٰی الصَّدِیْقُ فَاَنْذَرَ الْجِیْرَانَا

وَاَتَوْا بِغَسَّالٍ وَجَاؤُوْا نَحْوَہٗ ۔ وَبَدَا بِغَسْلِکَ مَیِّتًا عُرْیَانًا

فَغُسِلْتَ ثُمَّ کُسِیْتَ ثَوْبًا لِلْبِلٰی ۔ وَدَعَوْا لِحَمْلِ سَرِیْرِکَ الْاِخْوَانَا

وَاَتَاکَ اَھْلُکَ لِلْوَدَاعِ فَوَدَّعُوْا ۔ وَجَرَتْ عَلَیْکَ دُمُوْعُھُمْ غُدْرَانًا

فَخَفِ الْاِلٰہَ فَاِنَّہٗ مَنْ خَافَہٗ ۔ سَکَنَ الْجِنَانَ مُجَاوِرًا رِضْوَانًا

جَنَّاتِ عَدْنٍ لَایَبِیْدُ نَعِیْمُھَا ۔ اَبَدًا یُخَالِطُ رُوْحُہٗ رَیْحَانًا

وَلِمَنْ عَصٰی نَارٌ یُقَالُ لَھَا: لَظٰی ۔ تَشْوِیْ الْوُجُوْہَ وَتُحْرِقُ الْاَبْدَانَا

نَبْکِیْ وَحَقَّ لَنَا الْبُکَا یَاقَوْمَنَا ۔ کَیْلَا یُؤَاخِذَنَا بِمَا قَدْ کَانَا

तरजमा : (1) मैं क्यूं तुझे गुनाहों में ही मश्ग़ूल देखता हूं क्या तुम ने बुरे ह़िसाब से अमान ले रखी है ?

(2) ग़फ़्लत में हरगिज़ मत रहना (तसव्वुर कर) गोया कि तेरा दिन भी आ चुका है और शायद तेरी ज़िन्दगी ख़त्म होने ही वाली है।

(3) तेरा जिगरी दोस्त तेरी क़ब्र खोदने में जल्दी से चला गया और (मौत की) तस्दीक़ करने वाला आया तो उस ने (मौत की ख़बर दे कर) पड़ोसियों को डरा दिया।

(4) और वोह (दोस्त व अह़बाब) ग़स्साल को ले आए हैं और

www.dawateislami.net

उस के पीछे पीछे आए हैं और ग़स्साल ने तेरी लाश का बरह्ना ह़ालत में ग़ुस्ल शुरूअ़ कर दिया।

(5) पस तुझे ग़ुस्ल दे कर बोसीदा व ख़राब होने के लिये कफ़न पहना दिया गया, और तेरा जनाज़ा उठाने के लिये लोगों को बुला लिया गया है।

(6) और तेरे घर वाले तुझे अल वदाअ़ कहने आए फिर उन्हों ने तुझे रुख़्सत कर दिया, और उन के धोके के आंसू तुझ पर बह (कर ख़त्म हो) गए।

(7) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर कि जो उस से डरता है वोह जन्नत में (निगरान फ़िरिश्ते) ह़ज़रते रिज़्वान عَلَيْهِ السَّلَام का पड़ोसी बन कर रहेगा।

(8) जन्नते अ़दन जिस की ने'मतें कभी ख़त्म न होंगी उस में रहेगा, उस की रूह़ ख़ुश्बू में रहेगी।

(9) और जो ना फ़रमानी करेगा उस के लिये ऐसी आग है जिस को **لَظٰی** (भड़क्ती आग) कहा जाता है जो चेहरों को भून देगी और बदन को जला डालेगी।

(10) ऐ हमारी क़ौम ! हम रो रहे हैं और हमें रोना ही चाहिये ताकि हम से हमारे किये की पूछगछ न हो।

फ़िरिश्तों की सदाएं :

नबियों के ताजवर, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है कि "जब आदमी पर नज़्अ़ का आ़लम त़ारी होता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की त़रफ़ पांच फ़िरिश्ते भेजता है। पहला फ़िरिश्ता उस

www.dawateislami.net

के पास उस वक़्त आता है जब उस की रूह़ ह़ुल्क़ूम (या'नी ह़ल्क़) तक पहुंचती है। वोह फ़िरिश्ता उसे पुकार कर कहता है : "ऐ इब्ने आदम ! तेरा त़ाक़त वर बदन कहां गया ? आज येह कितना कमज़ोर है ? तेरी फ़सीह़ ज़बान कहां गई ? आज येह कितनी ख़ामोश है ? तेरे घर वाले और अ़ज़ीज़ो अक़्रिबा कहां गए ? तुझे किस ने तन्हा कर दिया।"

फिर जब उस की रूह़ क़ब्ज़ कर ली जाती है और कफ़न पहना दिया जाता है तो दूसरा फ़िरिश्ता उस के पास आता है और उसे पुकार कर कहता है : "ऐ इब्ने आदम ! तूने तंगदस्ती के ख़ौफ़ से जो माल व अस्बाब जम्अ़ किया था वोह कहां गया ? तूने तबाही से बचने के लिये जो घर बनाए थे वोह कहां गए ? तूने तन्हाई से बचने के लिये जो उन्स तय्यार किया था वोह कहां गया ?"

फिर जब उस का जनाज़ा उठाया जाता है तो तीसरा फ़िरिश्ता उस के पास आता है और उसे पुकार कर कहता है : "आज तू एक ऐसे लम्बे सफ़र की त़रफ़ रवां दवां है जिस से लम्बा सफ़र तूने आज से पहले कभी त़ै नहीं किया, आज तू ऐसी क़ौम से मिलेगा कि आज से पहले कभी उस से नहीं मिला, आज तुझे ऐसे तंग मकान में दाख़िल किया जाएगा कि आज से पहले कभी ऐसी तंग जगह में दाख़िल न हुवा था, अगर तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने में काम्याब हो गया तो येह तेरी ख़ुश बख़्ती है और अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ से नाराज़ हुवा तो येह तेरी बद बख़्ती है।"

फिर जब उसे लह़द में उतार दिया जाता है तो चौथा फ़िरिश्ता उस के पास आता है और उसे पुकार कर कहता है : "ऐ इब्ने आदम !

www.dawateislami.net

कल तक तू ज़मीन की पीठ पर चलता था और आज तू इस के अन्दर लैटा हुवा है, कल तक तू इस की पीठ पर हंसता था और आज तू इस के अन्दर रो रहा है, कल तक तू इस की पीठ पर गुनाह करता था और आज तू इस के अन्दर नादिम व शरमिन्दा है।"

फिर जब उस की क़ब्र पर मिट्टी डाल दी जाती है और उस के अहलो इ़याल, दोस्त व अह़बाब उसे छोड़ कर चले जाते हैं तो पांचवां फ़िरिश्ता उस के पास आता है और उसे पुकार कर कहता है : "ऐ इब्ने आदम ! वोह लोग तुझे दफ़्न कर के चले गए, अगर वोह तेरे पास ठहर भी जाते तो तुझे कोई फ़ाएदा न पहुंचा सकते, तूने माल जम्अ़ किया और उसे ग़ैरों के लिये छोड़ दिया आज या तो तुझे जन्नत के आ़ली बाग़ात की त़रफ़ फेरा जाएगा या भड़क्ने वाली आग में दाख़िल किया जाएगा।"

एक रिक़्क़त अंगेज़ रुख़्सती :

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के बारे में मन्क़ूल है कि उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! जब मैं सिह़ह़त मन्द होता हूं तेरी ना फ़रमानी करता हूं और जब कमज़ोर होता हूं तो तेरी इत़ाअ़त करने लगता हूं, त़ाक़त के ज़ो'म में तुझे नाराज़ कर बैठता हूं कमज़ोरी के आ़लम में तेरी फ़रमां बरदारी करने लगता हूं, हाए ! मेरी अ़क़्ल को क्या हो गया काश ! मैं जान सकूं कि तू मेरी नदामत को क़बूल कर लेगा या मुझे मेरे जुर्म की वज्ह से धुत्कार देगा।"

येह कहने के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ग़श खा कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए जिस से आप की पेशानी ज़ख़्मी हो गई। उन की वालिदा उन के पास आईं, उन के माथे पर बोसा दिया और रोते

www.dawateislami.net

हुए उन की पेशानी साफ़ की फिर कहने लगीं : "ऐ दुन्या में मेरी आंखों की ठन्डक और आख़िरत में मेरे दिल के चैन, अपनी रोने वाली बूढ़ी मां से कलाम कर और शिकस्ता दिल मां की बात का जवाब दे।" जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो आप ने अपने दिल को थाम लिया और आप की रूह़ जिस्म में बेचैन होने लगी और आंसू रुख़्सारों से होते हुए इन की दाढ़ी को नम कर गए। उन्हों ने अपनी मां से कहा : "ऐ मां ! येह वोही होलनाक दिन है जिस से आप मुझे डराया करती थीं, हाए ! ज़ाएअ़ हो जाने वाले दिनों पर अफ़्सोस ! और उन लम्बे दिनों पर ह़सरत ! जिन में मैं कोई बुलन्दी न पा सका, ऐ मां ! मैं डरता हूं कि कहीं मुझे त़वील मुद्दत के लिये जहन्नम में न डाल दिया जाए, हाए ! वोह वक़्त कितना ग़मनाक होगा अगर मुझे सर के बल जहन्नम में फेंक दिया गया और वोह आ़लम कितने अफ़्सोस का होगा अगर जहन्नम में मेरे जिस्म को काटा गया, ऐ मां ! मैं जैसा कहूं आप उसी त़रह़ कीजिये।" आप की मां ने कहा : "बेटा मेरी जान तुझ पर क़ुरबान तू क्या चाहता है ?" बेटे ने कहा : "मेरा रुख़्सार मिट्टी पर रख दीजिये और इसे अपने पाउं से रौंदिये ताकि मैं दुन्या ही में ज़िल्लत का मज़ा चख लूं और अपने आक़ा व मौला عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से लज़्ज़त पाऊं ताकि वोह मुझ पर रह़्म फ़रमा कर जहन्नम की भड़क्ती हुई आग से मुझे नजात दे दे।"

उन की वालिदा कहती हैं कि "मैं उठी और अपने बेटे के रुख़्सार को मिट्टी से लिथड़ दिया।" उस वक़्त उस की आंखों से परनाले की त़रह़ आंसू बह रहे थे फिर मैं ने उस के रुख़्सार को

www.dawateislami.net

अपने क़दमों से रौंदा तो वोह कमज़ोर आवाज़ से कहने लगा : "गुनहगार और ना फ़रमान की सज़ा येही है, ख़ताकार व बदकार का बदला येही है, अपने मौला के दर पर खड़ा न होने वाले की येही जज़ा है, **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ से न डरने वाले की येही जज़ा है।" फिर वोह क़िब्ले की त़रफ़ रुख़ कर के कहने लगा : "لَبَّیْکَ ! لَبَّیْکَ ! لَااِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَکَ اِنِّیْ کُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ" तरजमा : मैं ह़ाज़िर हूं ! मैं ह़ाज़िर हूं ! कोई मा'बूद नहीं तेरे सिवा, पाकी है तुझ को, बेशक मुझ से बे जा हुवा।" फिर उस की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई।

उन की वालिदा मजीद फ़रमाती हैं कि मैं ने उसे ख़्वाब में देखा तो उस का चेहरा बादलों में घिरे हुए चांद की त़रह़ दमक रहा था मैं ने पूछा : "बेटा ! तेरे आक़ा عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआ़-मला किया ?" तो उस ने जवाब दिया : "उस ने मेरे द-रजे को बुलन्द फ़रमा कर मुझे ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ुर्ब में जगह अ़त़ा फ़रमा दी।" मैं ने पूछा कि "बेटा ! मैं ने तेरी वफ़ात के वक़्त तुझ से जो कुछ सुना था वोह क्या था ?" उस ने कहा कि "अम्मीजान ! हातिफ़े ग़ैब से मुझे आवाज़ आई थी कि "ऐ इमरान ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलाने वाले की दा'वत क़बूल करो तो मैं ने उस की दा'वत पर अपने रब عَزَّوَجَلَّ को लब्बैक कहा था।"

﴿अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। ﴿اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم﴾

www.dawateislami.net

तरबियते नफ़्स

मेरे इस्लामी भाइयो !

जब हमारा सफ़रे आख़िरत तै है तो हमें ज़ैब नहीं देता कि ऐसी जगह से दिल लगाएं जो हमारा (मुस्तक़िल) ठिकाना नहीं है। साल (गोया कि) मन्ज़िलें हैं, महीने मर्हले हैं, और दिन मील हैं, हमारी हर सांस आख़िरत की जानिब एक क़दम है, ना फ़रमानियां डाकू हैं, जन्नत नफ़्अ़ है और जहन्नम नुक़्सान है।

इन्सान के छ[6] सफ़र :

अपने मुस्तक़िल ठिकाने तक पहुंचने के लिये हमें छ[6] मुख़्तलिफ़ सफ़र दरपेश हैं, **पहला सफ़र :** मिट्टी से ख़मीर बनने तक, **दूसरा सफ़र :** पीठ से रेह्म तक, **तीसरा सफ़र :** रेह्म से ज़मीन की पीठ पर आने तक, **चौथा सफ़र :** सत्हे ज़मीन से क़ब्र तक, **पांचवां सफ़र :** क़ब्र से मैदाने मह़शर तक, **छटा सफ़र :** मैदाने मह़शर से जा-ए रिहाइश तक, जो जन्नत होगी या फिर जहन्नम,...... आह ! हम ने निस्फ़ रास्ता तो तै कर लिया मगर मुश्किल तरीन सफ़र अभी बाक़ी है।

ऐ रन्जो अलम में चीख़ने चिल्लाने वाले ! ह़ीला बाज़ी दूसरों के लिये रहने दे, फ़ाएदे में रहेगा,...... तू राह़त व आराम में इज़ाफ़ा चाहता है और गुज़श्ता इब्रतनाक बातों को भूल रहा है,...... अगर तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रुजूअ़ करता तो वोह जल्द ही तेरे मसाइबो आलाम दूर फ़रमा देता।

मेरे भाई ! दुन्या से बच के रहना क्यूं कि दुन्या एक तारीक राह गुज़र है और इस में सिर्फ़ ब क़दरे ज़रूरत ग़िज़ा पर क़नाअ़त

www.dawateislami.net

कर और याद रख कि एक दिन तुझे येह दुन्या छोड़ जाना है।

ह़बशी ग़ुलाम :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि "जब मैं मक्कए मुकर्रमा ह़ाज़िर हुवा तो मैं ने देखा कि लोग ख़ुश्क-साली में मुब्तला हैं और मस्जिदे ह़राम में बारिश के लिये दुआ़ मांग रहे हैं। मैं बाबे बनी शैबा की त़रफ़ मौजूद था कि एक ह़बशी ग़ुलाम आया, उस पर दो मोटी चादरें थीं। एक का तहबन्द बांध रखा था जब कि दूसरी कन्धों पर ओढ़ रखी थी। वोह वहां एक जगह छुप कर बैठ गया। मैं ने उसे इस त़रह़ दुआ़ मांगते हुए सुना : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! गुनाहों की कसरत और बुरे ऐ़बों ने चेहरों को सियाह कर दिया, तूने मख़्लूक़ की इ़ब्रत के लिये हम से बाराने रह़मत को रोक लिया, तो ऐ ह़लीम عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से सुवाल करता हूं, ऐ वोह पाक ज़ात जिस से उस के बन्दे भलाई ही पाते हैं ! इन्हें अभी फ़ौरन ही सैराब कर दे।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि "अभी उस ह़बशी ग़ुलाम ने इतना ही कहा था कि आस्मान पर बादल छा गए और देखते ही देखते बरसाते रह़मत बरसने लगी। फिर वोह ह़ब्शी ग़ुलाम अपनी जगह पर बैठ कर तस्बीह़ पढ़ने लगा। मैं येह देख कर रोने लगा। जब वोह वहां से जाने लगा तो मैं उस का घर देखने के लिये उस के पीछे चल दिया। फिर जब मैं ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पास आया तो उन्हों ने मुझ से पूछा : "आप क्यूं अफ़्सुर्दा हैं ?" मैं ने कहा "कोई दूसरा हम से सब्क़त ले गया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमारे

www.dawateislami.net

बजाए उसे अपना दोस्त बना लिया।" उन्हों ने पूछा वोह कैसे ? तो मैं ने पूरा क़िस्सा बयान कर दिया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने चीख़ मारी और ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए। फिर फ़रमाया : "ऐ इब्ने मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ! अफ़्सोस है तुम पर, मुझे उन के पास ले चलो।" मैं ने कहा : "अभी वक़्त बहुत कम है, मैं उन के बारे मा'लूमात ह़ासिल करता हूं।"

फिर जब अगला दिन आया तो मैं ने फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी और उस ह़बशी ग़ुलाम के घर की त़रफ़ चल दिया। मैं ने घर के दरवाज़े पर एक बूढ़े को देखा जो चादर बिछा कर बैठा हुवा था। जब उस ने मुझे देखा तो पहचान कर कहने लगा : "मरह़बा ! ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान ! ख़ुश आ-मदीद, फ़रमाइये कैसे तशरीफ़ लाए ?" मैं ने कहा : "मुझे एक ग़ुलाम की ह़ाजत है।" उस ने कहा : "हां मेरे पास बहुत से ग़ुलाम हैं, आप इन में से जिसे चाहें पसन्द फ़रमा लें।" फिर उस ने आवाज़ दी : "ऐ ग़ुलाम !" जवाबन एक चाको चौबन्द ग़ुलाम बाहर निकला तो उस बूढ़े ने मुझे बताया कि "येह ग़ुलाम बहुत नेक सीरत है, आप के लिये बहुत अच्छा रहेगा।" तो मैं ने कहा : "नहीं, मुझे येह नहीं चाहिये।" वोह बूढ़ा शख़्स एक के बा'द दूसरा ग़ुलाम बुलाता रहा और मैं इन्कार करता रहा। यहां तक कि उस ने मेरे मत़लूबा ग़ुलाम को बुलाया तो उसे देख कर मेरी आंखों में नमी तैरने लगी। बूढ़े ने पूछा : "क्या येह ग़ुलाम आप को पसन्द है ?" मैं ने कहा : "हां।" मगर वोह कहने लगा : "मैं इस ग़ुलाम को नहीं बेच सकता।" मैं ने पूछा : "वोह क्यूं ?' जवाब दिया : "इस का मेरे घर में रहना बाइ़से ब-र-कत

www.dawateislami.net

है क्यूं कि जब से येह इस घर में आया है मुझे कोई मुसीबत नहीं पहुंची।" मैं ने पूछा : "इस का खाना कहां से आता है?" उस ने कहा कि "येह खजूरी रस्सियां बुन कर कुछ रक़म कमा लेता है, अगर रस्सियां बिक जाएं फ़बिहा वरना वोह दिन यूंही गुज़ार लेता है और मेरे गुलामों ने मुझे इस के बारे में बताया है कि येह त़वील तरीन रातों में भी बिल्कुल नहीं सोता, उन से ज़ियादा मेलजोल नहीं रखता और अपने नफ़्स पर कड़ी नज़र रखता है, मेरे दिल में इस के लिये बड़ी मह़ब्बत है।"

येह सुन कर मैं ने उस बूढ़े से कहा : "मैं अपनी मुराद पूरी हुए बिग़ैर (ह़ज़रते सय्यिदुना) फ़ुज़ैल बिन इयाज़ और (ह़ज़रते सय्यिदुना) सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا के पास चलता हूं।" (वापसी पर) मैं दोबारा उस के पास गया और उस गुलाम के लिये मिन्नत समाजत की तो उस ने कहा कि "आप का मेरे पास चल कर आना ही बड़ी बात है आप इसे जितनी क़ीमत में चाहें ले जाएं।"

बहर ह़ाल मैं ने वोह गुलाम ख़रीद लिया और उसे ले कर ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के घर की त़रफ़ चल पड़ा। थोड़ी दूर चलने के बा'द उस ने मुझ से कहा : "ऐ आक़ा!" मैं ने कहा : "लब्बैक! (या'नी मैं ह़ाज़िर हूं।)" तो उस ने कहा : "लब्बैक न कहिये क्यूं कि गुलाम "लब्बैक" कहने का आक़ा से ज़ियादा मुस्तह़िक़ है।" मैं ने कहा : "मेरे दोस्त! तुम्हें किस चीज़ की ह़ाजत है?" उस ने कहा : "मैं कमज़ोर बदन वाला

www.dawateislami.net

हूं, आप की कोई ख़िदमत नहीं कर पाऊंगा, आप मेरी जगह दूसरा गुलाम ख़रीद लेते, मेरे मालिक ने आप को मुझ से ताक़त वर गुलाम भी दिखाया था।" तो मैं ने जवाब दिया : "मैं तुझ से ख़िदमत थोड़ी लूंगा ? मैं ने तो तुझे इस लिये ख़रीदा है कि तुझे अपने बेटों की तरह रखूं, तेरी शादी कराऊं और ख़ुद तेरी ख़िदमत करूं।" येह सुन कर वोह रोने लगा तो मैं ने उस से पूछा : "तुझे किस चीज़ ने रुलाया ?" तो उस ने जवाब दिया : "शायद आप येह सब इस लिये कर रहे हैं कि आप ने मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ मुनाजात करते हुए देख लिया होगा, वरना आप उन गुलामों में से मेरा ही इन्तिख़ाब क्यूं करते ?" मैं ने कहा : "बस, मुझे तुम से एक येही हाजत है।" उस ने कहा : "मैं आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम दे कर उस हाजत के बारे पूछता हूं।" तो मैं ने बताया कि "मैं ने तुम्हें तुम्हारी दुआ की मक़्बूलिय्यत की वज्ह से ख़रीदा है।" उस ने कहा : "मेरा आप के बारे में हुस्ने ज़न है कि आप एक नेक आदमी हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी मख़्लूक़ में कुछ बन्दों को चुन लेता है जिन के अह्वाल अपने मह्बूब बन्दों ही पर ज़ाहिर फ़रमाता है और उन्ही बन्दों पर ज़ाहिर फ़रमाता है जिन से वोह राज़ी होता है।" फिर वोह कहने लगा : "क्या आप कुछ देर मेरा इन्तिज़ार करेंगे, मेरी रात की कुछ रक्अतें बाक़ी हैं, मैं वोह अदा करना चाहता हूं।" मैं ने उस से कहा : "हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का घर क़रीब ही है वहां अदा कर लेना।" उस ने कहा कि "मैं यहीं नमाज़ पढ़ना पसन्द करता हूं क्यूं कि **अल्लाह**

www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ के अह़काम बजा लाने में देर नहीं करनी चाहिये।" चुनान्चे वोह मस्जिद में दाख़िल हुवा और देर तक नमाज़ में मश्ग़ूल रहा फिर मेरे पास आ कर बोला : "ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान ! क्या आप को कोई ह़ाजत है ?" मैं ने पूछा "वोह क्यूं ?" उस ने कहा : "इस लिये कि मैं वापस जाना चाहता हूं।" मैं ने पूछा : "कहां जाना चाहते हो ?" कहा : "आख़िरत की त़रफ़।" मैं ने कहा : "ऐसा न करो मैं तुम से नफ़्अ़ तो उठा लूं।" तो उस ने मुझ से कहा : "जब तक मुआ़–मला मेरे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरमियान था, उस वक़्त तक मुझे ज़िन्दगी पसन्द थी मगर अब जब कि आप भी इस पर मुत्त़लअ़ हो गए हैं तो अ़न्क़रीब और भी बहुत से लोग जान लेंगे लिहाज़ा मुझे इस की कोई ह़ाजत नहीं।" फिर वोह मुंह के बल गिर कर दुआ़ मांगने लगा : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! अभी फ़ौरन मेरी रूह़ क़ब्ज़ फ़रमा ले।" मैं उस के क़रीब हुवा तो देखा कि उस का इन्तिक़ाल हो चुका है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं जब भी उसे याद करता हूं तो मेरा ग़म त़वील हो जाता है, दुन्या मेरी नज़रों में छोटी हो जाती है और मुझे अपने अ़मल ह़क़ीर नज़र आने लगते हैं।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। ﴾اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰی علیه واٰلهٖ وسلَّم﴿

www.dawateislami.net

तक़्वा व मुजा-हदा बाइसे नजात है

ऐ शख़्स ! कब तक इबादत गुज़ारों और ज़ाहिदों का लबादा ओढ़े रखेगा, ह़ालां कि तू अपने दिल की ग़फ़्लत को ख़ूब जानता है,...... तेरा ज़ाहिर तो साफ़ सुथरा है मगर बातिन लम्बी उम्मीदों से आलूदा है,...... जिसे माल की मह़ब्बत अपनी त़रफ़ माइल कर ले वोह ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत के क़ाबिल न रहा,...... अगर मुजा-हदा की मशक़्क़त न होती तो लोगों को ''बा कमाल मर्द'' का नाम न दिया जाता। ऐ मुर्दा दिल ! अगर तू जवानी में नेकियों की त़रफ़ माइल न हो सका तो उधेड़ पन ही में माइल हो जा, क्यूं कि सर सफ़ेद हो जाने के बा'द खेलकूद बे सूद है और बुढ़ापे में सरकशी ज़ियादा बुरी है,...... जब तुझ से कहा जाएगा कि ''तूने जवानी को ग़फ़्लत में ज़ाएअ़ कर दिया और अब बुढ़ापे में (नेक) आ'माल की कमी पर रोता है'',...... अगर तू जान लेता कि तेरे लिये कौन सा अ़ज़ाब तय्यार हो चुका है तो तू सारी रात रोने में गुज़ार देता।

बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िरी का अन्दाज़ :

एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی वा'ज़ फ़रमा रहे थे कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : ''ह़ुज़ूर ! जब भी मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर होता हूं तो कोई न कोई मुसीबत या परेशानी मुझे घेर लेती है, मैं क्या करूं ?'' आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया कि ''अपने मौला عَزَّوَجَلَّ के दर पर इस

www.dawateislami.net

तरह हाज़िर हुवा करो जैसे छोटा बच्चा अपनी मां के पास आता है कि उस की मां उसे मारे तो भी वोह अपनी मां ही की तरफ़ लपकता है और जब भी वोह उसे झिड़क्ती है वोह उसी के पास जाता है और बार बार ऐसा करता है यहां तक कि उस की मां प्यार से उसे अपने आप से चिमटा लेती है।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो। ﴿اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم﴾

क़नाअत :

हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र के दौरान फ़रमाया : "मेरे पाउं मेरी सुवारी हैं, बाल (या'नी ऊन) मेरा लिबास हैं, ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ मेरी पहचान है, ज़मीन के पौदे मेरे फूल हैं, जव की रोटी मेरी गिज़ा है, रात के अंधेरे मेरा साएबान हैं, और जहां रात हो जाए वोही मेरा ठिकाना है और जिसे एक दिन मरना है येह ने'मतें उस के लिये बहुत हैं।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो। ﴿اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم﴾

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली की तलाश :

हज़रते सय्यिदुना शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि "मैं ने मक्कतुल मुकर्रमा में एक आ'राबी (या'नी अ़रब के दीहाती) को सूफ़िया की ख़िदमत करते हुए देखा। मैं ने इस का सबब पूछा तो उस ने मुझे बताया : "मैं वीराने से गुज़र रहा था कि मैं ने एक

www.dawateislami.net

गुलाम को देखा जो नंगे पाउं, बरह्ना सर था। उस के पास तोशा, मश्कीज़ा और अ़सा वग़ैरा कुछ न था। मैं ने अपने दिल में कहा कि "मैं इस से मिलता हूं अगर येह भूका होगा तो इसे खाना खिलाऊंगा और अगर प्यासा होगा तो पानी पिलाऊंगा।" चुनान्चे मैं उस के पीछे पीछे चल दिया यहां तक कि हम दोनों के दरमियान एक हाथ का फ़ासिला रह गया। मगर अचानक वोह मुझ से दूर होना शुरूअ़ हो गया ह़त्ता कि मेरी नज़रों से ओझल हो गया।

मैं ने सोचा कि शायद येह शैत़ान था। तो एक आवाज़ आई : "नहीं बल्कि येह दीवाना था।" मैं ने बुलन्द आवाज़ से इल्तिजा की : "ऐ फ़ुलां मैं तुझे उस ज़ाते पाक का वासित़ा देता हूं जिस ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नबिय्ये बरह़क़ बना कर भेजा है, ज़रा मेरी बात सुनिये।" तो उन्हों ने कहा : "ऐ जवान! तू ख़ुद भी थका और मुझे भी थका दिया।" मैं ने कहा : "मैं आप को अकेला पा कर आप की ख़िदमत के लिये ह़ाज़िर हुवा था।" उन्हों ने फ़रमाया : "जिस के साथ ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ हो वोह अकेला कैसे हो सकता है?" मैं ने पूछा : "मुझे आप के पास कोई तोशा भी नज़र नहीं आया।" तो उन्हों ने फ़रमाया : "जब मुझे भूक लगती है तो ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ मेरा तोशा बन जाता है और जब मुझे प्यास लगती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दीदार मेरा सुवाल और मत़लूब बन जाता है।" मैं ने अ़र्ज़ की : "मुझे भूक लगी है खाना खिला दीजिये।" तो उन्हों ने पूछा : "क्या तुम औलिया की करामात को

www.dawateislami.net

नहीं मानते ?" मैं ने कहा : "क्यूं नहीं ! मगर मैं इत्मीनाने क़ल्ब के लिये येह बातें पूछ रहा हूं ।"

उन्हों ने अपना हाथ रेतीली ज़मीन पर मारा और एक मुठ्ठी भर कर मेरी त़रफ़ बढ़ाई और कहने लगे : "ऐ धोका खाने वाले ! लो खाओ ।" मैं ने देखा कि वोह मिट्टी लज़ीज़ तरीन सत्तू बन चुकी थी, मैं ने कहा : "कितने लज़ीज़ हैं ।" तो वोह बोले : "बयाबान में औलिया को ऐसी बहुत सी ने'मतें मुयस्सर हैं, अगर तू समझे ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "मुझे पानी भी पिलाइये ।" तो उन्हों ने अपना पाउं ज़मीन पर मारा तो शहद और पानी का चश्मा फूट पड़ा । मैं पानी पीने के लिये चश्मे पर बैठ गया फिर जब मैं ने सर उठाया तो वोह मुझे नज़र न आए । न जाने वोह कहां ग़ाइब हो गए । लिहाज़ा उस दिन से मैं फु-क़रा की ख़िदमत में मसरूफ़ हूं शायद उस जैसे किसी वली की ज़ियारत कर सकूं ।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । ﴿اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم﴾

ऐ शख़्स ! तू कब तक औलिया رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के फ़क़त ह़ालात ही सुनता रहेगा और उन के नक़्शे क़दम पर चलने से कतराएगा,...... तौबा करने वालों की सोह़बत इख़्तियार कर ले, शायद तू भी उन के रास्ते पर चल पड़े,...... ऐ धुत्कारे हुए शख़्स ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रोने वालों से सबक़ सीख,...... जो लोग बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में गिर्या व ज़ारी करते हैं वोह भी तो तेरे जैसे ही इन्सान हैं,...... ऐ बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ से दूर

www.dawateislami.net

हो जाने वाले ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मुआ़फ़ी मांग ले शायद तू रुस्वाई से बच जाए।

मेरे भाई ! बड़े तअ़ज्जुब की बात है मैं कब तक दूर हो जाने वाले को मलामत करता रहूंगा और येह मलामत कब तक फ़ाएदा देगी, मैं कब तक ग़ाफ़िल हो जाने वाले को पुकारता रहूंगा कि काश ! वोह पुकार को सुन ले, मैं कब तक तुझे नसीह़त करूंगा और तेरे क़बूल करने के लालच में रहूंगा।

ऐ ख़ुश्क आंखों वाले ! तेरी आंख कभी न रोई,...... याद रख कि आख़िरत की रुस्वाई की एक अ़लामत दिल में ख़ौफ़ का न होना भी है,...... तेरा दिल फ़ानी दुन्या की मह़ब्बत में लग गया और तू ह़राम को जम्अ़ करने लगा,...... ऐ ग़ाफ़िल ! याद रख कि ऐसा माल जम्अ़ करने का ह़िसाब तुझी से होगा ह़ालां कि तू उसे अपनों के लिये छोड़ जाएगा जो तुझे कुछ नफ़अ़ नहीं देंगे,...... तू खेलकूद में ही मश्ग़ूल रहता है ह़ालां कि तुझे बताया जाता है कि "फुलां शख़्स दुन्या से कूच कर गया और उस की वापसी की कोई उम्मीद नहीं।"

तन्हाई में मुह़ा-स-बए नफ़्स :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबू सालेह़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं इबादत गुज़ारों और ज़ाहिदों की तलाश में "लकाम" पहाड़ पर घूम रहा था कि मुझे एक जगह बोसीदा और पैवन्द लगे हुए लिबास में मल्बूस एक शख़्स किसी चट्टान पर बैठा हुवा नज़र

www.dawateislami.net

आया। उस ने गरदन झुका रखी थी मैं ने पूछा : "आप यहां क्या कर रहे हैं ?" जवाब दिया : "निगह्‌बानी और देखभाल कर रहा हूं।" मैं ने कहा कि "आप के सामने तो पथ्थर और कंकरियां हैं, किस चीज़ की देखभाल कर रहे हैं।" फ़रमाया : "मैं अपने दिल के ख़यालात की निगह्‌बानी कर रहा हूं और अपने रब عَزَّوَجَلَّ के अह़काम की ह़िफ़ाज़त कर रहा हूं।" फिर कहने लगे "तुझे उस ज़ाते पाक की क़सम जिस ने तुझे मेरे सामने ज़ाहिर किया है ! यहां से चला जा क्यूं कि तूने मेरी तवज्जोह अपने आक़ा से हटा दी है।" मैं ने अ़र्ज़ किया : "मुझे कोई नसीह़त फ़रमाएं ताकि मैं उस से नफ़्अ़ उठा सकूं।" फ़रमाया : "जो दरवाज़े पर पड़ा रहता है वोह अपनी ख़िदमत साबित कर देता है और जो कसरत से गुनाहों को याद करता है वोह बहुत ज़ियादा नदामत का इज़्हार करता है और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा दूसरों से बे परवाह हो जाता है उसे मोह़ताजी का ख़ौफ़ नहीं होता।" फिर वोह वहां से चले गए।

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। ﴿اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم﴾

www.dawateislami.net

इबादत की पाकीज़गी और मीनारे तक़्वा

ऐ वोह शख़्स ! जिस का सफ़र दुन्या की त़लब में तेज़ी से कट रहा है,...... तू दुन्या की झूटी उम्मीदों से कब छुटकारा पाएगा ?...... याद रख ! तुझे छुटकारा उसी वक़्त मिलेगा जब तू दुन्या से कटेगा,...... अगर तू आख़िरत का त़लब गार है तो सुस्त रफ़्तार होते हुए नफ़्अ किस त़रह़ पाएगा ?...... तअ़ज्जुब है कि तू फ़ना हो जाने वाली दुन्या की तलाश में तो सफ़र की तय्यारी ख़ूब करता है, ह़ालां कि इस रास्ते में तो बहुत से रहज़न भी हैं,...... तेरी ज़िन्दगी एक अमानत है जिस की जवानी तूने ख़ियानत में गुज़ार दी, उधेड़ उ़म्री बेकार कामों में ज़ाएअ़ कर दी और अब बुढ़ापे में रो रहा है और येह कह रहा है कि "हाए ! मेरी उ़म्र ज़ाएअ़ हो गई।"...... ख़रीदो फ़रोख़्त में बद दियानती करने वाला भला कैसे काम्याब हो सकता है ?...... दुन्या की त़लब में तो तेरा जिस्म बड़ा चाको चौबन्द रहा और अब त़-लबे आख़िरत में तुझे मुख़्तलिफ़ तकालीफ़ होने लगी हैं,...... कब तक राहे तक़्वा पर चलने में सुस्ती करेगा,...... ऐ ग़फ़्लत की तारीकी में ज़िन्दगी बसर करने वाले ! बुढ़ापे का सूरज तुलूअ़ हो चुका, मरने से पहले तौबा करने वालों की रफ़ाक़त इख़्तियार कर ले। इर्शादे बारी तआ़ला है :

وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ فِی السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِیْ كِتٰبٍ مُّبِیْنٍ ۝ (پ۲۰، النمل:۷۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जितने ग़ैब हैं आस्मानों और ज़मीन के सब एक बताने वाली किताब में है।

www.dawateislami.net

चन्द अश्आ़र

إِذَا اَنَا لَمْ اَصْبِرْ عَلٰى مَنْ أُحِبُّهُ   وَاِنْ حَالَ عَنْ وَصْلِيْ فَمَا اَنَا صَانِعُ

اَاَتْرُكُهُ وَالْقَلْبُ مِنْ فَرْطِ حُبِّهِ   اَسِيْرٌ بِمَا تَطْوِيْ عَلَيْهِ الْاَضَالِعُ

اَاَسْمَعُ فِيْهِ الْعَذْلَ وَالْوَجْدُ حَاكِمٌ   فَمَا يُغْنِيْنِيْ بِالْعَذْلِ مَااَنَاسَامِعُ

اَاَسْلُوْهُ وَالشَّوْقُ يَمْنَعُ سَلْوَتِيْ   وَاَكْتُمُ مَاقَدْ اَظْهَرَتْهُ الْمَدَامِعُ

وَيَعْتِبُنِيْ قَلْبِيْ اِذَا زَادَ وَجْدُهُ   فَاَضْرِبُ صَفْحًادُوْنَهُ وَاُمَانِعُ

وَاِنْ زَادَ بِيْ اَشْتَكِيْهِ، فَحَسْبُهُ   عَلٰى كُلِّ حَالٍ عِنْدَ شَكْوَاىَ شَافِعُ

فَلَاعِيْشَةٌ تَصْفُوْوَلَامَوْعِدٌيَّفِيْ   وَلَانَظَرٌ يُّسْلِيْ وَلَا الصَّبْرُ نَافِعُ

اَرَى الدَّهْرَ يَمْضِيْ بُرْهَةً بَعْدَبُرْهَةٍ   وَلَمْ اُلْفِ مَامَالَتْ اِلَيْهِ الْمَطَامِعُ

فَاِنْ ضِقْتُ ذَرْعًا بِالَّذِىْ قَدْلَقِيْتُهُ   فَكُلُّ مَضِيْقٍ فَهُوَ فِى الْحُبِّ وَاسِعُ

तरजमा : (1) मह़बूब से जुदा होने के बा वुजूद अगर मैं उस की अज़िय्यतों पर सब्र न करूं जब तो मैं उस से मह़ब्बत करने वाला ही न हुवा ।

(2) तो क्या मैं उस का ख़याल छोड़ दूं जिस के इ़श्क़ में दिल ऐसा गिरिफ़्तार है जिस त़रह़ वोह (दिल) पस्लियों की क़ैद में है ।

(3) क्या मैं इस मुआ़-मले (मह़ब्बत) में मलामत को सुनता रहूं ह़ालां कि मह़ब्बत ह़ाकिम है पस मलामत मुझे मह़ब्बत से नहीं रोक सकती और न ही मैं उस को सुनने वाला हूं ।

(4) क्या मैं (अपने) दिल को दिलासा दूं ? ह़ालां कि शौक़ मेरे दिलासे को रोकता है क्या मैं उसे छुपा दूं जिस को आंसूओं ने ज़ाहिर कर दिया ।

(5) जब उस की मह़ब्बत बढ़ती है तो मेरा दिल मुझे मलामत

www.dawateislami.net

करता है, क्या उस के मुख़ालिफ़ की त़रफ़ रुख़ कर लूं और उस की ह़िमायत करूं ?

(6) और अगर मेरा दर्दे मह़ब्बत बढ़ जाता है तो मैं उसी मह़बूब से इल्तिजा करता हूं तो वोह मुझे हर ह़ाल में काफ़ी है, मुसीबतों के वक़्त वोही सहारा देने वाला है।

(7) न ज़िन्दगी पाकीज़ा गुज़र रही है, न वा'दा पूरा हो पा रहा है, न उस शै का इन्तिज़ार है जो ग़म को दूर कर दे, और न ही सब्र नफ़्अ़ दे रहा है।

(8) मैं देख रहा हूं कि ज़माना लम्ह़ा ब लम्ह़ा गुज़र रहा है और जिस की त़रफ़ (आख़िरत के) ह़रीस माइल हैं मैं उस की तय्यारी न कर सका।

(9) अगर मैं अपने मह़बूब से बालिश्त बराबर दूरी इख़्तियार करूं तो येह इन्तिहा द-रजे की दूरी होगी कि मह़ब्बत में येह (बालिश्त बराबर दूरी) भी बड़ी होती है।

नेक ख़ातून :

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि "मैं ने एक इबादत गुज़ार औ़रत को देखा। जब मैं उस के क़रीब पहुंचा तो उस ने मुझे सलाम किया, मैं ने सलाम का जवाब दिया तो उस ने पूछा : "आप कहां से आ रहे हैं ?" मैं ने कहा कि "उस ह़िक्मत वाले के पास से जिस की मिस्ल कोई नहीं।" तो उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी फिर बोली कि "तुम पर अफ़्सोस है कि तुम ने उस की बारगाह में अज्नबिय्यत की वह़शत कैसे मह़सूस की, कि उस से जुदा हो गए ह़ालां कि वोह तो अज्नबियों को उन्स पहुंचाने

www.dawateislami.net

वाला, कमज़ोरों का मददगार और आक़ाओं का आक़ा है, तुम ने अपने आप को उस से जुदाई पर कैसे राज़ी कर लिया ?''

मैं उस औ़रत का कलाम सुन कर रोने लगा तो उस ने पूछा : ''क्यूं रो रहे हो ?'' मैं ने कहा : ''ज़ख़्म पर मरहम रख दिया गया तो वोह जल्द ही भर गया ।'' वोह कहने लगी : ''अगर तुम सच्चे होते तो क्यूं रोते ?'' मैं ने पूछा : ''क्या सच्चा नहीं रोता ?'' उस ने जवाब दिया : ''नहीं ।'' मैं ने पूछा : ''वोह क्यूं ?'' जवाब दिया : ''इस लिये कि रोना तो दिल की राह़त व सुकून के लिये होता है जब कि अ़क़्ल मन्दों के हां येह एक मा'यूब शै है ।'' मैं ने उस से कहा : ''मुझे कोई ऐसी नसीह़त कीजिये जिस के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे नफ़्अ़ अ़ता फ़रमाए ।'' कहने लगी : ''अपने मौला عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात के शौक़ में इ़बादत कीजिये क्यूं कि उस ने अपने औलिया की मुलाक़ात के लिये एक दिन (या'नी क़ियामत का दिन) मुक़र्रर कर रखा है, **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला ने उन्हें दुन्या में अपनी मह़ब्बत का ऐसा जाम पिला दिया जिस के बा'द उन्हें प्यास न लगी ।'' फिर वोह रोते हुए कहने लगी : ''या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! तू मुझे कब तक इस दुन्या में रखेगा जहां मेरा कोई हमदर्द नहीं जो मुश्किलात में मेरा साथ दे सके ।'' फिर येह शे'र पढ़ने लगी :

اِذَا کَانَ دَاءُ الْعَبْدِ حُبَّ مَلِیْکِہٖ　　فَمَنْ دُوْنَہٗ یَرْجِیْ طَبِیْبًا مُدَاوِیًا

तरजमा : जब बन्दे का मरज़ अपने मालिक की मह़ब्बत हो तो उस के इलावा वोह किस त़बीब से इलाज की तवक़्क़ोअ़ रखे ।''

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم﴿

www.dawateislami.net

मेरे प्यारे इस्लामी भाई !

अगर तेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ने तुझे अपनी बारगाह से दूर कर दिया तो तू किस के दरवाज़े पर जाएगा ? और कौन से रास्ते पर चलेगा और किस जानिब का इरादा करेगा ? अपने मौला का दरवाज़ा पकड़ ताकि तेरी वापसी तेरे लिये फ़ाएदा मन्द हो ।

चन्द अश्आर

حَنِيْنُ قُلُوْبِ الْعَارِفِيْنَ اِلَى الذِّكْرِ — وَتَذْكَارُهُمْ عِنْدَ الْمُنَاجَاةِ بِالسِّرِّ

وَاَجْسَامُهُمْ فِىْ الْاَرْضِ سَكْرٰى بِحُبِّهٖ — وَاَرْوَاحُهُمْ فِىْ لَيْلِ حُجْبِ الْعُلٰى تَسْرِىْ

عِبَادٌ عَلَيْهِمْ رَحْمَةُ اللّٰهِ اُنْزِلَتْ — فَظَلُّوْا عُكُوْفًا فِى الْفَيَافِىْ وَفِى الْقَفْرِ

وَرَاعُوْا نُجُوْمَ اللَّيْلِ لَا يَرْقُدُوْنَهٗ — بِاِدْمَانِ تَثْبِيْتِ الْيَقِيْنِ مَعَ الصَّبْرِ

فَهٰذَا نَعِيْمُ الْقَوْمِ اِنْ كُنْتَ فَاهِمًا — وَتَعْقِلُ عَنْ مَوْلَاكَ آدَابَ مَنْ يَّدْرِىْ

فَمَا عَرَّسُوْا اِلَّا بِقُرْبِ حَبِيْبِهِمْ — وَلَا عَرَّجُوْا عَنْ مَسِّ بُؤْسٍ وَّلَا ضُرٌّ

اُدِيْرَتْ كُؤُوْسٌ لِلْمَنَايَا عَلَيْهِمْ — فَغَفَوْا عَنِ الدُّنْيَا كَاِغْفَاءِ ذِىْ سُكْرٍ

هُمُوْمُهُمْ جَالَتْ لَدٰى حُجْبِ الْعُلٰى — وَهُمْ اَهْلُ وُدِّ اللّٰهِ كَالْاَنْجُمِ الزُّهْرِ

فَلَا عَيْشَ اِلَّا مَعَ اُنَاسٍ قُلُوْبُهُمْ — تَحِنُّ اِلَى التَّقْوٰى وَتَرْتَاحُ لِلذِّكْرِ

तरजमा : (1) आ़रिफ़ीन के दिल ज़िक्र के मुश्ताक़ रहते हैं और वोह मुनाजात के वक़्त पस्त आवाज़ में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ व तक़्दीस बयान करते हैं ।

(2) और ज़मीन में उन के अज्साम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत के सबब मदहोश रहते हैं और उन की रूह़ें आ़लीशान ह़िजाबात में रात को सैर करती हैं ।

(3) येह वोह बन्दे हैं जिन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बरस्ती है और उन्हों ने जंगलात और चटियल मैदानों में ठिकाने बना लिये हैं ।

www.dawateislami.net

(4) और वोह सितारों की निगह्बानी करते हैं, सब्र के साथ पुख़्ता यक़ीन की वज्ह से रातों को नहीं सोते। (या'नी इ़बादत करते हैं)

(5) इन्सानों के लिये अ़ज़ीम ने'मत येही है अगर तू समझ ले और अपने मौला عَزَّوَجَلَّ की बारगाह के आदाब से वाक़िफ़ (लोगों) की त़रह़ इ़ल्म रखे।

(6) वोह अपनी आराम गाहों से अपने मह़बूब के क़ुर्ब ही के लिये अलग होते हैं और वोह किसी तक्लीफ़ व नुक़्सान के पहुंचने की परवाह नहीं करते।

(7) उन पर दुन्यावी ख़्वाहिशात के जाम पेश किये जाते हैं मगर येह लोग दुन्या से यूं बे परवाह हैं जिस त़रह़ मदहोश हलकी नींद में होता है।

(8) उन के ख़यालात ह़िजाबाते उ़ला के पास घूमते हैं, येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ मह़ब्बत करने वाले हैं और चमक्ते सितारों की त़रह़ हैं।

(9) ज़िन्दगी उन्ही लोगों के साथ गुज़ारनी चाहिये जिन के दिल तक़्वा व परहेज़ गारी से मा'मूर और यादे इलाही عَزَّوَجَلَّ से राह़त पाते हैं।

नेक सीरत दामाद :

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं एक सफ़र के दौरान किसी रास्ते से गुज़र रहा था। मैं रोज़े से था, मैं ने एक बहती नह्र को देखा तो उस में ग़ुस्ल के लिये ग़ोत़ा लगा दिया। अचानक मैं ने पानी की सत़ह़ पर एक बहीदाना (एक फल) तैरते हुए देखा तो उसे इफ़्त़ार के लिये उठा लिया। जब मैं ने उस से इफ़्त़ारी कर ली

www.dawateislami.net

तो बहुत नदामत हुई कि मैं ने ग़ैर के माल से इफ़्तारी कर ली। जब सुब्ह़ हुई तो मैं उस बाग़ के दरवाज़े पर पहुंच गया जहां से नह्र निकल रही थी। मैं ने दरवाज़े पर दस्तक दी तो एक उ़म्र रसीदा बुज़ुर्ग बाहर निकले मैं ने उन से कहा : "कल आप के इस बाग़ से एक बहीदाना दरिया में बहता हुवा गया था मैं ने उसे उठा कर खा लिया और अब मैं इस पर बहुत नादिम हूं मुझे उम्मीद है कि आप इस का कोई ह़ल निकालेंगे।" वोह बुज़ुर्ग बोले : "मैं तो ख़ुद इस बाग़ में मज़दूर हूं, मुझे यहां काम करते हुए चालीस साल हो गए मगर मैं ने इस का एक फल भी नहीं खाया और इस बाग़ में मेरा कोई ह़िस्सा नहीं।" मैं ने पूछा : "फिर येह बाग़ किस का है?" उन्हों ने कहा कि "येह बाग़ दो भाइयों का है जो फ़ुलां जगह रहते हैं।"

मैं उस जगह पहुंच गया, वहां मुझे एक ही भाई मिल सका। मैं ने उसे सारा माजरा बताया तो वोह कहने लगा : "निस्फ़ बाग़ तो मेरा है लिहाज़ा मैं आधा ह़िस्सा मुआ़फ़ करता हूं।" मैं ने पूछा : "मैं तुम्हारे भाई को कहां ढूंडूं?" उस ने कहा : "फ़ुलां फ़ुलां जगह चले जाओ।" तो मैं उस त़रफ़ चल दिया और उसे जा कर सारा क़िस्सा सुनाया तो उस ने कहा कि "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम! मैं एक शर्त़ पर अपना ह़क़ मुआ़फ़ करूंगा।" मैं ने पूछा कि "वोह शर्त़ क्या है?" वोह बोला कि "मैं तुम से अपनी बेटी का निकाह़ करूंगा और तुम्हें सो दीनार दूंगा।" मैं ने कहा : "अफ़्सोस कि मुझे इस की बिल्कुल ह़ाजत नहीं क्या आप नहीं जानते कि इस एक फल की वज्ह से मुझे कितनी परेशानी हुई है लिहाज़ा मेरे लिये कोई और ह़ल तलाश करें।" उन्हों ने कहा कि "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम! मैं इस

www.dawateislami.net

शर्त् के बिग़ैर ऐसा नहीं करूंगा।"

जब मैं ने उन का इसरार देखा तो उन का मुत़ा-लबा तस्लीम कर लिया और कहा : "ठीक है।" उन्हों ने मुझे सो दीनार दिये और कहा : "इस में से जितने चाहो मेरी बेटी के मह्र के त़ौर पर दे दो।" मैं ने सारे दीनार वापस कर दिये। मगर उन्हों ने कहा कि "सारे नहीं कुछ दीनार दे दो।" फिर जब उन्हों ने अपनी बेटी का निकाह़ मुझ से कर दिया तो लोगों ने उसे इस बात पर मलामत की, कि : "जब अरबाबे इख़्तियार और बड़े लोगों ने तुम्हारी बेटी के लिये पैग़ाम भेजा था तो तुम ने उन्हें अपनी बेटी नहीं दी, तो इस फ़क़ीर को क्यूं दे दी जिस के पास बिल्कुल माल नहीं है ?" तो उन्हों ने लोगों से कहा : "ऐ लोगो ! मैं ने परहेज़ गारी और तक़्वा को तरजीह़ दी है क्यूं कि येह शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों में से है।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه والهٖ وسلّم﴿

इ़बादत गुज़ारों का रास्ता और ताइबीन का त़रीक़ा

ऐ राहे सालिह़ीन से दूर रहने वाले ! तुझ पर अपने नूरे बसारत की इस्लाह़ लाज़िम है,...... तारीक दिल शुकूक के कांटों पर चल रहा है और तू बे ख़बर है,...... तौबा करने वाला अपनी उ़म्र इ़बादत में गुज़ारता है, दिन में रोज़ा रखता है और रात में इ़बादत करता है जब कि आराम पसन्द और काहिल आदमी का वक़्त ग़फ़्लत में गुज़रता है, उस की बसीरत ग़ौरो तफ़क्कुर से बे बहरा होती है क्यूं कि जो शख़्स दुन्या से बे रग़्बती का मज़ा चख लेता है

www.dawateislami.net

उसे शब बेदारी और रात में नमाज़ पढ़ने में बहुत लज़्ज़त ह़ासिल होती है,...... अगर तुम्हें रात के अवाइल में तहज्जुद पढ़ने वाले नज़र नहीं आते तो स-ह़री के वक़्त उन्हें देख लिया करो और ग़फ़्लत की नींद से बेदार हो जाओ कि अब तो इस बुढ़ापे की फ़ज्र तुलूअ़ हो चुकी है अगर तू बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से पीछे रह गया तो येह पीछे रह जाना तुझे ज़िल्लत में डाल देगा।

इबादत गुज़ार कैसा हो ?

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम में से कोई बुरे ग़ुलाम की त़रह़ न बने कि अगर ख़ौफ़ज़दा हो तो अ़मल करे और बे ख़ौफ़ हो तो अ़मल न करे और न ही तुम में से कोई बुरे मज़दूर की त़रह़ बने अगर ज़ियादा उजरत न मिले तो काम न करे।"

(اتحاف السادۃ المتقین، کتاب المحبۃ والشوق والانس، باب بیان ان المستحق للمحبۃ ھواللہ وحدہ، ج۱۲، ص ۳۲۸)

मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ का इन्आ़म :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि "ऐ दावूद ! उ़श्शाक़, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़िल्म या'नी बुर्द-बारी में ज़िन्दगी गुज़ारते हैं, ज़ाकिरीन, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत में ज़िन्दगी गुज़ारते हैं, आ़रिफ़ीन, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लुत़्फ़ो करम में ज़िन्दगी बसर करते हैं और सिद्दीक़ीन, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बिसात़े उन्स में ज़िन्दगी गुज़ारते हैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही उन्हें खिलाता पिलाता है।"

===

www.dawateislami.net

आख़िरत के त़लब गारों का रास्ता

ऐ शख़्स ! तू कब तक गुनाहों पर इसरार करेगा ? तू गुनाहों से कब तौबा करेगा ?...... तेरा जिस्म खेलकूद में मश्ग़ूल है और तेरा दिल तक़्वे से मह़रूम होने की वज्ह से बरबाद हो गया है,...... तूने अपनी जवानी ग़फ़्लत में गुज़ार दी और अब बुढ़ापे में अपनी जवानी बरबाद होने पर रो रहा है ?...... वा'ज़ (या'नी बयान) की मजलिस में तो तू फ़ौत शुदा अ़मल पर रोता है लेकिन जब मजलिस से उठता है तो फिर से गुनाहों में जा पड़ता है,...... मेरा वा'ज़ तुझ पर कोई असर नहीं करता (शायद) तुझ पर इब्रत का दरवाज़ा बन्द हो चुका है,...... मैं कब तक तेरे दिल को समझाऊं, ह़ालां कि मैं जानता हूं कि तेरा दिल ह़ाज़िर नहीं,...... ऐ ग़ाफ़िल दिल वाले ! तू नसीह़त को क्यूंकर समझ सकता है ?...... हाए आफ़्सोस ! अगर तुझे बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ से धुत्कार दिया गया तो शैत़ान कितना ख़ुश होगा,...... येह ग़मज़दों के रोने की जगह है और येह मजलिस कितनी अच्छी है कि तौबा करने वालों का गुरौह अपने अह़बाब की त़रफ़ कूच कर गया ।

आह ! बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ से धुत्कारे हुए बन्दे की वह़शत का क्या आ़लम होगा कि वोह क़ुर्बे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ का कोई ज़रीआ़ न पा सकेगा,...... ऐ अपने अह़बाब से कट जाने वाले ! आ़जिज़ी व इन्किसारी के साथ क़ाफ़िले वालों के क़दमों से वाबस्ता हो जा और गिर्या व ज़ारी करते हुए यूं अ़र्ज़ कर : "मैं वोह हूं जो मह़रूमी के जंगल में भटक गया है और बद बख़्ती के वीराने में तन्हा रह गया है, छुप छुप कर आंसू बहा रहा है मगर जब उस ने

www.dawateislami.net

ह़ाज़िरी का इरादा किया उस को गुनाहों की वज्ह से दरबानों ने ह़ाज़िरी से रोक दिया, उस के पास कोई ज़ादे सफ़र नहीं, कोई सुवारी नहीं और कुछ त़ाक़त नहीं वोह कहां जाए ?'' तो शायद ग़ैब के पर्दों के पीछे से कोई रह़मत ज़ाहिर हो जो तेरी मुसीबतों की मुश्किलात को आसान कर दे ।

वोह पाकीज़ा नुफ़ूस किस क़दर ख़ुश नसीब हैं जिन्हों ने बिला ह़िजाब आख़िरत का मुशा-हदा किया है और जो कुछ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने फ़रमां बरदारों के लिये अज्रो सवाब तय्यार फ़रमाया उस का मुआ-यना किया है, तुम ग़ौर तो करो कि उन्हों ने अपने बदन क्यूं कमज़ोर कर डाले, अपने जिगर प्यासे रखे, अपनी गरदनें (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये क्यूं) झुका दीं और उसी के ज़िक्र को अपनी पूंजी और मुराद क्यूं बनाया ?

चन्द अश्आ़र

يَارِجَالَ اللَّيْلِ مَهْلًا عَرِّسُوْا　　اِنَّنِیْ بِالنَّوْمِ عَنْكُمْ مُشْتَغِلْ

شَغَلَتْنِیْ عَنْكُمُ النَّفْسُ الَّتِیْ　　تَقْطَعُ اللَّيْلَ بِنَوْمٍ وَكَسَلْ

اَنَا بَطَّالٌ وَّاَنْتُمْ رُكَّعٌ　　زَادَ تَفْرِيْطِیْ وَزِدْتُّمْ فِیْ الْعَمَلْ

قُلْتُ مَهْلًا سَادَتِیْ اَهْلَ الْوَفَا　　حَمَلَ الْقَوْمُ وَقَالُوْا الْاَمَهَلْ

तरजमा : (1) ऐ रात में इ़बादत करने वालो ! कुछ देर तो आरामं गाह में चले जाओ, कि मैं नींद के सबब तुम से (या'नी तुम्हारी इस इ़बादत में शरीक होने से) दूर हूं ।

(2) मुझे नींद और सुस्ती में रात गुज़ारने वाले नफ़्स ने तुम से बे तवज्जोह कर दिया है ।

www.dawateislami.net

(3) मैं फ़ुज़ूलियात में मश्ग़ूल हूं और तुम नमाज़ में, मेरी कोताही में इज़ाफ़ा हुवा और तुम अ़मल में आगे बढ़ गए।

(4) मैं ने कहा : "वफ़ा के पैकर सरदारो ! कुछ इन्तिज़ार कर लो।" तो वोह बे नियाज़ी से कहने लगे : " इन्तिज़ार की मोहलत नहीं है।"

क़ुर्बे इलाही पाने का त़रीक़ा :

ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने एक नबी عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह्य भेजी कि जब तुम ह़ज़ीरए क़ुद्स (या'नी जन्नत) में रहना चाहो तो दुन्या से कनारा कश हो जाओ और इस त़रह़ ग़मगीन और तन्हा हो जाओ जैसे तन्हा रह जाने वाला परिन्दा चटियल ज़मीन में साया पाने वाली जगह पर होता है, वोह चश्मों के पानी पर आता और दरख़्तों से फल खाता है और जब रात हो जाती है तो दीगर परिन्दों से डरता हुवा तन्हा छुप जाता है और अपने रब عَزَّوَجَلَّ से उन्स ह़ासिल करता है।"

ह़ुसूले इब्रत :

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : "एक आ़बिद का गुज़र किसी राहिब के क़रीब से हुवा तो उस ने राहिब से कहा कि "ऐ राहिब ! तुम मौत को कैसे याद करते हो ?" राहिब ने जवाब दिया : "मैं जब भी कोई क़दम उठाता हूं तो दूसरा क़दम रखने से पहले डरता हूं कि कहीं मर न जाऊं।" आ़बिद ने पूछा : "इबादत के लिये तुम्हारा जोश कैसा होता है ?" राहिब ने कहा : "मैं ने जन्नत के बारे में जानने वाले किसी शख़्स

www.dawateislami.net

के बारे में नहीं सुना कि उसे वक़्त मिले और वोह दो रक्अ़तें अदा न करे।" आ़बिद ने पूछा : "तुम राहिबों को क्या हुवा है कि तुम येह सियाह पैवन्द दार लिबास पहने रहते हो ?" राहिब ने कहा : "मुसीबत ज़दा लोगों का लिबास ऐसा ही होता है।" आ़बिद ने पूछा : "ऐ राहिब ! क्या हर राहिब मुसीबत में है ?" राहिब ने कहा कि "ऐ मेरे भाई ! गुनहगारों के लिये गुनाहों से बड़ी मुसीबत कौन सी है।" उस आ़बिद का कहना है कि "मुझे जब भी येह गुफ़्त-गू याद आती है तो मैं रो पड़ता हूं।"

हज़रते सय्यिदुना उ़त्बा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार करने वालों में से एक ज़ाहिद ने येह अश्आ़र कहे हैं।

وَيَوْمَ تَرَى الشَّمْسَ قَدْ كُوِّرَتْ ۔۔۔ وَفِيْهِ تَرَى الْاَرْضَ قَدْ زُلْزِلَتْ
وَفِيْهِ تَرٰى كُلَّ نَفْسٍ غَدًا ۔۔۔ اِذَا حُشِرَ النَّاسُ مَاقَدَّمَتْ
اَتَرْقُدُ عَيْنَاكَ يَا مُذْنِبًا ۔۔۔ وَاَعْمَالُكَ السُّوْءُ قَدْ دُوِّنَتْ
فَاِمَّا سَعِيْدٌ اِلٰى جَنَّةٍ ۔۔۔ وَكُفَّاهُ بِالنُّوْرِ قَدْ خُضِّبَتْ
وَاِمَّا شَقِيٌّ كُسِيَ وَجْهُهٗ ۔۔۔ سَوَادًا وَّكُفَّاهُ قَدْ غُلِّلَتْ

तरजमा : (1) उस दिन तू देखेगा कि सूरज मांद पड़ जाएगा, और ज़मीन ज़ल्ज़लों में होगी।

(2) जिस दिन लोगों का ह़श्र होगा तो उस में देखेगा कि हर नफ़्स ने कल (क़ियामत) के लिये क्या कुछ आगे भेजा।

(3) ऐ बदकार ! तेरी आंखें सो रही हैं जब कि तेरे आ'माले बद जम्अ़ हो रहे हैं।

(4) सआ़दत मन्द का ठिकाना तो जन्नत होगा और उस के हाथ नूर से मा'मूर होंगे।

www.dawateislami.net

(5) और बद बख़्त के मुंह पर सियाही छाई होगी और उस के हाथ बंधे होंगे।

दुन्यावी लज़्ज़तों से कनारा कशी :

एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सफ़र पर रवाना हुए। जब उन्हें सख़्त गरमी मह़सूस हुई तो उन्हों ने इमामा मंगवाया और उसे सर पर बांध लिया फिर फ़ौरन ही उसे उतार दिया। अ़र्ज़ की गई : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इमामा क्यूं उतार दिया येह तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को गरमी से बचा रहा था ?" फ़रमाया कि "मुझे पिछले ज़माने के लोगों के येह अश्आ़र याद आ गए" :

مَنْ كَانَ حِيْنَ تَمَسُّ الشَّمْسُ جَبْهَتَهُ ... اَوِالْغُبَارُ يَخَافُ الشَّيْنَ وَالشَّعْثَا

وَيَاْلَفُ الظِّلَّ كَيْ تَبْقٰى بَشَاشَتُهُ ... فَسَوْفَ يَسْكُنُ يَوْمًا رَاغِمًا جَدَثًا

فِيْ قَعْرِ مُظْلِمَةٍ غَبْرَاءَ مُوْحِشَةٍ ... يُطِيْلُ تَحْتَ الثَّرٰى فِيْ جَوْفِهَا اللُّبْثَا

तरजमा : (1) ऐसा शख़्स जो अपने चेहरे पर धूप और गुबार पड़ने से डरता है कि कहीं ऐ़बदार या परागन्दा न हो जाए।

(2) और साए की तलाश करता है ताकि उस की तरो ताज़गी क़ाइम रहे येह अ़न्क़रीब एक दिन क़ब्र में ख़ाक आलूद हो कर रहेगा।

(3) वोह तारीक, गुबार आलूद और वह़शत में डालने वाले गढ़े में होगा और अ़र्सए दराज़ तक मिट्टी के नीचे उस के पेट में रहेगा।

नेक लोगों का सदक़ा :

ह़ज़रते सय्यिदुना ई़सा बिन मरयम

www.dawateislami.net

(عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) अपने ह़वारियों के पास तशरीफ़ लाए। ह़वारियों के चेहरे गर्द आलूद थे मगर नूर से चमक रहे थे। आप عَلَیْهِ السَّلَام ने उन से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ आख़िरत के बेटो ! नाज़ व ने'मत में रहने वालों को तुम्हारी बची ने'मतों ही से ह़िस्सा मिलता है।"

﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।** ﴿اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم﴾

नूरानी चेहरे :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی से पूछा गया : "तहज्जुद गुज़ार लोगों के चेहरे दीगर लोगों से ज़ियादा ख़ूब सूरत क्यूं होते हैं ?" तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये तन्हाई इख़्तियार करते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें अपने नूर का लिबास पहना देता है।"

रोने वाला नौ जवान :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू माजिद عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاجِد फ़रमाते हैं : "मैं सूफ़िया से बहुत मह़ब्बत रखता था, एक दिन मैं उन के पीछे पीछे एक आ़लिम की मजलिस में पहुंचा तो मैं ने उस मजलिस में एक नौ जवान देखा जिस की ज़ियारत के लिये लोग बेताब थे। वोह नौ जवान जब "**अल्लाह, अल्लाह**" की सदाएं सुनता तो अपने आंसूओं पर क़ाबू न रख पाता। ऐन आ़लमे शबाब में उसे इस त़रह़ रोता देख कर मुझे बड़ा तअ़ज्जुब हुवा। मैं ने एक बुज़ुर्ग से उस नौ जवान के बारे में पूछा तो उन्हों ने बताया : "येह

www.dawateislami.net

तौबा के बा'द इस त़रह़ अश्कबारी करता और नवाफ़िल की अदाएगी में मसरूफ़ नज़र आता है, इस का दिल बहुत नर्म है और येह मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ में खुद-रफ़्ता है।" इसी अस्ना में किसी क़ारी ने येह आयते करीमा पढ़ी :

فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ (پ۲،البقرة:۱۵۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चरचा करूंगा।

तो वोह अपनी जगह से उठ खड़ा हुवा और कहने लगा : "ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ वोह ज़लील व रुस्वा हो गया जिस के दिल में तेरी याद के इलावा कुछ और है, ऐ दिलों के मह़बूब ! सारी काएनात में तेरे सिवा कौन है जिसे याद किया जाए।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

चन्द अश्आर

تَهَتُّكِيْ فِيْ الْهَوٰى حَلَالِيْ وَعَاذِلِيْ مَالَهٗ وَمَالِيْ

يَلُوْمُنِيْ فِيْ الْغَرَامِ جَهْلًا وَكُلَّمَا لَامَنِيْ حَلَالِيْ

قَالُوْا تَسَلَّيْتَ قُلْتُ كَلَّا يَاقَوْمِ مِثْلِيْ يَكُوْنُ سَالِيْ

قَالُوْا تَعَشَّقْتَ قُلْتُ اَهْلًا لَقَدْ تَعَشَّقْتُ لَا اُبَالِيْ

तरजमा : (1) शिद्दते मह़ब्बत के सबब मेरी शोहरत दुरुस्त है, और मुझे मलामत करना न तो उस के लिये दुरुस्त है और न मुझ लाइक़ है।

(2) वोह मुझे ला इ़ल्मी की बिना पर मह़ब्बत में मलामत कर रहा है और जब भी उस ने मुझे मलामत की मुझे भली ही लगी।

(3) लोगों ने पूछा : क्या तुझे (मह़ब्बत में) इफ़ाक़ा हुवा ? मैं ने जवाब दिया : "ऐ लोगो ! मेरे जैसे को इफ़ाक़ा हरगिज़ नहीं।"

www.dawateislami.net

(4) उन्हों ने पूछा : "तू इश्क़ में गिरिफ़्तार हो गया है ?" मैं ने जवाब दिया : "हां ! मैं ने इश्क़ किया (और) इज़्हारे इश्क़ में मुझे किसी की परवाह नहीं ।"

लोगों की चार अक़्साम :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं कि "मक़ामे फ़ना (या'नी वोह मर्तबा जिस तक बन्दा ब ज़रीअ़ए इबादत द-रजा ब द-रजा तरक़्क़ी ह़ासिल करता है, उस) में लोगों की चार अक़्साम हैं :

पहला : वोह शख़्स जिस के दिल पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़-ज़मत और मह़ब्बत ग़ालिब आ गई और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र में मश्ग़ूल हो कर दूसरों से ग़ाफ़िल हो गया । येह वोही शख़्स है जिस का ज़िक्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमान में किया है :

رِجَالٌ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ (پ۱۸، النور:۳۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह मर्द जिन्हें ग़ाफ़िल नहीं करता कोई सौदा और न ख़रीदो फ़रोख़्त **अल्लाह** की याद से ।

दूसरा : वोह शख़्स जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सच्ची इबादत, इज़्हारे बन्दगी, ख़ालिस परहेज़ गारी और वफ़ादारी का वा'दा किया है, येह वोह शख़्स है जिस का तज़्किरा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमाने अ़ज़ीम में किया :

رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ (پ۲۱، الاحزاب:۲۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कुछ वोह मर्द हैं जिन्हों ने सच्चा कर दिया जो अ़ह्द **अल्लाह** से किया था ।

तीसरा : वोह शख़्स जिस का कलाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हो, वोह नेकी की दा'वत दे, बुराई की तमाम अक़्साम से ख़ुद

www.dawateislami.net

भी बचे और दूसरों को भी मन्अ़ करे। येह वोह शख़्स है जिस का वस्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमाने अ़-ज़मत निशान में बयान किया है :

وَجَآءَ مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى ز (پ۲۲،سورۃ یٰسٓ آیت۲۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और शह्‌र के परले किनारे से एक मर्द दौड़ता आया।

चौथा : वोह शख़्स जिस का बातिन उस की ज़ात के बारे में और उस पर मुक़र्रर मुवक्कल फ़िरिश्तों के बारे में गुफ़्त-गू करे और उस के राज़ को उस के मौला عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा कोई न जानता हो। येह वोह शख़्स है जिस का तज़्किरा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमाने ज़ीशान में किया है :

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِىَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ج ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ط (پ۲۳،الزمر:۲۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह ने उतारी सब से अच्छी किताब कि अव्वल से आख़िर तक एक सी है दोहरे बयान वाली इस से बाल खड़े होते हैं उन के बदन पर जो अपने रब से डरते हैं फिर उन की खालें और दिल नर्म पड़ते हैं यादे ख़ुदा की त़रफ़ रग़बत में।

सय्यिदुना मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मुनाजात :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन ह़बीब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُجِيْب फ़रमाते हैं कि "मैं मह़बूबाने ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के मुजा-हदात और आ़रिफ़ीन की मुनाजात के बारे में सुना करता और उन में से किसी के ह़ाल पर मुत्तलअ़ होने की ख़्वाहिश करता था। लिहाज़ा मैं ह़ज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار के हां गया और छुप कर उन्हें देखने लगा। मैं कई रातों तक उन की इबादात को देखता रहा। वोह इशा के बा'द वुज़ू करते और नमाज़ के लिये खड़े हो जाते। बा'ज़ अवक़ात एक या दो आयतों की तकरार में पूरी रात गुज़ार देते। कभी आहिस्ता आहिस्ता तिलावत की आवाज़ बढ़ा देते फिर जब सज्दा कर लेते और नमाज़ से फ़ारिग़ होते तो अपनी दाढ़ी पकड़ लेते और बच्चों से बिछड़ जाने वाली मां की त़रह़ फ़रियाद करते और परेशान ह़ाल शख़्स की त़रह़ रोते हुए यूं दुआ़ मांगते : ''या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! ऐ मेरी ज़िन्दगी के मालिक! ऐ मेरी तन्हाई के रफ़ीक़ ! ऐ मुनाजात के सुनने वाले ! तूने अपने इस फ़रमान से फ़ज़्लो एह़सान किया :

يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗ
(پ٦،المائدہ:٥٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह **अल्लाह** के प्यारे और **अल्लाह** उन का प्यारा।

और मुह़िब अपने ह़बीब को अ़ज़ाब नहीं देता। लिहाज़ा तू मालिक बिन दीनार के बुढ़ापे को जहन्नम पर ह़राम फ़रमा दे, या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! तू जहन्नमियों और जन्नत में दाख़िल होने वालों को जानता है, मालिक बिन दीनार का इन में से कौन सा घर है ? और मालिक का ठिकाना कौन सा है ?'' आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه यूंही तुलूए़ फ़ज्र तक मुनाजात करते रहते और इशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ अदा करते।''

﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم﴿

www.dawateislami.net

नफ़्सानी ख़्वाहिशात का वबाल

ऐ वोह शख़्स ! जिसे मह़रूमी ने बिठा रखा है, येह तौबा करने वालों का क़ाफ़िला है तू भी इन के साथ शरीके सफ़र हो जा,...... तेरे पास न तो आंसूओं का कोई ख़ज़ाना है और न ही अफ़्सोस करने वाला दिल है,...... मैं तुझे बे यारो मददगार देख रहा हूं, येह बुढ़ापे की घन्टी कूच का ए'लान कर रही है,...... ऐ शख़्स आख़िरत की तय्यारी कर ले कब तक उ़ज़्र करता रहेगा ? कब तक सुस्ती करेगा ? कितनी ग़फ़्लत करेगा ? मैं क़ियामत के दिन तुझे मा'ज़ूर नहीं पाता, तेरे विसाल का घर वीरान है जब कि जुदाई का घर आबाद है, क़दम बढ़ा शायद तौबा से कोताहियों का इज़ाला हो जाए और स-ह़री के वक़्त एक सज्दा ऐसा कर ले जो तुझे क़ियामत की होलनाकियों से नजात दिलाए, क़ुरआने पाक में है :

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ۝ (پ۱۳،الرعد:۱۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** ही को सज्दा करते हैं जितने आस्मानों और ज़मीन में हैं ख़ुशी से ख़्वाह मजबूरी से और उन की परछाइयां हर सुब्ह़ व शाम ।[1]

क्या ख़ूब हैं वोह लोग जिन के दिल यादे मह़बूब से

---

1 : येह आयते सज्दा है और "आयते सज्दा पढ़ने और सुनने से सज्दा वाजिब हो जाता है ।" (बहारे शरीअ़त, जिल्द : 1, ह़िस्सा 4, स. 38)

www.dawateislami.net

मा'मूर रहते हैं, उन के दिलों में मह़बूब के सिवा किसी की याद का कोई ह़िस्सा या गुन्जाइश नहीं। अगर वोह बोलते हैं तो उसी का तज़्किरा करते हैं, अगर ह़-र-कत करते हैं तो उसी के हुक्म से करते हैं, अगर ख़ुश होते हैं तो उस के क़ुर्ब पर ख़ुश होते हैं, अगर डरते हैं तो उस के इ़ताब से डरते हैं, मह़बूब का ज़िक्र उन की ग़िज़ा है और उन के अवक़ात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात करने में गुज़रते हैं, इस के बिग़ैर उन्हें चैन नहीं आता और वोह उस की रिज़ा के बिग़ैर एक लफ़्ज़ भी नहीं बोलते।

चन्द अश्आ़र

حَیَاتِیْ مِنْکَ فِیْ رُوْحِ الْوِصَالِ وَصَبْرِیْ عَنْکَ مِنْ طَلَبِ الْمُحَالِ

وَکَیْفَ الصَّبْرُ عَنْکَ وَاَیُّ صَبْرٍ لِعَطْشَانَ عَنِ الْمَاءِ الزُّلَالِ

اِذَا لَعِبَ الرِّجَالُ بِکُلِّ شَیْئٍ رَأَیْتُ الْحُبَّ یَلْعَبُ بِالرِّجَالِ

तरजमा : (1) तेरी त़रफ़ से मेरी ज़िन्दगी विसाले ह़क़ीक़ी में है, और तुझ से कनारा कशी करने का मुत़ा-लबा मुझ से (गोया) ना मुम्किन का त़लब करना है।

(2) तेरे बिग़ैर सब्र कैसे हो सकता है कि प्यासा शख़्स साफ़ मीठे ख़ुश गवार पानी से कितना सब्र करे।

(3) जिस वक़्त लोग हर चीज़ से खेलते हैं (उस वक़्त) मैं ने मह़ब्बत को देखा कि वोह उन लोगों से खेल रही होती है।

बन्दे की तौबा पर शैत़ान की बद ह़वासी :

रसूले ख़ुदा, ह़बीबे किब्रिया, अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे पाक है कि "जब बन्दा चालीस

www.dawateislami.net

बरस की उ़म्र को पहुंच जाए और उस की भलाई उस के शर पर ग़ालिब न आए तो शैत़ान उस की पेशानी चूम कर कहता है कि "मैं इस चेहरे पे कुरबान जो कभी फ़लाह़ नहीं पाएगा।" फिर अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस बन्दे पर एह़सान फ़रमाए और वोह शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कर ले और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे गुमराही से बचा ले और जहालत की तारीकियों से निकाल दे तो शैत़ान मल्ऊ़न कहता है : "हाए अफ़्सोस ! इस ने मेरी आंखें ठन्डी करने के लिये सारी उ़म्र गुमराही में गुज़ारी फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस की तौबा की वज्ह से इसे जहालत के अंधेरों से निकाल दिया।"

एक आ़लिम का इम्तिह़ान :

मन्क़ूल है कि बग़दाद में एक शख़्स बहुत बड़ा आ़लिम था। लोग ह़ुसूले इ़ल्म और इस्लाह़ के शौक़ में उस के पास आते जाते थे। एक मर्तबा उस ने ह़ज्जे बैतुल्लाह और रौज़ए रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत का क़स्द किया तो अपने त़-लबा को भी साथ चलने पर आमादा कर लिया और उन से अ़ह्द लिया कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल करते हुए चलेंगे। दौराने सफ़र येह लोग जब एक गिरजा घर के क़रीब पहुंचे तो गरमी और प्यास की शिद्दत से निढाल थे। त़-लबा ने अ़र्ज़ किया कि "ऐ हमारे उस्तादे गिरामी ! हम दिन ठन्डा होने तक इस गिरजा के साए में आराम कर लेते हैं फिर اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोबारा सफ़र पर रवाना हो जाएंगे।" उस्ताद ने कहा : "जैसे तुम्हारी मरज़ी।"

चुनान्चे येह लोग उस गिरजा की त़रफ़ चल दिये और उस

www.dawateislami.net

की दीवार के साए में पड़ाव डाल दिया। गरमी से बेह़ाल लोगों को साया नसीब हुवा तो वोह जल्द ही नींद की आग़ोश में चले गए मगर उस्ताज़ न सोया। वोह उन्हें सोता छोड़ कर वुज़ू के लिये पानी की तलाश में निकल पड़ा। उस वक़्त उस के ज़ेह्न में सिर्फ़ एक ही ख़याल था कि किसी त़रह़ पानी मिल जाए। अभी वोह गिरजा के साए में पानी तलाश कर रहा था कि उस की नज़र एक कमसिन लड़की पर पड़ी जो चमक्ते हुए सूरज की त़रह़ ख़ूब सूरत थी। उस पर निगाह पड़ते ही शैत़ान उस उस्ताज़ पर ग़ालिब आया और वोह लड़की उस के दिलो दिमाग़ पर छा गई और वोह वुज़ू और पानी को भूल कर उस की फ़िक्र में लग गया।

उस ने आहिस्तगी से गिरजा का दरवाज़ा खट-खटाया तो एक राहिब बाहर निकला उस ने पूछा कि "तुम कौन हो ?" उस ने अपना तआ़रुफ़ करवाया कि मैं फ़ुलां आ़लिम हूं। राहिब ने पूछा : "ऐ मुसल्मानों के फ़क़ीह क्या चाहिये ?" जवाब दिया "ऐ राहिब ! मुझे गिरजा की छत से अभी एक लड़की दिखाई दी थी वोह तुम्हारी क्या लगती है ?" राहिब ने कहा कि "वोह मेरी बेटी है मगर तुम उस के बारे में क्यूं पूछ रहे हो ?" उस्ताज़ ने कहा : "मैं चाहता हूं कि तुम उस की शादी मेरे साथ कर दो।" राहिब बोला कि "हमारे दीन में ऐसा करना जाइज़ नहीं अगर जाइज़ होता तो मैं उस से पूछे बिग़ैर उसे तुम्हारी ज़ौजिय्यत में दे देता ह़ालां कि मैं ने अपने आप से अ़ह्द किया है कि उस की शादी उसी की पसन्द से करवाऊंगा, मैं उसे तुम्हारे बारे में बताता हूं अगर

www.dawateislami.net

वोह तुम्हें अपने लिये पसन्द करे तो मैं उसे तुम्हारी ज़ौजिय्यत में दे दूंगा।" उस्ताज़ ने कहा कि "येह तो बड़ी ख़ुशी की बात है, मेह्रबानी फ़रमा कर उस के पास जाइये और पूछिये।"

वोह राहिब अपनी बेटी के पास गया और सारा माजरा बयान किया। इधर येह उस्ताज़ उन की बातें सुन रहा था, वोह लड़की बोली: "अब्बाजान! आप मेरा निकाह़ उस से किस त़रह़ कर सकते हैं ह़ालां कि मैं ईसाई हूं और वोह मुसल्मान है, येह तो उसी सूरत में मुम्किन है कि वोह नस्रानियत में दाख़िल हो जाए।" राहिब ने पूछा: "अगर वोह नस्रानी हो जाए तो क्या तुम उस से शादी कर लोगी?" लड़की बोली: "हां कर लूंगी।"

वक़्त गुज़रने के साथ साथ उस्ताज़ की बेताबी बढ़ती चली जा रही थी, इधर इस के त़-लबा बे ख़बर सो रहे थे। आख़िरे कार उस्ताज़ लड़की की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो कर बोला: "मैं दीने इस्लाम छोड़ कर नस्रानी हो गया हूं।" लड़की बोली कि "चूंकि येह इ़ज़्ज़त व वक़ार की शादी है लिहाज़ा ह़ुक़ूक़े ज़ौजिय्यत और मह्र की अदाएगी ज़रूरी है तुम ह़क़ कहां से अदा करोगे क्यूं कि मैं देख रही हूं कि तुम फ़क़ीर हो, फिर भी अगर तुम इन ख़िन्ज़ीरों को पूरा एक साल चराओ तो येही मेरा मह्र होगा।" वोह बोला: "ठीक है मगर मेरी भी एक शर्त़ है कि तुम इस दौरान अपना चेहरा मुझ से नहीं छुपाओगी ताकि मैं सुब्ह़ो शाम उसे देखता रहूं।" लड़की बोली: "मुझे मन्ज़ूर है।" तो उस ने ख़ुत़्बा देने वाला अ़सा उठाया और ख़िन्ज़ीरों की त़रफ़ चल दिया ताकि अ़सा के ज़रीए

www.dawateislami.net

उन्हें चरागाह तक ले जाए।

जब त़-लबा नींद से बेदार हुए तो अपने उस्ताज़ को तलाश करने लगे। जब वोह तलाशे बिस्यार के बा वुजूद न मिला तो उन्हों ने राहिब से उस के बारे में पूछा तो जवाबन उस ने सारी कहानी सुनाई। येह अफ़्सोस नाक ख़बर सुन कर त़-लबा में कोहराम मच गया, कुछ ग़श खा कर गिर गए और कुछ आहो बुका करने लगे। फिर उन्हों ने राहिब से कहा कि "अब वोह कहां है ?" राहिब ने बताया कि वोह "ख़िन्ज़ीर चरा रहा है।" रावी कहते हैं कि "फिर हम उस की त़रफ़ चल दिये तो उसे उसी अ़सा से सहारा लिये देखा जिस के सहारे वोह ख़ुत़्बा दिया करता था, वोह ख़िन्ज़ीरों को इधर उधर जाने से रोक रहा था।" हम ने उस से कहा कि "ऐ हमारे सरदार ! येह तुम पर कैसी आज़्माइश आ गई ?" फिर हम उसे क़ुरआने पाक, इस्लाम और हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ज़ाइल याद दिलाने लगे और क़ुरआनो ह़दीस के फ़रामीन सुनाए तो उस ने कहा कि "मुझ से दूर हो जाओ, तुम जो कुछ याद दिला रहे हो वोह मैं तुम से ज़ियादा जानता हूं मगर मुझ पर **अल्लाह** रब्बुल आ़-लमीन عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आज़्माइश नाज़िल हुई है।" हम ने उसे अपने साथ ले जाने पर बहुत ज़ोर दिया मगर नाकाम रहे।

आख़िरे कार हम उस के ह़ाल पर कफ़े अफ़्सोस मलते हुए मक्कए मुकर्रमा की त़रफ़ चल दिये और ह़ज अदा करने के बा'द वापस बग़दाद की त़रफ़ रवाना हुए। जब हम उसी मक़ाम पर पहुंचे

www.dawateislami.net

तो हम ने एक दूसरे से कहा कि "आओ देखते हैं कि उस पर क्या गुज़री, शायद वोह नादिम हो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कर चुका हो और अपनी ह़ालत से लौट आया हो।" हम उस के पास पहुंचे तो उसे उसी ह़ालत पर पाया वोह ख़िन्ज़ीरों की देखभाल कर रहा था हम ने उसे सलाम किया और नसीह़त याद दिलाई और क़ुरआन पढ़ कर सुनाया मगर उस ने कोई जवाब न दिया। हम एक बार फिर ह़सरत ज़दा दिल लिये वापस हो लिये।

जब हम गिरजा घर से थोड़ी दूर पहुंचे तो हम ने गिरजे के पीछे से एक साए को अपनी जानिब बढ़ते हुए देखा, वोह शख़्स चीख़ चीख़ कर हमें ठहरने का कह रहा था। हम रुक गए क़रीब आने पर मा'लूम हुवा कि हमारे वोही उस्ताज़ हमारी जानिब आ रहे हैं जब वोह हम से आ कर मिले तो बोले : "मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** के रसूल हैं मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कर चुका हूं और अपनी पिछली ह़ालत से रुजूअ़ कर चुका हूं, येह आज़्माइश मेरी एक ऐसी ख़त़ा के सबब थी जो मेरे और मेरे रब عَزَّوَجَلَّ के दरमियान थी उस ने मेरी उस ख़त़ा के सबब मुझ पर इ़ताब फ़रमाया था, येह आज़्माइश जो तुम ने देखी वोह उसी सबब से थी।" हम इस पर बहुत ख़ुश हुए और बग़दाद लौट आए और हमारे उस्ताज़ पहले से ज़ियादा इ़बादात और मुजा-हदात में मसरूफ़ हो गए।

एक दिन हम उन के घर पर उन से इ़ल्मे दीन ह़ासिल कर

www.dawateislami.net

रहे थे कि हम ने एक अ़ौरत को दरवाज़ा खट-खटाते देखा तो हम बाहर निकले और पूछा कि "ऐ ख़ातून ! क्या काम है ?" उस ने कहा कि "मैं शैख़ से मिलना चाहती हूं उन से कहो कि फ़ुलां राहिब की बेटी आप के हाथ पर मुसल्मान होने आई है।" तो शैख़ ने उसे अन्दर आने की इजाज़त दे दी वोह घर में दाख़िल हो कर बोली : "ऐ मेरे सरदार ! मैं आप के हाथ पर मुसल्मान होने आई हूं।"

शैख़ ने पूछा कि "तुम्हारा क़िस्सा क्या है ?" तो उस ने शैख़ को बताया कि "जब आप वहां से चले आए तो मुझ पर नींद का ग़-लबा त़ारी हुवा और मैं सो गई तो मैं ने ख़्वाब में ह़ज़रते अ़ली बिन अबी त़ालिब كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم को देखा, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमा रहे थे कि "दीने मुह़म्मदी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इ़लावा कोई दीन सच्चा नहीं।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने तीन मर्तबा येह बात इर्शाद फ़रमाई फिर फ़रमाया कि "**अल्लाह** तआ़ला ने तेरे ज़रीए़ अपने एक बन्दे को आज़माया है।" चुनान्चे अब मैं आप के पास आ गई हूं और आप के सामने गवाही देती हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं।" शैख़ उस अ़ौरत के अपने हाथ पर मुसल्मान होने की वज्ह से बहुत ख़ुश हुए। फिर उन्हों ने उस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीन के मुत़ाबिक़ निकाह़ कर लिया।

जब हम ने उन से उस ख़त़ा के बारे में पूछा जो उन के और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरमियान राज़ थी तो उन्हों ने बताया कि "मैं

www.dawateislami.net

किसी जगह से गुज़र रहा था कि एक नसरानी आ कर मुझ से लिपट गया मैं ने उस से कहा कि "तुझ पर **अल्लाह** की ला'नत हो मुझ से दूर हो जा।" उस ने पूछा : "क्यूं ?" तो मैं ने कहा कि "मैं तुझ से बेहतर हूं।" तो नसरानी मेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह हो कर बोला कि "तुम्हें क्या पता कि तुम मुझ से बेहतर हो क्या तुम जानते हो कि तुम्हारा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक क्या मक़ाम है कि तुम येह बात कह रहे हो ?" फिर मुझे बा'द में ख़बर मिली कि वोह नसरानी मुसल्मान हो चुका है और कामिल मुसल्मान हो कर इबादत गुज़ार बन चुका है। जब कि मुझे मेरी ख़त़ा के सबब वोह सज़ा दी गई जो तुम देख चुके हो।"

نَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَافِيَةَ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ या'नी हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुन्या व आख़िरत में आ़फ़िय्यत का सुवाल करते हैं।

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ**!**

ईमान पे दे मौत मदीने की गली में
मदफ़न मेरा मह़बूब के क़दमों में बना दे

या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **!**

मुझे हरियाले गुम्बद के तले क़दमों में मौत आए
सलामत ले के जाऊं दीनो ईमां या रसूलल्लाह

www.dawateislami.net

हुब्बे दुन्या का नुक़्सान

ऐ तौबा करने वालो ! आओ हम अपने गुनाहों पर रो लें,...... येह रोने का मक़ाम है आओ अपनी मह़रूमी के बारे में गिर्या व ज़ारी कर लें, शायद कुर्बत का ज़माना उसी त़रह़ लौट आए जैसे पहले था,...... बालों की येह सफ़ेदी शहरों की वीरानी से डरा रही है,...... ऐ अपनी जवानी से बुढ़ापे तक इ़बादत व रियाज़त में पीछे रह जाने वाले ! क़ाफ़िला कूच कर चुका है,...... ऐ पीछे रह जाने पर परेशान होने वाले ! ऐ मह़रूमी के जंगल में ह़ैरान व परेशान फिरने वाले ! तेरा दिन तलाशे मआ़श और रात ख़्वाबे ग़फ़्लत में गुज़रती है, इस ख़सारे का ह़क़ीक़ी एह़सास तुम्हें उस वक़्त होगा जब तुम्हारी जवानी कुछ नफ़्अ़ दिये बिग़ैर तुम से मुंह फैर लेगी और बुढ़ापा सिवाए नुक़्सान के कुछ न दे सकेगा,...... तौबा के साह़िल पर ही ठहर जाओ क्यूं कि गुनाहों के समुन्दर बड़े तूफ़ानी हैं,...... आह ! तूने जवानी की बहारें यूंही ग़फ़्लत में गुज़ार दीं और ना फ़रमानियों की ख़िज़ां छा गई है तो अब तू बुढ़ापे में नादिम है।

يَمۡحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثۡبِتُ ۚ وَعِنۡدَهٗۤ اُمُّ الۡكِتٰبِ ۝ (پ١٣، الرعد:٣٩)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** जो चाहे मिटाता और साबित करता है और अस्ल लिखा हुवा उसी के पास है।

अश्आ़र

أَتَبۡنِي بِنَاءَ الۡخَالِدِيۡنَ وَإِنَّمَا بَقَاؤُكَ فِيۡهَا لَوۡ عَقَلۡتَ قَلِيۡلٌ

لَقَدۡ كَانَ فِيۡ ظِلِّ الۡأَرَاكِ مَقِيۡلٌ لِمَنۡ كُلَّ يَوۡمٍ يَقۡتَفِيۡهِ رَحِيۡلٌ

www.dawateislami.net

तरजमा : (1) क्या तू हमेशा रहने वालों की त़रह़ इमारत ता'मीर कर रहा है, ह़ालां कि इस इमारत में तेरा क़ियाम बहुत थोड़ा है अगर तू इस बात को समझे।

(2) जिस को हर दिन रुख़्सत (मौत) का धड़का लगा हो, उसे तो पीलू (दरख़्त) के साए में दो पहर का आराम काफ़ी है।

उख़्रवी ज़िन्दगी को तरजीह़ दो :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाया करते थे कि "ऐ इब्ने आदम ! तुम्हारे लिये एक दुन्यवी ज़िन्दगी है और एक उख़्रवी, लिहाज़ा तुम दुन्यवी ज़िन्दगी को उख़्रवी ज़िन्दगी पर हरगिज़ तरजीह़ न देना क्यूं कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने बहुत से ऐसे लोगों को देखा कि जिन्हों ने अपनी दुन्यवी ज़िन्दगी को उख़्रवी ज़िन्दगी पर तरजीह़ दी तो वोह ज़लीलो रुस्वा हो कर हलाकत में मुब्तला हो गए।"

ऐ इन्सान ! दुन्या को आख़िरत के बदले बेच डाल, दोनों जहां में नफ़्अ़ पाएगा और आख़िरत को दुन्या के इवज़ हरगिज़ न बेचना कि दोनों में नुक़्सान उठाएगा,...... ऐ इब्ने आदम ! जब तुम्हारे लिये आख़िरत की भलाई ज़ख़ीरा कर ली जाए तो दुन्या की कोई तक्लीफ़ तुम्हें नुक़्सान न दे सकेगी,...... ऐ इन्सान ! दुन्या एक सुवारी है अगर तू इस पर सुवार होगा तो येह तुझे उठाएगी और अगर तूने इसे उठाया तो येह तुझे मार डालेगी,...... ऐ इन्सान ! तू अ़न्क़रीब मौत का शिकार होने वाला है फिर तुझे तेरे रब عَزَّوَجَلَّ के ह़ुज़ूर पेश किया जाएगा, लिहाज़ा तू ज़िन्दगी ही में आख़िरत की

www.dawateislami.net

तय्यारी कर ले क्यूं कि तुझे मौत के वक़्त इस की अहम्मिय्यत का अन्दाज़ा होगा,...... ऐ इन्सान ! दुन्या में अपना दिल मत लगा कहीं तू एक चिमट जाने वाले शर से दिल न लगा बैठे,...... ऐ इन्सान ! तू सरकशी में जितना रास्ता तै कर चुका तेरे लिये उतना ही बहुत है, अब बाज़ आ जा ।

जन्नती हूर की क़ीमत :

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار बसरा की किसी गली से गुज़र रहे थे कि बादशाह की एक कनीज़ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के क़रीब से गुज़री । वोह सुवारी पर थी और उस के साथ कुछ खुद्दाम भी थे । जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पीछे से उस की आहट सुनी तो मुड़ कर पीछे देखा और उस की आबो ताब देख कर कहने लगे "ऐ कनीज़ ! क्या तेरा आक़ा तुझे बेचेगा ?" कनीज़ ने जब येह बात सुन कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की त़रफ़ देखा तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه पुराना चोग़ा पहने हुए थे लेकिन खुश शक्ल और बा वक़ार दिखाई देते थे । उस ने अपने खुद्दाम को सुवारी रोकने का हुक्म दिया । उन्हों ने सुवारी रोक दी तो उस कनीज़ ने हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار की त़रफ़ रुख़ कर के कहा : "ऐ शैख़ ! ज़रा अपनी बात दोहराओ ।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "मैं पूछ रहा हूं कि क्या तेरा आक़ा तुझे बेचेगा ?" कनीज़ बोली कि "तुम पर अफ़्सोस है, अगर मेरा आक़ा मुझे बेचना भी चाहे तो क्या तुम्हारे जैसा शख़्स मुझे ख़रीद सकता है ?" फिर खुद्दाम ने हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार

www.dawateislami.net

عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَفَّار को घेर लिया तो आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने फ़रमाया कि "मेरा रास्ता छोड़ दो, मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं।"

आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه उस क़ाफ़िले के हमराह उस कनीज़ के महल तक पहुंच गए। महल के दरबान उस कनीज़ को देख कर खड़े हो गए और उसे सुवारी से उतारा। वोह कनीज़ महल में दाख़िल हो गई जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَفَّار दरवाज़े पर खड़े रहे। जब कनीज़ अपने आक़ा के पास पहुंची तो उस से कहा : "ऐ मेरे आक़ा ! मुझे एक तंगदस्त और बूढ़ा फ़क़ीर मिला जिस ने बोसीदा लिबास पहन रखा था, जब उस ने मेरा हुस्नो जमाल, मेरी शानो शौकत और मेरे ख़ुद्दाम को देखा तो ह़ैरान हो कर रह गया और मुझ से कहने लगा : "क्या तेरा आक़ा तुझे बेचेगा ?" कनीज़ का आक़ा येह बात सुन कर हंस दिया और उस से पूछा : "वोह बूढ़ा कहां है ?" कनीज़ बोली : "मैं उसे अपने साथ ले आई हूं और वोह इस वक़्त महल के दरवाज़े पर खड़ा है।" आक़ा ने कहा "उसे मेरे पास ले आओ।"

जब ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَفَّار उस बादशाह की निशस्त गाह के दरवाज़े पर पहुंचे तो देखा कि वोह कमरा अन्वाओ़ अक़्साम के क़ालीनों और तकियों से आरास्ता है और महल का मालिक एक ऊंची जगह बैठा हुवा है। ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه रुक कर उस की त़रफ़ देखने लगे। उस शख़्स ने पूछा : क्या हुवा ऐ शैख़, अन्दर आ जाओ।" ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه बोले : "जब तक तुम येह क़ालीन नहीं उठाओगे और इस के फ़ितने को मुझ से दूर नहीं

www.dawateislami.net

करोगे मैं अन्दर नहीं आऊंगा।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मह़ल के मालिक के दिल में उन का ऐसा रो'ब और हैबत डाल दी कि उस ने क़ालीन और तकिये उठाने का हुक्म दे दिया यहां तक कि संगे मरमर का फ़र्श नज़र आने लगा। फिर वोह शख़्स एक कुर्सी पर बैठ गया और बोला : "ऐ शैख़ ! जहां चाहें तशरीफ़ रखें।" तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया कि "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब तक तुम कुर्सी से उतर कर इस फ़र्श पर नहीं बैठोगे मैं नहीं बैठूंगा।" चुनान्चे वोह शख़्स फ़र्श पर बैठ गया और ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه भी उस के क़रीब तशरीफ़ फ़रमा हो गए।

वोह शख़्स बोला कि "अपनी ह़ाजत इर्शाद फ़रमाइये।" ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "अभी तुम्हारी जो कनीज़ मह़ल में आई है क्या तुम उसे बेचोगे ?" येह सुन कर घर का मालिक कहने लगा : "क्या आप के पास उसे ख़रीदने के लिये माल है ?" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने दरयाफ़्त किया : "इस की क़ीमत क्या है ?" वोह शख़्स बोला कि "इस के हुस्नो जमाल और शानो शौकत की क़ीमत हज़ारों में है।" ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरे नज़्दीक तो इस की क़ीमत खजूर की दो बोसीदा गुठलियों के बराबर है।" इस जवाब पर उस शख़्स की हंसी निकल गई। पर्दे में मौजूद वोह कनीज़ और दीगर ख़ादिम भी हंसने लगे।

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने तअ़ज्जुब से पूछा : "क्यूं हंस रहे हो ?" वोह शख़्स बोला : "आप ने इस कनीज़ की क़ीमत इतनी कम क्यूं लगाई है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक

www.dawateislami.net

رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने फ़रमाया : "इस लिये कि इस में बहुत ज़ियादा ऐ़ब हैं।" उस ने पूछा : "आप इस के उ़यूब कैसे जानते हैं ?" आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने फ़रमाया कि "मैं इस के इतने उ़यूब जानता हूं जितने तुम भी नहीं जानते।" वोह बोला कि "उन उ़यूब से मुझे भी आगाह कीजिये।" आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने उ़यूब गिनवाना शुरूअ़ किये, चुनान्चे फ़रमाया : "अगर येह इ़त्र न लगाए तो इस के कपड़ों से बदबू आने लगे, अगर मिस्वाक न करे तो मुंह से बू आने लगे, अगर गु़स्ल न करे तो मैली कुचैली हो जाए, अगर बालों में कंघी न करे तो इन में जूएं पड़ जाएं और येह परागन्दा सर हो जाए, कुछ उ़म्र गुज़रने के बा'द येह बूढ़ी नज़र आने लगेगी, इसे नज़्ला और बुख़ार भी होता है, थूक, बल्ग़म, हैज़ और पेशाब व पाख़ाना से इस का वासित़ा पड़ता है और इन के इ़लावा भी येह बहुत सी मुसीबतों और आफ़तों का शिकार है, येह तुझ से सिर्फ़ इस लिये मह़ब्बत करती है कि येह तुझ से नफ़्अ़ उठाए और तू इस से नफ़्अ़ उठाए, येह तेरी वफ़ादार नहीं और न ही तुझ से वा'दए मह़ब्बत में सच्ची है बल्कि तेरे बा'द जो भी इस का आक़ा बनेगा येह उसे तेरी त़रह़ समझने लगेगी, मगर मैं एक ऐसी कनीज़ को जानता हूं जो इन तमाम ऐ़बों से पाक है उसे काफ़ूर के ख़मीर से पैदा किया गया है, अगर उस का लुआ़ब खारे पानी में डाला जाए तो वोह मीठा हो जाए, अगर वोह किसी मुर्दे को आवाज़ दे कर पुकारे तो मुर्दा बोल उठे, अगर वोह अपनी कलाई सूरज पर ज़ाहिर कर दे तो उस की रोशनी मांद पड़ जाए और अगर उस की कलाई रात की तारीकी में ज़ाहिर हो तो हर त़रफ़ उस का नूर चमक उठे, अगर अपने

www.dawateislami.net

लिबास और ज़ेवरात का रुख़ आस्मान की त़रफ़ कर दे तो सब को चमका दे, अगर उस की ज़ुल्फ़ों की ख़ुशबू ज़मीन पर फैल जाए तो ज़मीन और इस की तमाम अश्या को महका दे, वोह मुअ़त्त़र है, ह़सीन है, नाज़नीन है, अन-गिनत ख़ूबियों से आरास्ता है, वोह मुश्को ज़ा'फ़रान के बाग़ात में परवान चढ़ी और तस्नीम के चश्मे से सैराब हुई है, वोह कभी शिकस्ता दिल न होगी, उस की रोनक़ ख़त्म नहीं होगी, न उस का अ़ह्द टूटेगा, न ही उस की मह़ब्बत तब्दील होगी और न ही कभी बदन कमज़ोर होगा।"

येह फ़रमाने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस शख़्स से सुवाल किया : "ऐ धोके में मुब्तला होने वाले ! अब तू ही बता कि इन दोनों में से कौन सी कनीज़ ज़ियादा अहम है ?" वोह बोला : "ख़ुदा की क़सम ! वोही कनीज़ उ़म्दा है जिस के औसाफ़ आप ने बयान फ़रमाए हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, उस की क़ीमत क्या है ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : थोड़ी सी कोशिश, (वोह इस त़रह़ कि) रात के किसी ह़िस्से में बेदार हो कर इख़्लास के साथ अपने रब عَزَّوَجَلَّ के लिये दो रक्अ़त नफ़्ल नमाज़ अदा कर लिया करो और जब तुम्हारे सामने खाना आए तो भूके को याद कर के रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये उसे अपनी ख़्वाहिश पर तरजीह़ दे दिया करो और रास्ते से गुज़रते हुए पथ्थर और कांटे हटा दिया करो और अपनी ज़बान से अच्छी गुफ़्त-गू और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया करो और ज़िन्दगी के अय्याम में क़लील ग़िज़ा पर क़नाअ़त करो और दारे ग़फ़्लत (या'नी दुन्या) से अपनी तवज्जोह हटा लो और दुन्या में अ़ज़्मे मुसम्मम के

www.dawateislami.net

साथ क़नाअ़त पसन्द ज़िन्दगी गुज़ारो, क़ियामत के दिन बे ख़ौफ़ हो कर आओ और हमेशा हमेशा के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मेहमान बन जाओ।

येह बातें सुन कर मह़ल के मालिक ने अपनी कनीज़ को पुकारा तो वोह बोली : ''लब्बैक मेरे आक़ा !'' उस ने पूछा कि ''तूने इन की बातें सुनीं ?'' कनीज़ ने कहा : ''जी हां।'' पूछा : ''येह सच्चे हैं या झूटे ?'' जवाब दिया : ''ख़ुदा की क़सम ! येह बिल्कुल सच्चे हैं।'' येह जवाब सुन कर आक़ा कहने लगा : ''फिर तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आज़ाद है और मेरी फ़ुलां फ़ुलां जाएदाद तुम पर स-दक़ा है और मेरा येह घर तमाम साज़ो सामान के साथ फ़ु-क़रा और मसाकीन पर स-दक़ा है।'' फिर उस ने हाथ बढ़ा कर दरवाज़े का पर्दा उतारा और उस से अपनी सित्र पोशी की और अपना क़ीमती लिबास उतार डाला। जब कनीज़ ने येह सारा मुआ़-मला देखा तो कहने लगी : ''मेरे आक़ा ! तेरे बा'द मेरी कोई ज़िन्दगी नहीं।'' और शानो शौकत तर्क कर के अपने आक़ा के साथ ही जाने की दर-ख़्वास्त गुज़ार हुई। ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने उन्हें अल वदाअ़ किया और उन के लिये दुआ़ फ़रमाई। वोह अपने रास्ते पर चल दिये और ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी राह पकड़ी। फिर येह दोनों मरते दम तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मश्ग़ूल रहे।

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। ﴿اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم﴾

www.dawateislami.net

लज़्ज़तों का ख़ातिमा और गुनाह का बाक़ी रह जाना

ऐ रास्ते से अन्जान और ज़ादे सफ़र से महरूम शख़्स ! तुझे सफ़र की तय्यारी करने के लिये मुनादी कब जगाएगा ? और कब तू माल और औलाद से कनारा कशी कर के ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार होगा ?...... याद रख ! गुज़री हुई जवानी लौट कर नहीं आती, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रहूम फ़रमाए तू सुवारी और ज़ादे राह के बिग़ैर सफ़रे आख़िरत कैसे तै करेगा ?...... दमे रुख़्सत तुझे शरमिन्दगी होगी,...... जब तू म-रजुल मौत में मुब्तला हो जाएगा तो तुझे अपने जम्अ़ कर्दा माल में तसर्रुफ़ से रोक दिया जाएगा,...... नज़्अ़ के वक़्त इयादत करने वालों को तेरे पास आने से रोक दिया जाएगा,...... फिर (रूह़ निकलने के बा'द तुझे गुस्ल दे कर और) कफ़न पहना कर उस तंगो तारीक क़ब्र में दफ़्ना दिया जाएगा जिस से निकलने का कोई रास्ता न होगा...... तेरी सुब्ह़ ह़स्रतों में गुज़रेगी और शाम को तुझे मैदाने महशर की त़रफ़ हांका जाएगा,...... इस के बा'द होल नाकियां ही होल नाकियां होंगी, अगर तू अ़क़्ल रखता है तो समझ ले कि तय्यारिये आख़िरत के लिये तुझे दोबारा दुन्या में नहीं भेजा जाएगा,...... नेकियों के तोशे को ग़नीमत जान क्यूं कि गुनाहों के अम्बार रुस्वाई के सबब हैं।

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ ۝ وَتَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ ۝

(پ۲۹،القیامۃ:۲۰۔۲۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कोई नहीं बल्कि ऐ काफ़िरो ! तुम पाउं तले की (दुन्यवी फ़ाएदे को) अज़ीज़ दोस्त रखते हो और आख़िरत को छोड़ बैठे हो।

www.dawateislami.net

चन्द अश्आ़र

إِحْذَرْ دُنْيَاكَ وَغِرَّتَهَا ... وَاحْذَرْ أَنْ تُبْدِلَهَا طَلَبًا

تَبْغِيْ وُدًّا مِمَّنْ قِدَمًا ... لَكَ قَدْ قَتَلَتْ أُمًّا وَأَبًا

وَعَلَى الْجِيْرَانِ فَقَدْ جَارَتْ ... كُلًّا قَهَرَتْ أَوْلَتْ عَطَبًا

كَمْ مِنْ مَلِكٍ ذِيْ مَمْلَكَةٍ ... قَدْ مَالَ لَهَا سُكْرًا وَّصَبًا

أَضْحٰى فِيْ اللَّحْدِ وَمَقْعَدُهُ ... بِتُرَابِ اللَّحْدِ قَدِ احْتَجَبَا

أُطْلُبْ مَوْلَاكَ وَدَعْ دُنْيَاكَ ... فَفِيْ أُخْرَاكَ تَرَى عَجَبًا

كَمْ مِنْ قَصْرٍ قَدْ شِيْدَ بِنَا ... بِالْمَوْتِ وَهَا أَضْحٰى خَرِبًا

يَا طَالِبَهَا، لَا تَلْهُ بِهَا ... كَمْ تَاهَ بِهَا مَلِكٌ غُصِبَا

أَيْنَ الْمَاضُوْنَ ؟ لَقَدْ سَكَنُوْا ... لَحْدًا فَرِدًا خَرِبًا تَرِبًا

كَانُوْا وَمَضَوْا ثُمَّ انْقَرَضُوْا ... فَتَأَدَّبْ أَنْتَ بِهِم أَدَبًا

فَالْعُمْرُ مَضٰى وَالشَّيْبُ أَتٰى ... وَالْمَوْتُ لِحِيْنِكَ قَدْقَرُبَا

فَأَعِدَّ الزَّادَ فَمَا سَفَرٌ ... عُمْرُ الْأَيَّامِ قَدِ انْتَهَا

بَادِرْ بِالتَّوْبِ وَكُنْ فَطِنًا ... لَاتَلْقَ بِجَرْيَتِكَ النَّصَبَا

فَلَعَلَّ اللّٰهَ بِرَحْمَتِهِ ... يُلْقٰى بِالْعَفْوِ لَنَا سَبَبًا

तरजमा : (1) दुन्या और उस की ग़फ़्लत व धोके से बच बल्कि इस की चाहत के इज़्हार से भी बच।

(2) तू उस (दुन्या) की मह़ब्बत को त़लब करता है जो तेरे लिये पुरानी हो चुकी, ह़ालां कि वोह तेरे मां बाप को हलाक कर चुकी है।

(3) और तेरे पड़ोसियों पर भी इस (दुन्या) ने ज़ुल्म ढाए, हर एक पर ग़ालिब आई, आख़िरे कार उन को हलाक व तबाह कर दिया।

www.dawateislami.net

(4) कितने ही शाही शानो शौकत वाले बादशाह गुज़रे हैं जिन्हें इस (दुन्या) का हमेशा नशा चढ़ा रहा।

(5) उन्हों ने भी क़ब्र में सुब्ह़ की और क़ब्र की मिट्टी उन की निशस्त गाह बन गई और वोह उस में छुप गए।

(6) अपने मौला عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा त़लब कर और दुन्या को छोड़ दे, तू अपनी उख़्रवी ज़िन्दगी में तअ़ज्जुब व ह़ैरत में डालने वाली ने'मतें देखेगा।

(7) कितने ही मह़ल्लात ऐसे हैं जिन की इमारतें बुलन्दो बाला बनाई गई थीं, वोह भी (रहने वालों) की मौत के सबब वीरान हो गए।

(8) ऐ त़ालिबे दुन्या ! दुन्या पर फ़रेफ़्ता मत हो, कि इस पर गुरूर करने वाले कितने ही बादशाहों से येह छीन ली गई।

(9) कहां हैं गुज़रे हुए लोग ? वोह भी मिट्टी से हम-आग़ोश, वीरान क़ब्रों में अकेले पड़े हैं।

(10) वोह भी कुछ अ़र्सा गुज़ार कर मौत का शिकार हो गए फिर उन का नामो निशान मिट गया, तू भी उन से ख़ूब इ़ब्रत ह़ासिल कर।

(11) उ़म्र गुज़रती जा रही है और बुढ़ापा आ रहा है, और तेरी हलाकत के लिये मौत क़रीब आन पहुंची है।

(12) ज़ादे राह तय्यार कर ले अब सफ़र ही कितना रह गया है, ज़िन्दगी के दिन भी पूरे हो चुके हैं।

(13) तौबा करने में सब्क़त कर, समझदारी का मुज़ा-हरा कर, अपने गुनाहों के बाइ़स मशक़्क़त न उठा।

www.dawateislami.net

(14) उम्मीद है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी रह़मत के तुफ़ैल अ़फ़्वो दर गुज़र फ़रमा कर हमें नजात अ़ता फ़रमाए।

ह़लाल खाने की ब-र-कतें :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं कि "मैं पहाड़ों से लकड़ियां जम्अ़ कर के लाता और उन्हें बेच कर अपनी गुज़र बसर किया करता था। मैं तलाशे मआ़श में ह़लाल व ह़राम को ज़रूर पेशे नज़र रखता था। एक मर्तबा मैं ने औलियाए बसरा की एक जमाअ़त को ख़्वाब में देखा। उन में ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी, ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार और ह़ज़रते सय्यिदुना फ़रक़द सन्जी رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى भी थे। मैं ने उन से अ़र्ज़ की : "ऐ अइम्मए मुस्लिमीन ! मुझे ऐसी ह़लाल रोज़ी बताइये जिस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ह़िसाब न देना पड़े और न ही मख़्लूक़ का एह़सान उठाना पड़े।" तो उन्हों ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे त़रतूस शह्र से मिरज नामी बस्ती में ले गए वहां एक ख़ुब्बाज़ी (चौड़े पत्तों वाली एक बूटी जो सारा साल फल देती है) थी, उस की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया कि "येह है वोह ह़लाल शै जिस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ से ह़िसाब न लेगा और न ही तुम्हें इस में मख़्लूक़ का एह़सान उठाना पड़ेगा।" ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान दारानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते है कि "मैं एक त़वील मुद्दत तक कच्ची पक्की ख़ुब्बाज़ी खाता रहा यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे दिल को पाक कर दिया, मैं ने सोचा अगर जन्नतियों को मेरे जैसा दिल अ़ता हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

की क़सम ! वोह ख़ुश हो जाएंगे।"

एक दिन मैं शह्र के दरवाज़े की त़रफ़ निकला वहां मैं ने एक नौ जवान को शह्र में दाख़िल होते देखा। लकड़ियां बेचने के अय्याम के कुछ सिक्के मेरे पास रखे हुए थे। मैं ने सोचा कि वोह सिक्के इस अजनबी को दे देता हूं ताकि येह इन्हें अपनी ज़रूरिय्यात में इस्ति'माल करे। जब वोह मेरे क़रीब आया तो मैं ने उसे सिक्के देने के लिये अपनी जेब में हाथ डाला ही था कि मुझे उस के होंट हिलते हुए दिखाई दिये। देखते ही देखते मेरे आस पास की ज़मीन सोने और चांदी में तब्दील हो गई जिस की चमक से मेरी आंखें ख़ीरा हो गईं।

कुछ दिन बा'द मैं दोबारा उस त़रफ़ गया तो मैं ने उसी नौ जवान को एक जगह बैठे देखा। उस के सामने पानी से भरा एक पियाला रखा था। मैं ने उसे सलाम किया और गुफ़्त-गू करना चाही तो उस ने पानी से भरा पियाला पलट दिया और कहा कि ज़ियादा बोलना नेकियों को इस त़रह़ चूस लेता है जिस त़रह़ येह ज़मीन पानी को चूस गई है, तेरे लिये इतनी ही बात काफ़ी है।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। ﴿ اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

उ़रूज व ज़वाल :

क़ाज़िये कूफ़ा मुह़म्मद बिन गसान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं कि "ईदे क़ुरबान के दिन मैं अपनी वालिदा की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो मैं ने वहां फटे पुराने बोसीदा कपड़े पहने हुए एक

www.dawateislami.net

बुढ़िया को देखा । मुझे उस का अन्दाज़े गुफ़्त-गू बहुत अच्छा लगा । मैं ने अपनी वालिदा से पूछा : "येह औ़रत कौन है ?" फ़रमाया : "येह तुम्हारी ख़ाला आ़निया है जो हारून रशीद के वज़ीर जा'फ़र बिन यह्या बर्मकी की मां है ।"

मैं ने उन्हें सलाम किया तो उन्हों ने मेरे सलाम का जवाब दिया । मैं ने उन की ख़ैरियत दरयाफ़्त की फिर पूछा कि "आप की येह ह़ालत क्यूंकर हुई ?" तो उन्हों ने फ़रमाया : "बेटा हम ने ग़फ़्लत में ज़िन्दगी गुज़ारी और वक़्त ज़ाएअ़ करने में लगे रहे तो ज़माना हम से रूठ गया ।" मैं ने कहा : "अपनी शानो शौकत का कोई वाक़िआ़ सुनाइये ।" कहने लगीं : "ज़रूर, एक छोटा सा वाक़िआ़ सुनाती हूं इस से मेरी शानो शौकत का अन्दाज़ा लगा लेना, आज से तीन साल पहले ई़दे कु़रबान के मौक़अ़ पर मेरे पास चार सो ओढ़नियां थीं । मेरे बेटे ने रस्म के तौ़र पर मेरे पास एक हज़ार चार सो बकरों के सर और तीन सो बैलों के सर भेजे, ज़ेवरात और लिबास वग़ैरा इन के इ़लावा थे । इस के बा वुजूद मेरा ख़याल था कि मेरा बेटा मेरा ना फ़रमान है और आज येह ह़ाल है कि मैं तुम्हारे पास दो बकरों की खालें लेने आई हूं ताकि उन का लिबास बनाऊं ।" क़ाज़ी साह़िब फ़रमाते हैं कि "उन की दास्ताने ज़वाल सुन कर मैं बहुत रन्जीदा हुवा और मेरी आंखों से आंसू रवां हो गए, उस वक़्त मेरे पास जो दीनार थे मैं ने उन्हें तोह़फ़तन दे दिये ।"

प्यारे इस्लामी भाइयो !

देख लो दुन्या किस त़रह़ मुंह मोड़ती है और इस की ने'मतें

www.dawateislami.net

किस त़रह़ फ़ना हो जाती हैं,...... दुन्या के फ़रेब से बढ़ कर कोई फ़रेब नहीं, और जो इस की बुराई देख कर इस से कनारा कशी कर ले वोह सआ़दत मन्द है,...... दुन्या के मसाइब कसीर हैं, इन में से एक मुसीबत बन्दे के माल और औलाद में आती है और दूसरी बन्दे को इस्लाम से दूर कर के काफ़िर बना देती है।

घाटे का सौदा :

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "मैं ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی के पास बैठा हुवा था कि कुछ लोग एक मुर्दे को घसीटते हुए वहां से गुज़रे। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی उसे देख कर बेहोश हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए। जब आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को होश आया तो मैं ने बेहोशी का सबब दरयाफ़्त किया। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "येह मुर्दा कभी आ'ला द-रजे के आ़बिदों और ज़ाहिदों में से था।" मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू सईद ! हमें इस के बारे में कुछ बताएं।" आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "येह अपने घर से नमाज़ अदा करने की निय्यत से निकला तो रास्ते में इस की नज़र एक ईसाई लड़की पर पड़ी उसे देख कर येह फ़ितने में पड़ गया, उस लड़की ने इस से कहा कि "जब तक तू मेरे मज़्हब में दाख़िल न होगा मैं तुझ से निकाह़ न करूंगी।" वक़्त गुज़रने के साथ साथ इस की शह्वत भी बढ़ती चली गई। आख़िरे कार इस पर बद बख़्ती ग़ालिब आ गई और इस ने लड़की की बात मान कर दीने इस्लाम को छोड़ दिया और ईसाई मज़्हब क़बूल कर लिया।

www.dawateislami.net

जब लड़की को इस बात की ख़बर हुई तो उस ने कहा "ऐ फ़ुलां ! तुझ में कोई भलाई नहीं तूने घटिया शह्वत के लिये अपना वोह दीन छोड़ दिया जिस पर तूने अपनी सारी ज़िन्दगी गुज़ारी थी मगर मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ-बदी ने'मतों के हुसूल के लिये ईसाइय्यत छोड़ रही हूं।" फिर उस लड़की ने येह सूरए मुबा-रका तिलावत की :

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝ (پ۳۰، الاخلاص)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ वोह **अल्लाह** है वोह एक है **अल्लाह** बे नियाज़ है न उस की कोई औलाद और न वोह किसी से पैदा हुवा और न उस के जोड़ का कोई।

लोगों को उस लड़की के मुंह से क़ुरआन सुन कर बड़ी हैरानी हुई। लिहाज़ा उन्हों ने पूछा : "क्या तुम ने येह सूरह पहले से याद कर रखी थी ?" लड़की ने जवाब दिया : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हरगिज़ नहीं, बल्कि मैं तो इस सूरह के बारे में कुछ न जानती थी लेकिन जब इस शख़्स ने मुझ से (निकाह़ के लिये) इसरार किया तो मैं ने ख़्वाब में देखा कि मैं दोज़ख़ में दाख़िल हो रही हूं कि अचानक इस शख़्स को मेरी जगह जहन्नम में डाल दिया गया। येह ख़्वाब देखने के बा'द मैं बेहद ख़ौफ़ज़दा हो गई तो हज़रते सय्यिदुना मालिक عَلَيْهِ السَّلَام ने मुझ से कहा : "डरो मत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस शख़्स को तेरा फ़िदया बना दिया है।" फिर

www.dawateislami.net

किसी ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे जन्नत में दाख़िल कर दिया, मैं ने जन्नत में एक जगह लिखा हुवा देखा :

يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۚ وَعِنْدَهٗۤ اُمُّ الْكِتٰبِ ○

(پ۱۳،الرعد:۳۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** जो चाहे मिटाता और साबित करता है और अस्ल लिखा हुवा उसी के पास है।

फिर मुझे सूरए इख़्लास सिखाई गई और मैं ने इसे याद कर लिया। जब मैं बेदार हुई तो येह सूरत मुझे ब दस्तूर याद थी।

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि "वोह औ़रत तो मुसल्मान हो गई मगर येह शख़्स मुरतद होने की वज्ह से क़त्ल कर दिया गया।" हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से आ़फ़िय्यत के त़लब गार हैं।

मुसल्मां हैं अ़त्तार तेरी अ़त़ा से
हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही

www.dawateislami.net

दुन्या के धोके से बचने का बयान

ऐ गुनाह कर के तौबा से मुंह मोड़ने वाले ! क्या तुझे अन्दाज़ा है कि तेरे कितने गुनाह लिखे जा चुके हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह्म करे झूटी उम्मीद को छोड़ दे, मुझे तेरी उ़म्र ज़ाएअ़ होने पर अफ़्सोस है, अहले दिल कहां से कहां पहुंच गए और तू अभी तक अपनी ख़्वाहिशात में जकड़ा हुवा है, हम तेरी ख़ैर ख़्वाही करते हुए तुझे नेकी की दा'वत दे रहे हैं जब कि तू सुनी अनसुनी कर रहा है।

चन्द अश्आ़र

يَادَهْرُ مَا اَقْضَاکَ مِنْ مُتَلَوِّنٍ ... فِیْ حَالَتَیْکَ وَمَا اَقَلَّکَ مُنْصِفًا

وَغَدَوْتَ لِلْعَبْدِ الْجَهُوْلِ مُصَافِیًا ... وَعَلَی الْکَرِیْمِ الْحُرِّ سَیْفًا مُرْهِفًا

دَهْرٌ اِذَا اَعْطٰی اِسْتَرَدَّ عَطَاءَهُ ... وَاِذَا اِسْتَقَامَ بَدَا لَهُ فَتَحَرَّفَا

لَا اَرْتَضِیْکَ وَاِنْ کَرُمْتَ لِاَنَّنِیْ ... اَدْرِیْ بِاَنَّکَ لَا تَدُوْمُ عَلَی الصَّفَا

مَادَامَ خَیْرُکَ یَا زَمَانُ بِشَرِّهٖ ... اَوْلٰی بِنَا مَاقَلَّ مِنْکَ وَمَا کَفٰی

तरजमा : (1) ऐ ज़माने ! तू अपनी दोनों ह़ालतों में कितना रंगीन है और कितना कम इन्साफ़ करने वाला है ?

(2) तेरी सुब्ह़ जाहिल शख़्स से मह़ब्बत करते हुए होती है, और शरीफ़ इ़ज़्ज़त दार आदमी पर धारीदार तलवार बन जाता है।

(3) ज़माना जब (कुछ) अ़त़ा करता है तो अपनी अ़त़ा को वापस भी लौटा लेता है, और जब अपनी ग़ैर ज़रूरी अ़त़ा से रुक जाता है तो एक त़रफ़ हो जाता है।

(4) मैं तुझ से राज़ी नहीं होउंगा अगर्चे तू बुज़ुर्गी दिखाए, क्यूं कि मैं इस बात को बख़ूबी जानता हूं कि तू हमेशा एक जैसा नहीं रहता।

(5) ऐ ज़माने ! तेरी ख़ैर (भलाई) हमेशा नहीं रहती, तेरे शर की

www.dawateislami.net

वज्ह से हमें ज़ियादा बेहतर येह है कि तुझ से इतना ह़िस्सा लें जो कम हो और काफ़ी हो जाए।

दुन्या को ठुकराने वाले :

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं कि "मैं ऐसे ऐसे नेक लोगों की सोह़बत में रहा जिन में से बा'ज़ ह़ज़रात पर पचास पचास ऐसे साल गुज़र गए कि उन्हों ने न कभी अपने लिये बिस्तर बिछाए और न कभी आराम के लिये चादरें तह कीं और न ही कभी घर से खाना पकवाया, उन में से कोई एक लुक़्मा ही खाता मगर फिर भी उस की ख़्वाहिश होती कि इस लुक़्मे की जगह अपने मुंह में पथ्थर डाल लेता, न तो वोह दुन्या मिलने पर ख़ुश होते और न इस के चले जाने पर ग़मज़दा होते, तुम जिस मिट्टी को अपने पैरों तले रौंदते हो उन के नज़दीक दुन्या की ह़क़ीक़त और हैसिय्यत उस मिट्टी से भी कम थी। उन के बिल्कुल क़रीब में ह़लाल माल होने के बा वुजूद जब उन में किसी से कहा जाता कि "इस में से क़दरे किफ़ायत ही ले लें।" तो जवाब मिलता : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ऐसा नहीं कर सकता क्यूं कि मुझे ख़ौफ़ है कि अगर मैं ने इस में से कुछ ले लिया तो येह मेरे दिल व दीन के बिगाड़ का सबब बन जाएगा।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

सआ़दत मन्द दुल्हन :

हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِىَ اللهُ تَعالىٰ عَنْه फ़रमाते हैं कि "मेरी शादी "कन्दा क़बीले" की एक औ़रत से हुई जिस का नाम सवाब था। जब मैं दुल्हन के पास जाने लगा तो दरवाज़े पर

www.dawateislami.net

रुक गया और उस का नाम ले कर उसे पुकारा मगर उस ने कोई जवाब न दिया। मैं ने फिर से पुकारा : "ऐ फ़ुलानी ! क्या तू गूंगी है (कि जवाब नहीं दे रही) या बहरी, कि सुनती नहीं ?" तो उस ने जवाब दिया : "ऐ सहाबिये रसूल ! मैं न तो गूंगी हूं और न ही बहरी मगर नई नवेली दुल्हनें बोलने से ह़या करती हैं।" जब मैं अन्दर दाख़िल हुवा तो देखा कि घर में पर्दे लगे हुए हैं, क़ीमती सामान सजा हुवा है और रेशमी कपड़े मौजूद हैं। येह देख कर मैं ने कहा : "ऐ फ़ुलानी ! क्या तेरे घर को बुख़ार हो गया है कि तूने इसे इतने कपड़े ओढ़ा रखे हैं या फिर ख़ानए का'बा कन्दा क़बीले में आ गया है ?" तो उस ने जवाब दिया : "ऐसी बात नहीं बल्कि दुल्हनें अपने घर को सजाया करती हैं।"

फिर मैं ने नज़र उठा कर देखा तो ख़ादिम खाना लिये सामने खड़े थे। मैं ने कहा कि "मैं ने हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "जो नर्म व मुलायम बिस्तर पर सोए और लिबासे शोहरत पहने और आलीशान सुवारी पर सुवार हो और मन पसन्द खाने खाए वोह जन्नत की खुश्बू भी नहीं सूंघ सकेगा।" मेरी ज़ौजा कहने लगी "ऐ सहाबिये रसूल ! मैं आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को गवाह बनाती हूं कि "इस घर में जो कुछ है सब राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में स-दक़ा है और मेरे तमाम गुलाम राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में आज़ाद हैं, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मुझे थोड़ी सी गन्दुम ला दीजिये, मैं घर के कामकाज भी खुद ही कर लिया करूंगी।" मैं ने उस से कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म फ़रमाए और तेरी मदद करे।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

www.dawateislami.net

ग़फ़्लत और ख़्वाहिशाते नफ़्स का इ़लाज

ऐ अपने अस्ल ठिकाने से बे ख़बर शख़्स ! ऐ गुनाहों में मुन्हमिक हो कर दुन्या ही को अपना अस्ल ठिकाना समझ लेने वाले ! बा हिम्मत लोग तुझ से आगे निकल गए और तू बहूरे ग़फ़्लत में ग़ोता ज़न है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सौग़ाते नदामत ले कर ह़ाज़िर हो जा और सर को झुका कर अपनी सरकशी का इक़रार कर और स-ह़री के वक़्त यूं मुनाजात कर कि "या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! मैं गुनहगार, रहूम का त़लब गार हूं।" और नेक लोगों से मुशा-बहत इख़्तियार कर अगर्चे तू नेक नहीं मगर नेकों की मुशा-बहत करते हुए उन जैसा बन जा, अपने गुनाहों पर अश्कों की बरसात कर, रात में इ़बादत के लिये खड़ा हो जा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कर। अपनी ज़िन्दगी में से कुछ वक़्त आख़िरत के लिये निकाल, दुन्या के खेल तमाशे छोड़ दे और अगर तू आख़िरत का त़लब गार है तो दुन्या को त़लाक़ दे दे, ऐ लम्बी नींद सोने वाले ! क़ाफ़िला रवाना हो गया सारी क़ौम मह़्वे सफ़र है जब कि तू अभी तक नींद से बेदार नहीं हुवा।

ख़ल्वत नशीन बुज़ुर्ग :

ह़ज़रते सय्यिदुना अयास बिन क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी क़ौम के सरदार थे। एक दिन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी दाढ़ी में एक सफ़ेद बाल देखा तो दुआ़ की : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं अचानक होने वाले ह़ादिसात से तेरी पनाह चाहता हूं, मुझे मा'लूम

www.dawateislami.net

है कि मौत मेरी ताक में है और मैं इस से बच नहीं सकता।" फिर वोह अपनी क़ौम के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाने लगे : "ऐ बनू सा'द ! मैं ने अपनी जवानी तुम पर वक़्फ़ कर दी थी अब तुम मेरा बुढ़ापा मुझे बख़्श दो।" फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने घर तशरीफ़ लाए और गोशा नशीन हो गए यहां तक कि आप का विसाल हो गया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

चन्द अश्आर

اَمِنْ بَعْدِ شَیْبٍ اَیُّھَا الرَّجُلُ الْکَھْلُ ۔ جَھِلْتَ وَمِنْکَ الْیَوْمَ لَایَحْسُنُ الْجَھْلُ
تَحَکَّمَ شَیْبُ الرَّاْسِ فِیْکَ وَاِنَّمَا ۔ تَمِیْلُ اِلَی الدُّنْیَا وَیَخْدَعُکَ الْمَطَلُ
دَعِ الْمَطَلَ وَالتَّسْوِیْفَ اِنَّکَ مَیِّتٌ ۔ وَبَادِرْ بِجِدٍّ لَایُخَالِطُہٗ ھَزَلُ
سَاَبْکِیْ زَمَانًا ھَدَّنِیْ بِفِرَاقِہٖ ۔ فَلَیْسَ لِقَلْبِیْ عَنْ تَذَکُّرِہٖ شُغُلُ
عَجِبْتُ لِقَلْبِیْ وَالْکَرٰی اِذْ تَھَاجَرَا ۔ وَقَدْ کَانَ قَبْلَ الْیَوْمِ بَیْنَھُمَا وَصْلُ
اَخَذْتُ لِنَفْسِیْ حَتْفَ نَفْسِیْ بِکَفِّھَا ۔ وَاَثْقَلْتُ ظَھْرِیْ مِنْ ذُنُوْبٍ لَھَا ثِقْلُ
وَبَارَزْتُ بِالْعِصْیَانِ رَبًّا مُھَیْمِنًا ۔ لَہُ الْمَنُّ وَالْاِحْسَانُ وَالْجُوْدُ وَالْفَضْلُ
اَخَافُ وَاَرْجُوْ عَفْوَہٗ وَعِقَابَہٗ ۔ وَاَعْلَمُ حَقًّا اَنَّہٗ حَکَمٌ عَدْلُ

तरजमा : (1) ऐ बूढ़े शख़्स ! क्या बुढ़ापा आने के बा वुजूद भी तू जहालत में मुब्तला है ? अब (इस उ़म्र) में तुम्हारी त़रफ़ से जहालत का मुज़ाहरा अच्छा नहीं।

(2) तेरा फ़ैसला तो सर की सफ़ेदी ने कर दिया मगर फिर भी तू

www.dawateislami.net

दुन्या की त़रफ़ माइल होता है और ना पाएदार (दुन्या) तुझे धोका दे रही है।

(3) ना पाएदार दुन्या और (इस पर) अफ़्सोस करना छोड़ दे, कि एक दिन तू भी मरने वाला है, और ऐसे पुख़्ता इरादे के साथ आगे बढ़ जिस में किसी बेहूदा पन की आमैज़िश न हो।

(4) मैं उस वक़्त को रोता रहूंगा जिस ने मुझे उस (मह़बूब) के फ़िराक़ में मुब्तला कर दिया, ह़ालां कि उस की याद से दूरी मेरे दिल का मश्ग़ला नहीं।

(5) मैं ह़ैरत में हूं अपने दिल और इ़बादत से कि येह दोनों एक दूसरे से जुदा हो गए ह़ालां कि आज से पहले तो इन दोनों (या'नी इ़बादत व दिल) में बड़ा क़ुर्ब था।

(6) मैं ने ख़ुद को इ़बादत से रोक कर हलाकत इख़्तियार की है और अपनी पीठ को भारी गुनाहों से बोझल कर लिया है।

(7) और ना फ़रमानी कर के गोया मैं ने अपने रब्बे मुहय-मिन عَزَّوَجَلَّ को चेलेन्ज कर दिया जब कि वोह इन्आ़मो एह़सान और जूदो फ़ज़्ल वाला है।

(8) मैं उस की पकड़ से डरने के साथ साथ उस के अ़फ़्वो दर गुज़र की उम्मीद भी रखता हूं और मैं इस बात का पुख़्ता यक़ीन रखता हूं कि वोह ही इन्साफ फ़रमाने वाला ह़ाकिमे मुत़्लक़ है।

नसीह़त :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि "ऐ इब्ने आदम ! तेरा आ'माल नामा लिखा जा रहा है और

www.dawateislami.net

तुझ पर दो मोह़तरम फ़िरिश्ते निगहबान हैं, उन में से एक तेरे दाएं और दूसरा बाएं कन्धे पर मुवक्कल है, दाईं त़रफ़ वाला तेरी नेकियां और बाईं त़रफ़ वाला फ़िरिश्ता बुराइयां लिखता है। अब तू जो चाहे अ़मल कर, थोड़ा कर या ज़ियादा, जब तू दुन्या से रुख़्सत होगा तो तेरा आ'माल नामा लपेट दिया जाएगा, फिर जब क़ियामत का दिन आएगा तो तुझे क़ब्र से निकाल कर कहा जाएगा :

اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ؕ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ؕ
(پ۱۵، بنی اسرائیل:۱۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फ़रमाया जाएगा कि अपना नामा (आ'माल) पढ़ आज तू ख़ुद ही अपना ह़िसाब करने को बहुत है।

मेरे प्यारे इस्लामी भाई !

उस रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिस ने तुझे अपने नफ़्स का मुह़ा-सबा करने वाला बनाया है, उस ने पूरा अ़द्ल किया है, ऐ इब्ने आदम ! याद रख कि तू अकेला ही मरेगा और अकेला ही अपनी क़ब्र में दाख़िल होगा और अकेला ही क़ब्र से निकलेगा और तुझे अकेले ही (अपने किये का) ह़िसाब देना होगा, ऐ इब्ने आदम ! अगर तमाम लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करने लगें मगर तू उस की ना फ़रमानी करे तो उन की इत़ाअ़त तुझे कोई नफ़्अ़ न देगी।

दीन में दुन्या की आमैज़िश :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم एक शख़्स से मिले तो उस ने आप से पूछा कि "ऐ अबू इस्ह़ाक़ ! आप का क्या ह़ाल है ? आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाब में अश्आ़र पढ़े :

www.dawateislami.net

نُـرَقِّـعُ دُنْيَـانَـا بِتَـمْـزِيْـقِ دِيْنِنَا فَلَادِيْـنُـنَـا يَـبْقٰـى وَلَا مَـا نُـرَقِّـعُ
فَـطُـوْبٰـى لِعَبْـدٍ آثَـرَ اللّٰـهَ رَبَّـهٗ وَجَـادَ بِـدُنْيَـاهُ لِـمَـا يَتَـوَقَّـعُ

तरजमा : (1) अपने दीन को नुक़्सान पहुंचा कर हम अपनी दुन्या संवारते रहते हैं, यूं न तो हमारा दीन बाक़ी रहता है और न ही दुन्या संवरती है।

(2) ख़ुश ख़बरी है उस बन्दे के लिये जिस ने **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ (की इ़बादत) को तरजीह़ दी और अपनी दुन्या के ज़रीए़ आख़िरत को संवारा। (حلیۃ الاولیاء، ابراہیم بن ادہم، الرقم ۱۱۱۹۸، ج۸، ص۱۰)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمین بجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दुन्या से दिल क्यूं लगाऊं ?

ह़ज़रते सय्यिदुना औ़न बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाया करते थे कि "अफ़्सोस ! मैं कितनी ग़फ़्लत करता हूं ? ह़ालां कि मुझ से ह़िसाबो किताब में हरगिज़ ग़फ़्लत नहीं बरती जाएगी,...... मेरी ज़िन्दगी क्यूंकर ख़ुश गवार हो सकती है ? ह़ालां कि मेरे सामने एक कठिन दिन है,...... मैं अ़मल में चुस्ती क्यूं इख़्तियार नहीं करता ह़ालां कि मैं नहीं जानता कि मेरी मौत का वक़्त क्या है, मैं दुन्या में कैसे ख़ुश रहूं ? ह़ालां कि मुझे यहां हमेशा नहीं रहना,...... मैं इसे तरजीह़ क्यूं दूं ? मुझ से पहले जिस ने भी दुन्या को तरजीह़ दी दुन्या ने उसे नुक़्सान पहुंचाया,...... मैं इसे क्यूं पसन्द करूं ? येह तो फ़ना हो कर मिट जाएगी,...... मैं इस की

www.dawateislami.net

हि़र्स क्यूं रखूं ? क्यूं कि मेरा मस्कन और जा-ए क़रार तो कहीं और है,...... मैं इस (दुन्या के चले जाने) पर क्यूं अफ़्सोस करूं ? क्यूं कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं नहीं जानता कि मेरे गुनाहों की वज्ह से मेरे साथ क्या सुलूक किया जाएगा ।''

(حلیۃ الاولیاء، ۵۷۴۲، عون بن عبداللہ، رقم ۵۵۹۳، ج ۴، ص ۲۸۵ بتصرفٍ)

चालीस दिन आग न जलती :

ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि ''चालीस चालीस दिन ऐसे गुज़र जाते कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दौलत कदे में चराग़ और आग न जलती थी ।'' पूछा गया : ''फिर आप किस त़रह़ गुज़ारा करते थे ?'' फ़रमाया कि ''दो काली चीज़ों या'नी पानी और खजूर पर ।''

(بخاری، کتاب الرقاق، باب کیف کان عیش النبی صلی اللہ علیہ وسلم الخ، رقم ۶۴۵۸، ج ۴، ص ۲۳۶ بتغیر ما)

तीन ख़्वाहिशात :

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ौजा सय्यि-दतुना आ़इशा बिन्ते सुलैमान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا फ़रमाती हैं कि ''यूसुफ़ बिन अस्बात رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुझ से कहा कि ''मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तीन चीज़ों का त़लब गार हूं ।'' मैं ने पूछा ''वोह क्या हैं ?'' फ़रमाया : ''मैं चाहता हूं कि जब मुझे मौत आए तो मेरी मिल्किय्यत में कोई चीज़ न हो और मुझ पर कोई क़र्ज़ न हो और न ही (कमज़ोरी की वज्ह से) मेरी हड्डियों पर गोश्त हो ।'' और उन की येह तीनों ख़्वाहिशात पूरी हुईं । चुनान्चे उन्हों ने म-रज़ुल मौत

www.dawateislami.net

में मुझ से पूछा कि "क्या तुम्हारे पास ख़र्च करने के लिये कोई चीज़ मौजूद है ?" मैं ने जवाब दिया, "नहीं।" पूछा, "तुम क्या चाहती हो ?" मैं ने जवाब दिया कि "येह ख़ैमा बाज़ार में जा कर बेचना चाहती हूं।" फ़रमाया कि "अगर तुम ऐसा करोगी तो हमारा ह़ाल ज़ाहिर हो जाएगा और लोग कहेंगे कि "इन्हों ने अपनी मजबूरी की वज्ह से ख़ैमा बेचा है।"

आप फ़रमाती हैं कि "हमारे पास बकरी का एक बच्चा था जो मेरे भाई ने तोह़फ़ा दिया था।" मेरे शोहर ने मुझे हुक्म दिया कि "इसे बाज़ार में जा कर बेच दो।" वोह बकरी का बच्चा दस दिरहम में फ़रोख़्त हुवा। इस के बा'द उन्हों ने मुझ से कहा कि "एक दिरहम मेरे बदन व कफ़न पर लगाने वाली ख़ुश्बू (ख़रीदने) के लिये अलग कर लो और बाक़ी सारा माल राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च कर दो।" तो जब आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इन्तिक़ाल हुवा तो उन दिरहमों में से उस एक दिरहम के इ़लावा जिसे हम ने ख़ुश्बू के लिये निकाल लिया था कुछ बाक़ी न था।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। ﴿ اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

ऐ झूटी उम्मीदें बांधने वाले ! वस्वसों से जान छुड़ा ले ! ऐ ऊंघने वाले ! अपनी काम्याबी के लिये कब बेदार होगा और कब आख़िरत का त़लब गार बनेगा ? ऐ दुन्या में रग़्बत रखने वाले ! उस जुदाई को कब याद करेगा कि जब तू हर प्यारे से जुदा कर दिया जाएगा ? ऐ सख़्त दिल और ग़फ़्लत में सोने वाले ! बेदार हो जा।

www.dawateislami.net

अश्आर

اِنِّی بُلِیتُ بِاَرْبَعٍ مَاسُلِطُتُ ۔ اِلَّا لِعَظْمِ بَلِیَّتِی وَشِقَائِی

اِبْلِیسُ وَالدُّنْیَا وَنَفْسِی وَالْھَوٰی ۔ کَیْفَ التَّخَلُّصُ مِنْ یَدَیْ اَعْدَائِی

तरजमा : (1) मैं चार बलाओं में मुब्तला किया गया हूं, येह मेरी मुसीबत व बद बख़्ती में इज़ाफ़े के सबब मुझ पर मुक़र्रर की गईं हैं।

(2) एक बला शैत़ान, दूसरी दुन्या, तीसरी नफ़्स और चौथी ख़्वाहिशात, मेरे इन दुश्मनों से मुझे किस त़रह़ छुटकारा मिलेगा ?

आज़्माइश की लज़्ज़त :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल आ'ला बिन अ़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं कि "मैं किसी बुज़ुर्ग की तलाश में लुबनान के एक पहाड़ पर चढ़ा, ताकि उन के अख़्लाक़ को अपना सकूं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक ग़ार की त़रफ़ मेरी रहनुमाई फ़रमाई। मैं ने वहां एक बुज़ुर्ग को देखा जिन के पुर सुकून चेहरे से नूर की किरनें फूट रही थीं। मैं ने उन्हें सलाम किया तो उन्हों ने बेहतरीन अन्दाज़ से सलाम का जवाब दिया। मैं उन के क़रीब बैठा हुवा था कि मूस्लाधार बारिश शुरूअ़ हो गई। मुझे उन की इजाज़त के बिग़ैर ग़ार में पनाह लेने में झिजक मह़सूस हुई तो उन्हों ने अज़ ख़ुद मुझे बुला कर पनाह दी और अपने क़रीब पड़े हुए एक पथ्थर पर बिठा दिया।

उन्हों ने इसी त़रह़ के एक (बड़े) पथ्थर पर नमाज़ अदा की। बारिश और जगह की तंगी की वज्ह से मेरा दम घुटने लगा। फ़रमाने लगे : "इबादत गुज़ारों की शराइत़ में से है कि वोह

www.dawateislami.net

आ़जिज़ी और ताबेअ़ दारी इख़्तियार करें।'' मैं ने पूछा कि ''मह़ब्बत की अ़लामत क्या है ?'' फ़रमाया कि ''जब दिल सांप की त़रह़ बल खाए और शौक़ की आग में जल उठे तो समझ लो कि येह मह़ब्बत से मा'मूर है। जुदाई के इ़लावा मह़ब्बत करने वाले को जिस भी मुसीबत का सामना होता है वोह उस के लिये ने'मत होती है हर चीज़ का कुछ न कुछ इ़वज़ है मगर मह़बूब का कोई इ़वज़ नहीं, क्या तुम नहीं जानते कि ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने परेशानी का सामना किया मगर चूंकि उन के साथ जुदाई न थी इस लिये येह परेशानियां उन के लिये ने'मत और तोह़फ़ा बन गईं।'' फिर उन्हों ने येह अश्आ़र पढ़े :

جَسَدٌ نَاحِلٌ وَدَمْعٌ یَّفِیْضُ　　وَهَوًی قَاتِلٌ وَّقَلْبٌ مَّرِیْضُ

وَسِقَامٌ عَلَی التَّنَائِیْ شَدِیْدٌ　　وَهُمُوْمٌ وَّحُرْقَةٌ وَّمَضِیْضُ

یَاحَبِیْبَ الْقُلُوْبِ قَلْبِیْ مَرِیْضٌ　　وَالْهَوٰی قَاتِلِیْ وَدَمْعِیْ یَفِیْضُ

اِنْ یَّکُنْ عَاشِقٌ طَوِیْلٌ بَلَاهُ　　فَبَلَائِیْ بِکَ الطَّوِیْلُ الْعَرِیْضُ

तरजमा : (1) जिस्म लाग़र है और आंसू बह रहे हैं, नफ़्सानी ख़्वाहिशात क़ातिल हैं और दिल मरीज़ है।

(2) दूरी का मरज़ बहुत शदीद है, फ़िक्र और सोज़े जिगर का शिकार हूं और मुसीबत से दो चार हूं।

(3) ऐ दिलों के मह़बूब ! मेरा दिल बीमार है, ख़्वाहिशे नफ़्स मुझे घाइल कर रही है और मेरे आंसू बह रहे हैं।

(4) अगर आ़शिक़ की आज़्माइश त़वील होती है, तो तेरी त़रफ़ मेरी आज़माइश भी बड़ी त़वील व अ़रीज़ है।

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल आ'ला عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : "फिर उन्हों ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए, देखते ही देखते उन की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। मैं जब उन के कफ़न व दफ़्न का इन्तिज़ाम करने के लिये बाहर निकला तो मुझे कोई दिखाई न दिया। मैं ग़ार में वापस आ गया (तो उन को वहां न पाया), मैं ने उन्हें बहुत तलाशा मगर वोह मुझे कहीं नज़र न आए। मैं हैरत के आ़लम में उन के बारे में सोच ही रहा था कि हातिफ़े ग़ैब से एक आवाज़ आई,

رُفِعَ الْمُحِبُّ اِلَى الْمَحْبُوْبِ　　وَفَازَ بِالْبُغْيَةِ وَالْمَطْلُوْبِ

तरजमा : (1) मुहि़ब को मह़बूब की त़रफ़ उठा लिया गया और वोह अपने मक़्सूद व मत़लूब में काम्याब हो गया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِىِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

www.dawateislami.net

महब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ की बुन्याद

ऐ मेरे भाई !

आख़िरत को दुन्या के बदले बेचने वाला ख़सारे में है, जिस शख़्स को तूने छोड़ जाना है उस की महब्बत से बच कर रहना कि कहीं तू उस से बिछड़ने पर परेशान न हो जाए,...... तक़्वा से दोस्ती ही सच्ची रफ़ाक़त है,...... गुनाहों से दोस्ती रखने वाला धोके में है, आख़िरत का इवज़ बहुत थोड़ा है और वोह पुर इख़्लास दिल और ज़िक्र में मश्ग़ूल रहने वाली ज़बान है,...... अगर तू बूढ़ा होने के बा वुजूद ग़फ़्लत की नींद से बेदार न हुवा तो इतना सोच लेना कि तू दुन्या से रुख़्सत होने वाला है,...... तूने रोने वाली ज़बान और रात भर जागने वाली आंखें छोड़ीं और तहज्जुद गुज़ार लोगों की त़रह़ इबादत करना भी छोड़ दिया,...... ह़ालां कि येह तहज्जुद गुज़ार लोग, गिर्या करने वाली ज़बानें और शब बेदारी करने वाली आंखें बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में नज़्र कर चुके,...... उन के पहलू फ़क़्रो फ़ाक़ा और आहो ज़ारी के बा वुजूद आराम की त़रफ़ माइल नहीं होते,...... जब वोह नसीमे सह़र से फ़रह़त पा लेते हैं तो ख़ुश गवार फ़ज़ा से बे नियाज़ हो जाते हैं,...... येह लोग शब बेदारी कर के इस्तिग़फ़ार में मश्ग़ूल रहते हैं,...... उन्हों ने इबादत के घर को आबाद रखा और ग़फ़्लत की मन्ज़िल को वीरान कर दिया ।

अ़लामाते महब्बत :

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं

www.dawateislami.net

कि "मैं ने साहि़ल पर एक नौ जवान को देखा, उस का रंग उड़ा हुवा था जब कि चेहरे पर मक़्बूलिय्यत के अन्वार और कु़र्ब व मह़ब्बत के आसार दिखाई दे रहे थे। मैं ने उसे सलाम किया तो उस ने अह़्सन अन्दाज़ में सलाम का जवाब दिया। मैं ने पूछा कि "मह़ब्बत की अ़लामत क्या है?" जवाब दिया कि "दर ब दर की ठोकरें खाना, लोगों में रुस्वा होना, नींद न करना और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ से दूरी का ख़ौफ़ रखना।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। ﴾اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अश्आ़र

اَبْلَیْتَ مَنْ اَحْبَبْتَ یَاحُسْنَ الْبَلَا وَخَصَصْتَ بِالْبَلْوٰی رِجَالًا خُشَّعًا

اَحْبَبْتَ بَلْوَاهُمْ وَطُوْلَ حَنِیْنِهِمْ وَاَطَلْتَ ضُرَّهُمْ لِکَیْ یَتَخَضَّعَا

तरजमा : (1) ऐ अच्छा आज़्माने वाले ! तू अपने पसन्दीदा बन्दों को आज़्माइश में डालता है और आ़जिज़ी करने वालों को आज़्माइश के लिये ख़ास फ़रमा लेता है।

(2) तू उन की आज़्माइश और उन की त़वील गिर्या व ज़ारी को मह़बूब रखता है और उन की तक्लीफ़ को और ज़ियादा कर देता है ताकि वोह आ़जिज़ी करें।

प्यारे इस्लामी भाइयो !

मह़ब्बत की मन्ज़िल को पाने के लिये बहुत से रास्ते और इन रास्तों में मु-तअ़द्दद पड़ाव हैं। शौक़ के साथ बेदार हो जाओ ताकि अपना सफ़र तै कर सको। अपने रब عَزَّوَجَلَّ से हमेशा बड़े

www.dawateislami.net

मर्तबे वाली मह़ब्बत मांगा करो। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मुक़र्रबीन के लिये दरे विलायत खोल रखा है। इस दरवाज़े से ख़ुश्बू वाला इस त़रह़ गुज़रता है कि उस की नूरानियत (हमारी) आंखों को ख़ीरा कर देती है। वज्द के पियाले उस के सामने घूमते हैं और वोह मज़ीद त़लब की ख़्वाहिश में मुब्तला रहते हैं। दोस्ती की फ़िक्र के नशे ने उन्हें मदहोश किया तो क्या ज़ाहिर, क्या पोशीदा ? सब उन के सामने आ गया। उन्हों ने इस जामे मह़ब्बत से ख़ूब फ़ैज़ पाया तो उन के तमाम अह़वाल सिमट कर रह गए। गुलिस्ताने मह़ब्बत के बाशिन्दों की पुरसोज़ आवाज़ ने उन्हें मस्त कर दिया तो वोह आहिस्ता आहिस्ता वज्द में आ गए। उन का साक़ी उन का अपना ही मह़बूब है। उन की मह़फ़िल रंगारंग फूलों से आरास्ता है। उन के ग़ुलाम होश में आ चुके हैं जब कि येह लोग अब तक मदहोशी में हैं। यक़ीनन इस पाएदार मह़ब्बत का एक घूंट सारी दुन्या के इ़वज़ भी सस्ता है और बे वुक़ूफ़ के इ़लावा इसे कोई नहीं छोड़ सकता और बे वुक़ूफ़ भी ऐसा जिस की बद बख़्ती इन्तिहा को पहुंच चुकी हो। **प्यारे इस्लामी भाई !** मेरी नसीह़तों को क़बूल कर लो और (तौबा का) दरवाज़ा बन्द होने से पहले ही इस की त़रफ़ सब्क़त करो, येह मह़ब्बत तुम्हें हर लज़्ज़त से बे नियाज़ कर देगी।

ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने भी इसी मह़ब्बत का जाम पिया है और इसी पर ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने गिर्या व ज़ारी की और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़-करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام को इसी मह़ब्बत में आरे से चीरा गया, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम

www.dawateislami.net

ख़लीलुल्लाह عَلَيۡهِ السَّلَام को आग में डाला गया तो उन्हें आग की तपिश का एह़सास न हुवा, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام का शौक़ बढ़ा तो वोह अ़र्ज़ करने लगे कि मुझे अपनी तजल्ली दिखा दे ताकि मैं तेरी ज़ियारत कर सकूं, ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيۡهِ السَّلَام को ख़ुश इल्ह़ानी का कैसा सुरूर ह़ासिल हुवा, ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام ने जंगलात में रहना पसन्द फ़रमाया लिहाज़ा न शह्र में घर बनाया न दीहात में और हमारे नबिय्ये मुकर्रम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी इसी मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ का जाम पिया और आज भी जो मह़बूब की ता'रीफ़ होती है और इस पर फ़ख़्र किया जाता है येह इसी मह़ब्बत का बचा हुवा ह़िस्सा है।

प्यारे इस्लामी भाई ! तेरे लिये सारी काएनात की राहें खुली हैं तू इस में से उस पाकीज़ा जामे मह़ब्बत को मुन्तख़ब कर ले कि उस का एक क़त़रा प्यास बुझाने में आबे कौसर जैसा है। येही जामे मह़ब्बत ह़ज़रते सिद्दीक़ व फ़ारूक़ और सई़द व दीगर अ़-श-रए मुबश्शरा عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان पर पेश हुवा तो वोह सब उसे पीने के लिये जम्अ़ हो गए। अपने अकाबिरीन के नक़्शे क़दम पर चलते हुए दीगर सु-लह़ाए उम्मत ने येही रूह़ानी फ़िक्र अपनाई। तुम भी अहले सुफ़्फ़ा की सिफ़ात अपना लो, उस का कुछ ह़िस्सा तुम्हें भी नसीब हो जाएगा। इस की त़लब में रुकावट बनने वाले ह़ीले छोड़ दो। अगर तुम मलामत की राह छोड़ दोगे तो तुम्हारा क्या जाएगा। अगर तुम ने ऐसा न किया तो तुम्हारा कोई उ़ज़्र क़बूल नहीं

www.dawateislami.net

किया जाएगा। अपने मालिक की ह़म्द बयान करो, ख़ुशी से झूमो और वज्द में आ जाओ सारी मख़्लूक़ तुम्हारी दोस्त बन जाएगी, मह़बूब का कुर्ब ह़ासिल होगा। अपने दिलों की ह़िफ़ाज़त करो, अगर तुम ने ग़ैरुल्लाह पर नज़र रखी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से दूर हो गए तो तुम्हारा क्या बनेगा।

ऐ फु-क़रा की जमाअ़त ! येह बातें तो तुम्हारे सुनने की थीं। ऐ अह़वाल वालो ! मैं तुम से मुख़ात़िब हूं मैं येह ख़ूबियां तुम्हें बताते हुए तुम्हारे साथ चल रहा हूं, ऐ ताइबीन (या'नी तौबा करने वालों) की जमाअ़त ! इस क़ाबिले फ़ख़्र जौहर के हुसूल के लिये ना फ़रमानी से बचना तुम्हारे लिये क्या मुश्किल है। अगर तुम इस ख़ित़ाब से मह़रूम रहे और ख़ुशी में न झूमे तो मह़रूमी के जंगल में भटक्ते रहोगे।

मह़ब्बत की ह़क़ीक़त :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र वर्राक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं कि "मह़ब्बत की ह़क़ीक़त येह है कि मुह़िब हर वक़्त मह़बूब का दीदार करता रहे क्यूं कि ग़ैर में मश्ग़ूल होना मह़ब्बत के लिये ह़िजाब है। मह़ब्बत की अस्ल कामिल इत्तिबाअ़ और यक़ीन है। येही दो चीज़ें हैं जो इन्सान को जन्नत में परहेज़ गारों के द-रजे में पहुंचा देती हैं।"

अश्आ़र

أُحِبُّ الصَّالِحِيْنَ وَلَسْتُ مِنْهُمْ ‏ وَاَطْلُبُ اَنْ اَنَالَ بِهِمْ شَفَاعَهْ

وَاَكْرَهُ مَنْ بِضَاعَتُهُ الْمَعَاصِيْ ‏ وَلَوْ كُنَّا سَوَاءً فِيْ الْبِضَاعَةْ

www.dawateislami.net

तरजमा : (1) मैं नेक लोगों (औलिया) से मह़ब्बत करता हूं ह़ालां कि मैं उन में से नहीं, और इन लोगों के मर्तबे तक पहुंचने के लिये सिफ़ारिश का त़लब गार हूं।

(2) मैं उसे ना पसन्द करता हूं जिस का सरमायए ह़यात गुनाह हों, अगर्चे हम इस सरमाया (गुनाह) में बराबर हैं।

रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ का त़ालिब :

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि "हम एक वीरान जंगल से गुज़र रहे थे कि हमें एक नौ जवान नज़र आया। उस के चेहरे की रंगत उड़ी हुई थी और बदन घुल चुका था, उस की पेशानी पर इ़बादत का नूर चमक रहा था, रुख़्सारों पर क़बूलिय्यत के आसार दमक रहे थे, चेहरे पर इ़बादत व मुजा-हदे के निशान इ़यां थे, शक्ल व सूरत से मह़बूबिय्यत और मुशा-हदा वाज़ेह़ था। उस ने दो पुराने कपड़े ज़ैबे तन कर रखे थे। बदन पर ऊन का एक जुब्बा भी था जिस की आस्तीन और दामन फटे हुए थे। उस की एक आस्तीन पर येह लिखा हुवा था :

اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ۝ (پ۱۵،الاسراء:۳۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक कान और आंख और दिल इन सब से सुवाल होना है।

जब कि दूसरी पर येह तह़रीर था :

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ (پ۱۸،النور:۲۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन उन पर गवाही देंगी उन की ज़बानें और उन के हाथ और उन के पाउं जो कुछ करते थे।

www.dawateislami.net

दामन पर लिखा था कि न बिके न ख़रीदा जाए, सीने पर लिखा था :

وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ۝ (پ۲۶،ق:۱۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हम दिल की रग से भी उस से ज़ियादा नज़्दीक हैं।

पुश्त पर तह़रीर था :

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۝ (پ ۲۹،الحاقۃ:۱۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उस दिन तुम सब पेश होगे कि तुम में कोई छुपने वाली जान छुप न सकेगी।

उस के सर पर लिखा था :

حُبُّ مَوْلَايَ بَلَائِيْ حَيْثُ مَوْلَايَ دَوَائِيْ

तरजमा : मेरे मौला की मह़ब्बत जहां एक आज़्माइश है, वहीं दवा और इ़लाज भी है।

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं ने उस के लिबास से ज़ियादा साफ़ सुथरे कपड़े कहीं नहीं देखे। मैं उस के क़रीब गया और सलाम किया तो उस ने जवाब में कहा "وَعَلَيْكَ السَّلَام या ज़ुन्नून !" मैं ने पूछा : "मेरे भाई ! तुम ने मुझे कैसे पहचाना ?" उस ने जवाब दिया कि "मेरे बाति़न से ह़क़ाइक़ तुम्हारे ज़मीर के ख़ज़ाने पर ज़ाहिर हुए तो उस ह़क़ ने तुम्हारे अ़ज़्म के ग़ुयूबात में तुम्हारी मा'रिफ़त की सफ़ाई का मुशा-हदा किया और दोनों हम-कलाम हुए तो इसी ने मुझे बताया कि तुम ज़ुन्नून

www.dawateislami.net

मिस्री हो।" मैं ने पूछा : "ऐ मेरे भाई ! महब्बत की इब्तिदा कैसे होती है ?" उस ने अपनी आस्तीन पर लिखी हुई आयत की त़रफ़ इशारा किया और कहने लगा : "येह जो तुम देख और पढ़ रहे हो इस को पेशे नज़र रखने से महब्बत की इब्तिदा होती है।" मैं ने पूछा : "भाई ! महब्बत की इन्तिहा कहां होती है ?" उस ने कहा कि "ऐ ज़ुन्नून ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसा महबूब है जिस की महब्बत की कोई इन्तिहा नहीं और उस के सामने इज्ज़ो इन्किसारी के बिग़ैर महब्बत करना मुम्किन नहीं है।" मैं ने पूछा : "ऐ मेरे भाई ! दुन्या से बे रग़बती आख़िरत की त़लब में होती है या मौला की रिज़ा के लिये ?" जवाब दिया कि "एक मख़्लूक़ से दूसरी मख़्लूक़ की त़लब में कनारा कशी करना तो ख़सारे की बात है, इस मख़्लूक़ दुन्या से बे रग़बती फ़क़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के लिये होनी चाहिये, ऐ ज़ुन्नून ! क़दीम महबूब या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस की मख़्लूक़ या'नी जन्नत पर राज़ी होना कम हिम्मत बन्दे का काम है, ज़ोहद का मत़लब ग़ैरुल्लाह से इज्तिनाब, औलिया की तलाश और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानियों का मुशा-हदा है, जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा किसी ग़ैर को चाहेगा उस का मत़लूब उस के पेशे नज़र होगा, और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को चाहेगा उस का मत़लूब उस का महबूब बन जाएगा। लिहाज़ा जब कोई मख़्लूक़ अपने ही जैसी मख़्लूक़ पर राज़ी हो तो मुशा-बहत उस का मक़्सूद बन जाती है (या'नी येह अपनी त़रह़ की मख़्लूक़ को अपना मक़्सूद बना लेता है)। ऐ ज़ुन्नून ! वोह शख़्स ख़सारे में है जिस ने लज़्ज़त व आराम छोड़ा,

www.dawateislami.net

दुन्या से मुंह मोड़ा और फिर कुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी शै पर राज़ी हो गया और उस ने इसी ख़ौफ़ से नफ़्स को मशक़्क़त में डाल कर दुन्या को तर्क किया कि उस का ठिकाना जहन्नम न बने और येह उम्मीद रखी थी कि जन्नत उस का ठिकाना बन जाए।"

हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "मैं ने उस से पूछा कि "ऐ भाई ! तुम इन वीरान जंगलात में तोशे के बिग़ैर कैसे रह लेते हो ?" तो उस ने जवाब दिया कि "ऐ बेकार शख़्स ! जो तुम्हें अपने ह़ाल की ख़बर न दे और अपने राज़ के मुआ-मले में तुम से बे ख़ौफ़ न हो, येह सुवाल उस के सामने कोई हैसियत नहीं रखता।" फिर उस ने अपना दायां क़दम ज़मीन पर मारा तो वहां घी और शह्द का एक चश्मा फूट पड़ा तो हम दोनों ने उस में से खाया। फिर उन्हों ने बायां क़दम ज़मीन पर मारा तो शह्द से ज़ियादा मीठा और बर्फ़ से ज़ियादा ठन्डा चश्मा फूटा तो उन्हों ने उस में से पानी पिया फिर उस ने दोनों चश्मों पर रैत डाली तो वोह ज़मीन पहले की त़रह़ बराबर हो गई जैसे वहां कोई चश्मा था ही नहीं। फिर वोह मुझे तन्हा छोड़ कर चला गया मैं इन करामात को देख कर देर तक रोता रहा।"

﴿अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। ﴾ ﴿اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم﴾

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला से मह़ब्बत करने वाले

ऐ ग़फ़्लत के शिकन्जे में जकड़े रहने वाले ! ऐ मोहलत के नशे में मदहोश होने वाले ! ऐ अ़ह्द को तोड़ने वाले ! याद कर कि तूने अव्वल ज़माने में किस से अ़ह्द किया था ?...... तेरी अक्सर उ़म्र ह़ीले बहानों में गुज़र गई,...... तुझे नजात की त़रफ़ बुलाया जा रहा है और तू सुस्ती कर रहा है,...... उ़म्र घटने के बा वुजूद येह ग़फ़्लत क्यूं है ? क्या तू मौत के वक़्त गिड़गिड़ा कर आंसू बहाएगा । **ऐ मेरे इस्लामी भाई !** क्या ही अच्छा होता अगर तू अपनी रविश छोड़ देता, तो तेरी कोशिश काम्याब हो जाती, मगर तुझे किस त़रह़ तरग़ीब दिलाई जाए ?

ऐ ताइबीन की सोह़बत से दूर रहने वालो ! सुनो, **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَا مِنۡ غَآئِبَةٍ فِى السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ اِلَّا فِىۡ كِتٰبٍ مُّبِيۡنٍ ۝ (پ۲۰،النمل:۷۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जितने ग़ैब हैं आस्मानों और ज़मीन के सब एक बताने वाली किताब में हैं ।

शुक्र गुज़ार दौलत मन्द :

एक मालदार शख़्स कसरत से शुक्र अदा किया करता था । जब उस की एक मुराद पूरी न हुई तो वोह ना शुक्री करते हुए गुनाहों में पड़ गया । मगर ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की ने'मतें उस से ख़त्म न हुईं और उस की ह़ालत में कोई तब्दीली वाक़ेअ़ न हुई तो उस ने अ़र्ज़ की : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! मेरी फ़रमां बरदारी तो बदल गई मगर ने'मतें दूर न हुईं ?" तो उस ने हातिफ़े ग़ैब से एक आवाज़ सुनी कि "ऐ

www.dawateislami.net

शख़्स ! हमारे नज़्दीक अय्यामे विसाल की बड़ी क़द्रो मन्ज़िलत है, हम ने तेरी ख़ातिर उसे मह़फ़ूज़ रखा जब कि तूने उसे ज़ाएअ़ कर दिया ।''

अश्आ़र

سَأَتْرُكُ مَا بَيْنِي وَبَيْنَكَ وَاقِفًا فَإِنْ عُدْتَ عُدْنَا وَالْوِدَادُ سَلِيمُ

تُوَاصِلُ قَوْمًا لَا وَفَاءَ بِعَهْدِهِمْ وَتَتْرُكُ مِثْلِي وَالْحِفَاظُ قَدِيمُ

तरजमा : (1) हम अपने और तुम्हारे दरमियान क़ाइम तअ़ल्लुक़ को तोड़े देते हैं, अगर तू रुजूअ़ कर लेगा हमारी रह़मत भी तेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह हो जाएगी, मह़ब्बत (फिर से) क़ाइम हो जाएगी ।

(2) तू ऐसी क़ौम से नात़ा जोड़ता है जिन के वा'दे पूरे नहीं होते और मुझ जैसे से तोड़ता है जो हमेशा से अ़ह्द को पूरा करने वाला है।

बेहतरीन हम-सफ़र :

एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से अ़र्ज़ की के ''मुझे कोई ऐसा हम-सफ़र बताइये जिस की सोह़बत की ब-र-कतें लूटते हुए मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हो सकूं । क्यूं कि मैं ने सफ़रे ह़ज का इरादा कर रखा है ।'' तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : ''ऐ भाई ! अगर तुम हम-नशीन चाहते हो तो क़ुरआने पाक की तिलावत को अपना हम-नशीन बना लो और अगर साथी चाहते हो तो मलाएका को अपना साथी बना लो और अगर दोस्त चाहते हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने दोस्तों के दिलों का मालिक है और अगर सफ़र के लिये तोशा चाहते हो तो **अल्लाह** سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰی पर यक़ीन सब से बेहतरीन तोशा है और का'बतुल्लाह को अपने सामने तसव्वुर करते हुए ख़ुशी से उस का त़वाफ़ करो ।''

www.dawateislami.net

आज़्माइश पर आज़्माइश :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा सुलैमी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَنِی ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन यज़ीद स-लमी رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه से कहा कि "मुझे नसीह़त फ़रमाइये।" तो आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने फ़रमाया कि "ऐ अह़मद ! शैत़ान और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की मौजू-दगी में दुन्या आज़्माइश पर आज़्माइश है और ह़िसाबो किताब की वज्ह से आख़िरत भी बहुत बड़ा इम्तिह़ान है, अफ़्सोस उन लोगों पर है जो इन दोनों (या'नी दुन्यावी आज़्माइश और उख़्रवी इम्तिह़ान) में कमज़ोर हैं। लिहाज़ा तू कब तक खेलकूद में मश्ग़ूल रहेगा ह़ालां कि म-लकुल मौत عَلَيۡهِ السَّلَام तेरी ताक में हैं और लम्ह़ा भर के लिये भी तुझ से ग़ाफ़िल नहीं होते जब कि मलाएका तेरी सांसें गिन रहे हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा सुलैमी رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه फ़रमाते हैं कि "येह बात इर्शाद फ़रमा कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन यज़ीद رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ग़श खा कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الۡاَمِين صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ऐ सियाह आ'माल नामे वाले ! आंसूओं से अपना आ'माल नामा धो डाल और तहज्जुद गुज़ारों के पास ह़ाज़िर हो कर दस्त बस्ता अ़र्ज़ कर कि मैं रास्ता भटक कर क़ाफ़िले वालों से कट गया हूं। येह रन्जो अलम का मक़ाम है, कब तक अपने आंसूओं को रोकोगे, येह सोज़ो रिक़्क़त की मजलिस और रुजूअ़ का वक़्त है।

इस्लामी भाइयो !

आगे बढ़ो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अह़कामात को समझो,

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ وَاُفَوِّضُ اَمْرِیْۤ اِلَى اللّٰهِؕ اِنَّ اللّٰهَ بَصِیْرٌۢ بِالْعِبَادِ۝ (پ۲۴، المؤمن:۴۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो जल्द वोह वक़्त आता है कि जो मैं तुम से कह रहा हूं इसे याद करोगे और मैं अपने काम **अल्लाह** को सोंपता हूं बेशक **अल्लाह** बन्दों को देखता है।

अश्आ़र

مَا الذَّنْبُ لِیْ فِیْمَا مَضٰی سَالِفًا — اَلذَّنْبُ لِلدَّهْرِ وَسُوْءِ الْقَضَا

فَامْنُنْ وَجُدْ بِالصَّفْحِ عَنْ مُذْنِبٍ — مُعْتَرِفٍ بِالذَّنْبِ فِیْمَا مَضٰی

قَدْ ظَلَّ مِنْ خَوْفِكَ فِیْ حَیْرَةٍ — فِیْ قَلْبِهٖ مِنْكَ لَهِیْبُ الْفَضَا

اِنْ كَانَ لِیْ ذَنْبٌ فَلِیْ حُرْمَةٌ — تُوْجِبُ لِیْ مِنْكَ جَمِیْلَ الرِّضَا

तरजमा : (1) अय्यामे गुज़श्ता में मेरा कोई गुनाह नहीं येह सब (ह़ालाते) ज़माना की कोताही और सूए क़ज़ा है।

(2) या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! तू अपना फ़ज़्ल फ़रमा और गुनाहों को मिटा कर इस गुनाहगार को सुथरा कर दे जो पिछले तमाम गुनाहों का इक़रार करता है।

(3) येह बन्दा हमेशा तेरे ख़ौफ़ (के तसव्वुर) से आ़लमे ह़ैरत में है, (और) इस के दिल की सारी फ़ज़ा तेरी ख़शिय्यत से शो'लाज़न है।

(4) अगर्चे मैं कुसूर वार हूं लेकिन (ईमान की वज्ह से) मेरी हुरमत भी तो है जो तेरी ज़ात से बेहतरीन रिज़ा की त़लब गार है।

एक औ़रत की नसीह़त :

ह़ज़रते सय्यिदुना अस्मई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि ''मैं

www.dawateislami.net

एक बयाबान से गुज़र रहा था कि अचानक मुझे एक चांद की त़रह़ चमक्ते हुए चेहरे वाली अ़ौरत नज़र आई। मैं उस के क़रीब गया और सलाम किया तो उस ने अच्छे अन्दाज़ में सलाम का जवाब दिया मैं ने कहा : "ऐ लड़की ! मेरा तन मन तेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह है।" वोह फ़ौरन बोली : "लेकिन मैं तेरी त़रफ़ बिल्कुल मु-तवज्जेह नहीं, अगर तुझे मेरा ह़ुस्न भा गया है तो पीछे देखो तुम्हें मुझ से ज़ियादा ह़सीन अ़ौरत नज़र आएगी।" जब मैं ने पीछे मुड़ कर देखा तो मुझे कोई नज़र न आया। वोह मुझे डांट कर बोली : "ऐ झूटे ! मुझ से दूर हो जा, जब मैं ने दूर से तुझे देखा था तो समझी थी कि तू कोई आ़रिफ़ है और जब तूने कलाम किया तो मैं समझी कि तू कोई आ़शिक़ है और अब पता चला कि तू न आ़रिफ़ है न ही आ़शिक़ है कि तू मेरी मह़ब्बत का दा'वा भी करता है और मेरी कुर्बत पाए बिग़ैर मेरे इलावा किसी की त़रफ़ देखता भी है।" फिर वोह मुझ से दूर चली गई और नज़र भर के आस्मान की त़रफ़ देखने के बा'द बुलन्द आवाज़ से कहने लगी कि "आह ! आह ! या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! विसाल की चाहत ने मुझे लोगों से ग़ैर मानूस कर दिया, अफ़्सोस ! जुदाई के ख़ौफ़ ने मुझे बे क़रार कर दिया, आह ! विसाल से पहले जुदाई पर अफ़्सोस !" फिर वोह येह अश्आ़र पढ़ने लगी :

حُبِّیْ فِیْ ذِیْ الْقِفَارِ شَرَّدَنِیْ ... آهٖ مِنَ الْحُبِّ ثُمَّ آهٖ

خَوْفُ فِرَاقِ الْحَبِیْبِ اَزْعَجَنِیْ ... آهٖ مِنَ الْخَوْفِ ثُمَّ آهٖ

شَبَّهَ حَالِیْ بِتَاجِرٍ غَرِقٍ ... نَجَا مِنَ الْبَحْرِ ثُمَّ تَاهٖ

www.dawateislami.net

तरजमा : (1) मुझे बयाबानों के मालिक की मह़ब्बत ने बिखेर कर रख दिया, आह ! मह़ब्बत में फिर आह !

(2) मुझे मह़बूब की जुदाई के ख़ौफ़ ने बेचैन कर रखा है, इस ख़ौफ़ से आह ! फिर आह ।

(3) मेरा ह़ाल उस डूबने वाले ताजिर की त़रह़ है जो समुन्दर (की तकालीफ़) से बच तो गया फिर भी ह़ैरानो परेशान रहा ।

एक दीवाना :

ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि "मैं ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی के साथ लुबनान के एक पहाड़ पर से गुज़र रहा था कि अचानक आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने मुझ से फ़रमाया कि "ऐ सालिम ! मेरे लौटने तक इसी जगह खड़े रहना ।" फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه तीन दिन तक मुझ से जुदा रहे । जब मुझे भूक लगती तो मैं झाड़ियां और पौदे खा लेता और तालाब का पानी पी लेता । जब तीन दिन गुज़र गए तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मेरे पास तशरीफ़ लाए । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का रंग बदला हुवा था और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه पर बेखुदी की कैफ़िय्यत त़ारी थी मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबुल फ़ैज़ ! क्या दरिन्दों ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को रोक लिया था ?" फ़रमाया : "मुझ से इन्सानी ख़ौफ़ की बात न करो, मैं इस पहाड़ के एक ग़ार में दाख़िल हुवा तो मैं ने उस में एक शख़्स को देखा उस के सर और दाढ़ी के बाल सफ़ेद और परागन्दा थे । ऐसा लग रहा था जैसे वोह क़ब्र से निकल कर आया हो । वोह नमाज़ पढ़ रहा था । मैं ने उसे सलाम किया तो

www.dawateislami.net

उस ने मुझे सलाम का जवाब दिया और कहा कि "नमाज़ पढ़ लो।" फिर वोह नमाज़ के लिये खड़ा हो गया और अ़स्र की नमाज़ अदा करने तक रुकूअ़ व सुजूद करता रहा । फिर मेह़राब की जानिब एक पथ्थर से टेक लगा कर बैठ गया और मुझ से कोई बात न की तो मैं ने कलाम की इब्तिदा करते हुए कहा कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए मुझे कोई नसीह़त फ़रमाइये जिस से मैं नफ़्अ़ उठा सकूं और मेरे लिये दुआ़ कीजिये।" तो उन्हों ने मुझ से फ़रमाया कि "ऐ बेटा ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिसे अपने कु़र्ब से सरफ़राज़ फ़रमाता है उसे चार ख़स्लतें अ़ता फ़रमाता है (1) ख़ानदान के बिग़ैर इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमाता है, (2) बिग़ैर सीखे इ़ल्म अ़ता फ़रमाता है, (3) मालदारी के बिग़ैर ग़ना अ़ता फ़रमाता है, (4) और साथियों के बिग़ैर उन्स अ़ता फ़रमाता है।" फिर उन्हों ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और तीन दिन तक बेहोश रहे। मैं समझा कि इन का इन्तिक़ाल हो चुका है फिर जब उन्हें इफ़ाक़ा हुवा तो खड़े हो कर क़रीब ही एक चश्मे से वुज़ू किया और अपनी फ़ौत शुदा नमाज़ों के बारे में पूछा तो मैं ने उन्हें नमाज़ों की ता'दाद बताई तो उन्हों ने वोह नमाज़ें क़ज़ा कीं फिर मुझ से फ़रमाया :

اِنَّ ذِكْرَ الْحَبِيْبِ هَيَّجَ قَلْبِىْ ۔۔۔ ثُمَّ حُبُّ الْحَبِيْبِ اَذْهَلَ عَقْلِىْ

तरजमा : मह़बूब की याद ने मेरे दिल को बे क़रार कर दिया फिर (उस) मह़बूब की मह़ब्बत ने मेरी अ़क़्ल को ज़ाइल कर दिया।"

फिर फ़रमाने लगे : "मख़्लूक़ की मुलाक़ात से मुझे वह़शत होती है और मैं रब्बुल आ़-लमीन عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से उन्स रखता हूं,

www.dawateislami.net

अब तुम सलाम कर के मुझ से रुख़्सत हो जाओ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए मैं मज़ीद नसीह़त की उम्मीद पर तीन दिन तक आप के पास ठहरा रहा।" तो उन्हों ने इर्शाद फ़रमाया कि "अपने मौला عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा किसी से मह़ब्बत न करो और अपनी मह़ब्बत का बदला न मांगो क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करने वाले आ़बिदों के सरताज और ज़ाहिदों के लिये निशाने मन्ज़िल हैं और येही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बर्गुज़ीदा और मुक़र्रब बन्दे हैं।" इस के बा'द वोह एक चीख़ मार कर गिर पड़े मैं ने उन्हें हिला कर देखा तो उन का इन्तिक़ाल हो चुका था थोड़ी ही देर बा'द पहाड़ से आ़बिदीन की एक जमाअ़त उतरी, उन्हें गुस्ल दिया, और कफ़न पहना कर जनाज़ा अदा करने के बा'द उन्हें दफ़्न कर दिया। मैं ने उन से पूछा कि "इस बुज़ुर्ग का नाम क्या है ?" तो उन्हों ने बताया कि "इन का नाम ह़ज़रते शैबानुल मसाब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि जब मैं ने अहले शाम से उन के बारे में पूछा तो उन्हों ने मुझे बताया कि "हां वोह एक दीवाना था जो बच्चों की ईज़ा की वज्ह से चला गया।" मैं ने पूछा : "क्या तुम्हें उन की कोई बात याद है ?" तो उन्हों ने कहा : "हां ! जब वोह बे क़रार व बेचैन होते तो कहते कि "अगर मैं तेरी ख़ातिर दीवाना न बनूं तो किस की ख़ातिर बनूं।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।** ﴿اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم﴾

www.dawateislami.net

मुहि़ब्बीन की अ़लामात

मेरे इस्लामी भाई !

वोह लोग कितने खुश क़िस्मत हैं जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने कु़र्ब की ने'मत अ़त़ा फ़रमाई है। उन की खूबी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है। **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें वसाविस के ख़त़रात से मह़फ़ूज़ फ़रमा दिया और उन के दिलों की सरह़दों को अपनी ह़िमायत के मुह़ाफ़िज़ों के ज़रीए नफ़्सानी ख़्वाहिशात के गु़बार से मह़फ़ूज़ रखा। उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म को क़बूल किया और उसे सर आंखों पर रख कर उस की बजा आ-वरी के लिये खड़े हो गए और क़ब्र की तारीकी और सफ़रे आख़िरत के लिये आ'माल का तोशा तय्यार किया।

ऐ बेकार शख़्स ! क्या तारीक मैदान में ग़ाफ़िल रहने वालों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतें मिल सकती हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने नेक बन्दों को अपनी रिज़ा की ख़ल्अ़त अ़त़ा फ़रमाई और उन से फ़रमाया : "बा सलीक़ा दोस्तों को खुश आ-मदीद।"

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاس

(پ۴،آل عمران:۱۱۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुई।

चन्द अश्आ़र

اَيَا نَفْسُ تُوْبِيْ قَبْلَ اَنْ يَنْكَشِفَ الْغِطَا ... وَاُدْعٰى اِلٰى يَوْمِ النُّشُوْرِ وَاُجْزَعُ

فَلِلّٰهِ عَبْدٌ خَائِفٌ مِّنْ ذُنُوْبِهٖ ... تَكَادُ حُشَاهُ مِنْ اَسًى تَتَقَطَّعُ

اِذَا جَنَّهُ اللَّيْلُ الْبَهِيْمُ رَأَيْتَهُ ... وَقَدْ قَامَ فِيْ مِحْرَابِهٖ يَتَضَرَّعُ

www.dawateislami.net

يُنَادِیْ بِذُلٍّ یَا اِلٰهِیْ وَسَیِّدِیْ ۔۔۔ وَمَنْ یَّهْرُبُ الْعَاصِیْ اِلَیْهِ وَیَفْزَعُ

قَصَدْتُکَ یَاسُؤْلِیْ وَمَالِیْ مُشَفَّعٌ ۔۔۔ سِوٰی حُسْنِ ظَنِّیْ حِیْنَ اَرْجُوْ وَاَطْمَعُ

فَجُدْ لِیْ بِعَفْوٍ وَامْحُ ذَنْبِیْ وَنَجِّنِیْ ۔۔۔ مِنَ النَّارِ یَامَوْلٰی یَضُرُّ وَیَنْفَعُ

بِهٰذَا یُنَالُ الْمُلْکُ وَالْفَوْزُ فِیْ غَدٍ ۔۔۔ وَیُجْزٰی نَعِیْمًا دَائِمًا لَّیْسَ یُقْطَعُ

तरजमा : (1) ऐ नफ़्स ! तौबा कर ले क़ब्ल इस के कि राज़ फ़ाश हो जाए और मह़शर के दिन बुला कर घबराहट में डाल दिया जाए।

(2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वोह बन्दा जो अपने गुनाहों पर शरमिन्दा व ख़ाइफ़ है क़रीब है कि ग़म से उस का कलेजा फट जाए।

(3) जब उसे अंधेरी रात छुपा लेती है तो तू उसे देखेगा कि वोह अपनी इ़बादत गाह में खड़ा गिड़गिड़ा रहा होगा।

(4) आ़जिज़ी से अ़र्ज़ करता होगा : "ऐ मेरे ख़ुदा, मेरे मालिक ! येह गुनहगार किस की बारगाह में जाए और किस से फ़रियाद करे ?"

(5) ऐ मेरे मत़लूब ! तू ही मेरा मक़्सूद है और जिस वक़्त मैं उम्मीद व त़मअ़ करता हूं तो सिवाए हुस्ने ज़न के अपनी शफ़ाअ़त के लिये कोई दूसरा अ़मल नहीं पाता।

(6) ऐ मौला ! तू ही नफ़्अ़ व नुक़्सान का मालिक है, अ़फ़्व कर और मेरे गुनाहों को मिटा दे, और मुझे आग (दोज़ख़) से बचा ले।

(7) इसी रह़मत के सबब हमेशा की बादशाही और क़ियामत में काम्याबी मिल सकती है और कभी ख़त्म न होने वाली दाइमी ने'मतें दी जाएंगी।

मुनाजाते ह़रम :

अ़ल्लामा फ़ज़्ल जौहरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एह़राम बांध कर ह़-रमे मक्का में ख़ानए का'बा की त़रफ़ रुख़ कर के खड़े हुए और

www.dawateislami.net

बा आवाज़े बुलन्द कहने लगे : "ऐ मुरा-क़बे और मा'रिफ़त की मौत से मरने वालो ! ऐ उन्स व मह़ब्बत की तलवारों से शहीद होने वालो ! ऐ ख़ौफ़ व इश्तियाक़ की आग में जलने वालो ! ऐ मुशा-हदे और मुलाक़ात के समुन्दर में ग़र्क़ रहने वालो ! येह मह़बूब का दियार है, मह़ब्बत करने वाले कहां हैं ? यहां क़ुर्बत के असरार हैं, मगर इस के मुश्ताक़ कहां हैं ? येह दियारे मह़ब्बत और उस की बहार के निशान हैं, इस का क़स्द करने वाले कहां हैं ? येह इल्तिजा की घड़ी और आंसू बहाने का वक़्त है, मगर रोने वाले कहां हैं ?" फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक चीख़ मार कर बेहोश हो गए फिर जब कुछ देर बा'द इफ़ाक़ा हुवा तो कहने लगे :

مُـذْ تَبَـدّٰی لِـنَـاظِـرِیْ   بَـلْبَـلَ الشَّـوْقُ خَـاطِـرِیْ

حَـاضِـرٌ غَيْـرُ غَـائِـبٍ   سَـاكِـنٌ فِـیْ الضَّـمَـائِـرِ

هُـوَ كَـنْـزِیْ الَّـذِیْ بَـدَا   فِـیْ الـرُّسُـوْمِ الـدَّوَائِـرِ

तरजमा : (1) जब (ख़ानए का'बा) मेरी नज़रों के सामने आ गया तो मेरे दिल में शौक़ भड़क उठा।

(2) वोह (शौक़) मौजूद है, पोशीदा नहीं है (क्यूं कि) वोह तो दिलों में बसा हुवा है।

(3) येह मेरा वोह ख़ज़ाना है जो तेज़ी से आने वाली गरदिशों में (मुझ पर) ज़ाहिर हुवा।

रावी कहते हैं कि मैं ने उन के क़रीब आ कर अ़र्ज़ किया कि "हुज़ूर ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करने वालों की अ़लामात क्या हैं ?" फ़रमाया : "मुहि़ब्बीन को रात की तारीकी में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ख़ास नशात़ ह़ासिल होता है, उन के और

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दरमियान एक ख़ुशी होती है, अपने मा'बूद का उन्स उन्हें आराम की लज़्ज़त से दूर कर देता है और रब عَزَّوَجَلَّ की महब्बत उन्हें पूरी काएनात से जुदा कर देती है, वोह रब عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात करने पर नींद को तरजीह़ नहीं देते और न ही उस के कलाम पर किसी के कलाम को अहम्मिय्यत देते हैं, जो उस की मा'रिफ़त रखता है वोही उसे पहचान सकता है, जो उस की लज़्ज़त पाता है वोही उस की लज़्ज़त पा सकता है और उस का दोस्त वोही बनता है जो उस से राज़ी रहता है।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** ﴿اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

पाक है वोह ज़ात जिस ने मख़्लूक़ात पर फ़ना होना लाज़िम कर दिया है लिहाज़ा उस के नज़्दीक बादशाह और ग़ुलाम दोनों बराबर हैं। वोह बाक़ी रहने वाला और क़दीम है या'नी काएनात की पैदाइश से पहले भी अकेला ही था उस ने काएनात में जो चाहा वोही किया हर एक ख़्वाह वोह नेक हो या बद, गुमराह हो हिदायत याफ़्ता, उस की बारगाह का मोह़ताज है,

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

يَسْـَٔلُـهٗ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِؕ كُلَّ یَوْمٍ هُوَ فِیْ شَاْنٍ۝ (پ۲۷، الرحمٰن:۲۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उसी के मंगता हैं जितने आस्मानों और ज़मीन में हैं उसे हर दिन एक काम है।

वोह बड़ा जवाद है हर एक को उसी की अ़त़ा ने ढांप रखा है (तो बदकार कहां भागेगा), गुमशुदा की तलाफ़ी कौन करेगा ?

www.dawateislami.net

क़ज़ा कितनी बार ज़ामिन से झगड़ चुकी और कितने धुत्कारे हुए लोगों को उस की बारगाह में ह़ाज़िरी की इजाज़त मिली और गुनहगार लोग, बन्दों की क़िस्मत से किस क़दर ग़ाफ़िल हैं ह़ालां कि उन में से कुछ बद बख़्त हैं और कुछ नेक बख़्त।

अश्आर

اِحدٰی وَسِتُّوْنَ لَوْ مَرَّتْ عَلٰی حَجَرٍ   لَکَانَ مِنْ حُکْمِھَا اَنْ یَّخْلُقَ الْحَجَرُ

تُؤَمِّلُ النَّفْسُ آمَالًا لِتَبْلُغَھَا   کَاَنَّھَا لَاتَرٰی مَا یَصْنَعُ الْقَدَرُ

तरजमा : (1) किसी पथ्थर पर भी अगर इक्सठ साल गुज़र जाएं तो वोह पथ्थर भी बोसीदा कहलाएगा।

(2) अपनी उम्मीदों तक पहुंचने के लिये नफ़्स बड़ी आरज़ूएं कर रहा है ह़ालां कि नहीं जानता कि तक़्दीर क्या करने वाली है।

दुआ़ की ब-र-कत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ जैली رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अ़ब्दुल ह़मीद ग़ज़ाइरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो मैं ने उन्हें सब से ज़ियादा इ़बादत गुज़ार और कसरत से मुजा-हदा करने वाला पाया। वोह दिन रात नमाज़ अदा करते रहते थे लिहाज़ा मैं उन के नमाज़ से फ़ारिग़ होने का इन्तिज़ार करने लगा मगर मेरी उन से मुलाक़ात न हो सकी तो मैं ने उन से कहा कि "हम अपने मां बाप, बीवी बच्चों और अपने शहर को छोड़ कर आप के पास आए हैं लिहाज़ा आप थोड़ी देर के लिये नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़ता कर्दा इ़ल्म सिखाएं।" तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "मुझे एक सालेह़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना सरी

www.dawateislami.net

स-क़ती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की दुआ है, मैं उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और दरवाज़ा खट-खटाया तो दरवाज़ा खोलने से पहले मैं ने उन्हें मुनाजात करते हुए सुना कि ''या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! जो शख़्स मुझे तेरी बारगाह में मुनाजात करने से ग़ाफ़िल करने के लिये मेरे पास आया है तू उसे अपनी मह़ब्बत में मश्ग़ूल कर के मुझ से ग़ाफ़िल कर दे।'' तो जब मैं ह़ज़रते सय्यिदुना सरी स-क़ती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह से वापस लौटा तो नमाज़ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहना मेरा मह़बूब मश्ग़ला बन गया इस लिये मैं उस नेक बुज़ुर्ग की दुआ की ब-र-कत से इन कामों के इ़लावा किसी चीज़ के लिये फ़ारिग़ नहीं होता।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''मैं ने उन की बातों में ग़ौर किया तो मुझे उन की बातें ग़मज़दा दिल और आ़जिज़ करने वाली बे क़रारी से निकलती हुई नज़र आई और वोह मुसल्सल आंसू बहा रहे थे।''

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم﴿

पाक है वोह ज़ात जिस ने अपनी ह़िक्मत से अरवाह़ की लत़ाफ़त और अज्साम की कसाफ़त को जम्अ़ फ़रमाया, दिन और रात को ज़माने के लिये बाज़ू बनाया जो बिग़ैर बालों और परों के फ़ना के लिये उड़ रहे हैं और मुह़िब्बीन की अरवाह़ को जामे मह़ब्बत पिलाया, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के लिये उस की ख़ूबी है जिस ने उसे हर राह़त से शीरीं बनाया, उन्स व मह़ब्बत की मजलिस में उन के लिये इ़बादत का सुरूर पैदा किया। लिहाज़ा उन्हों ने

www.dawateislami.net

पियालों के बजाए इसे मटकों से पिया, तारीकी के गुलिस्तान को तहज्जुद के फूलों और कलियों से संवारा और हर सुब्ह की इब्तिदा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से की, लिहाज़ा वोह सुब्हो शाम के शरबत और पाकीज़ा ख़ुश्बू वाले जाम नोश करते हैं, आज़्माइश के क़ालिब में उन के दिल सब्र की ज़बान से कहते हैं : "उस (की महब्बत) के सिवा कोई चारा नहीं ।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अपनी रिज़ा की ख़ल्अ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया और उन्हे शौक़ व फ़रहत की मजलिस में बिठाया, उन्हों ने काएनात पर नज़र की तो उन्हें उस के इलावा कुछ नज़र न आया, उन की महब्बत में वारफ़्तगी की वज्ह से उन पर कोई इल्ज़ाम नहीं, नूरे मा'रिफ़त ने उन की आंखों को ढांप रखा है उन में से आ़रिफ़ीन ज़बाने तौहीद से पुकार कर कहते हैं :

يَا اَعَزَّ النَّاسِ عِنْدِیْ　　كَيْفَ خُنْتَ عَهْدِیْ

سَوْفَ اَشْكُوْلَكَ حَالِیْ　　فَعَسٰى شِكْوَایْ تُجْدِیْ

اَنْتَ مَوْلَایْ تَرَانِیْ　　وَدُمُوْعِیْ فَوْقَ خَدِّیْ

اَقْطَعُ اللَّيْلَ اُقَاسِیْ　　مَا اُقَاسِیْ فِيْهِ وَحْدِیْ

तरजमा : (1) ऐ लोगों में मुअ़ज़्ज़ज़ बनने वाले ! मेरी बारगाह में तेरी क्या ह़ालत है कि तूने मुझ से किये गए अ़ह्द में ख़ियानत की ।

(2) (बन्दा मुनाजात करता है) मैं अ़न्क़रीब तेरी बारगाह में अपनी ह़ालत की फ़रियाद करूंगा उम्मीद है मेरी फ़रियाद रसी होगी ।

(3) तू मेरा मौला عَزَّوَجَلَّ है, तू मेरी इस ह़ालत को भी देख रहा है कि मेरे आंसू मेरे रुख़्सारों पर रवां हैं ।

(4) मैं रात इबादत की मशक़्क़त उठाते हुए गुज़ारता हूं और मैं इस मशक़्क़त में मुन्फ़रिद नहीं हूं ।

www.dawateislami.net

साहि़ले समुन्दर पर इ़बादत करने वाला :

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं कि "एक मर्तबा दौराने सफ़र मुझे शदीद प्यास लगी तो मैं पानी की तलाश में साहि़ल की त़रफ़ चल दिया। अचानक मैं ने एक शख़्स को देखा जिस ने ह़या और नेकोकारी की चादर को अपना लिबास बना रखा था और गिर्या व ज़ारी और आहो फ़ुग़ां की क़मीस ज़ैबे तन कर रखी थी। वोह साहि़ले समुन्दर पर खड़ा नमाज़ अदा कर रहा था। जब उस ने सलाम फेरा तो मैं उस के क़रीब गया और उसे सलाम किया तो उस ने कहा कि "ऐ ज़ुन्नून ! तुम पर भी सलामती हो।" मैं ने पूछा कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, आप ने मुझे कैसे पहचाना ?" उस ने जवाब दिया कि "मेरे दिल से नूरे मा'रिफ़त की शुआ़अ़ तुम्हारे दिल के नूरे मह़ब्बत की सत़्ह़ पर ज़ाहिर हुई तो मेरी रूह़ ने असरार के ह़क़ाइक़ के ज़रीए तुम्हारी रूह़ को पहचान लिया और मेरा बात़िन **अल्लाह** अ़ज़ीज़ व जब्बार عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत में तुम्हारे बात़िन से उल्फ़त करने लगा।"

मैं ने पूछा कि "मैं आप को तन्हा देख रहा हूं।" जवाब दिया कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा किसी से उन्स रखना दर अस्ल वह़शत है और इस के इ़लावा किसी पर भरोसा करना ज़िल्लत का बाइ़स है।" मैं ने पूछा : "क्या आप मौजों की इस तुग़यानी और तलातुम को नहीं देखते ?" फ़रमाया : "क्या तुम्हारी प्यास इस से ज़ियादा नहीं ?" मैं ने कहा : "हां ! तो उन्हों ने अपने क़रीब ही एक जगह पर पानी की मौजू-दगी का बताया।" फिर जब मैं पानी पी कर लौटा तो मैं ने उन्हें बुलन्द आवाज़ से रोते हुए पाया मैं ने कहा

www.dawateislami.net

कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए आप को किस बात ने रुलाया ?"

फ़रमाया कि "ऐ अबुल फ़ैज़ ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ बन्दे ऐसे हैं जिन्हें उस ने अपनी मह़ब्बत का ऐसा जाम पिलाया है जिस ने उन से आराम की लज़्ज़त छीन ली है।" मैं ने कहा कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करने वालों की अ़लामात बताइये।" फ़रमाया : "येह वोह लोग हैं जो इ़बादत में मुख़्लिस हुए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें विलायत के साथ ख़ास फ़रमा दिया और येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते रहे तो उस ने उन पर दिलों का नूर खोल दिया।" मैं ने पूछा : "मह़ब्बत की अ़लामत क्या है ?" फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करने वाला ह़ैरत को क़रार आने तक ग़म के समुन्दर में ग़र्क़ रहता है।" मैं ने पूछा कि "मा'रिफ़त की अ़लामत क्या है ?" फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का आ़रिफ़ मा'रिफ़त की मौजू-दगी में (अपनी ज़बान से) जन्नत का त़लब गार नहीं होता और न ही जहन्नम से पनाह मांगता है वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त ह़ासिल कर लेता है तो उस के इ़लावा किसी को बड़ा नहीं समझता।" फिर उन्हों ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और उन की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। मैं ने उन्हें उसी जगह दफ़्ना दिया जहां उन का इन्तिक़ाल हुवा था फिर मैं वापस लौट आया।

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। ﴿اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم﴾

www.dawateislami.net

गुनाहों के इज़ाले का त़रीक़ा

मेरे प्यारे इस्लामी भाई !

गुनाहों की मैल को आंसूओं का पानी ही धो सकता है,...... गुनाहों की दलदल से वोही निकल सकता है जो घड़ी भर के लिये अपने दिल को मु-तवज्जेह कर के देख ले शायद वोह नसीह़त के असर से लौट आए,...... मैं कब तक तेरे सामने नसीह़त के सह़ीफ़े पढ़ूं ह़ालां कि मैं तुझे इस पर कान धरने वाला नहीं समझता,...... मगर गुनाहों का दिन कितना मन्ह़ूस है और फ़रमां बरदारी का दिन कितना पसन्दीदा है और हर सआ़दत की घड़ी में तौबा करने वालों की रफ़ाक़त त़लब कर अपने मह़बूब रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये नेकियों के ताज़ा पैग़ाम भेज और इन के मक़्बूल होने की तमन्ना कर क्यूं कि तक़्वा का चराग़ ही रास्ते की राहनुमाई करता है,...... कितने लोग ग़फ़्लत के अंधेरों में भटक चुके हैं और तेरा ह़ाल कितना बुरा है, लिहाज़ा अपनी मुर्दा दिली, बसीरत के अन्धे-पन और रुकावटों की कसरत पर रो...... जब ज़माने, बुढ़ापे और कमज़ोरी की नसीह़त तुझ पर असर अन्दाज़ नहीं होती तो तू क्या करेगा ?

मेरे इस्लामी भाइयो! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जल्द अज़ जल्द तौबा कर लो और ह़िसाब के दिन से पहले ही ख़ुद को सीधे रास्ते पर ले आओ ।

चन्द अश्आ़र

مَا اعْتِذَارِیْ وَاَمْرَ رَبِّیْ عَصَیْتُ ۔۔۔ حِیْنَ تُبْدٰی صَحَائِفِیْ مَا اَتَیْتُ

مَا اعْتِذَارِیْ اِذَا وَقَفْتُ ذَلِیْلًا ۔۔۔ قَدْ نَھَانِیْ مَا اَرَانِیْ انْتَھَیْتُ

یَا غَنِیًّا عَنِ الْعِبَادِ جَمِیْعًا ۔۔۔ وَعَلِیْمًا بِکُلِّ مَا قَدْ سَعَیْتُ

www.dawateislami.net

لَيْسَ لِىْ حُجَّةٌ وَلَا لِىْ عُذْرٌ　　　فَاعْفُ عَنْ زَلَّتِىْ وَمَا قَدْ جَنَيْتُ

तरजमा : (1) मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की ना फ़रमानी कर चुका, जब नामए आ'माल मेरे करतूतों को ज़ाहिर कर देगा उस वक़्त मेरे पास कोई उ़ज़्र न होगा।

(2) मेरे पास कोई उ़ज़्र न होगा जब मैं ज़िल्लतो रुस्वाई के आ़लम में खड़ा होउंगा बेशक उस (रब عَزَّوَجَلَّ) ने मुझे इन कामों से मन्अ़ किया था (मगर) मैं बाज़ न आया।

(3) ऐ तमाम बन्दों से बे नियाज़ ! और मेरे तमाम कामों का इ़ल्म रखने वाले।

(4) मेरे पास न तो कोई हुज्जत है और न उ़ज़्र, तू मेरी लग़्ज़िशों और गुनाहों से दर गुज़र फ़रमा।

मुआ़फ़ी के त़लब गार :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन यह़्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते है कि ''मैं ने कुछ अ़र्सा शहर अ़स्क़लान के एक ऐसे बुज़ुर्ग की सोह़बत में गुज़ारा जो बहुत ज़ियादा रोते, इ़बादते इलाही عَزَّوَجَلَّ कसरत से बजा लाते, कामिल अदब करने वाले थे, रात में तहज्जुद और दिन में नेक आ'माल में मश्ग़ूल रहते। मैं उन्हें अक्सर दुआ़ओं में (इ़बादत में कोताही पर) उ़ज़्र पेश करते और इस्तिग़्फ़ार करते सुनता था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक दिन लकाम पहाड़ के एक ग़ार में दाख़िल हुए। मैं ने देखा कि शाम को उस पहाड़ के बाशिन्दे और ख़ानक़ाहों से मु-तअ़ल्लिक़ लोग उन के पास आए और उन से दुआ़एं करवाते रहे। सुब्ह़ के वक़्त जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस

www.dawateislami.net

ग़ार से वापसी का इरादा किया तो उन लोगों में से एक शख़्स ने खड़े हो कर अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! मुझे कोई नसीह़त फ़रमाइये ।" फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उ़ज़्र पेश किया कर क्यूं कि अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरा उ़ज़्र क़बूल फ़रमा लिया तो तू मग़्फ़िरत की काम्याबी ह़ासिल करेगा और तुझे जन्नत के आ'ला द-रजात की त़रफ़ ले जाएगा जहां तू अपनी ख़्वाहिशात और आरज़ूओं के मुत़ाबिक़ रह सकेगा ।" फिर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रोने लगे और एक चीख़ मार कर वहां से निकल आए । इस के बा'द आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कुछ दिन ज़िन्दा रहे फिर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इन्तिक़ाल हो गया । एक रात मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो पूछा कि "مَافَعَلَ اللّٰہُ بِکَ" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ?" तो आप ने फ़रमाया कि "मेरा मह़बूब عَزَّوَجَلَّ इस बात से पाक है कि कोई गुनहगार उस की बारगाह में उ़ज़्र पेश कर के मग़्फ़िरत चाहे और वोह उसे ना मुराद लौटा दे और उस का उ़ज़्र क़बूल न फ़रमाए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरा उ़ज़्र क़बूल फ़रमा लिया और मेरे गुनाह बख़्श दिये और लकाम पहाड़ वालों के ह़क़ में मेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा ली ।"

(**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم)

अश्आ़र

لَاشَیْئَ اَعْظَمُ مِنْ ذَنْبِیْ سِوٰی اَمَلِیْ　　فِیْ حُسْنِ عَفْوِکَ عَنْ جُرْمِیْ وَعَنْ عَمَلِیْ

فَاِنْ یَّکُنْ ذَا وَذَا فَالذَّنْبُ قَدْعَظُمَا　　فَاَنْتَ اَعْظَمُ مِنْ ذَنْبِیْ وَمِنْ زُلَلِیْ

www.dawateislami.net

तरजमा : (1) मेरे गुनाह बहुत बड़े हैं, मगर मेरी येह उम्मीद इस से भी बढ़ कर है कि तू मेरे गुनाह और आ'माले सियाह के मुआ़-मले में अपने हुस्ने अ़फ़्व से काम लेगा।

(2) ऐ (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) तेरी शान अर-फ़ओ़ आ'ला है और मेरा गुनाह अगर्चे बड़ा सही लेकिन तेरी बारगाह तो मेरे गुनाहों और ख़ताओं से बहुत ही आ'ला और अ़ज़ीम है।

नमाज़ का त़रीक़ा :

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन आ़सिम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सामने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की इस बात का तज़्किरा हुवा कि ह़ातिमे असम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه लोगों से ज़ोह्द व इख़्लास के बारे में गुफ़्त-गू करते हैं तो ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने साथियों से फ़रमाया कि "हमें उन के पास ले चलो ताकि हम उन से उन की कैफ़िय्यते नमाज़ के बारे में सुवाल करें अगर वोह इसे कामिल त़रीक़े से अदा करते हैं तो ठीक है वरना हम उन्हें ज़ोह्द व इख़्लास के बारे में गुफ़्त-गू करने से मन्अ़ कर देंगे।"

जब येह लोग ह़ज़रते ह़ातिमे असम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास पहुंचे तो ह़ज़रते यूसुफ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने कहा : "ऐ ह़ातिम ! हम आप से आप की नमाज़ के बारे में पूछने के लिये आए हैं।" तो ह़ातिमे असम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें मुआ़फ़ फ़रमाए किस चीज़ के बारे में पूछने आए हो, नमाज़ की मा'रिफ़त के बारे में या इस की अदाएगी के त़रीक़े के बारे में ?"

www.dawateislami.net

तो ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने साथियों की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और फ़रमाया : "ह़ातिम ने हमारी मा'लूमात में इतना इज़ाफ़ा कर दिया कि हम इस बारे में सोच भी नहीं सकते थे ।"

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कहा कि "आप हमें सब से पहले नमाज़ की अदाएगी के बारे में बताएं ।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "हुक्मे इलाही की बजा आ-वरी करते हुए सवाब की निय्यत के साथ खड़े हो जाओ और सुन्नत त़रीक़े से नमाज़ की इब्तिदा करो और ता'ज़ीम के साथ तक्बीर कहो और तरतील के साथ क़िराअत करो और ख़ुशूअ़ के साथ रुकूअ़ और ख़ुज़ूअ़ के साथ सज्दा अदा करो और सुकून के साथ सज्दे से सर उठाओ और इख़्लास के साथ तशह्हुद पढ़ो और रह़मत के साथ सलाम कहो ।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कहा : "येह तो अदाएगी का त़रीक़ा था नमाज़ की मा'रिफ़त क्या है ?" फ़रमाया : "जब तुम नमाज़ पढ़ने लगो तो तुम जान लो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी त़रफ़ मु-तवज्जेह है लिहाज़ा तुम भी उस की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो जाओ जिस की तवज्जोह तुम्हारी त़रफ़ है और दिल की गहराई से येह बात जान लो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे क़रीब और तुम पर क़ादिर है फिर जब तुम रुकूअ़ करो तो येह उम्मीद न रखो कि सर उठा भी सकोगे और जब रुकूअ़ से सर उठा लो तो सज्दा कर सकने की उम्मीद न रखो और जब तुम सज्दा कर लो तो खड़े

www.dawateislami.net

होने की उम्मीद न रखो और जन्नत को अपनी दाईं त़रफ़ और जहन्नम को बाईं त़रफ़ जब कि पुल सिरात़ को अपने क़दमों तले समझो जब तुम ऐसा कर लोगे तो तुम कामिल नमाज़ी बन जाओगे।" ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने साथियों की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और उन से फ़रमाया : "उठो हम अपनी गुज़श्ता ज़िन्दगी की तमाम नमाज़ें दोहरा लें।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। ﴿اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰله وسلَّم﴾

ऐ वोह शख़्स जिस का दिल मुर्दा हो चुका तो बदन की ज़िन्दगी को कौन सी शै नफ़्अ़ दे सकती है जब कि तू अच्छाई और बुराई में फ़र्क़ नहीं कर सकता,...... बुढ़ापे ने तुझ से जवानी छीन ली तो तेरे आंसू और ग़म कहां गए,...... जब दिल तक़्वा से ख़ाली हो जाए तो रो रो कर तालाब भरना भी नफ़्अ़ न देगा,...... ऐ जुदाई के मक़्तूल ! सुल्ह़ का येही वक़्त है पेश क़दमी कर ले शायद तेरा ग़म दूर हो जाए।

एक यहूदी का क़बूले इस्लाम :

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन मुह़म्मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "मेरा खातादार एक यहूदी था। मैं ने उसे मक्कए मुकर्रमा में गिड़गिड़ाते और आ़जिज़ी के साथ दुआ़ मांगते हुए देखा तो उस के हु़स्ने इस्लाम ने मुझे ह़ैरत में डाल दिया। मैं ने उस से इस्लाम लाने का सबब दरयाफ़्त किया तो उस ने कहा कि " मैं अबू इस्ह़ाक़ इब्राहीम आजरी नीशापूरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में

www.dawateislami.net

हाज़िर हुवा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ईंटों की भट्टी की आग को भड़का रहे थे। मैं उन से अपने क़र्ज़ का तक़ाज़ा करने गया था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुझ से फ़रमाया : ''मुसल्मान हो जा और उस आग से डर जिस का ईंधन आदमी और पथ्थर हैं।'' तो मैं ने कहा : ''ऐ अबू इस्हाक़ ! तुम्हें मेरे इस्लाम न लाने पर क्या तक्लीफ़ है तुम भी तो दोज़ख़ में जाओगे।'' आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : ''शायद तुम्हारी मुराद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस क़ौल से है :

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا

(پ١٦، مریم:٧١)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो।

मैं ने कहा : ''हां।'' तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुझ से फ़रमाया कि ''अपने कपड़े मुझे दे दो।'' तो मैं ने अपना कपड़ा दे दिया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मेरे कपड़े को अपने कपड़े में लपेट कर दोनों कपड़े तन्नूर में डाल दिये। फिर कुछ देर बा'द वज्द में आ गए और बुलन्द आवाज़ से रोते हुए तन्नूर में कूद पड़े। तन्नूर से आग के भड़क्ने की आवाज़ें आ रही थीं।

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने तन्नूर के दरमियान से वोह कपड़े दहक्ते हुए उठाए और भट्टी के दूसरे दरवाज़े से निकल आए उन के इस अ़मल ने मुझे ख़ौफ़ज़दा कर दिया था। चुनान्चे मैं तअ़ज्जुब से दौड़ता हुवा उन के पास आया तो देखा कि उन के हाथ में कपड़ों की गठरी सहीह़ सलामत उसी त़रह़ मौजूद थी जैसे आग में डालने से पहले थी। जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने गठरी को खोला तो मेरा

www.dawateislami.net

कपड़ा मुकम्मल त़ौर पर उन के कपड़े में लिपटा होने के बा वुजूद जल कर कोएला हो चुका था जब कि उन का कपड़ा सह़ीह़ सालिम था और उसे आग ने छुवा तक न था फिर आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़रमाया : "इस आयत से येही मुराद है। तो मैं आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की येह करामत देख कर फ़ौरन उन के हाथ पर इस्लाम ले आया।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

मेरे इस्लामी भाइयो !

औलियाए किराम का कमाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है जिस ने उन के दिलों को हिदायत और ह़िक्मत के अन्वार से भर दिया और उन के साकिन वुजूद को ह़-र-कत दी और उन को झुकी हुई टहनी की त़रह़ झुका दिया और उन की अरवाह़ के आईने को शफ़्फ़ाफ़ किया और उन के लिये शराबे मह़ब्बत बहाई और अह़कामे ख़ुदा वन्दी सुनने के लिये उन की समाअ़तों को ख़ुश ज़ौक़ बनाया। उन पर ह़िमायत की बरसात की तो उन्हें बेदारी नींद से प्यारी हो गई, उन में से कुछ तो दीवाने और सरशार हैं और उन का हर दिन अपने मह़बूब के साथ ईद है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रात भर सोने वाले के मुक़ाबले में उन की तन्हाई की रात को त़वील कर दिया लिहाज़ा येह लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत में फ़ना हो जाने वाले नफ़्स का शौक़ रखते हैं और मह़रूम हैं वोह शख़्स जिस का दिन बद बख़्ती में गुज़रता है और रात नींद में और ज़िन्दगी दुन्यावी अस्बाब के सिल्सिले में तगो दौ करती हुई कटती है क्यूं कि इसी

www.dawateislami.net

मसरूफ़िय्यत में अस्ल फ़साद है। उस ने अपनी ज़िन्दगी ग़फ़्लत में गुज़ारी और बुढ़ापे में गुज़श्ता वक़्त पर रोता है जो कि कभी वापस पलटने वाला नहीं, ऐ गुनहगारो ! रूहों के जिस्म से जुदा होने से पहले ही आख़िरत की तय्यारी कर लो।

शाने विलायत :

हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन हसन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि मैं मुल्के शाम की त़रफ़ सफ़र कर रहा था अचानक मेरे सामने एक रुकावट आ गई तो मैं ने रास्ता बदल लिया। मैं एक सह़रा में आ पहुंचा तो मुझे वहां एक गिरजा घर नज़र आया। मैं उस के क़रीब पहुंचा तो मैं ने एक राहिब को उस गिरजे से अपना सर बाहर निकालते देखा। उस ने मुझ से कहा : "ऐ शख़्स ! क्या तुम अपने साथी का ठिकाना देखना चाहते हो ?" मैं ने कहा : "मेरा साथी कौन है ?" उस ने कहा : "इस वादी में एक शख़्स तुम्हारे दीन पर है और ज़माने के फ़ितनों से कनारा कश हो कर यहां रिहाइश पज़ीर है, मुझे उस की गुफ़्त-गू अच्छी लगती है।" मैं ने उस से पूछा कि "तुम्हें उस से गुफ़्त-गू करने से किसी ने रोका है ह़ालां कि तुम उस के क़रीब रहते हो ?" तो उस ने कहा : "मुझे मेरे चन्द दोस्तों ने यहां रोक रखा है जिन से मुझे क़त्ल का ख़ौफ़ है मगर जब तुम उन के पास जाओ तो मेरा सलाम कह देना और मेरे लिये दुआ़ करवाना।"

हज़रते सय्यिदुना हसन बिन यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि मैं उस बुज़ुर्ग की त़रफ़ चल पड़ा। मैं ने देखा कि एक शख़्स है जिस के गिर्द दरिन्दे जम्अ़ हैं। जब उस बुज़ुर्ग ने मुझे देखा तो मेरे

www.dawateislami.net

क़रीब आ गए। वहां मुझे कुछ लोगों की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं मगर उन में से कोई नज़र नहीं आ रहा था। मैं ने किसी कहने वाले की आवाज़ सुनी जो कह रहा था कि "येह कौन फ़ुज़ूल शख़्स आ गया है जिस ने आ़मिलीन के मक़ाम को रौंद डाला।" फिर मैं ने एक शख़्स को देखा जो अपने सर को झुकाए हुए नर्म गुफ़्त-गू करता था। उस पर हैबत व वक़ार छाया हुवा था। मैं ने उसे येह दुआ़ मांगते सुना : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तूने मुझे जो अपनी मा'रिफ़त अ़ता फ़रमाई और अपनी महब्बत के साथ मुझे ख़ास किया है इस पर तेरा शुक्र है, तेरी तमाम ने'मतों और आज़्माइशों पर तेरा शुक्र है, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपनी रिज़ा के लिये अपने हुक्म से मेरे द-रजे को सालिह़ीन के द-रजात तक बुलन्द फ़रमा दे और मुझे औलिया के द-रजे तक पहुंचा दे।"

इस के बा'द उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मार कर कहा : "आह ! उस के सिवा मेरा कौन है ?" फिर वोह बुज़ुर्ग बेहोश हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए उन की हैबत से मेरी ज़बान साकिन हो गई जब उन्हें होश आया तो मुझ से फ़रमाया : "चले जाओ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें तक़्वा और परहेज़ गारी से मालामाल फ़रमाए।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। ﴿ اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ

ऐ तौबा में टाल मटोल करते हुए बुढ़ापे की दहलीज़ में दाख़िल होने वाले ! ऐ अपनी जवानी को ग़फ़्लत में गंवाने वाले ! ऐ अपनी बद अ़-मली की वज्ह से बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से धुत्कार दिये जाने वाले ! तू जवानी में ग़ाफ़िल रहा, अगर बुढ़ापे में भी यूंही तौबा से मह़रूम रहा तो कब बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िर होगा ? येह अह़बाब का त़रीक़ा तो नहीं, तेरा ज़ाहिर तो आबाद है मगर अफ़्सोस तेरा बात़िन बरबाद और वीरान है, कितनी ना फ़रमानियां, मुख़ा-ल-फ़तें, रिया कारियां तू कर चुका जिन के सबब तेरे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरमियान ह़िजाब ह़ाइल हो गए।

तूने अपनी ज़िन्दगी के बेहतरीन अय्याम गुनाहों में गुज़ार दिये। आख़िर इस्लाह़ की त़रफ़ कब आएगा ? क्यूं कि बुढ़ापे के बा'द वाले (फ़ुज़ूल) काम लह्वो लइ़ब हैं तो इतने से वक़्त में तू कैसे संवर सकता है ? अगर तू अपनी गुज़श्ता उ़म्र में नेकियों को आगे भेजता तो तेरा ह़िसाब हलका हो जाता। अब येह कैसे हलका होगा जब कि तूने अपनी ज़िन्दगी ग़फ़्लत और दुन्यवी अस्बाब जम्अ़ करने में गुज़ार दी। जब बुढ़ापे ने मौत से डराया और तूने ज़ादे राह आगे न भेजा तो तू क्या जवाब देगा ? काश ! कोई मुझे समझा देता कि गुनहगारों को अपनी ज़िन्दगी कैसे अच्छी लगती है।

وَلَوْ تَرٰۤى اِذْ فَزِعُوْا فَلَا فَوْتَ وَاُخِذُوْا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ۝
(پ۲۲، سبا:۵۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और किसी त़रह़ तू देखे जब वोह घबराहट में डाले जाएंगे फिर बच कर न निकल सकेंगे और एक क़रीब जगह से पकड़ लिये जाएंगे।

www.dawateislami.net

मस्जिद में ग़ीबत करने वालों की तौबा :

मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने मस्जिद में चन्द नौ जवानों को देखा जो ग़ीबत और गुमराही के समुन्दर में ग़ोत़ा ज़न थे । तो आप ने उन से फ़रमाया : "क्या तुम में से कोई अपने दोस्त की मुख़ा-लफ़त करना पसन्द करेगा कि वोह उसे छोड़ कर किसी और को अपना दोस्त बना ले ।" नौ जवान कहने लगे : "नहीं ।" तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "(फिर भी) तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के घर में बैठ कर उस के हुक्म की मुख़ा-लफ़त कर रहे हो और लोगों की ग़ीबत कर रहे हो ।" नौ जवानों ने कहा : "हम तौबा करते हैं ।" तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "मेरे भाइयो ! वोह तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ है और तुम्हारा दोस्त है जब तुम उस की ना फ़रमानी करोगे और दूसरे लोग उस की फ़रमां बरदारी करेंगे तो तुम्हें नुक़्सान होगा और लोग फ़ाएदा उठा लेंगे तो क्या येह तुम्हें गिरां न गुज़रेगा ?" नौ जवानों ने अ़र्ज़ किया : "जी हां गिरां गुज़रेगा ।" तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "और जो उस के हुक्म की ना फ़रमानी करेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर चाहे तो उसे अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमाएगा तो क्या तुम अपनी जवानी पर ग़ैरत न खाओगे कि तुम किस त़रह़ जहन्नम में जल रहे हो और अ़ज़ाब में मुब्तला हो और दूसरे लोग जन्नत और सवाब का मज़ा लूटें ।" नौ जवानों ने अ़र्ज़ किया : "जी हां ।" और फिर उन लोगों ने तौबा कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से लौ लगा ली ।

www.dawateislami.net

ﷺ**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰی عليه واٰله وسلَّم

चन्द अश्आर

اَلَاْفَاسْلُکْ اِلَی الْمَوْلٰی سَبِیْلًا — وَلَا تَطْلُبْ سِوَی التَّقْوٰی دَلِیْلًا
وَسِرْ فِیْهَا بِجِدٍّ وَانْتِهَاضٍ — تَجِدْ فِیْهَا الْمُنٰی عَرْضًا وَطُوْلًا
وَلَا تَرْکَنْ اِلَی الدُّنْیَا وَعَوِّلْ — عَلٰی مَوْلَاکَ وَاجْعَلْهُ وَکِیْلًا
وَاِنْ اَحْبَبْتَ اَنْ تَعْتَزَّ عِزًّا — یَدُوْمُ فَکُنْ لَهٗ عَبْدًا ذَلِیْلًا
وَوَاصِلْ مَنْ اَنَابَ اِلَیْهِ وَاقْطَعْ — وِصَالَ الْمُسْرِفِیْنَ تَکُنْ نَبِیْلًا
وَلَا تُفْنِ شَبَابَکَ وَاغْتَنِمْهُ — وَمَثِّلْ بَیْنَ عَیْنَیْکَ الرَّحِیْلَا
وَلَا تَصِلِ الدُّنْیَا وَاهْجُرْ بَنِیْهَا — عَلٰی طَبَقَاتِهِمْ هَجْرًا جَمِیْلًا
وَعَامِلْ فِیْهِمُ الْمَوْلٰی بِصِدْقٍ — یَضَعْ لَکَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْقَبُوْلَا

तरजमा : (1) सुन ! मौला عَزَّوَجَلَّ के बताए हुए रास्ते पर चल, और तक़्वा ही को रहनुमा बना ।

(2) ख़ूब जिद्दो जहद और मेह़नत के साथ इस रास्ते पर चल, तू इसी में अपने मक़ासिद पा लेगा ।

(3) दुन्या पर शैदा न हो, अपने मौला عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा रख और (अपने कामों) में उसी को कारसाज़ बना ।

(4) अगर तू हमेशा रहने वाली इ़ज़्ज़त को मह़बूब रखता है तो तू उस का आ़जिज़ व मुन्कसिरुल मिज़ाज बन्दा बन जा ।

(5) उन लोगों से जोड़ जो उस (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ रुजूअ़ लाए और ह़द से बढ़ने वालों से तअ़ल्लुक़ तोड़ ले तू साह़िबे फ़ज़ीलत हो जाएगा ।

www.dawateislami.net

(6) अपनी जवानी को बरबाद न कर, इस को ग़नीमत जान और सफ़रे आख़िरत को अपने पेशे नज़र रख।

(7) दुन्या से तअ़ल्लुक़ न जोड़, हर त़रह़ के दुन्या दारों से ख़ूब अच्छे त़रीक़े से अलग हो जा।

(8) लोगों से उन के आक़ा की मिस्ल नेक बरताव कर, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के दिलों में तेरी मक़्बूलिय्यत रख देगा।

दीनी सख़ावत :

ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन हुबाब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया कि "मेरा गुज़र ह़म्दूना मजनूना رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْهَا के क़रीब से हुवा जो एक चौराहे पर ऊन का एक जुब्बा पहने बैठी थीं जिस की आस्तीनों पर सियाही से येह शे'र लिखा हुवा था,

سَلَبَ الرُّقَادَ عَنِ الْجُفُونِ تَشَوُّقِیْ فَمَتَی اللِّقَاءُ یَاوَارِثَ الْاَمْوَاتِ

तरजमा : मेरे शिद्दते शौक़ ने आंखों से नींद को दूर कर दिया, ऐ मौत अ़त़ा फ़रमाने वाले ! तुझ से मुलाक़ात कब नसीब होगी।

मैं ने उन्हें सलाम किया तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْهَا ने सलाम का जवाब दिया फिर फ़रमाया : "क्या तुम यज़ीद बिन हुबाब नहीं हो ?" मैं ने कहा : "जी हां मगर आप ने कैसे पहचाना ?" तो फ़रमाया : "मैं ने मख़्फ़ी असरार की मा'रिफ़त से तअ़ल्लुक़ रखा तो मलिके जब्बार के बताने से मैं ने तुम्हें पहचान लिया।" फिर फ़रमाया : "मैं तुम से एक सुवाल पूछती हूं।" मैं ने कहा : "पूछें।" तो फ़रमाया : "सख़ावत क्या है ?" मैं ने कहा : "ख़र्च

www.dawateislami.net

करना और बांटना।" फ़रमाया : "येह तो दुन्यवी सख़ावत है दीनी सख़ावत क्या है ?" मैं ने कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में जल्दी करना।" फ़रमाया : "क्या हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ख़ैर के त़लब गार हैं ?" मैं ने कहा : "जी हां ! एक नेकी के बदले दस के त़लब गार हैं।" फ़रमाया : "ऐ यज़ीद ! आह इत़ाअ़त में जल्दी येह तो नहीं बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में आगे बढ़ना तो येह है कि इबादत करते वक़्त तुम अपनी दिली कैफ़िय्यत से बे ख़बर रहो जब कि तुम तो उस से एक शै के बदले दूसरी शै के त़लब गार हो।" फिर येह अश्आ़र पढ़े :

حَسْبُ الْمُحِبِّ مِنَ الْحَبِيْبِ بِعِلْمِهٖ ۔۔۔ اَنَّ الْمُحِبَّ بِبَابِهٖ مَطْرُوْحُ

فَاِذَا تَقَلَّبَ فِي الدُّنْيَا فَفُؤَادُهٗ ۔۔۔ بِسِهَامِ لَوْعَاتِ الْهَوٰى مَجْرُوْحُ

तरजमा : (1) मुह़िब के लिये इतनी बात ही काफ़ी है उस का मह़बूब जानता है कि मुह़िब को मेरे दरवाज़े पर डाल दिया गया है।

(2) जब मुह़िब दुन्या की आलाइशों में पड़ जाए तो उस का दिल ख़्वाहिशात के मरज़ के तीरों से छलनी होगा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

हूर से निकाह़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने एक मर्तबा येह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई :

www.dawateislami.net

وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝

(پ٣، البقرۃ:٢٨١)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और डरो उस दिन से जिस में **अल्लाह** की त़रफ़ फिरोगे और हर जान को उस की कमाई पूरी भर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा।

फिर फ़रमाया : "येह वोही नसीह़त है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुसल्मानों को फ़रमाई है और इस का मत़लब येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वली शह्द की नह्र से टेक लगाए बैठा होगा हूरे ईन उसे जाम दे रही होगी और येह दोनों ने'मत व सुरूर में होंगे, तो हूरे ईन कहेगी : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दोस्त ! क्या तुम जानते हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरा निकाह़ तुम से कब किया था ?" वोह कहेगा : "नहीं मैं नहीं जानता।" तो वोह कहेगी : "एक दिन सख़्त गरमी में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें शिद्दते प्यास के आ़लम में पाया तो फ़िरिश्तों के सामने तुम पर फ़ख़्र करते हुए फ़रमाया : "ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! मेरे इस बन्दे की त़रफ़ देखो जिस ने अपनी ख़्वाहिशे लज़्ज़त, बीवी और खाने पीने को मेरे इन्आ़मात में रग़्बत करते हुए छोड़ रखा है, मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि मैं ने इसे बख़्श दिया है।" तो उसी दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमा कर मुझे तुम्हारी ज़ौजिय्यत में दे दिया था।

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم﴿

प्यारे इस्लामी भाइयो !

इन बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى की ख़ूबी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है, जिस ने इन्हें अपनी मह़ब्बत से सरफ़राज़

www.dawateislami.net

फ़रमाया तो क़ल्बे सलीम रखने वाले लोग उस के क़रीब आ गए,...... इन्हें अपनी मुनाजात में लज़्ज़त अ़ता फ़रमाई तो इन में से हर एक उस की मह़ब्बत से सरशार हो गया,...... इन के दिलों को अपनी मह़ब्बत से भर दिया तो इन की सारी रात इसी मह़ब्बत में कटने लगी,...... इन के दिलों को नफ़्सानी ख़्वाहिशात से पाक किया तो इन से दुन्या की मह़ब्बत कूच और आख़िरत की मह़ब्बत घर कर गई,...... वोह किसी ह़ाल में भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ैर को नहीं पहचानते,...... इन ने'मतों से लुत़्फ़ अन्दोज़ होने वाले ख़ुश नसीब हैं और वोह ने'मतें भी सआ़दत वाली हैं।

चन्द अश्आ़र

لِلصَّالِحِيْنَ كَرَامَاتٌ وَّاَسْرَارٌ ... لَهُمْ مِنَ اللّٰهِ تَخْصِيْصٌ وَآثَارُ

صَفَتْ قُلُوْبُهُمْ لِلّٰهِ وَاتَّصَفَتْ ... بِالصِّدقِ وَاكْتَنَفَتْ بِالنُّوْرِ اَنْوَارُ

وَاسْتَغْرَقَتْ كُلَّ وَقْتٍ مِّنْ زَمَانِهِمْ ... فِيْ طَاعَةِ اللّٰهِ اَوْرَادٌ وَّاَذْكَارُ

صَامُوْا النَّهَارَ وَقَامُوْا اللَّيْلَ مَاسَئِمُوْا ... حَتّٰى تَعَرَّتْ عَلٰى الظَّلْمَاءِ اَسْحَارُ

خَلَوْابِهٖ وَرِوَاقُ اللَّيْلِ مُنْسَدِلٌ ... حَتّٰى لَهُمْ قَدْ تَجَلَّتْ مِنْهُ اَنْوَارُ

طُوْبٰى لَهُمْ ، فَلَقَدْ طَابَتْ حَيَاتُهُمْ ... وَشُرِّفَتْ لَهُم فِيْ النَّاسِ اَقْدَارُ

فَازُوْا مِنَ اللّٰهِ بِالزُّلْفٰى وَاَسْكَنَهُمْ ... جَنَّاتِ عَدْنٍ فَنِعْمَ الدَّارُ وَالْجَارُ

तरजमा : (1) नेकोकारों के लिये इ़ज़्ज़तें और ख़ास मख़्फ़ी राज़ हैं, उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ख़ुसूसियात और निशानियां (करामात) अ़ता हुई हैं।

(2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये उन के दिल गुनाहों की आलू-दगी से पाक हो कर सिद्क़ से मुत्तसिफ़ हो गए और नूरे मा'रिफ़त से अन्वारे दिल चमक उठे।

www.dawateislami.net

(3) और वोह अपनी ज़िन्दगी में हर घड़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दगी और उस की याद में लगे रहते हैं।

(4) वोह दिन को रोज़ा और रात को क़ियाम (इबादत) में गुज़ारते हैं, उक्ताते नहीं ह़त्ता कि अंधेरे (रात) पर सह़र (सुब्ह़) ज़ाहिर हो जाती है।

(5) जब रात अपने पर्दे डाल देती है तो येह लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये ख़ल्वत इख़्तियार करते हैं ह़त्ता कि उस के अन्वारो तजल्लियात उन पर रोशन हो जाते हैं।

(6) ख़ुश ख़बरी है उन के लिये कि उन की ज़िन्दगी संवर गई और लोगों के दिलों में उन की इ़ज़्ज़त बढ़ा दी गई।

(7) येह लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से क़ुर्ब के बाइ़स काम्याब हो गए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन को जन्नते अ़दन में ठहराया तो येह क्या ही अच्छा ठिकाना और पड़ोस है।

करामत :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم मक्कए मुकर्रमा के किसी पहाड़ पर अपने साथियों के साथ मसरूफ़े गुफ़्त-गू थे कि अचानक आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के औलिया में से कोई वली इस पहाड़ से कहे कि अपनी जगह बदल ले तो येह पहाड़ ज़रूर अपनी जगह बदल लेगा।" तो वोह पहाड़ ह़-र-कत करने लगा तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने उसे ठोकर मार कर फ़रमाया : "ठहर जा ! मैं तो मह़ज़ अपने साथियों को मिसाल दे रहा था।" (حلیۃ الاولیاء،ابراہیم بن ادھم،الرقم ۱۱۱۷۹،ج۸،ص۴)

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم एक मर्तबा समुन्दर में सफ़र फ़रमा रहे थे कि

www.dawateislami.net

तूफ़ानी हवाएं चलने लगीं । मगर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم (तकिये पर) सर रख कर सो गए तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के साथी कहने लगे : "क्या आप नहीं देख रहे कि हम कितनी शदीद आज़्माइश में हैं ।" फ़रमाया : "क्या येह शिद्दत है ?" साथियों ने अ़र्ज़ किया : "जी हां !" फ़रमाया : "येह शिद्दत नहीं बल्कि शिद्दत तो लोगों का मोह़ताज होना है ।" फिर अ़र्ज़ किया : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! तूने अपनी क़ुदरत तो हमें दिखा दी, अब हमें अपना करम भी दिखा दे तो सारा समुन्दर ज़ैतून के पियाले की त़रह़ (साकिन) हो गया ।"

(حلیۃ الاولیاء، ۳۹۴، ابراہیم بن ادھم، رقم ۱۱۱۸۵، ج۸، ص۵ بتغیر ما)

इन्ही के बारे में है आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने रु-फ़क़ा के साथ किसी रास्ते से गुज़र रहे थे कि एक शेर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के साथियों के सामने आ गया । उन्हों ने घबरा कर आप से अ़र्ज़ किया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने शेर से मुख़ात़िब हो कर फ़रमाया : "ऐ शेर ! अगर तुझे हमारे बारे में कोई हुक्म मिला है तो उस हुक्म पर अ़मल कर, वरना हमारा रास्ता छोड़ दे ।" तो वोह शेर अपनी दुम हिलाने लगा और फिर वहां से भाग खड़ा हुवा । आप के रु-फ़क़ा येह देख कर ह़ैरत ज़दा रह गए ।

(حلیۃ الاولیاء، ابراہیم بن ادھم، رقم ۱۱۱۸۲، ج۸، ص۵ بتصرف)

चाहें तो इशारों से अपने काया ही पलट दें दुन्या की
येह शान है ख़िदमत गारों की सरकार का आ़लम क्या होगा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰی عليه واٰله وسلَّم

www.dawateislami.net

औलिया के अह्‌वाल

ऐ ज़ादे राह के बिग़ैर सफ़र इख़्तियार करने वाले ! मन्ज़िल बहुत दूर है जब कि तेरी आंख ख़ुश्क और दिल लोहे से ज़ियादा सख़्त है,...... जब तू हर नए आने वाले दिन में गुनाहों के समुन्दर में ग़र्क़ रहता है तो मुसीबत का तुझ से ज़ियादा ह़क़दार कौन होगा ?,...... अफ़्सोस ! जवानी तुझे बेदार न कर सकी और न ही बुढ़ापा तुझे ख़ौफ़ज़दा कर सका,...... ह़द तो येह है कि तेरे बालों की सफ़ेदी भी तुझे गुनाहों से बाज़ न रख सकी...... मुझे तेरी काम्याबी बहुत मुश्किल नज़र आ रही है,...... फ़िक्रे आख़िरत करने वालों को देख कि वोह कहां पहुंच गए ?...... वोह आराम देह बिस्तर को लपेट कर गिर्या व ज़ारी और आख़िरत की तय्यारी में लग गए,...... उन के रुख़्सारों पर बहने वाले आंसूओं ने निशानात डाल दिये हैं...... ऐ कम हिम्मत ! ऐ धुत्कारे हुए ! तेरा शुमार मह़ब्बत करने वालों और उ़श्शाक़ में क्यूं नहीं हुवा ।

चन्द अश्आ़र

لِاَمْــرٍ مَــــاتَــغَيَّــرَتِ الـلَّيَــالِــىْ ‌ ‌ وَاَنْــتَ عَــلٰــى الْبَـطَـالَةِ لَا تُبَـالِـىْ

تُبِيْتُ مُنَعَّمًــا فِىْ خَفْضِ عَيْشٍ ‌ ‌ وَتُــصْـبِــحُ فِىْ هَـوَاکَ رَخِـىَّ بَـالِ

اَلَــمْ تَــرَ اَنَّ اَثْــقَـــالَ الْـخَـطَــايَــا ‌ ‌ عَــلٰــى كَتِـفَيْـکَ اَمْثَالَ الْـجِبَـالِ

اَتَــكْسِــبُ مَــا اكْتَسَبْتَ وَلَا تُبَـالِـىْ ‌ ‌ فَهَـــلْ هُــوَ مِــنْ حَــرَامٍ اَوْ حَلَالِ

اِذَامَــا كُــنْــتَ فِىْ الـدُّنْيَـابَصِيْـرًا ‌ ‌ كَفَفْتَ الـنَّـفْـسَ عَنْ طُرُقِ الضَّلَالِ

اَلَا بِــاَبِــىْ خَـلِيْـلٍ بَــاتَ يُـحْـيِـىْ ‌ ‌ طَـوِيْــلَ الـلَّيْـلِ بِـالسَّبْـعِ الطِّـوَالِ

بِـقَـلْـبٍ لَا يَـفِيْـقُ عَـنِ اضْـطِـرَابٍ ‌ ‌ وَجَـفْــنٍ لَا يَــكُـفُّ عَــنِ انْهِـمَـالِ

اَرَى الْاَيَّـــامَ تَـــنْـــقُـــلُــنَــاوَشِيْـكًــا ‌ ‌ اِلٰــى الْاَجْـدَاثِ حَــالًابَـعْـدَحَــالِ

www.dawateislami.net

سَاَقْنَعُ مَاحَيِيْتُ بِشَطْرِ بُرٍّ ‏ اُشَيِّعُهٗ بِرِىٍّ مِنْ زُلَالِ

اِذَا كَانَ الْمَصِيْرُ اِلٰى هَلَاكٍ ‏ فَمَا لِىْ وَالتَّنَعُّمُ ثُمَّ مَا لِىْ ؟

اَمَالِىْ عِبْرَةٌ فِيْمَنْ تُفَانِىْ ‏ عَلٰى الْاَيَّامِ مِنْ عَمٍّ وَّخَالِ

كَاَنَّ بِنِسْوَتِىْ قَدْ قُمْنَ خَلْفِىْ ‏ وَنَعْشِىْ فَوْقَ اَعْنَاقِ الرِّجَالِ

يُعَجِّلْنَ الْمَسِيْرَ وَلَسْتُ اَدْرِىْ ‏ لِدَارِ الْفَوْزِ اَمْ دَارِالنَّكَالِ

يَبِيْدُ الْكُلُّ مِنَّا دُوْنَ شَكٍّ ‏ وَيَبْقٰى اللّٰهُ رَبِّىْ ذُوالْجَلَالِ

तरजमा : (1) रातें किसी काम की वज्ह से बदला नहीं करतीं, फिर भी तू बेकार कामों में मश्ग़ूल है और तुझे इस की परवाह भी नहीं।

(2) तू आसूदा ज़िन्दगी में, रात ने'मतों में गुज़ारता है और नफ़्सानी ख़्वाहिशात में मुत्मइन हो कर सुब्ह़ करता है।

(3) पहाड़ों की मिस्ल तेरे कन्धों पर मौजूद गुनाहों का बोझ क्या तुझे नज़र नहीं आता।

(4) जो चाहता है, कमा रहा है और इस चीज़ की परवाह नहीं करता येह ह़राम से है या ह़लाल से।

(5) अगर तू दुन्या में साह़िबे नज़र होगा तो अपने नफ़्स को गुमराही के रास्तों से बचा लेगा।

(6) सुनो ! सय्यिदी ह़ज़रत अबू ख़लील عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْجَلِيْل लम्बी रात भी सात बड़ी सूरतें पढ़ने में गुज़ार दिया करते थे।

(7) (इन सूरतों को) पढ़ते वक़्त उन का दिल मुज़्तरिब और आंखें अश्कबार होती थीं।

(8) मैं देख रहा हूं कि अय्यामे ज़िन्दगी हमें लम्ह़ा ब लम्ह़ा तेज़ी के साथ क़ब्रों की त़रफ़ मुन्तक़िल कर रहे हैं।

(9) गन्दुम की जिस मिक़्दार से ज़िन्दगी बाक़ी रहे मैं उस पर

www.dawateislami.net

क़नाअ़त कर के उसे उ़म्दा पानी से नर्म कर लूंगा।

(10) जब बिल आख़िर मरना ही है तो मेरा और ऐ़शो इ़श्रत वाली ज़िन्दगी का क्या वासित़ा ?

(11) क्या चचा और मामूं की ज़माने के हाथों हलाकत में मेरे लिये कोई इ़ब्रत नहीं है ?

(12) (मुझे समझना चाहिये) गोया मेरे बा'द मेरी औ़रतें खड़ी की खड़ी रह गईं और मेरा जनाज़ा लोगों के कन्धों पर है।

(13) मुझे जल्दी जल्दी (क़ब्र की त़रफ़) ले जा रहे हैं और मैं नहीं जानता मेरा ठिकाना जन्नत होगा या दोज़ख़।

(14) बेशक हम में से हर एक फ़ना हो जाएगा, फ़क़त़ मेरा रब **अल्लाह** जुल जलाल बाक़ी रहेगा।

आ़जिज़ी :

ह़ज़रते दावूद त़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के एक शागिर्द का बयान है, एक मर्तबा मैं ह़ज़रत की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुझ से पूछा : "कैसे आना हुवा ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हुवा हूं।" तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "तुम मुझ से मिलने आए येह अच्छी बात है मगर येह तो देखो कि तुम्हारा येह काम मेरे लिये कितना नुक़्सान देह है जब मुझ से येह कहा जाएगा : " तू कौन होता है कि तेरी ज़ियारत की जाती, क्या तू इ़बादत गुज़ार था ? क्या तू दुन्या में ज़ोहद इख़्तियार करने वालों में से था ?" फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने नफ़्स को डांटते हुए फ़रमाने लगे : "जवानी में तो तू बदकार था, उधेड़ उ़म्री में धोकेबाज़ हो गया और जब बूढ़ा हुवा तो रियाकार बन गया,

www.dawateislami.net

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! रियाकार फ़ासिक़ से भी बदतर है।" फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه दुआ मांगने लगे : "ऐ ज़मीनो आस्मान के ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ! अपनी त़रफ़ से मुझे ऐसी रह़मत अ़त़ा फ़रमा जो मेरी जवानी की इस्लाह़ कर दे और मुझे हर बुराई से बचा ले और सालिह़ीन के बुलन्द मक़ामात में मेरा ठिकाना बुलन्द कर दे।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। ﴿اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो !

उन औलिया के मक़ामात और उन की करामात सुनो जिन्हें मौला عَزَّوَجَلَّ ने अपने लिये ख़ास फ़रमाया और अपने फ़ज़्ल से ढांप लिया।

शेर की इत़ाअ़त :

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते है कि "एक मर्तबा ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ह़ज़रते शैबान राई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के साथ ह़ज के इरादे से निकले। रास्ते में उन्हें एक शेर नज़र आया तो ह़ज़रते सुफ़्यान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان उन से कहने लगे : " इस शेर को देखो येह हमारा रास्ता रोक रहा है और लोगों को डरा रहा है।" ह़ज़रते शैबान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان ने फ़रमाया : "डरो मत।" जब शेर ने ह़ज़रते शैबान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان का कलाम सुना तो अपनी दुम हिलाता हुवा उन के पास आया। ह़ज़रते शैबान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان ने उस का कान पकड़ कर उसे मसला तो वोह अपनी दुम हिलाने लगा और पीठ फैर कर भाग गया। ह़ज़रते सुफ़्यान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने पूछा : "ऐ शैबान ! क्या येह

www.dawateislami.net

शोहरत नहीं है ?" फ़रमाया : "ऐ सुफ़्यान ! नहीं, येह नुमाइश नहीं है अगर मुझे शोहरत का ख़ौफ़ न होता तो मैं मक्कए मुकर्रमा तक अपना सामान उस पर रख कर ले जाता ।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो । اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

तबर्रुक की मिठास :

हज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू इबाद मक्की رَحمَةُ اللهِ تَعالٰى عَلَيه फ़रमाते हैं : "हमारे पास एक बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाए जिन की कुन्यत अबू अ़ब्दुल्लाह थी । मैं स-ह़री के वक़्त ज़मज़म शरीफ़ के कूंएं पर पहुंचा तो देखा कि येह बुज़ुर्ग अपने चेहरे पर कपड़ा लटकाए तशरीफ़ ला रहे हैं । कूंएं पर पहुंच कर उन्हों ने आबे ज़मज़म निकाला और पीने लगे तो मैं उन का जूठा ह़ासिल करने के लिये लपका । जब मैं ने उसे पिया तो वोह शह्द मिला पानी था, मैं ने इस से अच्छा पानी कभी नहीं पिया । पानी पीने के बा'द जब मैं ने उन से मिलना चाहा तो वोह तशरीफ़ ले जा चुके थे । अगली रात जब स-ह़री का वक़्त हुवा तो मैं फिर ज़मज़म के कूंएं पर ह़ाज़िर हुवा और देखा कि वोह बुज़ुर्ग भी मस्जिद के दरवाज़े से अपने चेहरे पर कपड़ा डाले तशरीफ़ ला रहे हैं । वोह एक बार फिर कूंएं पर आए और पानी निकाल कर पीने लगे । मैं उन का जूठा पीने के लिये आगे बढ़ा तो उसे लज़ीज़ और बेहतरीन सत्तू पाया । जब तीसरी रात आई तब भी वोह तशरीफ़ लाए और पानी निकालने लगे । मैं ने उन की ओढ़ी हुई चादर अपने हाथ पर लपेट ली और जब मैं ने उन का बचा हुवा ज़मज़म पिया तो देखा कि वोह शकर मिला दूध है, मैं ने इस जैसी लज़ीज़ शै कभी न पी थी । मैं ने उन

www.dawateislami.net

से इल्तिजा की : "ऐ शैख़ ! आप को इस बैतुल ह़राम के ह़क़ का वासित़ा ! बताइये आप कौन हैं ?" फ़रमाया : "मेरी बात राज़ में रखोगे ?" मैं ने कहा : "जी हां।" फ़रमाया : "मैं सुफ़्यान सौरी हूं।" **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمین بجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

येह पाकीज़ा हस्तियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की इ़बादत करती हैं। इन्हों ने ख़ुद को मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ में फ़ना कर दिया और वोह हर वक़्त उसी के मुश्ताक़ रहते हैं। उस ने दुन्या की बादशाही को इन के पाउं की ज़न्जीर बनने से रोक दिया और इन पर ग़ैरत फ़रमाते हुए इन्हें ग़ैरों से छुपा लिया और इन्हें तस्लीम व रिज़ा की सनद अ़त़ा फ़रमाई और मशरूबे इल्हाम पिलाया।

काश ! कोई होता जो गुनहगार पर पर्दा डाल देता ताकि वोह उस करीम के दरवाज़े पर लौट आता और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उस रह़मत की वज्ह से उस के क़रीब हो जाता जो गुनहगारों के लिये मख़्सूस है ताकि इत़ाअ़त में रह जाने वाले की घबराहट दूर हो जाए, इसी लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूबे करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़रीए़ येह पैग़ाम भेजा :

قُلْ یٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰۤی اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِؕ اِنَّ اللّٰهَ یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِیْعًاؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ۝ (پ۲۴، الزمر:۵۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो ! जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से ना उम्मीद न हो बेशक **अल्लाह** सब गुनाह बख़्श देता है बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है।

www.dawateislami.net

अश्आर

اَلاَقِفْ بِبَابِ الْجُوْدِ وَاقْرَعْهُ نَادِمًا تَجِدْهُ مَتٰى مَا جِئْتَـهٗ غَيْرَ مُرْتَجٖ

وَقُلْ عَبْدُ سُوْءٍ خَوَّفَتْهُ ذُنُوْبُهٗ فَمَدَّ اِلَيْكُمْ ضَارِعًا كَفَّ مُرْتَجٖ

तरजमा : (1) सुन ! जूदो करम वाली बारगाह में ह़ाज़िर हो जा और सदाए नदामत दे तो जब ह़ाज़िर होगा उस को धुत्कारने वाला न पाएगा।

(2) और अ़र्ज़ कर ! येह वोह गुनहगार बन्दा है जिसे गुनाहों ने ख़ौफ़ज़दा कर रखा है और येह बड़ी इ़ज्ज़ो इन्किसारी के साथ दामने उम्मीद फैलाए बारगाह में ह़ाज़िर है।

सूई मिल गई :

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रैह़ाना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में मरवी है कि वोह समुन्दर में सफ़र के दौरान कुछ सी रहे थे कि उन की सूई गिर पड़ी तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : ''या रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझे उस वक़्त तक क़सम देता रहूंगा जब तक तू मुझे मेरी सूई न लौटा दे।'' तो उन की सूई मिल गई और उन्हों ने हाथ बढ़ा कर पकड़ ली।

फिर जब समुन्दर में तूफ़ान आया और कश्ती वाले बेह़द परेशान हो गए तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने समुन्दर से फ़रमाया : ''साकिन हो जा तू तो एक ह़ब्शी गुलाम की त़रह़ है।'' तो समुन्दर ठहर गया यहां तक कि ज़ैतून की त़रह़ हो गया।

﴿अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। ﴿اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم﴾

www.dawateislami.net

इन्आ़माते इलाही

ऐ मेरे भाई !

तूने अपनी ज़िन्दगी खेलकूद में गंवा दी जब कि दूसरे लोग मक़्सूद को पा गए और तू उन से पीछे रह गया,...... दूसरे तो बख़्शिश को पा गए जब कि तू नफ़्सानी ख़्वाहिशात और तंगदस्ती के ख़ौफ़ में मुब्तला रहा,...... क्या तूने कभी सुना है कि (मरने के बा'द) फ़ुलां लौट आया और उस ने तौबा कर ली ।

ऐ वोह शख़्स जिस के पास ख़ुश बख़्त होने का वक़्त मौजूद है ! तू नफ़्सानी ख़्वाहिशात के चुंगल से कब छुटकारा पाएगा और कब अपने इ़ज़्ज़त वाले, ख़ूबियों वाले मौला عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रुजूअ़ करेगा ? ऐ मिस्कीन ! काश तू तौबा करने वालों के ग़म और वई़द की होलनाकी से ख़ौफ़ज़दा रहने वालों की बे क़रारी को देख लेता कि जिन्हों ने अपनी आंखों की ठन्डक को नमाज़, ज़कात और दुन्या से बे रग़बती में रखा, जब कि बद बख़्तों ने अपनी जवानियां ग़फ़्लत में और बुढ़ापे ह़िर्स और लम्बी उम्मीदों में बरबाद कर दिये, तूने न तो अपनी जवानी से नफ़्अ़ उठाया और न ही अपने बुढ़ापे में रुजूअ़ किया, ऐ अपनी जवानी और बुढ़ापा बरबाद कर देने वाले......

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَوْ تَرٰۤى اِذْ فَزِعُوْا فَلَا فَوْتَ وَاُخِذُوْا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ۝ (پ۲۲،سبا:۵۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और किसी त़रह़ तू देखे जब वोह घबराहट में डाले जाएंगे फिर बच कर न निकल सकेंगे और एक क़रीब जगह से पकड़ लिये जाएंगे ।

www.dawateislami.net

चन्द अश्आर

عَمِلْتُ عَلَى الْقَبَائِحِ فِيْ شَبَابِيْ فَلَمَّا شِبْتُ عُدْتُّ اِلَى الرِّيَاءِ
فَلَا حِيْنَ الشَّبَابِ حَفِظْتُ دِيْنِيْ وَلَا حِيْنَ الْمَشِيْبِ طَبَبْتُ دَائِيْ
فَشَابٌّ عِنْدَ مَصْغَرِهٖ غَوِيٌّ وَشَيْخٌ عِنْدَ مَكْبَرِهٖ مُرَائِيْ
قَضَاءٌ سَابِقٌ فِيْ عِلْمِ غَيْبٍ فَيَا لِلّٰهِ مِنْ سُوْءِ الْقَضَاءِ

तरजमा : (1) मैं जवानी में गुनाहों में लगा रहा, जब बुढ़ापा त़ारी हुवा तो रिया में पड़ गया।

(2) न तो जवानी के आ़लम में अपने दीन की ह़िफ़ाज़त कर सका और न ही बुढ़ापे में म-रज़े गुनाह का इ़लाज कर सका।

(3) मैं वोह जवान हूं जो नौ उ़म्री में गुमराह हो गया और वोह बूढ़ा हूं जो बुढ़ापे में रियाकार बन गया।

(4) पर्दए ग़ैब में तक़्दीर का फ़ैसला हो चुका, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं बुरी तक़्दीर से तेरी पनाह मांगता हूं।

ह़िक्मत भरा जवाब :

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मुलाक़ात की तो उन से फ़रमाया : “ ऐ हुज़ैफ़ा ! तुम ने सुब्ह़ कैसे की ?” अ़र्ज़ की : “ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! मैं ने इस त़रह़ सुब्ह़ की के फ़ितने से मह़ब्बत करता हूं और ह़क़ को ना पसन्द करता हूं और वोह कहता हूं जो पैदा नहीं हुवा और उस बात की गवाही देता हूं जिसे मैं ने देखा नहीं और

www.dawateislami.net

बिग़ैर वुज़ू के सलात पढ़ता हूं और मेरे पास ज़मीन पर एक ऐसी चीज़ है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास आस्मानों में नहीं है।" तो सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इस बात पर शदीद ग़ज़ब नाक हो गए और उन की गिरिफ़्त का इरादा फ़रमाया मगर फिर उन की नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ सोह़बत या'नी सह़ाबियत का ख़याल आया तो रुक गए। इसी अस्ना में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم वहां से गुज़रे तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के चेहरे पर ग़ज़ब के आसार मुला-ह़ज़ा फ़रमाए तो पूछा : "ऐ अमीरल मुअमिनीन ! आप को किस बात ने ग़ज़ब नाक किया है ?" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूरा क़िस्सा सुना दिया तो मौला अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने कहा : "आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को इन से नाराज़ नहीं होना चाहिये क्यूं कि इन का क़ौल कि "मैं फ़ित्ने से मह़ब्बत करता हूं।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान की तावील है :

اِنَّمَاۤ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ؕ

(پ۲۸،التغابن:۱۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हारे माल और तुम्हारे बच्चे जांच (आज़्माइश) ही हैं।

और इन के इस कौल कि "मैं ह़क़ को ना पसन्द करता हूं।" में ह़क़ से मुराद मौत है जिस से किसी को चारा नहीं और न कोई इस से बच सकता है और इन के इस क़ौल कि "वोह बात कहता हूं जो पैदा

www.dawateislami.net

नहीं की गई" से मुराद कुरआने पाक है कि येह कुरआन पढ़ते हैं और कुरआन मख़्लूक़ नहीं और इन के इस क़ौल कि "उस बात की गवाही देता हूं जिसे मैं ने देखा नहीं" का मत़लब येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्दीक़ करता हूं ह़ालां कि उसे देखा नहीं और इन के इस क़ौल कि "बिग़ैर वुज़ू सलात पढ़ता हूं" का मत़लब येह है कि येह नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर बिग़ैर वुज़ू के दुरूदे पाक पढ़ता हूं, इन के इस क़ौल कि "मेरे पास ज़मीन पर ऐसी चीज़ है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास आस्मानों में नहीं है" से मुराद बीवी और बच्चे हैं क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास इन में से कोई चीज़ नहीं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ अबुल ह़सन ! **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हें कितनी ज़हानत अ़त़ा फ़रमाई है, बेशक तुम ने मेरा एक बहुत बड़ा मस्अला ह़ल कर दिया है।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो। ﴿ اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلّم

एक ताजिर की तौबा :

अहले दिमश्क़ में से एक शख़्स था जिस का नाम अबू अ़ब्दुर्रब था और वोह पूरे दिमश्क़ में सब से ज़ियादा मालदार था। एक मर्तबा वोह सफ़र पर निकला तो उसे एक नहर के कनारे किसी चरागाह में रात हो गई चुनान्चे उस ने वहीं पड़ाव डाल

www.dawateislami.net

दिया। उसे चरागाह की एक जानिब से एक आवाज़ सुनाई दी कि कोई कसरत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ता'रीफ़ कर रहा था। वोह शख़्स उस आवाज़ की तलाश में निकला तो देखा कि एक शख़्स चटाई में लिपटा हुवा है। उस ने उस शख़्स को सलाम किया और उस से पूछा कि "तुम कौन हो ?" तो उस शख़्स ने कहा : "एक मुसल्मान हूं।" उस दिमश्क़ी ने उस से पूछा : "येह क्या ह़ालत बना रखी है ?" तो उस ने जवाब दिया : "येह ने'मत है जिस का शुक्र अदा करना मुझ पर वाजिब है।" दिमश्क़ी ने कहा : "तुम चटाई में लिपटे हुए हो येह कौन सी ने'मत है ?" उस ने कहा : "**अल्लाह** तआ़ला ने मुझे पैदा फ़रमाया तो मेरी तख़्लीक़ को अच्छा किया और मेरी पैदाइश व परवरिश को इस्लाम में रखा और मेरे आ'ज़ा को तन्दुरुस्त किया और जिन चीज़ों का ज़िक्र मुझे ना पसन्द है उन्हें छुपाया तो जो मेरी त़रह़ शाम करता हो उस से बढ़ कर ने'मत में कौन होगा ?"

वोह दिमश्क़ी कहता है कि मैं ने उन से कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, आप मेरे साथ चलना पसन्द फ़रमाएंगे, हम यहीं आप के बराबर नह्‌र के कनारे ठहरे हुए हैं ?" उस शख़्स ने कहा : "वोह क्यूं ?" मैं ने कहा : "इस लिये कि आप कुछ खाना वग़ैरा खा लें और हम आप की ख़िदमत में कुछ ऐसी चीज़ें पेश करें जो आप को चटाई में लिपटने से बे नियाज़ कर दें।" उस ने कहा : "मुझे उन चीज़ों की ह़ाजत नहीं।" येह कह कर उस ने मेरे

www.dawateislami.net

साथ चलने से इन्कार कर दिया और मैं वापस लौट आया। (उस की बातें सुनने के बा'द) मेरे नज़्दीक अपने आप की कोई हैसियत न रही। मैं ने (अपने दिल में) कहा : "मैं ने दिमश्क़ में अपने से ज़ियादा मालदार कोई नहीं देखा फिर भी मैं मज़ीद की तलाश में हूं।" फिर मैं ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी बारगाह में अपने इस ह़ाल से तौबा करता हूं।" यूं मैं ने तौबा कर ली और किसी को कानों कान ख़बर न हुई।

जब सुब्ह़ हुई तो लोगों ने सफ़र की तय्यारी शुरूअ़ की और मेरी सुवारी मेरे पास ले आए तो मैं ने येह सोच कर उस का रुख़ दिमश्क़ की जानिब फैर दिया कि अगर मैं दोबारा तिजारत में मसरूफ़ हो गया तो मैं तौबा में सच्चा नहीं। मेरी क़ौम ने इस तब्दीली की वज्ह पूछी तो मैं ने उन्हें अपनी तौबा के बारे में बता दिया, उन्हों ने मुझे अपने साथ ले जाने के लिये इसरार किया मगर मैं ने इन्कार कर दिया।

रावी कहते हैं कि दिमश्क़ पहुंचने के बा'द उस शख़्स ने अपना माल राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में स-दक़ा कर दिया और इ़बादत में मसरूफ़ हो गया। जब उस का इन्तिक़ाल हुवा तो उस के पास कफ़न की क़ीमत के इ़लावा कुछ न था।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

अश्आर

ذَكَرَ الْوَعِيْدَ فَطَرْفُهٗ لَا يَهْجَعُ ۔۔۔ وَجَفَا الرُّقَادَ فَبَانَ عَنْهُ الْمَضْجَعُ

مُتَفَرِّدًا بِغَلِيْلِهٖ يَشْكُوْ الَّذِیْ ۔۔۔ مِنْهُ الْجَوَانِحُ وَالْحَشَا يَتَوَجَّعُ

لَمَّا تَيَقَّنَ صِدْقَ مَا جَاءَتْ بِهِ الْ ۔۔۔ آيَاتُ صَارَ اِلَى الْاِنَابَةِ يَسْرَعُ

فَجَفَا الْاَحِبَّةَ فِیْ مَحَبَّةِ رَبِّهٖ ۔۔۔ وَسَمَا اِلَيْهِ بِهِمَّةٍ مَّا يُقْلِعُ

وَتَمَتَّعَتْ بِوِدَادِهٖ اَعْضَاؤُهٗ ۔۔۔ اِذْ خَصَّهَا مِنْهُ بِوُدٍّ يَّنْفَعُ

كَمْ فِی الظَّلَامِ لَهٗ اِذَا نَامَ الْوَرٰی ۔۔۔ مِنْ زَفْرَةٍ فِیْ اِثْرِهَا يَتَوَجَّعُ

وَيَقُوْلُ فِیْ دَعَوَاتِهٖ يَا سَيِّدِیْ ۔۔۔ اَلْعَيْنُ يُسْعِدُهَا دُمُوْعٌ رُجَّعُ

اِنِّیْ فَزِعْتُ اِلَيْكَ فَارْحَمْ عَبْرَتِیْ ۔۔۔ وَاِلَيْكَ مِنْ ذُلِّ الْخَطِيْئَةِ اَفْزَعُ

مَنْ ذَا سِوَاكَ يُجِيْرُنِیْ مِنْ زَلَّتِیْ ۔۔۔ يَا مَنْ لِعِزَّتِهٖ اَذِلُّ وَاَخْضَعُ

فَامْنُنْ عَلَیَّ بِتَوْبَةٍ اَحْيَا بِهَا ۔۔۔ اِنِّیْ بِمَا اجْتَرَمَتْ يَدَایَ مُرَوَّعُ

قُلْ اَتَصْبِرُ عَنْكَ يَا مَنْ حُبُّهٗ ۔۔۔ فِی الْجَارِحَاتِ سَقَامُهٗ يَتَسَرَّعُ

كَيْفَ اصْطِبَارُ مُتَيَّمٍ فِیْ حُبِّهٖ ۔۔۔ قِدَمًا لِكَاسَاتِ الْهَوٰی يَتَجَرَّعُ

لَاحَتْ وَعَنْ صِدْقِ الْمَحَبَّةِ مَا بَدَتْ ۔۔۔ لِلنَّاظِرِيْنَ نُجُوْمُ لَيْلٍ تَطْلُعُ

مَا الْفَوْزُ اِلَّا فِیْ مَحَبَّةِ سَيِّدِهٖ ۔۔۔ فِيْهَا الْمُحِبُّ اِذَا تَوَاضَعَ يُرْفَعُ

तरजमा : (1) उसे (गुनाहों की) सज़ा याद आई तो उस की आंख न सोई, और उस ने नींद को ख़ुद से दूर किया तो उस की आराम गाह भी उस से अ़ला–ह़दा हो गई।

(2) वोह अपनी प्यास में तन्हा है जिस की शिकायत करवटें करती हैं और आंतें दर्द में मुब्तला हैं।

(3) जब आयात के लाए हुए अह़काम की सच्चाई का यक़ीन

www.dawateislami.net

कर लिया तो तेज़ी के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रुजूअ़ करने वाला हो गया।

(4) उस ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत में दोस्त व अह़बाब से तअ़ल्लुक़ तोड़ लिया और ऐसी तवज्जोह से उस की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो गया जो ग़ैर की मह़ब्बत ख़त्म कर देती है।

(5) उस के आ'ज़ा ने मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ से ख़ूब फ़ैज़ ह़ासिल किया क्यूं कि उस ने अपने आ'ज़ा को नफ़्अ़ बख़्श मह़ब्बत के साथ ख़ास किया था।

(6) उस पर कितनी ही ऐसी तारीक रातें गुज़रीं जब लोग मह़्वे ख़्वाब होते तो येह उस अंधेरे में दर्द से आहो ज़ारी कर रहा होता।

(7) वोह अपनी दुआ़ओं में अ़र्ज़ करता है : ऐ मेरे आक़ा ! बहते हुए आंसू आंख को ख़ुश बख़्त बना रहे हैं।

(8) बेशक मैं तेरी पनाह में आया तो मेरी अश्कबारी पर रह़्म फ़रमा और गुनाहों की ज़िल्लत से भी तेरी ही पनाह त़लब करता हूं।

(9) ऐ वोह ज़ात ! जिस की बारगाहे इ़ज़्ज़त के लिये मैं आ़जिज़ी व इन्किसारी करता हूं, तेरे सिवा कौन मुझे लग़्ज़िशों से बचाने वाला है।

(10) तो मुझ पर एह़सान करते हुए मेरी तौबा क़बूल फ़रमा ताकि इस के बाइ़स पुर सुकून ज़िन्दगी गुज़ारूं, क्यूं कि मैं अपने हाथों किये गए जराइम से ख़ौफ़ में मुब्तला हूं।

(11) ऐ वोह ज़ात जिस की मह़ब्बत मेरी नस नस में बसी हुई

www.dawateislami.net

है, दर्दे मह़ब्बत बढ़ता जा रहा है अब मुलाक़ात न होने पर सब्र नहीं हो सकता। (या'नी मुझे मौत दे कर अपने दीदार का शरफ़ अ़ता फ़रमा)

(12) तेरी मह़ब्बत में मुस्तग़रक़ हो जाने वाला वोह शख़्स जो त़वील अ़र्से तक शहवात के जाम उंडेलता रहा हो अब उसे तेरी मुलाक़ात के बिग़ैर कैसे सब्र हो सकता है।

(13) मह़ब्बत की सदाक़त यूं ज़ाहिर हो गई जैसे देखने वालों पर रात में सितारे ज़ाहिर हो जाते हैं।

(14) काम्याबी आक़ा से मह़ब्बत ही में है, इस राहे मह़ब्बत में मुह़िब जब भी तवाज़ोअ़ करता है उस को बुलन्दियां नसीब होती हैं।

आंख अ़त़ा कर दी :

ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा बिन नो'मान अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो कि मशहूर तीर-अन्दाज़ थे, ग़ज़्वए बद्र और उहुद में शरीक हुए। ग़ज़्वए उहुद में इन की आंख तीर लगने के सबब इन के रुख़्सार पर बह पड़ी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस आंख को हाथ में थामे सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो म-दनी ह़बीब, त़बीबों के त़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ क़तादा ! येह क्या है ?" अ़र्ज़ किया : "या **रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह वोही है जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा फ़रमा रहे हैं।" तो नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया : "अगर तुम चाहो तो सब्र करो तो तुम्हारे लिये जन्नत होगी और अगर चाहो तो मैं येह आंख तुम्हें लौटा दूं और तुम्हारे लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ करूं तो तुम इस में किसी कमी को न पाओगे ।" अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! बेशक जन्नत बहुत बड़ी जज़ा और बहुत बड़ी अ़ता है मगर मैं अपनी बीवियों से भी मह़ब्बत करता हूं और मुझे इस बात का डर है कि कहीं वोह मुझे येह कह कर ठुकरा न दें कि "येह नाबीना है ।" मैं चाहता हूं कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे येह आंख भी लौटा दें और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मेरे लिये जन्नत का सुवाल भी करें ।" तो रह़मते दो आ़लम, सरवरे कौनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ क़तादा ! मैं ऐसा ही करूंगा ।" फिर सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह आंख अपने दस्ते मुबारक में पकड़ी और उसे उस की जगह पर लगा दिया तो वोह आंख पहले से बेहतर और ख़ूब सूरत हो गई और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उन के लिये जन्नत की दुआ़ फ़रमाई ।

जब उन के बेटे, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के ज़मानए ख़िलाफ़त में उन के पास ह़ाज़िर हुए तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने उन से पूछा ऐ जवान ! तुम कौन हो ? तो उन्हों ने जवाब दिया :

www.dawateislami.net

اَنَا ابْنُ الَّذِیْ سَالَتْ عَلَی الْخَدِّ عَیْنُہٗ　　فَرُدَّتْ بِکَفِّ الْمُصْطَفٰی اَحْسَنَ الرَّدِّ

فَعَادَتْ کَمَا کَانَتْ بِاَحْسَنِ حَالِھَا　　فَیَا حُسْنَ مَاعَیْنٍ وَیَا حُسْنَ مَارَدِّ

तरजमा : (1) मैं उस साहिब का फ़रज़न्द हूं जिन की आंख रुख़्सार पर बह गई तो दस्ते मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे बेहतरीन अन्दाज़ से उस के मक़ाम पर लौटा दिया।

(2) पस वोह आंख पहले से कहीं ज़ियादा अच्छी हालत में आ गई, पस येह आंख और आंख लौटाने वाले क्या ही ख़ूब थे।

तो हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر ने फ़रमाया : "वसीले के ज़रीए हम तक पहुंचने वालों को चाहिये कि इन्ही जैसे लोगों के वसीले से आया करें।"

(الاستیعاب قتادۃ بن النعمان، باب حرف القاف، ج ۳، ص ۳۳۸)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

ताइबीन और सालिहीन की अ़लामात

प्यारे इस्लामी भाइयो !

तौबा करने वाले तन्हाई पाने के लिये वीरान मक़ामात की त़रफ़ इस त़रह़ भागते हैं जिस त़रह़ ख़ौफ़ज़दा इन्सान दारुल अमान (या'नी अम्न वाली जगह) की त़रफ़ भागता है । येह लोग वक़्ते सह़र में आंसू बहा कर सुकून ह़ासिल करते हैं । सज्दों ने इन की पेशानियों पर निशाने मा'रिफ़त खींच दिये । येह लोग सारी सारी रात इ़बादत में मसरूफ़ रहते हैं फिर जब सह़र फूटती है तो इन की आंखों से अश्कों के धारे बह निकलते हैं । फिर जब तुलूए़ फ़ज्र होती है तो येह मुशा-हदात में खो जाते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बड़ाई बयान करते हैं ।

मैं इन चमक्ते सितारों, पुख़्ता इरादे रखने वालों और जवानों पर क़ुरबान जाऊं । (येह हमें सदा देते हैं कि) तन्हाई इख़्तियार करो, आख़िरत में हम तुम्हारे पड़ोसी बनेंगे । हम ने माल व अस्बाब, बीवी बच्चे और वत़न छोड़ दिये, नफ़्सानी ख़्वाहिशात छोड़ दी हैं । हम ने फ़ानी दुन्या वीरान कर दी है, अब येह एक अ़र्से से हमारी तलाश में है मगर हम ने इसे ऐसी त़लाक़ दे दी है जिस में रुजूअ़ मुम्किन नहीं । घर और घर वालों को ख़ुद से जुदा कर दिया और मह़ब्बते ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ का जाम पी लिया । काश ! हमें इस के कुछ घूंट और मिल जाएं ।

येह ह़ज़रात दिन में रोज़ा रखते हैं, दिल को तक़्वा से आबाद रखते हैं और ज़बान को ज़िक्र से मा'मूर रखते हैं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब पाने के लिये एक दूसरे से सब्क़त ले जाना चाहते हैं ।

www.dawateislami.net

इस तगो दौ में किसी की आहें निकल जाती हैं, कोई मदहोश हो जाता है, कोई शौक़ में दीवाना हो कर मह़ब्बत में मु-तह़य्यिर हो जाता है, किसी पर वज्द ग़ालिब आ जाता है तो वोह प्यास की वज्ह से बेहोश हो कर गिर पड़ता है। ख़ौफ़ ने इन को बेह़ाल और शब बेदारी ने लाग़र कर रखा है। हर दिन इन्हें नई बेचैनी लाह़िक़ होती है। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की याद ने इन से वत़न छुड़ा दिया है। येह लोग तिलावते क़ुरआन करते वक़्त उस में ग़ौर करते हैं। जब येह तवक्कुल के द-रजात पर फ़ाइज़ हुए तो इन की कमर झुक गई, ख़्वाहिशाते नफ़्सानी को बेच कर येह तक़्दीर के फ़ैसले पर राज़ी हो गए। ख़ुश आ-मदीद ऐसे बहादुरों को जिन के पहलू बिस्तरों से जुदा रहते हैं और जो ग़मगीन लहजे में क़ुरआन पढ़ते हैं जब ख़ौफ़ इन पर ग़ालिब हुवा तो येह जहन्नम के ख़ौफ़ से बेहोश हो गए।

इन में से बा'ज़ ने ख़ालिस जामे मह़ब्बत पिया तो उन की फ़िक्र में इज़ाफ़ा हो गया। और कुछ का शौक़ बढ़ा तो उन्हों ने शौक़ के बहुत से रूप देखे। बहुत सों ने अपने घर वीरान कर लिये और बहुत से औलाद से दूर हो गए। तुम उन को जंगलात और वीरानों में मदहोशी के आ़लम में पाओगे। उन के दिल ख़ौफ़ से पुर होंगे जब कि ज़ाहिर ग़म व अलम से मा'मूर होगा और वोह ज़बाने ह़ाल से कहते होंगे कि "हमें ज़िन्दगी का न कोई ग़म है न कभी होगा।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के लिये ह़िजाबात उठा दिये और उन के सरों पर विलायत का ताज सजा दिया और उन की मजलिसों को जल्वए ह़क़ की ख़ुशबू से मुअ़त्तर कर दिया।

www.dawateislami.net

ऐ फु-क़रा की जमाअ़त ! बारगाहे उल्फ़त में ह़ाज़िरी देने में सब्क़त करो और इन लोगों की क़ुर्बत इख़्तियार कर लो, इन की गुफ़्त-गू से सुरूर ह़ासिल करो इन के मुख़्तलिफ़ अह़वाल का मुशा-हदा करो दुन्या ही में मह़बूब का जल्वा पा लोगे ।

ऐ नौ जवानो ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के उन मुक़र्रब बन्दों की ज़िन्दगी कितनी पाकीज़ा है जिन्हों ने इस शराबे मह़ब्बत को पिया और इस की कैफ़िय्यत को पोशीदा रखा । तुम उन लोगों को इश्क़, वज्दानियत, ख़ौफ़ व उम्मीद और ह़ैरानी के आ़लम में पाओगे क्यूं कि उन के मह़बूब ने उन के दिलों पर तजल्ली फ़रमा कर उन्हें दुन्या की त़रफ़ मु-तवज्जेह होने से रोक दिया और उन पर मेह्रबानी फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया : "ऐ मेरे बन्दो ! तुम पर कोई ख़ौफ़ नहीं आज तुम अमान में हो तुम ने मेरी ख़ात़िर जो मुश्किलात बरदाश्त की हैं मैं उन की क़द्र जानता हूं, कितनी आंखें जाग रही हैं और कितने दिल शौक़ से बे क़रार हैं । जल्द ही अपना दीदार कराऊंगा और तुम ऐसी ने'मतें पाओगे जिस का ख़याल किसी इन्सान के दिल में न आया और तुम्हें अपनी रिज़ा से नवाज़ूंगा, तुम्हारे लिये जन्नत में मह़फ़िलें सजाऊंगा और तौह़ीद की ख़ालिस मय पिलाऊंगा क्यूं कि मैं ह़न्नान व मन्नान हूं ।"

सुनो सुनो प्यारे इस्लामी भाइयो ! शौक़ रखने वाले कहां हैं शराबे मह़ब्बत तो यहां है और मह़ब्बत के पियाले भरे हुए हैं ।

ऐ ना फ़रमानी में उ़म्र गंवा देने वाले ! तू नेक और बर्गुज़ीदा बन्दों में कैसे शामिल हो सकता है वक़्त बदल जाने से पहले ही इत़ाअ़त में सब्क़त ले जा, वरना पीछे रह जाने की सूरत

www.dawateislami.net

में बहुत नुक़्सान उठाएगा, अपने फ़ाएदे के लिये काम कर और बे जा बहाने छोड़ दे, जो तुझे मलामत करे उस पर तवज्जोह न दे और जो शिकायत करे उस की बात न सुन और जो तुझे नसीहत करे उस की इताअत कर, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

فَمَنْ اُوْتِیَ کِتٰبَهٗ بِیَمِیْنِهٖ فَاُولٰٓئِکَ یَقْرَءُوْنَ کِتٰبَهُمْ وَلَا یُظْلَمُوْنَ فَتِیْلًا ۝ وَمَنْ کَانَ فِیْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰی فَهُوَ فِی الْاٰخِرَةِ اَعْمٰی وَاَضَلُّ سَبِیْلًا ۝
(پ۱۵،الاسراء:۷۱-۷۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो जो अपना नामा (आ'माल) दाहने हाथ में दिया गया येह लोग अपना नामा (आ'माल) पढ़ेंगे और तागे भर इन का हक़ न दबाया जाएगा। और जो इस ज़िन्दगी में अन्धा हो वोह आख़िरत में अन्धा है और और भी ज़ियादा गुमराह।

एक यहूदन का क़बूले इस्लाम :

एक मर्तबा नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان के झुरमट में तशरीफ़ फरमा थे कि एक यहूदी औरत आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में रोती हुई हाज़िर हुई और येह अश्आर पढ़ने लगी :

بِاَبِیْ اَفْدِیْکَ یَانُوْرَ الْفَلَکِ ... لَیْتَ شِعْرِیْ اَیُّ شَیْءٍ قَتَلَکَ
غِبْتَ عَنِّیْ غَیْبَةً مُّوْحِشَةً ... اَتُرٰی ذِئْبٌ یَهُوْدِیٌّ اَکَلَکَ
اِنْ تَکُنْ مَیْتًا فَمَا اَسْرَعَ مَا ... کَانَ فِیْ اَمْرِ اللَّیَالِیْ اَجَلَکَ
اَوْ تَکُنْ حَیًّا فَلَا بُدَّ لِمَنْ ... عَاشَ اَنْ یَّرْجِعَ مِنْ حَیْثُ سَلَکَ

www.dawateislami.net

तरजमा : (1) ऐ मेरे चांद (या'नी मेरे बेटे) मेरा बाप तुम पर फ़िदा, काश ! मुझे तेरे क़ातिल का इल्म होता।

(2) तेरा मुझ से यूं ओझल होना वहशत नाक है, क्या तुझे यहूदी भेड़िया खा गया है।

(3) अगर तू फ़ौत हो चुका है तो रातों रात तेरा येह मर जाना किस क़दर जल्द हुवा है।

(4) अगर तू ज़िन्दा है तो तुझ पर लाज़िम है कि जहां से चला था जीते जी वहीं पलट आ।

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से पूछा : "ऐ औरत ! तुझे क्या सदमा पहुंचा है ?" अ़र्ज़ करने लगी : "या मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरा बच्चा मेरे सामने खेल रहा था कि अचानक ग़ाइब हो गया और उस के बिग़ैर मेरा घर वीरान हो गया है।"

अल्लाह के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे ज़रीए तुम्हारे बच्चे को लौटा दे तो क्या तुम मुझ पर ईमान ले आओगी ?" औरत बोली : "जी हां ! मुझे अम्बियाए किराम हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम, हज़रते सय्यिदुना इस्हाक़ और हज़रते सय्यिदुना या'कूब عَلَيْهِمُ السَّلَام के हक़ होने की क़सम ! मैं ज़रूर ईमान ले आऊंगी।"

रहमतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल

www.dawateislami.net

ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उठे और दो रक्अ़तें अदा फ़रमाई फिर देर तक दुआ़ मांगते रहे । जब दुआ़ मुकम्मल हुई तो बच्चा आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने मौजूद था । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बच्चे से पूछा कि "तू कहां था ?" बोला : "मैं अपनी मां के सामने खेल रहा था कि अचानक (इफ़्रीत नामी) एक काफ़िर जिन्न मेरे सामने आया और मुझे उठा कर समुन्दर की त़रफ़ ले गया । जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक मोमिन जिन्न को उस पर मुसल्लत़ कर दिया जो जसामत में उस से बड़ा और त़ाक़त वर था । उस ने मुझे काफ़िर जिन्न से छीन कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पहुंचा दिया और अब मैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने ह़ाज़िर हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर रह़मत नाज़िल फ़रमाए ।" वोह औ़रत येह वाक़िआ़ सुनते ही कलिमए शहादत पढ़ कर मुसल्मान हो गई ।

﴿अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم﴾

www.dawateislami.net

......ह़दीसे क़ुदसी......

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

ऐ इब्ने आदम ! तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जो मौत पर यक़ीन रखता है फिर भी ख़ुश होता है।

❁...... तअ़ज्जुब है उस पर जो ह़िसाबो किताब पर यक़ीन रखता है फिर भी माल जम्अ़ करने में मसरूफ़ है।

❁...... तअ़ज्जुब है उस पर जो क़ब्र पर यक़ीन रखने के बा वुजूद हंसता है।

❁...... तअ़ज्जुब है उस पर जिसे आख़िरत पर यक़ीन है फिर भी पुर सुकून है।

❁...... तअ़ज्जुब है उस पर जो दुन्या (की ह़क़ीक़त को जानता) और उस के ज़वाल पर यक़ीन रखता है फिर भी इस पर मुत़्मइन है।

❁...... तअ़ज्जुब है उस पर जो गुफ़्त–गू तो आ़लिमों जैसी करता है लेकिन उस का दिल जाहिलों जैसा है।

❁...... तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जो पानी के ज़रीए़ पाकी तो ह़ासिल करता है मगर उस का दिल आलूदा है।

❁...... तअ़ज्जुब है उस पर जो लोगों के उ़यूब तलाश करने में तो मसरूफ़ रहता है लेकिन अपने उ़यूब से ग़ाफ़िल है।

❁...... तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जो जानता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे हर अ़मल से बा ख़बर है फिर भी उस की ना फ़रमानी करता है।

❁...... तअ़ज्जुब है उस पर जो जानता है कि उसे अकेले मरना, अकेले क़ब्र में दाख़िल होना और अकेले ही ह़िसाब देना है फिर भी लोगों से उन्सियत रखता है।

(ऐ इब्ने आदम ! सुन !) मैं ही मा'बूदे ह़क़ीक़ी हूं और मुह़म्मद मेरे ख़ास बन्दे और रसूल हैं।

(مجموعة رسائل الامام الغزالی،المواعظ فی الاحادیث القدسیة،ص٥٦٥)

www.dawateislami.net

﴾......म-दनी इन्क़िलाब......﴿

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की ख़ुशनूदी के हुसूल और बा किरदार मुसल्मान बनने के लिये "**दा'वते इस्लामी**" के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना से "**म-दनी इन्आ़मात**" नामी रिसाला ह़ासिल कर के इस के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश कीजिये। और अपने अपने शहरों में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की बहारें लूटिये। **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के लिये बे शुमार म-दनी क़ाफ़िले शह्र ब शह्र, गाउं ब गाउं सफ़र करते रहते हैं, आप भी सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार फ़रमा कर अपनी आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा करें। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप अपनी ज़िन्दगी में ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर "म-दनी इन्क़िलाब" बरपा होता देखेंगे।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो !

﴾.......ता'रीफ़ और सआ़दत......﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बैज़ावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 685 हि.) इर्शाद फ़रमाते हैं : "जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी करता है दुन्या में उस की ता'रीफ़ें होती हैं और आख़िरत में सआ़दत मन्दी से सरफ़राज़ होगा।"

(تفسیر بیضاوی،پ۲۲،الاحزاب،تحت الایۃ:۷۱،ج۴،ص۳۸۸)

www.dawateislami.net

ज़िना का अन्जाम

प्यारे इस्लामी भाइयो !

याद रखो कि ज़िना कबीरा गुनाह है और ज़ानी दुन्या व आख़िरत में बद बख़्त है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी पाक किताब में मु-तअ़द्दद मक़ामात पर इस से मुमा-न-अ़त फ़रमाई है। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰۤى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَسَآءَ سَبِيْلًا ٥ (پ۱۵، بنی اسرائیل:۳۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बदकारी के पास न जाओ बेशक वोह बे ह़याई है और बहुत बुरी राह ।

एक और जगह इर्शाद होता है :

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ٥ اِلَّا عَلٰۤى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ٥ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ٥ (پ۱۸، المؤمنون:۵۔۶۔۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करते हैं मगर अपनी बीबियों या शर-ई बांदियों पर जो उन के हाथ की मिल्क हैं कि उन पर कोई मलामत नहीं तो जो इन दो के सिवा कुछ और चाहे वोही ह़द से बढ़ने वाले हैं।

ज़िनाकार मोमिन नहीं रहता :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : "ज़ानी जब ज़िना करता है तो मोमिन नहीं रहता ।" या'नी ज़ानी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से दूर और उस के अ़ज़ाब का ह़क़दार हो जाता है।

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان نقصان الایمان.....الخ، رقم ۵۷، ص ۴۸)

www.dawateislami.net

ज़िना की इजाज़त मांगने वाला नौ जवान :

एक नौ जवान ने रह़मतुल्लिलल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे ज़िना की इजाज़त देते हैं ?" इस पर वहां मौजूद सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने उस नौ जवान को डांटा तो हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इसे छोड़ दो।" फिर उस नौ जवान से फ़रमाया : "मेरे क़रीब आ जाओ।" तो वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब ह़ाज़िर हो गया, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से पूछा : "तुम इस बात को पसन्द करते हो कि कोई तुम्हारी मां के साथ ऐसा काम करे ?" उस ने अ़र्ज़ किया : "मैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कुरबान जाऊं यक़ीनन मैं इस बात को पसन्द नहीं करता।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इसी त़रह़ लोग भी येह पसन्द नहीं करते कि उन की मां के साथ कोई ऐसा काम करे।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से पूछा : "क्या तुम अपनी बेटी के लिये येह बात पसन्द करते हो ?" उस ने अ़र्ज़ किया : "नहीं।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इसी त़रह़ लोग भी अपनी बेटियों के मुआ़-मले में येह बात पसन्द नहीं करते।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस की बहन, ख़ाला और फूफी के बारे में येही सुवाल किया तो वोह इन्कार करता रहा और आप

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते रहे : "इसी त़रह़ लोग भी येह बात पसन्द नहीं करते।"

फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक उस नौ जवान के सीने पर रख कर दुआ़ फ़रमाई : "اَللّٰھُمَّ طَھِّرْ قَلْبَهٗ وَاغْفِرْ ذَنْبَهٗ وَحَصِّنْ فَرْجَهٗ" या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस के दिल को पाक फ़रमा, इस का गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा और इस की शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त फ़रमा।" इस के बा'द येह नौ जवान ज़िना को सख़्त ना पसन्द करने लग गया। (المعجم الکبیر، رقم ۷۶۷۹، ج۸، ص ۱۶۲۔۱۶۳)

शैत़ान का लश्कर :

मन्क़ूल है कि : "जब औ़रत को पैदा किया गया तो इब्लीस ने उस से कहा : "तू मेरा आधा लश्कर है, तू मेरी राज़गाह है, तू मेरा ऐसा तीर है कि जिसे मैं जब भी चलाऊंगा निशाने पर लगेगा।"

(اتحاف السادۃ المتقین، کتاب کسر الشھوتین، باب القول فی شھوۃ الفرج، ج۹، ص ۹۲)

इस लिये प्यारे इस्लामी भाई ! (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए) शैत़ान के तीरों से बचते रहो।

ज़ानी पर ला'नत बरसती है :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे पाक है : "ज़िना कबीरा गुनाहों में से बहुत बड़ा गुनाह है और ज़ानी पर क़ियामत तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, मलाएका और तमाम इन्सानों की ला'नत बरसती रहेगी और अगर वोह तौबा करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेगा।"

(رواہ النسائی طرفہ الاخیر فی السنن، کتاب قطع السارق، باب تعظیم السرقۃ، رقم ۴۸۷۶، ص ۲۴۰۳،)

www.dawateislami.net

मोमिन और मुनाफ़िक़ की पहचान :

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना, शहन्शाहे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मोमिन की अ़लामत येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नमाज़ और रोज़े में उस का दिल लगा दे और मुनाफ़िक़ की अ़लामत येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के पेट और शर्मगाह की तस्कीन को उस की ख़्वाहिश बना दे।"

तंगदस्ती का सबब :

अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ड़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ज़िना तंगदस्ती पैदा करता है और चेहरे का नूर ख़त्म कर देता है।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : " मैं ने अ़ह्द कर रखा है कि मैं ज़ानी को तंगदस्त कर दूंगा अगर्चे कुछ अ़र्से बा'द सही।"

(کنز العمال، کتاب الحدود، الباب الثانی فی انواع الحدود، رقم ۱۳۰۱۸، ج۵، ص۱۲۶)

यक़ीनन ज़िना माल को ख़त्म कर देता है और चेहरे का नूर मिटा देता है और ज़ानी को हमेशा के लिये जहन्नम का ह़क़दार बना देता है।

शिर्क के बा'द सब से बड़ा गुनाह :

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से फ़रमाया : "जब बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर होगा तो शिर्क के बा'द उस का कोई गुनाह ज़िना से बढ़ कर न होगा और इसी त़रह़ वोह शख़्स जो अपने नुत़्फ़े को ह़राम रेह़्म में रखता है वोह भी ऐसा ही है (या'नी उस

www.dawateislami.net

का गुनाह भी शिर्क के बा'द सब से बड़ा होगा) । क़ियामत के दिन ज़ानी की शर्मगाह से ऐसी पीप निकलेगी कि अगर उस में से एक क़त़रा सत़्हे ज़मीन पर डाल दिया जाए तो उस की बू की वज्ह से सारी दुन्या वालों का जीना दूभर हो जाए।''

(کنز العمال، کتاب الحدود، الباب الثانی فی الوداع الحدود، رقم ۱۲۹۹۰، ج ۵، ص ۱۲۵، بتصرفٍ ''ماذنب بعد الورک اعظم عند اللہ من نطفۃ وضعھا رجل فی رحم لاتحل لہ)

जहन्नम में जलने का सबब :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे पाक है : ''ज़िना से बचते रहो क्यूं कि येह जिस्म की ताज़गी को ख़त्म करता है और त़वील मोह़ताजी का सबब है और आख़िरत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी, ह़िसाब की सख़्ती और हमेशा के लिये जहन्नम में जलने का सबब है।''

(شعب الایمان، باب فی تحریم الفروج، رقم ۵۴۷۵، ج ۴، ص ۳۷۹)

चन्द अश्आर

يَا مَنْ عَصَى اللّٰهَ فِي الشَّبَابِ وَقَدْ — اَدْرَكَهُ الشَّيْبُ رَاقِبِ اللّٰهَ

صُحُفُكَ بِالسَّيِّئَاتِ قَدْ مُلِئَتْ — بِاَيِّ وَجْهٍ تَرَاكَ تَقْرَاُهَا

اَعْدِدْ جَوَابًا اِذَا سُئِلْتَ غَدًا — وَقَرَّبَ النَّارَ مِنْكَ مَوْلَاهَا

يَا مَعْشَرَ الْمُسْلِمِيْنَ كَمْ رَجُلٍ — تَلُوْمُهُ النَّارُ حِيْنَ يَصْلَاهَا

तरजमा : (1) ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में जवानी गुज़ारने वाले, तेरा बुढ़ापा आ चुका अब तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक़ूक़ की पासदारी कर ले।

(2) तेरा आ'माल नामा गुनाहों से भर चुका है इस गुनाहों से भरे नामए आ'माल को कैसे पढ़ेगा।

www.dawateislami.net

(3) कल क़ियामत में जब सुवाल किये जाएंगे और मौला (क़ह्हार) عَزَّوَجَلَّ जहन्नम को तुझ से क़रीब कर देगा (उस वक़्त के लिये) जवाबात की तय्यारी कर ले।

(4) ऐ गुरौहे मुस्लिमीन! बहुत से लोग ऐसे होंगे जब जहन्नम में दाख़िल होंगे तो वोह उन्हें मलामत करती होगी।

जहन्नमी ताबूत :

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना, शहन्शाहे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "अपने बन्दे या बन्दी को ज़िना करते देख कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को सब से ज़ियादा गै़रत आती है। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम! अगर तुम वोह बातें जान लो जिन्हें मैं जानता हूं तो कम हंसो और ज़ियादा रोओगे, सुन लो! कि जहन्नम में आग के ताबूत में कुछ लोग क़ैद होंगे कि जब वोह राहत मांगेंगे तो उन के लिये ताबूत खोल दिये जाएंगे और जब उन के शो'ले जहन्नमियों तक पहुंचेंगे तो वोह ब-यक ज़बान फ़रियाद करते हुए कहेंगे : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ! इन ताबूत वालों पर ला'नत फ़रमा येह वोह लोग हैं जो औ़रतों की शर्मगाहों पर ह़राम त़रीक़े से क़ब्ज़ा करते थे।"

(صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب الغیرۃ، رقم ۵۲۲۱، ج ۳، ص ۴۶۹، مختصراً)

जन्नत में दाख़िले से मह़रूम :

अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जब जन्नत को पैदा फ़रमाया तो उस से फ़रमाया : "कलाम कर।" तो वोह बोली : "जो मुझ में दाख़िल होगा वोह सआ़दत मन्द है।" तो

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "मुझे अपनी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! तुझ में आठ क़िस्म के लोग दाख़िल न होंगे : शराब का आ़दी, ज़िना पर इसरार करने वाला, चुग़ुल ख़ोर, दय्यूस, (ज़ालिम) सिपाही, हीजड़ा और रिश्तेदारी तोड़ने वाला और वोह शख़्स जो ख़ुदा की क़सम खा कर कहता है कि फ़ुलां काम ज़रूर करूंगा फिर वोह काम नहीं करता ।"

(اتحاف السادة المتقين، کتاب آفات اللسان، ج۹، ص۳۴۵۔۳۴۶)

ज़िना पर इसरार करने वाले से मुराद हमेशा ज़िना करता रहने वाला नहीं, इसी त़रह़ शराब के आ़दी से मुराद येह नहीं जो हमेशा शराब पीता रहे बल्कि मुराद येह है कि जब उसे शराब मुयस्सर हो तो वोह पी ले और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ की वजह से शराब पीने से बाज़ न आए इसी त़रह़ जब उसे ज़िना का मौक़अ़ मिले तो इस से तौबा न करे और न ही अपने नफ़्स को इस बुरी ख़्वाहिश की तक्मील से रोके । बेशक ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम ही है ।

निकाह़ की पेशकश :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا अपने बच्चों से फ़रमाया करते थे : "जब तुम निकाह़ करना चाहो तो तुम्हारा निकाह़ करा दूंगा क्यूं कि बन्दा जब ज़िना करता है तो उस के दिल से ईमान निकल जाता है और उस का ईमान बाक़ी नहीं रहता ।"

ज़िना की इब्तिदा और इन्तिहा :

ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान ह़कीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बेटे से फ़रमाया : "बेटा ! ज़िना से बच कर रहना क्यूं कि इस की इब्तिदा ख़ौफ़ और इन्तिहा नदामत है और इस का अन्जाम जहन्नम की वादी आसाम है ।"

www.dawateislami.net

अश्आर

يَامَنْ خَلَا بِمَعَاصِي اللّٰهِ فِي الظُّلَمِ فِي اللَّوْحِ يُكْتَبُ فِعْلُ السُّوْءِ بِالْقَلَمِ

بِهَا خَلَوْتَ وَعَيْنُ اللّٰهِ نَاظِرَةٌ وَاَنْتَ بِالْاِثْمِ مِنْهُ غَيْرُ مُكْتَتِمِ

فَهَلْ اَمِنْتَ مِنَ الْمَوْلٰى عُقُوْبَتَهُ يَامَنْ عَصَى اللّٰهَ بَعْدَ الشَّيْبِ وَالْهَرَمِ

तरजमा : (1) ऐ वोह शख़्स कि अंधेरे में छुप कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानियां करता है, क़-लमे क़ुदरत से नामए आ'माल में बुरा अ़मल लिखा जा रहा है।

(2) ख़ल्वतें ना फ़रमानियों में गुज़ार रहा है ह़ालां कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात देख रही है, तू गुनाह करते वक़्त उस से छुप नहीं सकता।

(3) ऐ जवानी और बुढ़ापा गुज़ारने के बा'द भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करने वाले ! क्या तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से बे ख़ौफ़ हो गया है।

ज़िना से बचने वाला :

बनी इस्राईल के एक शख़्स ने किसी दूसरे शह्र की औ़रत से निकाह़ किया और उसे अपने पास बुलाने के लिये अपने क़ाबिले ए'तिमाद साथी को उस की त़रफ़ भेजा। तो उस शख़्स को उस के नफ़्स ने वर-ग़लाया और उस ने औ़रत से बदकारी की ख़्वाहिश ज़ाहिर की तो उस वक़्त उस ने अपने नफ़्स को धम्काया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से पनाह मांगी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे नफ़्सानी ख़्वाहिश तर्क करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाई।

शे'र

تَوَقَّ نَفْسَكَ لَا تَأْمَنْ غَوَائِلَهَا فَالنَّفْسُ اَخْبَثُ مِنْ سَبْعِيْنَ شَيْطَانَا

तरजमा : ख़ुद को अपने नफ़्स से बचा, इस की हलाकतों से बे परवाह

www.dawateislami.net

न होना, क्यूं कि नफ़्स सत्तर शयातीन से ज़ियादा ख़तरनाक है।

पचास हज़ार हूरों से निकाह़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है : "बनी इस्राईल में एक इ़बादत गुज़ार शख़्स था जो लोगों से अलग रह कर इ़बादत किया करता था। वोह एक त़वील मुद्दत तक अपनी इ़बादत गाह में इ़बादत करता रहा। बादशाह सुब्ह़ो शाम उस के पास ह़ाज़िर होता और उस से ह़ाजत वग़ैरा पूछता तो वोह जवाब में कहता कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी ह़ाजत को ज़ियादा जानता है।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस की इ़बादत गाह पर अंगूर की एक बेल उगा दी जिस पर रोज़ाना अंगूर लगते। जब उस आ़बिद को प्यास लगती तो वोह अपना हाथ बढ़ाता तो उस से पानी बह निकलता वोह उसे पी लिया करता।"

कुछ अ़र्से के बा'द मग़रिब के वक़्त एक ह़सीनो जमील औ़रत उस आ़बिद के क़रीब से गुज़री तो उसे पुकारने लगी : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! " आ़बिद ने जवाब में लब्बैक कहा तो औ़रत ने पूछा : "क्या तुझे तेरा रब देख रहा है ?" आ़बिद ने कहा : **هُوَ اللّٰہُ الْوَاحِدُ الْقَہَّارُ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ الْعَالِمُ بِمَا فِی الصُّدُوْرِ وَبَاعِثُ مَنْ فِی الْقُبُوْرِ** "या'नी मेरा रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है वोह क़ह्हार है यक्ता है ह़य्यो क़य्यूम है दिलों के भेद जानता है और क़ब्रों में मदफ़ून लोगों को उठाने वाला है।" औ़रत ने कहा : "शह्र मुझ से दूर है (या'नी मुझे पनाह दे दो)।" आ़बिद ने कहा : "ऊपर आ जाओ।" जब वोह औ़रत इ़बादत गाह में दाख़िल हुई तो अपने कपड़े उतार कर बरह्ना हो गई और आ़बिद को दा'वते नज़ारा पेश करने लगी। उस आ़बिद

www.dawateislami.net

ने अपनी निगाहें झुका लीं और औ़रत से कहा : "तू बरबाद हो ! अपना जिस्म ढांप ले।" औ़रत बोली : "अगर आज रात तू मुझ से नफ़्अ़ उठा लेगा तो तेरा क्या जाएगा।" तो उस आ़बिद ने अपने नफ़्स से पूछा : "तू क्या कहता है ?" नफ़्स बोला : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तो इस मौक़अ़ से ज़रूर फ़ाएदा उठाऊंगा।" आ़बिद अपने नफ़्स से बोला : "तेरी हलाकत हो, तू गन्धक का लिबास और आग के अंगारे चाहता है और मेरी इतने अ़र्से की इ़बादत ज़ाएअ़ करना चाहता है, क्या तू नहीं जानता ज़ानी की बख़्शिश न होगी और उसे मुंह के बल जहन्नम में धकेल दिया जाएगा, जहन्नम की आग कभी न बुझेगी और न ही फ़ना होगी मुझे अन्देशा है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ पर ऐसा ग़ज़ब फ़रमाएगा कि फिर कभी तुझ से राज़ी न होगा।"

जब उस के नफ़्स ने उसे मज़ीद वर-ग़लाया तो वोह आ़बिद बोला : "मैं तुझे दुन्या की हलकी आग पर पेश करता हूं अगर तूने इसे बरदाश्त कर लिया तो तुझे आज रात इस औ़रत से नफ़्अ़ उठाने दूंगा।" फिर उस ने चराग़ में तेल भरा और उस की बत्ती को बड़ा कर दिया। वोह औ़रत भी येह सब बातें सुन रही थी और आ़बिद का अ़मल देख रही थी। फिर उस आ़बिद ने अपना हाथ बत्ती पर रखा तो उस ने हाथ न जलाया तो वोह बत्ती से बोला : "क्या हुवा जलाती क्यूं नहीं ?" तो आग ने उस का अंगूठा जला दिया फिर उस की उंग्लियां और फिर उस का हाथ जला डाला। इस पर औ़रत ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और दुन्या से रुख़्सत हो गई।

उस आ़बिद ने उसे उसी के कपड़ों से ढांप दिया। जब सुब्ह़

www.dawateislami.net

हुई तो इब्लीस मल्ऊन ने चीख़ कर लोगों से कहा : "ऐ लोगो ! आ़बिद ने फुलां शख़्स की फुलां बेटी से ज़िना कर के उसे क़त्ल कर दिया है।" तो बादशाह अपने लश्कर और रआ़या के साथ सुवार हो कर आया । जब वोह उस इ़बादत ख़ाने के क़रीब पहुंचा तो चिल्ला कर आ़बिद को पुकारा। आ़बिद ने पुकार का जवाब दिया तो बादशाह ने पूछा कि "फुलां की बेटी कहां है ?" आ़बिद ने कहा : "वोह मेरे पास ही है।" बादशाह बोला : "उसे मेरे पास भेजो ।" आ़बिद बोला : "वोह तो मर चुकी है ।" बादशाह बोला : "जब वोह ज़िना पर राज़ी न हुई तो तूने उसे क़त्ल कर दिया ?" फिर उस औ़रत को वहां से उठा लिया गया और आ़बिद को क़ैदख़ाने में डाल दिया गया। वोह लोग ज़ानी को आरे से काट दिया करते थे। उस आ़बिद का हाथ आस्तीन में छुपा हुवा था वोह उन्हें अपना क़िस्सा नहीं बता रहा था ।

फिर उस के सर पर आरा रख दिया गया और जल्लादों से कहा गया कि आरा चलाओ तो उन्हों ने आरा चला दिया । जब आरा उस के दिमाग़ तक पहुंचा तो उस के मुंह से आह निकली तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام को भेजा : "इस से कहो कि येह कुछ न बोले, मैं इसे देख रहा हूं मेरा अ़र्श उठाने वाले और आस्मानों के मकीन फ़िरिश्ते रो रहे हैं, मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! अगर इस ने दूसरी मर्तबा आह निकाली तो मैं आस्मानों को ज़मीन पर गिरा दूंगा।" तो उस ने मरते दम तक न ही कोई आह निकाली और न ही कोई और बात की जब उस का इन्तिक़ाल हो गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने औ़रत की रूह़ वापस लौटा दी तो वोह

www.dawateislami.net

बोली : "खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह मज़्लूम था इस ने ज़िना नहीं किया था मैं अभी तक कुंवारी ही हूं।" फिर उस ने लोगों को पूरा वाक़िआ़ सुना दिया तो उन्हों ने आ़बिद का हाथ देखा तो वोह औ़रत के बयान के मुताबिक़ जला हुवा था। वोह लोग बोले : "अगर हमें मा'लूम होता तो हम हरगिज़ इसे न चीरते।"

जब वोह आ़बिद दो टुकड़े हो कर ज़मीन पर गिर गया तो वोह औ़रत भी अपनी साबिक़ा ह़ालत में लौट गई। लोगों ने उन दोनों के लिये क़ब्र खोदी तो क़ब्र में मुश्क अ़म्बर और काफ़ूर की खुश्बू पाई। जब वोह जनाज़ा अदा करने के लिये उन के पास पहुंचे तो आस्मान से एक मुनादी ने उन्हें निदा दी : "ठहर जाओ पहले मलाएका को जनाज़ा पढ़ने दो।" फिर उन लोगों ने उन का जनाज़ा पढ़ा और उन्हें दफ़्न कर दिया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की क़ब्र पर यास्मीन का पौदा उगा दिया और उन्हों ने उन की क़ब्र पर एक तख़्ता पड़ा हुवा देखा उस पर लिखा था कि,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से अपने बन्दे और वली के लिये : "मैं ने अपने अ़र्श के नीचे एक मिम्बर नस्ब किया और अपने मलाएका को जम्अ़ किया, जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने खुत़्बा दिया और मैं ने अपने फ़िरिश्तों को गवाह बनाया कि मैं ने फ़िरदौस की पचास हज़ार हूरें तेरे निकाह़ में दीं और मैं अपने फ़रमां बरदार और डरने वाले बन्दों से ऐसे ही पेश आता हूं।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। ﴿ اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "औरत के महासिन की त़रफ़ नज़र करना इब्लीस के ज़हर में बुझे हुए तीरों में से एक तीर है और जो शख़्स ह़राम चीज़ों से अपनी आंखों की हिफ़ाज़त नहीं करता क़ियामत के दिन उस की आंखों में आग की सलाई फैरी जाएगी।"

इबादत की ह़लावत :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे पाक है : "औरत के महासिन की त़रफ़ नज़र करना इब्लीस के ज़हर में बुझे हुए तीरों में से एक तीर है। जो शख़्स अपनी आंखों की हिफ़ाज़त करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसी इबादत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाएगा जिस की ह़लावत वोह अपने दिल में पाएगा।" (المعجم الكبير، رقم ١٠٣٦٢، ج١٠، ص١٧٣)

जहन्नम से आज़ाद होने वाली आंखें :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई : "ऐ मूसा ! मैं ने तीन क़िस्म की आंखों को जहन्नम पर ह़राम फ़रमा दिया है, एक वोह आंख जो राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में पहरा देती है, दूसरी वोह आंख जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीज़ों को देखने से रुक जाती है और तीसरी वोह आंख जो मेरे ख़ौफ़ से रोती है, और आंसू के इलावा हर शै की एक जज़ा है और आंसू की जज़ा रह़मत, मग़्फ़िरत और जन्नत में दाख़िले के इलावा कुछ नहीं।"

www.dawateislami.net

ख़ामोश रहने की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना, शहन्शाहे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को न पाया तो उन के बारे में पूछा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया गया : "वोह बीमार हैं।" तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पैदल चल कर उन के पास तशरीफ़ ले गए। जब उन के पास पहुंचे तो फ़रमाया : "ऐ का'ब ! तुझे मुबारक हो।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से उन की वालिदा ने कहा : "ऐ का'ब ! तुझे जन्नत मुबारक हो।" तो रसूले अकरम, नूरे मजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मु-तअ़ल्लिक क़सम खाने वाली औ़रत कौन है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अ़र्ज़ गुज़ार हुए : "मेरी वालिदा हैं।" फ़रमाया : "ऐ का'ब की मां ! तुझे क्या पता शायद का'ब ने कोई ग़ैर ज़रूरी (फ़ुज़ूल) बात की हो या सुनी हो।"

(تاریخ بغداد، ذکر من اسمہ احمد واسم ابیہ عیسیٰ، رقم ۲۳۳۹، ج ۵، ص ۲۸)

इ़बादत के नव ह़िस्से :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे पाक है : "इ़बादत के दस ह़िस्से हैं जिन में से नव ह़िस्से ख़ामोशी में और एक ह़िस्सा लोगों से दूर भागने में है।"

(مسند الفردوس، باب العین، ج ۳، ص ۸۶، الحدیث ۴۱۶۲، دون لفظہ وجزٔ فی الفرار من الناس)

www.dawateislami.net

"हि़क्मत" में से है कि इ़बादत का नव्वे (90) फ़ी सद हि़स्सा ख़ामोशी में है। ह़ज़रते सय्यि-दतुना मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जब येह मन्नत मानी कि "किसी से बात नहीं करूंगी और अपनी ज़बान को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये रोके रखूंगी।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस उ़म्र के बच्चे की ज़बान खोल दी जिस उ़म्र के बच्चे उ़मूमी तौ़र पर गुफ़्त-गू समझने की सलाहि़यत नहीं रखते और उसे ह़ज़रते सय्यि-दतुना मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की वज्ह से कु़व्वते गोयाई अ़ता फ़रमाई, लिहाज़ा जो शख़्स दुन्या में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये अपनी ज़बान की हि़फ़ाज़त करेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की मौत के वक़्त कलिमए शहादत और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात के वक़्त उस की ज़बान को खोल देगा और जिस ने अपनी ज़बान को मुसल्मानों की इ़ज़्ज़त पामाल करने में मुलव्वस किया और उन की पोशीदा बातों को जानने में लगा रहा **अल्लाह** तआ़ला उस की ज़बान को मौत के वक़्त कलिमए शहादत से रोक देगा। (या'नी उसे कलिमए शहादत पढ़ने की तौफ़ीक़ नहीं मिलेगी।)

ज़ियादा बोलने वाले की ग़-लतियां भी ज़ियादा :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे पाक है : "जिस का कलाम ज़ियादा होगा उस की लग़्ज़िशें ज़ियादा होंगी और जिस की लग़्ज़िशें ज़ियादा होंगी उस के गुनाह ज़ियादा होंगे और जिस के गुनाह ज़ियादा होंगे जहन्नम उस की ज़ियादा ह़क़दार होगी।"

(مجمع الزوائد، کتاب الزہد، باب ماجاء فی الصمت وحفظ اللسان، الحدیث ۱۸۱۷۲، ج۱۰ص۵۴۲)

मुंह में पथ्थर लिये रहते :

इसी लिये अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र

www.dawateislami.net

सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने मुंह मुबारक में पथ्थर रखा करते थे ताकि इस के ज़रीए से अपने आप को (फ़ुज़ूल) गुफ़्त-गू करने से रोक सकें। (المعجم الاوسط من اسمہ محمد، رقم ۶۵۴۱، ج۵، ص ۴۷)

सब से अफ़्ज़ल अ़मल :

हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना, शहन्शाहे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा : "कौन सा अ़मल सब से अफ़्ज़ल है ?" तो नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़बान मुबारक बाहर निकाल कर उस पर अपना हाथ रख दिया। (या'नी ज़बान की हिफ़ाज़त करना सब से अफ़्ज़ल काम है)

(ابن ابی الدنیا، کتاب الصمت وآداب اللسان، باب حفظ اللسان وفضل الصمت، رقم ۸، ج ۷، ص ۳۰۔۳۱)

ज़ियादा गुफ़्त-गू बाइसे हलाकत है :

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबू त़ालिब کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने अपने बेटे सय्यिदुना इमामे हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : "अपनी ज़बान को क़ाबू में रखो क्यूं कि आदमी की हलाकत ज़ियादा गुफ़्त-गू करने में है।"

अपनी ज़बान पर क़ाबू रखो :

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक दिन लोगों से ख़िताब करते हुए इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "ऐ इब्ने आदम ! तुम लोगों को तो नेक काम करने की तरग़ीब देते हो लेकिन अपने आप को छोड़ देते हो, ऐ इब्ने आदम ! तुम लोगों को तो नसीहत करते

www.dawateislami.net

हो जब कि अपने आप को भूल जाते हो, ऐ इब्ने आदम ! तुम मुझे पुकारते हो फिर भी मुझ से दूर भागते हो अगर ऐसा ही है जैसा तुम कह रहे हो तो अपनी ज़बान को क़ाबू में रखो और अपने गुनाहों को याद रखो और अपने घर में बैठे रहो ।''

अ़क़्ल मन्द कौन ?

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के सहीफ़ों में है : ''अ़क़्ल मन्द आदमी पर लाज़िम है कि वोह अपने ज़माने पर नज़र रखने वाला हो, अपने काम से काम रखने वाला हो और अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करने वाला हो ।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب الترغیب فی الصمت، الحدیث ۴۴۰۵، ج ۳، ص ۱۴۷، ولم اجد اسمہ علیہ الصلوۃ والسلام)

दिल की सख़्ती का सबब :

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : ''अगर तू अपने दिल में सख़्ती या अपने बदन में सुस्ती या अपने रिज़्क़ में महरूमी देखे तो यक़ीन कर ले तूने कोई फ़ुज़ूल गुफ़्त-गू की है ।''

सलामती का नुस्ख़ा :

हज़रते सय्यिदुना लुक़्मान हकीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए फ़रमाया कि ''बेटा ! जो रहम करता है उस पर रहम किया जाता है और जो ख़ामोश रहता है वोह सलामत रहता है और जो अच्छा काम करता है वोह ग़नीमत पाता है और जो बुरा काम करता है वोह गुनहगार होता है और जो अपनी ज़बान को क़ाबू में नहीं रखता वोह नादिम होता है ।''

www.dawateislami.net

चन्द अश्आर

اِحْفَظْ لِسَانَکَ اَیُّھَا الْاِنْسَانُ   لَایَقْتُلَنَّکَ اِنَّہٗ ثُعْبَانُ

کَمْ فِی الْمَقَابِرِ مِنْ قَتِیْلِ لِسَانِہٖ   کَانَتْ تَھَابُ لِقَائَہُ الشُّجْعَانُ

तरजमा : (1) ऐ इन्सान ! अपनी ज़बान की निगह्बानी कर, येह कहीं तुझे हलाकत में न डाल दे, बेशक येह अज़्दहा (बड़ा सांप) है।

(2) अपनी ज़बान की हलाकतों से कितने लोग मर कर क़ब्रों में मदफ़ून हैं, और अब (क़ब्र के) ख़तरनाक सांप इन को डरा रहे हैं।

जिस्म के आ'ज़ा की फ़रियाद :

मन्क़ूल है कि रोज़ाना सुब्ह़ को तमाम आ'ज़ा ज़बान से कहते हैं : ''तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तू सीधी रहना क्यूं कि अगर तू सीधी रहेगी तो हम भी सीधे रहेंगे और अगर तू टेढ़ी हो गई तो हम भी टेढ़े हो जाएंगे।''

(جامع ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی حفظ اللسان، رقم ۲۴۱۵، ج ۴، ص ۱۸۳ بلفظ اذا اصبح ابن آدم)

ज़बान को क़ैद कर लो :

बा'ज़ हु-कमा का कहना है : ''ख़ुद को ज़ाएअ़ करने और क़ैद हो जाने से पहले अपनी ज़बान को क़ाबू कर लो क्यूं कि ज़बान से ज़ियादा कोई चीज़ क़ैद की मुस्तह़क़ नहीं कि येह ग़-लतियां ज़ियादा करती और जवाब देने में जल्द बाज़ी से काम लेती है।''

पुर ह़िक्मत गुफ़्त-गू का सबब :

बा'ज़ हु-कमा कहते हैं : ''फ़ुज़ूल कलाम छोड़ देना गुफ़्त-गू में ह़िक्मत पैदा करता है, परेशान नज़री छोड़ देना ख़ुशूअ़ और ख़शिय्यत (या'नी आ़जिज़ी और ख़ौफ़) पैदा करता है, फ़ुज़ूल

www.dawateislami.net

शै खाने से इज्तिनाब करना इबादत में मिठास पैदा करता है, ज़ियादा हंसने को छोड़ना रो'ब पैदा करता है और ह़राम में रग़बत न करना मह़ब्बत पैदा करता है, लोगों के उ़यूब की जुस्त-जू छोड़ना उ़यूब की इस्लाह़ का सबब है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुआ़-मले में वह्म को छोड़ देना शक, शिर्क और निफ़ाक़ को ख़त्म कर देता है।"

अश्आ़र

اَلصَّمْتُ نَفْعٌ وَالْكَلَامُ مُضِرَّةٌ　　فَلَرُبَّ صَمْتٍ فِيْ الْكَلَامِ شِفَاءٌ

فَاِذَا اَرَدْتَّ مِنَ الْكَلَامِ شِفَاءً　　لِسَقَامِ قَلْبِكَ فَالْقُرْآنُ دَوَاءٌ

तरजमा : (1) ख़ामोशी नफ़्अ़ बख़्श और (फ़ुज़ूल) गुफ़्त-गू नुक़्सान देह है, अक्सर गुफ़्त-गू से परहेज़ ही में फ़ाएदा होता है।

(2) जब तू गुफ़्त-गू से अपने क़ल्बी मरज़ की शिफ़ा का इरादा करे तो तिलावते क़ुरआने मजीद इस की बेहतरीन दवा है।

मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो !

याद रखो ! लोगों के उ़यूब की जुस्त-जू और उन की बुराइयों की खोज लगाना बुराइयों और पर्दा दरी का दरवाज़ा खोलता है ह़ालां कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी पाक किताब में इस से मन्अ़ फ़रमाया है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है,

وَلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ (پ۲۶ الحجرات آیت۱۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ऐब न ढूंडो और एक दूसरे की ग़ीबत न करो।

लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और लोगों के उ़यूब को

www.dawateislami.net

छोड़ कर अपने उ़यूब की इस्लाह़ में मश्ग़ूल हो जाओ और मख्खी की त़रह़ न बनो जो जिस्म के किसी सालिम ह़िस्से पर नहीं बैठती बल्कि ज़ख़्म वाले ह़िस्से पर पीप चूसने के लिये बैठती है क्यूं कि जो शख़्स अपने ऐ़ब भूल कर लोगों के उ़यूब तलाश करता है और उन की बुराइयों की खोज में लगा रहता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर ऐसे शख़्स को मुसल्लत़ फ़रमा देता है जो उसे बदनाम करने के लिये उस के उ़यूब तलाश करता है और उस के पोशीदा मुआ़-मलात दूसरों पर ज़ाहिर कर देता है। लिहाज़ा अ़क्ल मन्द और सआ़दत मन्द वोही है जो अपने ऐ़ब पर नज़र रखे और दूसरों के उ़यूब से निगाह फैर ले और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा हर चीज़ से ग़ाफ़िल हो जाए।

पांच बातें :

ह़दीसे क़ुदसी में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से फ़रमाया : "ऐ मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) ! मैं ने तौरात (शरीफ़) को पांच बातों पर ख़त्म किया है अगर तुम इन पर अ़मल करोगे तो ही तौरात का इ़ल्म तुम्हें नफ़्अ़ देगा, ऐ मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) ! इन में से **पहली बात** येह है कि मैं ने तुम्हारे लिये जो रिज़्क़ मुक़र्रर कर दिया है जब तक मेरे ख़ज़ाने में कमी न देखो (जो मु-तसव्वर ही नहीं) उसी ह़िस्से पर भरोसा करो, ऐ मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) ! **दूसरी बात** येह है कि जब तक मेरी ह़ुकूमत को ज़ाइल होते न देख लो (जो मु-तसव्वर ही नहीं) तो दुन्यवी ह़ुक्मरान से न डरो, ऐ मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) ! **तीसरी बात** येह है कि जब तक तुम ख़ुद को ख़िलाफ़े औला से ख़ाली न पाओ किसी के ऐ़ब की टोह में न पड़ो, ऐ मूसा

www.dawateislami.net

(عَلَیْہِ السَّلَام) ! **चौथी बात** येह है कि जब तक तुम्हारी रूह़ तुम्हारे जिस्म में रहे शैत़ान से जंग करना न छोड़ो, ऐ मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) ! **पांचवी बात** येह है कि मेरे इ़ताब से बे ख़ौफ़ मत रहना अगर्चे तुम ख़ुद को जन्नत में पाओ।''

ऐ़ब पर आ़र न दिलाओ :

हु-कमा फ़रमाते हैं : ''ऐ मेरे भाई ! किसी को उस के ऐ़ब पर आ़र न दिलाओ क्यूं कि डर है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे आ़फ़िय्यत दे कर तुम्हें उस में मुब्तला न फ़रमा दे और जिस फ़ासिक़ का फ़िस्क़ ज़ाहिर हो उस की पर्दा पोशी न करो और न ही उस की जो ए'लानिया गुनाह करता हो और अपना गुनाह छुपाता न हो।''

पर्दा पोशी का इन्आ़म :

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना, शहन्शाहे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो शख़्स अपने किसी भाई के पोशीदा मुआ़-मले पर इत्तिलाअ़ पाए फिर उस की पर्दा पोशी करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा।''

(مجمع البحرین، کتاب الحدود، باب الستر علی المسلمین، رقم ۲۴۰۲، ج۲، ص ۳۶۵، وفیہ مؤمن)

परेशानी दूर होने का सबब :

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जो किसी मुसल्मान की लग्ज़िश व ग़-लती मुआ़फ़ करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की लग्ज़िश व ग़-लती मुआ़फ़ फ़रमाएगा।'' (صحیح ابن حبان، کتاب البیوع، باب الاقالۃ، رقم ۵۰۰۸، ج۷، ص ۲۴۳)

www.dawateislami.net

शराबी नौ जवान की तौबा :

इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के पड़ोस में एक शराबी नौ जवान रहता था। इमामे आ'ज़म رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ रात में कुतुब का मुत़ा-लआ़ और कुरआने पाक की तिलावत करने के लिये शब बेदारी फ़रमाते थे। आप رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ और उस शराबी के दरमियान एक दीवार ह़ाइल थी वोह नौ जवान शराब पीता और येह शे'र पढ़ा करता :

سَاُنْشِدُهُمْ اِذَا مَاهُمْ جَفَوْنِیْ　　　اَضَاعُوْنِیْ وَاَیَّ فَتًی اَضَاعُوْا

तरजमा : वोह जब भी मुझ पर ज़ुल्म करते हैं मैं उन से येही कहता हूं : "तुम ने मुझे ज़ाएअ़ कर दिया और अफ़्सोस ! कैसे कड़ियल जवान को ज़ाएअ़ कर दिया।

वोह इस शे'र को दोहराता रहता, रफ़्ता रफ़्ता इमामे आ'ज़म عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللہِ الۡاَکۡرَم उस के इस कलाम से मानूस हो गए। एक दिन इमामे आ'ज़म عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللہِ الۡاَکۡرَم ने उस की आवाज़ न सुनी तो फ़ज्र के लिये जाते वक़्त उस के बारे में मा'लूम किया तो आप رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को बताया गया कि "कोतवाल ने उसे नशे की ह़ालत में पाया तो जेल में डाल दिया।" तो आप رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़ज्र अदा करने के बा'द कोतवाल के घर तशरीफ़ ले गए और उस का दरवाज़ा खट-खटाया और अपने आने की इत्तिलाअ़ की तो कोतवाल फ़ौरन नंगे सर, बरह्ना पा बाहर निकला और आप رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का हाथ चूम कर अ़र्ज़ करने लगा : "या सय्यिदी ! मैं कब से इतना मुअ़ज़्ज़ज़ हो गया कि आप رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को ख़ुद

www.dawateislami.net

चल कर मेरे पास आना पड़ा ?'' तो आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़रमाया : ''मेरे एक पड़ोसी को गुज़श्ता रात क़ैद कर लिया गया है मैं उस के लिये आया हूं।'' कोतवाल बोला : ''या सय्यिदी ! मैं आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को गवाह बनाता हूं कि मैं ने उसे आज़ाद कर दिया और गुज़श्ता रात जितने लोगों को भी क़ैद किया गया मैं सब को आज़ाद कर देता हूं।''

फिर जब इमामे आ'ज़म عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡاَکۡرَم वापस लौटे तो वोह शख़्स आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के साथ था आप उस की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और फ़रमाया : ''ऐ मेरे भाई ! क्या हम ने तुम्हें ज़ाएअ़ किया ?'' और क्या हम ने तुम्हारे इस क़ौल कि ''उन्हों ने मुझे ज़ाएअ़ कर दिया।'' और ''अफ़्सोस कैसे कड़ियल जवान को ज़ाएअ़ कर दिया।'' की रिआ़यत करते हुए हम ने तुम्हारे ह़क़ की पासदारी न की ?'' वोह कहने लगा : ''ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने मुझे ज़ाएअ़ नहीं किया बल्कि मेरी रिआ़यत की, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को पड़ोसियों की जानिब से अच्छी जज़ा दे और मैं आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को गवाह बना कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करता हूं।'' फिर वोह आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की इत्तिबाअ़ करने लगा और मरते दम तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मश्ग़ूल रहा।

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم﴿

www.dawateislami.net

ग़ीबत और चुग़ल ख़ोरी की मज़म्मत

दुन्या व आख़िरत की मक़्बूलिय्यत :

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना, शहन्शाहे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से फ़रमाया की "ऐ अबू हुरैरा ! अगर तुम येह बात पसन्द करते हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या और आख़िरत में तुम्हें मक़्बूल बनाए तो तुम अपनी ज़बान को मुसल्मानों के मुआ़-मलात में बोलने से रोके रखो ।"

ग़ीबत करने वाला रोज़ादार नहीं :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे पाक है : "जो दिन के वक़्त लोगों का गोश्त खाने में लगा रहा उस ने रोज़ा नहीं रखा ।"

(المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الصیام، باب مایؤمر بہ الصائم...الخ، الحدیث ۱۳، ج۲، ص۴۲۳)

सब से ज़ियादा ना पसन्द :

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : "हर ता'नो तश्नीअ़ और ला'नत भेजने वाला शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से ज़ियादा ना पसन्द है ।"

(کتاب الزھد لابن مبارک، باب ماجاء فی الشح، رقم ۶۸۰، ص۲۳۷، عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہ)

फ़िरिश्तों की ला'नत :

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : "जिस ने किसी मुसल्मान को उस के नाम के इ़लावा किसी लफ़्ज़ (या'नी उसे बुरे नाम) से पुकारा उस पर मलाएका ला'नत भेजते हैं।"

(الجامع الصغير، حرف الميم، رقم ٨٦٢٦، ص ٥٢٥)

अनदेखी नेकियां :

अल्लाह के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "बन्दे को क़ियामत के दिन जब उस का आ'माल नामा दिया जाएगा तो वोह उस में ऐसी नेकियां भी देखेगा जो उस ने कभी न की थीं। वोह अ़र्ज़ करेगा : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! येह कहां से आईं ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "तेरी बे ख़बरी में लोगों ने तेरी ग़ीबत की (येह नेकियां उन के ग़ीबत करने की वजह से तुझे मिली हैं।)"

(كنز العمال، كتاب الاخلاق، باب الغيبة الاكمال، رقم ٨٠٤٤، ج ٣، ص ٢٣٦)

रह़मत से मह़रूमी :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : "जिस मजलिस में तीन बातें होती हैं वहां से रह़मत फैर ली जाती है : (1) दुन्या का ज़िक्र (2) हंसी मज़ाक़ (3) लोगों की इ़ज़्ज़त दरी करना।"

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए जान लो कि चुग़ुल ख़ोरी दीन व दुन्या को बरबाद और दिलों को बदल देती है दुश्मनी पैदा करती और ख़ून बहाती और ना इत्तिफ़ाक़ी का बाइ़स बनती है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

وَلَاتُطِعۡ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيۡنٍ ۙ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيۡمٍ ۙ مَّنَّاعٍ لِّلۡخَيۡرِ مُعۡتَدٍ اَثِيۡمٍ ۙ عُتُلٍّۭ بَعۡدَ ذٰلِكَ زَنِيۡمٍ ۙ (پ۲۹، القلم: ۱۰ تا ۱۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हर ऐसे की बात न सुनना जो बड़ा क़स्में खाने वाला ज़लील बहुत ता'ने देने वाला बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला भलाई से बड़ा रोकने वाला ह़द से बढ़ने वाला गुनहगार दुरुश्त ख़ू इस सब पर तुर्रा येह कि उस की अस्ल में ख़ता।

ग़ीबत किसे कहते हैं ?

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना, शहन्शाहे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ग़ीबत के बारे में सुवाल किया गया : "ग़ीबत क्या है ?" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ग़ीबत येह है कि तुम अपने भाई की ग़ैर मौजू-दगी में उस में पाए जाने वाले किसी ऐ़ब का तज़्किरा करो और अगर तुम किसी ऐसे ऐ़ब को उस की त़रफ़ मन्सूब करो जो उस में न हो तो बेशक तुम ने उस पर बोहतान लगा दिया।"

(جامع الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی الغیبۃ، رقم ۱۹۴۱، ج ۳، ص ۳۷۵)

बद तरीन लोग :

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "चुग़ुल ख़ोरी करने वाले और दोस्तों में जुदाई डालने वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बद तरीन लोग हैं।" (المسند للامام احمد بن حنبل، الحدیث ۱۸۰۲۰، ج ۶، ص ۲۹۱)

www.dawateislami.net

चुग़ुल ख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा :

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "चुग़ुल ख़ोर जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।" (صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان غلظ تحریم النمیمۃ، رقم ۱۰۵، ص ۶۶)

चुग़ुल ख़ोरी का वबाल :

अल्लाह महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "जो दो बन्दों के दरमियान चुग़ुल ख़ोरी करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की क़ब्र में एक आग मुसल्लत़ कर देगा जो उसे क़ियामत तक जलाती रहेगी और उस पर एक अज़्दहा मुसल्लत़ फ़रमा देगा जो उस के जहन्नम में दाख़िल होने तक उसे डसता रहेगा।"

(رواہ الکنانی فی تنزیہ الشریعۃ بلفظ: من مشی بالنمیمۃ...الخ، رقم ۱۰۱، ج ۲، ص ۳۱۳)

दुश्मनी करवाने का अन्जाम :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे पाक है : "जिस ने दो शख़्सों के दरमियान दुश्मनी डाली वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले और जिस ने उन में सुल्ह़ कराई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाए।"

चुग़ुल ख़ोर तुम्हारी भी चुग़ली खाता होगा :

किसी दाना का क़ौल है : "चुग़ुल ख़ोरी दिलों में दुश्मनी पैदा करती है और जिस ने तुम्हारी चुग़ली की बेशक उस ने तुम्हें गाली दी और जो तुम्हारे सामने किसी की चुग़ली करता है वोह तुम्हारी भी चुग़ली करता होगा चुग़ुल ख़ोर जिस के सामने चुग़ली

www.dawateislami.net

करता है उस के लिये झूट बोलता है और जिस की चुग़ली करता है उस से बद दियानती करता है ।"

اِحْفَظْ لِسَانَکَ لَا تُؤْذِیْ بِہٖ اَحَدًا ۔ مَنْ قَالَ فِی النَّاسِ عَیْبًا قِیْلَ فِیْہِ بِمِثْلِہٖ

तरजमा : अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त कर, इस के ज़रीए़ किसी को भी तक्लीफ़ न दे, कि जो शख़्स लोगों पर ऐ़ब लगाता है, उस पर भी ऐ़ब लगाए जाते हैं ।

दीहाती औ़रत की नसीह़त :

इमाम अस्मई رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "मैं ने एक दीहाती औ़रत को देखा जो अपने बेटे को नसीह़त करते हुए कह रही थी : "बेटा ! अ़मल की तौफ़ीक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है और मैं तुझे नसीह़त करती हूं कि चुग़ली करने से बचते रहना क्यूं कि येह दो क़बीलों में दुश्मनी डाल देती है, दोस्तों को जुदा कर देती है और लोगों के ऐ़ब की टोह में रहने से बचो कि कहीं तुम भी ऐ़बदार न हो जाओ, इ़बादत में दिखावे और माल ख़र्च करने में बुख़्ल से बचते रहना और दूसरों के अन्जाम से सबक़ ह़ासिल करना और लोगों का जो अ़मल तुम्हें अच्छा लगे उस पर अ़मल करना और उन में जो काम तुम्हें बुरा लगे उस से बचते रहना क्यूं कि आदमी को अपने ऐ़ब नज़र नहीं आते ।" फिर वोह औ़रत ख़ामोश हो गई तो मैं ने कहा कि "ऐ दीहातन ! तुझे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मज़ीद नसीह़त करो ।" उस ने पूछा : "ऐ शहरी ! क्या तुझे एक दीहाती की बातें अच्छी लगी हैं ?" मैं ने कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अच्छी लगी हैं ।" तो वोह बोली कि "बेटा ! धोका देही से बचते रहना क्यूं कि तू लोगों से जो मुआ़-मलात करता है धोका

www.dawateislami.net

देना उन में सब से बुरा है। सख़ावत, इ़ल्म, तवाज़ोअ़ और ह़या को अपना लेना और अब मैं तुझे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द करती हूं, तुम पर सलामती हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म करे याद रखो कि ग़ीबत करना ह़ालते इस्लाम में तीस मर्तबा ज़िना करने से भी सख़्त गुनाह है।"

बा'ज़ उ़-लमा رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : "ग़ीबत वुज़ू तोड़ देती है और रोज़ादार का रोज़ा भी ग़ीबत करने से टूट जाता है।" (मगर सह़ीह़ क़ौल येह है कि "ग़ीबत की तो रोज़ा न गया अगर्चे ग़ीबत की वज्ह से रोज़े की नूरानियत जाती रहती है।" बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 5, स. 58)

और बा'ज़ फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : "ग़ीबत हो जाने की सूरत में दोबारा वुज़ू किया जाए।" (या'नी दोबारा वुज़ू करना मुस्तह़ब है। बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 13)

ग़ीबत करने वाले की मिसाल :

मन्क़ूल है : "ग़ीबत करने वाला उस शख़्स की त़रह़ है जिस ने एक मिन्जनीक़ (तोप) नस्ब की हो और उस के ज़रीए अपनी नेकियां दाएं, बाएं और मशरिक़ व मग़रिब की जानिब फेंकने लगे।"

सब से पहले जहन्नम में दाख़िल होने वाला :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई : "क्या तुम पसन्द करते हो कि मैं तुम्हारे दुश्मन के मुक़ाबले में तुम्हारी मदद करूं।" अ़र्ज़ किया : "वोह कैसे ?" फ़रमाया : "तुम्हें लोगों की ग़ीबत से बचा कर (फिर फ़रमाया) ग़ीबत और चुग़ल ख़ोरी से तौबा कर के मरने वाला सब से

www.dawateislami.net

आख़िर में जन्नत में दाख़िल होगा और जो इन दोनों गुनाहों पर इसरार करते हुए मरेगा वोह सब से पहले जहन्नम में दाख़िल होगा।"

दस पसन्दीदा ख़स्लतें :

हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! कौन सा अ़मल सब से अफ़्ज़ल और तेरे नज़्दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा है ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "ऐ सुलैमान ! वोह दस ख़स्लतें हैं उन में से एक येह भी है कि तुम मेरे हर बन्दे का तज़्किरा भलाई ही के साथ करो और न तो किसी की ग़ीबत करो और न किसी की ऐ़बजूई करो।" तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! बक़िय्या सात चीज़ों को मुझ से रोक ले क्यूं कि मुझे इन तीन बातों ही ने कर्ब में मुब्तला कर दिया है।"

(کتاب الزھد لابن مبارک، باب ذکر الانبیاء صلوات علیھم، رقم ۱۷۴، ص ۱۶۱، بتصرف وفیہ داؤد علیہ السلام)

हज़रते सय्यिदुना अ़ता सुलैमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "अ़ज़ाबे क़ब्र के तीन हि़स्से हैं, एक तिहाई अ़ज़ाब पेशाब के सबब, एक तिहाई ग़ीबत के सबब और एक तिहाई चुग़ुल ख़ोरी के सबब होता है।"

इस लिये ऐ मेरे इस्लामी भाई ! इ़ज़्ज़त दरी करने और किसी की उस ऐ़ब पर ग़ीबत करने से बचते रहो जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस में पैदा फ़रमाया है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ज़ियादा जानता है और तुझ से ज़ियादा उस पर क़ादिर है अगर वोह चाहता तो उसे हलाक कर के इन्तिक़ाम ले लेता।

www.dawateislami.net

हिक्मते इलाही عَزَّوَجَلَّ :

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام किसी नहर के क़रीब से गुज़रे तो कुछ बच्चों को उस नहर में खेलते देखा उन के साथ एक नाबीना बच्चा भी था जिसे वोह पानी में ग़ोत़ा दे कर दाएं बाएं भाग जाते और वोह उन्हें तलाश करता रहता मगर काम्याब न होता। ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام उस के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करने लगे फिर आप عَلَیْہِ السَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उस बच्चे की बसारत लौट आने की दुआ़ की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस बच्चे की बीनाई लौटा दी। जब उस ने आंखें खोलीं और बच्चों को देखा तो एक बच्चे को पकड़ कर उसे चिमट गया और पानी में इस क़दर ग़ोत़ा दिया कि वोह मर गया फिर दूसरे को पकड़ा और उसे भी ग़ोते दे कर क़त्ल कर दिया। येह देख कर बाक़ी बच्चे भाग गए। जब ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने येह मुआ़-मला देखा तो बहुत ह़ैरान हुए और अ़र्ज़ की : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! ऐ मेरे आक़ा व मौला ! तू अपनी मख़्लूक़ को ज़ियादा जानने वाला है फिर उस बच्चे को पिछली ह़ालत पर लौटाने और उस के मुआ़-मले की किफ़ायत करने की दुआ़ मांगी।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई : "मैं तुझ से ज़ियादा जानता हूं फिर भी तूने मेरे हुक्म और तदबीर का सामना किया।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام सज्दे में गिर गए।

याद रखो ! इस काएनात में जो काम भी होता है उस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हुक्म और तदबीर कार-फ़रमा होती है।

www.dawateislami.net

बुरी सोह़बत का अन्जाम :

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "जब क़ियामत का दिन आएगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी के लिये मिल कर बैठने वाले और गुनाहों पर एक दूसरे की मदद करने वाले जम्अ़ होंगे। फिर वोह घुटनों के बल खड़े होंगे और एक दूसरे को कुत्तों की त़रह़ काटते और नोचते होंगे, येह वोह बद नसीब होंगे जो बिग़ैर तौबा किये दुन्या से रुख़्सत हुए होंगे।"

मरने वाले की नसीह़त :

फ़क़ीह अबुल ह़सन बिन फ़रह़ून क़ुर्तुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى अपनी किताब "अज़्ज़ाहिर" में फ़रमाते हैं : "मेरे एक चचा थे जिन का 555 हिजरी में शह्र फ़ास में इन्तिक़ाल हो गया था मैं ने उन्हें मरने के बा'द ख़्वाब में देखा कि वोह मेरे घर तशरीफ़ लाए हैं तो मैं उन के लिये खड़ा हुवा और दरवाज़े के क़रीब ही उन से मिला उन्हें सलाम किया फिर वोह घर में दाख़िल हुए और मैं उन के पीछे पीछे दाख़िल हुवा। जब वोह कमरे के अन्दर तशरीफ़ लाए तो दीवार से टेक लगा कर बैठ गए। मैं भी उन के सामने बैठ गया मैं ने उन का बदला हुवा रंग देखा तो पूछा : "चचाजान ! आप को आप के रब عَزَّوَجَلَّ से क्या मिला ?" फ़रमाया : "बेटा ! मेह्रबान से मेह्रबानी के सिवा और क्या मिलता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ग़ीबत के इलावा हर चीज़ में मुझ पर नरमी फ़रमाई, जब से मैं ने दुन्या छोड़ी है अब तक ग़ीबत की वज्ह से क़ैद में हूं, अब तक मेरा येह गुनाह मुआ़फ़ नहीं हुवा, बेटा ! मैं तुम्हें नसीह़त करता हूं कि ग़ीबत और चुग़ल ख़ोरी से बचते रहना क्यूं कि मैं ने बरज़ख़ में ही ग़ीबत

www.dawateislami.net

से ज़ियादा किसी चीज़ पर पकड़ या'नी मुआ-ख़ज़ा होते नहीं देखा येह कह कर वोह मुझ से रुख़्सत हो गए।"

अश्आर

يَمُوتُ كُلُّ الْاَنَامِ طُرًّا مِنْ صَالِحٍ كَانَ اَوْ خَبِيْثٍ

فَمُسْتَرِيْحٌ وَّمُسْتَرَاحٌ مِنْهُ كَمَا جَاءَ فِي الْحَدِيْثِ

तरजमा : (1) हर इन्सान को मरना है ख़्वाह नेक हो या बद।

(2) मरने वाला या तो राहत पाने वाला होगा या लोग (उस की मौत से) राहत पाएंगे जैसा कि हदीसे पाक में है।

ग़ीबत के सबब आ'माल ज़ाएअ़ हो गए :

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन जब बन्दे को लाया जाएगा और उसे आ'माल नामा पकड़ा दिया जाएगा तो वोह उस में अपनी नमाज़ें, रोज़े और दीगर नेक आ'माल न पाएगा तो अ़र्ज़ करेगा : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! येह किसी और का आ'माल नामा है, मैं ने बहुत सी नेकियां की थीं वोह इस में दर्ज नहीं हैं।" तो उस से कहा जाएगा : "तेरा रब عَزَّوَجَلَّ न तो ग़-लती करता है न ही भूलता है तेरे नेक आ'माल लोगों की ग़ीबत करने की वज्ह से ज़ाएअ़ हो गए।"

ऐ मेरे भाई ! ग़ीबत और चुग़ुल ख़ोरी से बचते रहो क्यूं कि येह दोनों गुनाह दीन के लिये नुक़्सान रसां हैं और आ़मिलीन के अ़मल बरबाद कर देते हैं नीज़ मुसल्मानों में अ़दावत डालते हैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी पनाह में रखे।

www.dawateislami.net

ग़ीबत की सज़ा

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : "मुसल्मान के क़त्ल, इस के माल और इस की इ़ज़्ज़त को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़राम क़रार दिया है।"

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب تحریم ظلم المسلم ، رقم ۲۵۶۴، ص ۱۳۸۷)

दिल में ग़ीबत करना भी इसी त़रह़ ह़राम है जिस त़रह़ ज़बान से ह़राम है, मगर जब कि किसी की पहचान के लिये ज़रूरी हो और इस के बिग़ैर पहचानना ना मुम्किन हो।

ग़ीबत की ता'रीफ़ :

मुसन्निफ़े किताब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन जूज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی ने अह़ादीसे मुबा-रका की रोशनी में ग़ीबत की जो ता'रीफ़ बयान फ़रमाई है, वोह येह है : "तू अपने भाई को ऐसी चीज़ के ज़रीए याद करे कि अगर वोह सुन ले या येह बात उसे पहुंचे तो उसे ना गवार गुज़रे अगर्चे तू उस में सच्चा हो ख़्वाह उस की ज़ात में कोई नक़्स बयान करे या उस की अ़क़्ल में या उस के कपड़ों में या उस के फ़े'ल या क़ौल में कोई कमी बयान करे या उस के दीन या उस के घर में कोई नक़्स (ऐ़ब) बयान करे या उस की सुवारी या उस की औलाद, उस के गु़लाम या उस की कनीज़ में कोई ऐ़ब बयान करे या उस से मु-तअ़ल्लिक़ किसी शै का (बुराई के साथ) तज़्किरा करे यहां तक कि तेरा येह कहना कि उस की आस्तीन या दामन लम्बा है सब ग़ीबत में दाख़िल हैं।"

कमज़ोर शख़्स :

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना,

www.dawateislami.net

बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने एक शख़्स का तज़्किरा इस अन्दाज़ में किया गया कि वोह कितना कमज़ोर है तो **अल्लाह** के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम ने उस की ग़ीबत की।" (مسند ابی یعلٰی، مسند ابی هريرة، الحديث ٦١٢٥، ج ٥، ص ٣٦٢)

छोटे क़द वाली :

हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने हज़रते सय्यि-दतुना सफ़िय्या رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की त़रफ़ इशारा कर के उन्हें पस्ता क़द कहा तो सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ आइशा ! तुम ने उस की ग़ीबत कर दी।" अ़र्ज़ किया : "या **रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या इन का क़द छोटा नहीं ?" फ़रमाया : "तूने इस की सब से बुरी चीज़ का तज़्किरा किया।"

ग़ीबत ज़बान ही के ज़रीए नहीं होती बल्कि किसी का तज़्किरा किसी ऐसी चीज़ से करना कि अगर वोह बात शख़्से मज़्कूर तक पहुंचे या वोह ख़ुद इसे सुने तो उसे बुरा लगे ख़्वाह वोह हाथ के ज़रीए हो या पाउं के ज़रीए, इशारे के ज़रीए हो या ह-र-कत के ज़रीए, ता'रीज़ (या'नी इशारों, किनायों) में हो या हिकायत की सूरत में, येह तमाम सूरतें ग़ीबत में दाख़िल हैं, **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और एक दूसरे की ग़ीबत न करो क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे

www.dawateislami.net

भाई का गोश्त खाए तो येह तुम्हें गवारा न होगा। فَكَرِهْتُمُوْهُ ط (پ۲۶،الحجرات:۱۲)

एक और मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया :

وَيۡلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ (پ:۳۰،الهمزة:۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ख़राबी है उस के लिये जो लोगों के मुंह पर ऐ़ब करे पीठ पीछे बदी करे।

इस की तफ़्सीर में एक क़ौल येह है कि इस से मुराद लोगों पर त़ा'नो तश्नीअ़ करने वाला शख़्स है क्यूं कि वोही लोगों का गोश्त खाता है।

नाख़ुनों से चेहरे खुरच्ने वाले :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "मे'राज की रात मेरा गुज़र एक ऐसी क़ौम पर हुवा जो अपने नाख़ुनों से अपने चेहरे नोच रही थी मुझे बताया गया कि येह वोह लोग हैं जो लोगों की ग़ीबतें किया करते थे।"

(رواه ابوداود، كتاب الادب، باب في الغيبة، رقم ۴۸۷۸، ج۴، ص ۳۵۳ بلفظ لما عرج بقوم...الخ)

नेकियां ज़ाएअ़ करने वाली :

अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "आग ख़ुश्क लकड़ियों को इतनी तेज़ी से नहीं जलाती जितनी तेज़ी से ग़ीबत बन्दे की नेकियां ख़त्म कर देती है।"

(ابن ابي الدنيا، كتاب الغيبة والنميمة، باب الغيبة وذمها، رقم ۵۴، ج۴، ص۳۵۶، مفهوماً)

www.dawateislami.net

बा'दे विसाल करामाते औलिया, मज़ार पर चादर चढ़ाने और गुम्बद बनाने का बयान

كَشْفُ النُّوْرِ عَنْ أَصْحَابِ الْقُبُوْرِ

तरजमा बनाम

फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया

मुअल्लिफ़

अ़ल्लामा आ़रिफ़ बिल्लाह, नासिहुल उम्मह, साहिबे करामाते कसीरा इमाम अ़ब्दुल ग़नी बिन इस्माईल ना-बुलुसी दिमश्क़ी ह़-नफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى

अल मु-तवफ़्फ़ा 1143 हि.

मअ़ मुक़द्दमा

फ़ैज़ाने कमालाते औलिया

मु-तर्जिमीन **: म-दनी उ़-लमा**

(शो'बए तराजिमे कुतुब)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना

www.dawateislami.net

नसीह़तों पर मुश्तमिल "अह़ादीसे क़ुदसिय्या" का
एक मुख़्तसर मज्मूआ

اَلْمَوَاعِظُ فِی الْاَحَادِیْثِ الْقُدْسِیَّۃِ

तरजमा बनाम

नसीह़तों के म-दनी फूल ब वसीलए अह़ादीसे रसूल

मुअल्लिफ़
हुज्जतुल इस्लाम इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی

अल मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.

मु-तर्जिमीन : **म-दनी उ़-लमा**
(शो'बए तराजिमे कुतुब)

नाशिर
मक-त-बतुल मदीना

www.dawateislami.net

हुसूले तक़्वा और त़-लबे आख़िरत का जज़्बा बढ़ाने वाली एक तह़रीर

رِسَالَۃُ الْمُذَاکَرَۃ

مع الاخوان المحبین من اهل الخیر والدین

तरजमा बनाम

अच्छे बुरे अ़मल

मुअल्लिफ़ :

शैख़ुल इस्लाम इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन अ़-लवी ह़द्दाद ह़ज़रमी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى

अल मु-तवफ़्फ़ा 1132 हि.

पेशकश : **मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**

(दा'वते इस्लामी)

मु-तर्जिमीन : **म-दनी उ़-लमा** (शो'बए तराजिमे कुतुब)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना

www.dawateislami.net

शुक्र की अहम्मिय्यत और फ़वाइद पर मुश्तमिल 204 रिवायात व ह़िकायात का म-दनी गुलदस्ता

الشكر لله عزوجل

तरजमा बनाम

शुक्र के फ़ज़ाइल

मुअल्लिफ़ :

इमाम अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद क़ु-रशी अल मा'रूफ़ इमाम इब्ने अबिद्दुन्या رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

अल मु-तवफ़्फ़ा 281 हि.

पेशकश **: मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**

(दा'वते इस्लामी)

मु-तर्जिमीन **: म-दनी उ़-लमा** (शो'बए तराजिमे कुतुब)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना

www.dawateislami.net

ख़ामोशी के फ़वाइद

www.dawateislami.net

ख़ामोशी के फ़वाइद

कामिल मुसल्मान कौन ?

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : "कामिल मुसल्मान वोह है जिस की ज़बान और हाथों से दूसरे मुसल्मान मह़फ़ूज़ रहें।"

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان تفاضل الاسلام الخ، رقم ۴۱، ص ۴۱)

मुसल्मान मुसल्मान का भाई है :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मुसल्मान मुसल्मान का भाई है, न उस पर ज़ुल्म करता है और न ही उसे बे यारो मददगार छोड़ता है।"

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب تحریم الظلم، رقم ۲۵۸۰، ص ۱۳۹۴)

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुसल्मान फ़र्दे वाहिद की त़रह़ हैं जब उस के सर में तक्लीफ़ हो तो बुख़ार और बे आरामी में सारा जिस्म उस का शरीक हो जाता है।"

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب تراحم المؤمنین ....الخ، رقم ۲۵۸۶، ص ۱۳۹۶)

सलामती का उसूल :

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो सलामत रहना चाहता है उसे चाहिये कि ख़ामोश रहने को लाज़िम पकड़ ले।"

(شعب الایمان، باب فی حفظ اللسان، فصل فی فضل السکوت عما لا یعنیہ، رقم ۴۹۳۷، ج ۴، ص ۲۴۱)

www.dawateislami.net

हर गुफ़्त-गू का ह़िसाब होगा :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : "या **रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या हम से हमारी गुफ़्त-गू के बारे में पूछगछ होगी ?" तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ इब्ने जबल ! तुम्हारी मां तुम्हें रोए, लोगों को उन की ज़बान की लग़्ज़िशें ही नाक के बल जहन्नम में डालेंगी ।"

(رواہ ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب کف اللسان فی الفتنۃ، رقم ۳۹۷۳، ج ۴، ص ۳۴۳ بتصرفٍ)

अच्छी बात के सिवा कुछ न बोलो :

ह़ज़रते ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से पूछा गया : "हमें ऐसा अ़मल बताइये जिसे करने से हम जन्नत में दाख़िल हो जाएं ।" तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : "कभी न बोलो ।" अ़र्ज़ किया गया : "हम ऐसा नहीं कर सकते ।" फ़रमाया : "(फिर) अच्छी बात के इलावा कुछ न बोलो ।"

शैत़ान पर ग़ालिब आने का त़रीक़ा :

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अच्छी बात के इलावा अपनी ज़बान को रोके रखो इस त़रह़ तुम शैत़ान पर ग़ालिब आ जाओगे ।"

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب وغیرہ، باب الترغیب فی الصمت ...الخ، رقم ۲۹، ج ۳، ص ۳۴۱)

बोलने में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो :

नबिय्ये अकरम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर बोलने वाली ज़बान पर निगह्बान है लिहाज़ा अ़क़्ल मन्द को चाहिये

www.dawateislami.net

कि बोलते वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरे।"

(کتاب الزھد لابن المبارک، باب حفظ اللسان، الحدیث ٣٦٧، ص ١٢٥ بتصرفٍ)

अच्छी बात या ख़ामोशी :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अच्छी बात कहे या ख़ामोश रहे।"

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الحث علی اکرام الجار...الخ، رقم ۴۸، ص ۴۴)

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस बन्दे पर रह्म फ़रमाए जो अच्छी बात कहता है या फिर ख़ामोश रहता है।"

(کتاب الزھد لابن المبارک، باب حفظ اللسان، رقم ٣٨٠، ص ١٢٨ بتصرفٍ وکشف الخفاء، رقم ١٣٧٢، ج ١، ص ٣٧٧، بدون عبداً)

अक्सर ख़ताओं का सबब :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे पाक है कि आदमी से अक्सर ख़ताएं उस की ज़बान के बाइस होती हैं।

(شعب الایمان، باب فی حافظ اللسان، فصل فی فضل السکوت عما لا یعنیہ، رقم ۴۹۳۳، ج ۴، ص ۲۴۰۔۲۴۱،)

अक़्ल मन्द और जाहिल के कलाम में फ़र्क़ :

अल्लाह के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है कि अक़्ल मन्द की ज़बान उस के दिल के ताबेअ होती है लिहाज़ा जब वोह गुफ़्त-गू का इरादा करता है तो अपने दिल से मश्वरा करता है अगर वोह बात इस के हक़ में बेहतर होती है तो वोह बोलता है और अगर इस के लिये नुक़्सान

www.dawateislami.net

देह होती है तो बात करने से रुक जाता है और जाहिल का दिल उस की ज़बान के ताबेअ़ होता है इस लिये उस के जी में जो आता है वोह बोलता रहता है।

(كتاب الزهد لابن المبارك، باب حفظ اللسان، رقم ۳۹۰، ص۱۳۱ بتصرفٍ من قول الحسن بصری ۱۶۹)

एक बात का नतीजा :

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे पाक है : "आदमी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की एक बात कहता है और उसे गुमान भी नहीं होता कि येह बात उसे कहां तक पहुंचा देगी मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस की वज्ह से क़ियामत तक के लिये उस के लिये अपनी रिज़ा लिख देता है।"

(الموطا للامام مالک، کتاب الکلام، مایؤمر بہ...الخ، الحدیث ۱۸۹۹، ج۲، ص۴۶۴ بتصرفٍ)

हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : " आदमी ला परवाही से कोई ऐसी बात कह देता है जो उसे जहन्नम की आग में गिरा देती है और आदमी कोई बात कहता है जिसे वोह अहम्मिय्यत नहीं देता मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस बात की वज्ह से उसे जन्नत तक बुलन्द फ़रमा देता है।"

(الموطا للامام مالک، کتاب الکلام، مایؤمر بہ...الخ، رقم ۱۸۹۹، ج۲، ص۴۶۴ بتصرفٍ)

मेरे भाई !

उ़ज्ब या'नी खुद पसन्दी की आफ़त से बचते रहो क्यूं कि येह आफ़त हर सूरत में मज़्मूम है ख़्वाह जान पर हो या क़ौल व फ़े'ल पर और अपने क़ौल व फ़े'ल से धोका मत खाओ।

क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

فَلَاتُزَكُّوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ هُوَاَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى۝ (پ۲۷،النجم:۳۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो आप अपनी जानों को सुथरा न बताओ वोह ख़ूब जानता है जो परहेज़ गार हैं।

हलाक कर देने वाली तीन चीज़ें :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे पाक है : "तीन चीज़ें हलाकत में डाल देती हैं।

(1) हि़र्स व त़मअ़ में गुम रहना।

(2) नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करना।

(3) बन्दे का ख़ुद को अच्छा समझना।"

(المعجم الاوسط، الحدیث ۵۷۵۴، ج ۴، ص ۲۱۲)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "अगर तुम गुनाह न करो तो मुझे तुम पर गुनाह से सख़्त तर शै ख़ुद पसन्दी का ख़ौफ़ है।"

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب وغیرہ، باب الترغیب فی التواضع ....الخ، رقم ۳۳، ج ۳، ص ۳۵۸، بتصرفٍ)

ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से पूछा गया : "आदमी गुनहगार कब बनता है ?" फ़रमाया : "जब वोह ख़ुद को नेक समझने लगता है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि "हलाकत दो चीज़ों में है : (1) मायूसी (2) ख़ुद पसन्दी।"

आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इन दोनों आफ़तों को इस लिये जम्अ़ फ़रमाया कि मायूस आदमी अपनी मायूसी की वज्ह से सआ़दत के

www.dawateislami.net

हुसूल से महरूम रहता है जब कि ख़ुद पसन्द आदमी येह गुमान करते हुए सआदत के हुसूल की कोशिश नहीं करता कि वोह इसे पा चुका है।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के बारे में मरवी है, एक दिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं पुख़्ता इल्म वालों में से हूं।" और एक मर्तबा इर्शाद फ़रमाया : "मुझे खोने से पहले ही मुझ से जो कुछ पूछना चाहते हो पूछ लो।" फिर जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने दौलत कदे की त़रफ़ लौटे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक फ़िरिश्ते को आदमी की सूरत में भेजा, उस ने उन के घर का दरवाज़ा खट-खटाया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बाहर तशरीफ़ लाए तो फ़िरिश्ते ने कहा : "ऐ इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! छोटी सी च्यूंटी के बारे में क्या फ़रमाते हैं कि उस की रूह़ उस के जिस्म के अगले हिस्से में होती है या पिछले हिस्से में ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कोई जवाब न दे सके फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने घर में दाख़िल हुए और दरवाज़ा बन्द कर के अपने नफ़्स को समझाने लगे कि आइन्दा कभी इल्म का दा'वा न करना।"

बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ۝ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और हर इल्म वाले से ऊपर एक इल्म वाला है।

(پ۱۳، یوسف:۷۶)

हुस्ने कलाम बेहतर या हुस्ने अ़मल ?

एक नह़वी, ह़ज़रते इब्ने शम्ऊ़न वाइज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मजलिस में ह़ाज़िर हुवा। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तारिकीने दुन्या में से थे। उस नह़वी ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़बान व कलाम में

www.dawateislami.net

लुग़त और अ़-रबी क़वानीन की कुछ ग़-लतियां पाईं तो उस ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की मजलिस में आना छोड़ दिया । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उसे मक्तूब भेजा : "मैं तुम्हें ख़ुद पसन्दी का शिकार पाता हूं तुम दरवाज़े से पीछे रह जाने पर राज़ी हो गए हो क्या तुम ने किसी आ़रिफ़ का एक अदीब को भेजा हुवा येह ख़त़ नहीं सुना जिस में उन्हों ने लिखा था : जो अपने अक़्वाल की मज़बूत़ी पर ए'तिमाद करता है वोह अफ़्आ़ल में ग़-लतियां कर बैठता है । तुम अपनी सारी ह़ाजतें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश कर देते, अपनी आवाज़ को बुराइयों से मह़फ़ूज़ कर लेते, अपने नफ़्स को बुरी ख़्वाहिशात से बचा लेते, मौत के तराज़ू को अपने सामने नस्ब कर लेते क्या तुम नहीं जानते कि बन्दे से क़ियामत के दिन येह नहीं पूछा जाएगा : तू बोलने में फ़सीह़ व अदीब क्यूं न था, बल्कि उस से येह कहा जाएगा कि तू गुनाह क्यूं करता था ?"

प्यारे इस्लामी भाई !

कलाम में फ़साह़त व सलासत होना क़ाबिले फ़ख़्र बात नहीं बल्कि आ'माल में तसल्सुल होना चाहिये ।

अश्आ़र

وَلَاحِنٍ فِیْ الْفِعَالِ ذُوْ زَلَلٍ ۔۔۔ حَتّٰی اِذَا جَاءَ قَوْلُهٗ وَزَنَهٗ

قَالَ وَقَدْ اَکْسَبَهٗ لَفْظُهٗ ۔۔۔ تِیْهًا وَّعَجَبًا اَخْطِئَنْ یَا لُحَنَهٗ

قُلْتُ اَخْطَاَ الَّذِیْ یَقُوْمُ غَدًا ۔۔۔ وَلَا یَرٰی فِیْ کِتَابِهٖ حَسَنَهٗ

तरजमा : (1) आ'माल में कोताही करने वाला लग़्ज़िश कर रहा है ह़त्ता कि जब उस की (अपनी) बात आती है तो उसे ह़त्मी समझता है । (2) हाए ! वोह जिसे लफ़्ज़ों की जादूगरी ने जकड़ रखा है ग़ुरूर व ख़ुद पसन्दी में आ कर कहता है : "ऐ ख़त़ाकार ! और ग़-लतियां कर ।"

www.dawateislami.net

(3) मैं कहता हूं वोह शख़्स बहुत बड़ा ख़त़ाकार है जो कल बरोज़े क़ियामत इस ह़ाल में खड़ा होगा कि उसे अपने नामए आ'माल में नेकी दिखाई न देगी।

आ़जिज़ी :

एक शख़्स ने ह़ज़रते मन्सूर सुलैमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को लम्बी नमाज़ पढ़ते और अह़्सन त़रीक़े से इ़बादत अदा करते देखा जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो उस से फ़रमाया : ''मेरी इ़बादत देख कर धोका न खाना क्यूं कि इब्लीसे मल्ऊ़न ने हज़ारों साल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत की फिर भी वोह मरदूद हो गया।''

आदमी की ख़ुश बख़्ती की एक अ़लामत येह भी है कि वोह आ़जिज़ी का इज़्हार करे और अपने तमाम अफ़्आ़ल व अक़्वाल में कोताही का इक़्रार करे।

हलाक कर देने वाले चार अल्फ़ाज़ :

कहा जाता है :''चार अल्फ़ाज़ बन्दे को हलाकत में डाल देते हैं : मैं, हम, मेरा, मेरे पास. ''

ख़ुद पसन्दी का नुक़्सान :

अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ड़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : ''गुनाह पर नादिम होने वाला ऐसा है जैसे उस ने गुनाह किया ही नहीं, नादिम होने वाला रह़मत का मुन्तज़िर होता है जब कि ख़ुद पसन्दी करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी का मुन्तज़िर होता है।''

(شعب الایمان، باب فی معالجۃ کل ذنب بالتوبۃ، رقم ۷۱۷۸، ج ۵، ص ۴۳۶۔ بلفظ التائب من الذنب، النادم ینتظر ...الخ۔ رواہ ابن عدی فی الضعفاء، میسرہ بن عبد ربہ تستری، ج ۸، ص ۱۸۰)

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की नसीहत :

हज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "अगर तुम, लोगों पर तन्क़ीद करोगे तो वोह भी तुम्हें तन्क़ीद का निशाना बनाएंगे और अगर तुम उन्हें छोड़ भी दोगे तो वोह तुम्हें नहीं छोड़ेंगे और अगर तुम उन से भाग जाओगे तो वोह तुम्हें पकड़ लेंगे। लिहाज़ा अ़क्ल मन्द वोही है जो तंगदस्ती के दिन (या'नी क़ियामत) के लिये अपनी ज़िन्दगी और इ़ज़्ज़त को वक़्फ़ कर दे और मोमिन के गुस्सा पी लेने से बढ़ कर कोई घूंट **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक ज़ियादा पसन्दीदा नहीं, इस लिये अ़फ़्वो दर गुज़र से काम लिया करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमा देगा और यतीम की आह और मज़्लूम की बद दुआ़ से बचते रहो क्यूं कि येह (दोनों) रातों रात अ़र्श तक पहुंच जाती हैं जब कि लोग सो रहे होते हैं।"

सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की नसीह़त :

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "सब से बड़ा गुनाह झूट बोलना है और मोमिन को गाली देना फ़िस्क़ (या'नी बदकारी) है और उस से झगड़ना ना शुक्री है और उस के माल की ह़ुरमत उस के ख़ून की ह़ुरमत जैसी है और जो मुआ़फ़ी चाहेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे मुआ़फ़ फ़रमा देगा और जो गुस्से पर क़ाबू रखे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अज्र अ़ता फ़रमाएगा और जो मग़्फ़िरत चाहे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बख़्श देगा और जो किसी मुसीबत पर सब्र करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे इस से बेहतर बदला अ़ता फ़रमाएगा।"

www.dawateislami.net

तवाज़ोअ़ का इन्आ़म :

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : जब ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अलवाह़ (या'नी तख़्तियों) को पकड़ कर उन पर नज़र डाली तो अ़र्ज़ किया : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! तूने मुझे ऐसी बुज़ुर्गी से सरफ़राज़ फ़रमाया है जिस से मुझ से पहले किसी को सरफ़राज़ न फ़रमाया था।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई : "क्या तुम जानते हो कि मैं ने तुम्हारे साथ ऐसा क्यूं किया है ?" अ़र्ज़ किया, "मैं नहीं जानता।" फ़रमाया : "इस लिये कि मैं ने अपने बन्दों के दिलों पर नज़र फ़रमाई तो तुम्हारे दिल से ज़ियादा किसी को तवाज़ोअ़ करने वाला नहीं पाया, लिहाज़ा

اِنِّیۡ اصۡطَفَیۡتُکَ عَلَی النَّاسِ بِرِسٰلٰتِیۡ وَبِکَلَامِیۡ ۫ۖ فَخُذۡ مَاۤ اٰتَیۡتُکَ وَکُنۡ مِّنَ الشّٰکِرِیۡنَ ۝ (پ۹، الاعراف:۱۴۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मैं ने तुझे लोगों से चुन लिया अपनी रिसालतों और अपने कलाम से तो ले जो मैं ने तुझे अ़त़ा फ़रमाया और शुक्र वालों में हो।

ऐ मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) ! जो मेरी अ़-ज़मत के सामने झुक जाए, मेरी मख़्लूक़ पर बड़ाई न चाहे, अपने दिल पर मेरे ख़ौफ़ को लाज़िम कर ले, अपना दिन मेरे ज़िक्र में गुज़ारे और मेरी ख़ात़िर अपनी ज़बान को नफ़्सानी ख़्वाहिशात से रोक ले तो मैं भी उस की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाता हूं।"

ग़ुस्सा पीने का इन्आ़म :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे पाक है : "मोमिन के ग़ुस्सा पी

www.dawateislami.net

लेने से बढ़ कर कोई घूंट **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ज़ियादा पसन्दीदा नहीं, और जो गुस्सा नाफ़िज़ करने पर क़ुदरत के बा वुजूद जो गुस्सा पी ले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के दिल को अम्न और ईमान से भर देगा।" (سنن ابن ماجہ، ابواب الزہد، باب الحلم، رقم ۴۱۸۶، ج۴، ص ۴۶۳)

ग़ुलाम आज़ाद कर दिया :

इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के एक ग़ुलाम ने एक तश्त में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ धुलवाते हुए उन पर पानी बहाया तो वोह पानी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के कपड़ों पर भी जा गिरा, इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे तेज़ नज़रों से देखा, ग़ुलाम ने येह कहना शुरूअ़ किया : "मेरे आक़ा ! **وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ** (और गुस्सा पीने वाले) (अभी इतना ही कह पाया था कि) आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं ने अपना गुस्सा पी लिया।" ग़ुलाम ने फिर कहा : "وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ" (और लोगों से दर गुज़र करने वाले)" आप ने फ़रमाया : मैं ने तुझे मुआफ़ किया।" ग़ुलाम ने अ़र्ज़ की : "وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ" (और नेक लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ महबूब हैं) (پ۴، آل عمران:۱۳۴)

तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जा, तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आज़ाद है और मेरे माल में से एक हज़ार दीनार तेरे हैं।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। ﴿اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم﴾

ह़ाफ़िज़े क़ुरआन कैसा हो ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि "ह़ाफ़िज़े क़ुरआन को चाहिये कि वोह अपनी रात की वज्ह से पहचाना जाए जब कि लोग सो रहे हों और दिन की

www.dawateislami.net

वज्ह से पहचाना जाए जब कि लोग खा पी रहे हों और ग़मज़दा हो जब कि लोग खुश हों और वोह रो रहा हो जब कि लोग हंस रहे हों और ख़ामोश हो जब कि लोग बाहम उलझ रहे हों और वोह खुशूअ में हो जब कि लोग मग़रूर हों, हाफ़िज़े कुरआन में येह ख़ूबियां भी होनी चाहिएं कि वोह बद अख़्लाक़ न हो, ग़ाफ़िल न हो, शोर न करे, न सख़्त मिज़ाज हो और न धुत्कारने वाला हो।''

पांच बातों को ग़नीमत जानो :

बा'ज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया : ''अपनी ज़िन्दगी में पांच चीज़ों को ग़नीमत जानो।

(1) अगर मौजूद रहो तो पहचाने न जाओ।

(2) अगर ग़ाइब रहो तो तलाश न किये जाओ।

(3) अगर हाज़िर रहो तो तुम से मश्वरा न किया जाए।

(4) अगर तुम कोई बात कहो तो उस को क़बूल न किया जाए।

(5) अगर तुम कोई अच्छा अ़मल कर बैठो तो खुद पसन्दी में मुब्तला न हो जाओ।

मज़ीद पांच चीज़ों की वसिय्यत करते हैं।

(1) अगर तुम पर ज़ुल्म हो तो तुम ज़ुल्म न करो।

(2) अगर तुम्हारी ता'रीफ़ की जाए तो तुम खुश न हो।

(3) अगर तुम्हारी बुराई बयान की जाए तो तुम परेशान न हो।

(4) अगर तुम्हें झुटलाया जाए तो तुम ग़ुस्से में न आओ।

(5) अगर तुम्हारे साथ ख़ियानत हो जाए तो तुम ख़ियानत न करो।''

www.dawateislami.net

सूद, चोरी, ख़ियानत और शराब नोशी का वबाल

प्यारे इस्लामी भाई !

जान ले ! सूद हलाकत में डाल देने वाले गुनाहों में से एक है और येह तारीक रात में किसी चट्टान पर च्यूंटी के रेंगने से भी ज़ियादा मख़्फ़ी है और सूद का अदना द-रजा येह है कि सूद लेने वाला अपनी मां के साथ ज़िना करने वाले की त़रह़ है और मां के साथ ज़िना करना ग़ैर औ़रत से ज़िना करने से सत्तर द-रजा बड़ा गुनाह है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰۤوا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ (پ۳، البقرۃ:۲۷۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** से डरो और छोड़ दो जो बाक़ी रह गया है सूद, अगर मुसल्मान हो।

एक और जगह इर्शाद फ़रमाता है :

اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْۤا اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो सूद खाते हैं क़ियामत के दिन न खड़े होंगे मगर जैसे खड़ा होता है वोह जिसे आसेब ने छू कर मख़्बूत़ बना दिया हो येह इस लिये कि उन्हों ने कहा बैअ़ भी तो सूद ही के मानिन्द है और **अल्लाह** ने ह़लाल किया बैअ़ को और ह़राम किया सूद तो जिसे उस के रब के पास से नसीह़त आई और वोह

www.dawateislami.net

مَا سَلَفَ ط وَاَمْرُهٗۤ اِلَى اللّٰهِ ط وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ج هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ (پ٣، البقرة ٢٧٥)

बाज़ रहा तो उसे ह़लाल है जो पहले ले चुका और उस का काम ख़ुदा के सिपुर्द है। और जो अब ऐसी ह़-र-कत करेगा तो वोह दोज़ख़ी है वोह उस में मुद्दतों रहेंगे।

सूद के एक दिरहम का वबाल :

सरकारे अबद क़रार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "सूद का एक दिरहम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक ह़ालते इस्लाम में छत्तीस बार ज़िना करने से ज़ियादा सख़्त है।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، حديث عبد الله بن حنظلة بن ابي عامر، رقم ٢٢٠١٦، ج ٨، ص ٢٢٣)

ह़ज़रते सय्यिदुना समुरा बिन जुन्दुब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ड़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मर्तबा फ़ज्र की नमाज़ अदा फ़रमाई तो अपना रुख़े अन्वर हमारी त़रफ़ कर के फ़रमाया : "क्या तुम में से किसी ने कोई ख़्वाब देखा है ?" हम ने अ़र्ज़ किया : "नहीं, **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! फिर हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (मे'राज का वाक़िआ़ ज़िक्र फ़रमाते हुए) सूद के बारे में बताया कि हम चलते चलते ख़ून की एक नह्र पर पहुंचे, उस में एक शख़्स खड़ा हुवा था और नह्र के कनारे पर भी एक शख़्स खड़ा था, जिस के सामने पथ्थर पड़े हुए थे। नह्र में मौजूद शख़्स ने बाहर निकलने की कोशिश की तो बाहर खड़े शख़्स ने उस के मुंह पर एक पथ्थर मारा और उसे उस की जगह वापस पहुंचा

www.dawateislami.net

दिया फिर जब भी वोह शख़्स बाहर निकलने लगता तो येह शख़्स उस के मुंह पर पथ्थर मारता तो वोह वापस अपनी जगह लौट जाता। मैं ने उस शख़्स के बारे में पूछा तो मुझे बताया गया : "येह सूदख़ोर है, इस के साथ क़ियामत तक इसी त़रह़ किया जाता रहेगा।"

(صحیح البخاری، کتاب التعبیر، باب تعبیر الرویا بعد صلاۃ الصبح، رقم ۷۰۴۷، ج۴، ص۴۲۵)

सूद खाने वाले की ग़िज़ा :

ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! जो शख़्स सूद खाता हो और इस से तौबा न करे तो उस की सज़ा क्या है ?" फ़रमाया : "ऐ मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) ! मैं उसे क़ियामत के दिन थूहर के दरख़्त से खिलाऊंगा।" (थूहर के दरख़्त का फल जहन्नमियों की ग़िज़ा है उस की तल्ख़ी और अ़ज़ाब की सख़्ती का आ़लम येह है कि अगर उस का एक क़त़रा ज़मीन पर टपका दिया जाए तो दुन्या वालों की ज़िन्दगी तल्ख़ हो जाए।)

अश्आ़र

اَیَا ذَا الَّذِیْ قَلْبُہٗ مَیِّتٌ ... بِاَکْلِ الرِّبَا اِزْدَجِرْ وَانْتَبِہٗ

فَکَمْ نَائِمٍ نَامَ فِیْ غِبْطَۃٍ ... اَتَتْہُ الْمَنِیَّۃُ فِیْ نَوْمَتِہٖ

وَکَمْ مِنْ مُقِیْمٍ عَلٰی لَذَّۃٍ ... دَھَتْہُ الْحَوَادِثُ فِیْ لَذَّتِہٖ

وَکَمْ مِنْ جَدِیْدٍ عَلٰی ظَھْرِھَا ... سَیَاْتِیْ الزَّمَانُ عَلٰی جِدَّتِہٖ

तरजमा : (1) ऐ वोह शख़्स जिस का दिल सूद खा खा कर मुर्दा हो चुका है ! बाज़ आ जा और ग़फ़्लत से बेदार हो जा।

(2) कितने ही सोने वाले लोग ख़ुशी ख़ुशी नींद कर रहे होते हैं, इसी नींद की ह़ालत में उन्हें मौत आ दबोचती है।

(3) और कितने ही लज़्ज़त परस्त लोग ऐसे हैं जिन्हें उन की

www.dawateislami.net

लज़्ज़त के ख़त़रात ने मसाइब से दो चार कर रखा है

(4) और कितने ही नए नए गुनाह उस की पीठ पर लदे हुए हैं, अ़न्क़रीब उस की इसी ह़ालत में (मौत का) वक़्त आ पहुंचेगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी ला रैब किताब कुरआने मजीद में इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِى الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ (پ۲،البقرة:۱۶۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो खाओ जो कुछ ज़मीन में ह़लाल पाकीज़ा है और शैत़ान के क़दम पर क़दम न रखो बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

ह़राम खाने वाले की इ़बादत ना मक़्बूल :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे पाक है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एक फ़िरिश्ता हर दिन और रात में बैतल मुक़द्दस की छत पर निदा करता है : "जिस ने ह़राम खाया तो जब तक वोह ह़राम उस के घर से न निकल जाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न उस की फ़र्ज़ इ़बादत क़बूल फ़रमाएगा न ही नफ़्ल और अगर वोह इसी ह़ाल में मर गया तो मैं उस से बरी हूं।"

(اتحاف السادة المتقين، كتاب الحلال والحرام، الباب الاول فی فضيلة الحلال...الخ، ج٦،ص٤٥٢، دون قوله:حتی يخرج ذالك الحرام...الخ)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अमानतों को अपने घरों से निकाल दो और उन्हें उन के मालिकों के सिपुर्द कर दो फिर अगर तुम ने ऐसा न किया तो तुम्हारे आ'माल हरगिज़ तुम्हें नफ़्अ़ न पहुंचा

www.dawateislami.net

सकेंगे और न ही घर में ह़राम की मौजू-दगी की सूरत में لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहना तुम्हें नफ़्अ़ दे सकेगा।"

सूद का गुनाह मुआ़फ़ न होगा :

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने ह़लाल का एक दिरहम कमाया और उसे ह़लाल जगह ख़र्च किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सूद और ह़राम ख़ोरी के इलावा उस के तमाम गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा देगा।"

त़-लबे ह़लाल फ़र्ज़ है :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "(फ़र्ज़िय्यते ईमान के बा'द) रिज़्क़े ह़लाल त़लब करना हर मुसल्मान पर फ़र्ज़ है।" (या'नी ईमान लाने के बा'द ह़लाल का त़लब करना)

(رواه الطبرانی فی الاوسط بلفظ طلب الحلال واجب، رقم ۸۶۱۰، ج۶، ص۲۳۱)

ह़राम से परवरिश पाने वाला जहन्नम का ह़क़दार :

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने ह़राम का एक लुक़्मा खाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की चालीस दिन की नमाज़ें क़बूल न फ़रमाएगा और हर वोह गोश्त जिस की नश्वो नुमा ह़राम से हो वोह जहन्नम का ज़ियादा ह़क़दार है।"

(ذکرہ الزبیدی فی الاتحاف، کتاب الحلال والحرام، الباب الاول، ج۶، ص۴۵۲)

ह़राम माल छोड़ कर मरने का अन्जाम :

अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने माले ह़राम

www.dawateislami.net

कमाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न उस का स–दक़ा क़बूल फ़रमाएगा, न ग़ुलाम आज़ाद करना, न ह़ज करना और न ही उ़म्रह करना और वोह जितना माल जम्अ़ करेगा उसे उस के बराबर गुनाह होगा और उस की मौत के बा'द जो ह़राम माल बच गया वोह उस के लिये जहन्नम का सामान होगा।''

(ذکرہ الزبیدی فی الاتحاف، کتاب الحلال والحرام، الباب الاول، ج۶،ص۴۵۶، دون قولہ ولا اعتقاقًا ولاحجًا ولاعمرًا وکانت لہ بعد اوزار)

ह़राम के एक दिरहम का असर :

हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''अगर कोई शख़्स दस दिरहम से एक कपड़ा ख़रीदे और उन में ह़राम का एक दिरहम भी हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस वक़्त तक उस का कोई अ़मल क़बूल न फ़रमाएगा जब तक (वोह) एक दिरहम उस के मालिक को न लौटा दे।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، الحدیث ۵۷۳۶، ج۲،ص۴۱۶ بتصرف الفاظ)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब तक उस कपड़े में से कुछ भी उस के जिस्म पर रहेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का कोई अ़मल क़बूल नहीं फ़रमाएगा।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، الحدیث ۵۷۳۶، ج۲،ص۴۱۶ بلفظ لم یقبل اللہ صلوٰۃ مادام علیہ)

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''ह़राम या शराब से नश्वो नमा पाने वाला गोश्त और ख़ून जन्नत में दाख़िल न होगा।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند جابر بن عبد اللہ، رقم ۱۴۴۴۸، ج۵،ص۶۴ ''حرام'' بدلہ ''سحت'')

www.dawateislami.net

ह़राम माल से तौबा :

सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर माले ह़राम खाने वाले लोग सत्तर मर्तबा भी राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में शहीद हो जाएं तब भी उन की शहादत उन की तौबा नहीं बन सकेगी क्यूं कि ह़राम माल की तौबा येह है कि वोह माल मालिक को लौटा दिया जाए या उस से अपने इस्ति'माल के लिये ह़लाल कर लिया जाए (या'नी मुआ़फ़ करवा लिया जाए)।"

ह़लाल खाने की ब-र-कतें :

रसूले अकरम, नबिय्ये मोह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने चालीस दिन तक ह़लाल खाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के दिल को मुनव्वर फ़रमा देगा और उस की ज़बान पर ह़िक्मत के चश्मे जारी फ़रमा देगा और दुन्या व आख़िरत में उस की रहनुमाई फ़रमाएगा।"

(اتحاف السادۃ المتقین، کتاب الحلال والحرام، باب فی فضیلۃ الحلال...الخ، ج۶، ص ۴۵۰)

दुआ़ की क़बूलिय्यत का नुस्ख़ा :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से इर्शाद फ़रमाया : "अगर तुम मुझ से दुआ़ का इरादा करो तो अपने पेट को ह़राम ग़िज़ा से मह़फ़ूज़ रखो और यूं अ़र्ज़ करो : ऐ क़दीम एह़सान और आ़म फ़ज़्ल वाले ! ऐ वसीअ़ रह़मत वाले ! तो मैं तुम्हारा सुवाल पूरा फ़रमा दूंगा।"

परहेज़ गारी की अहम्मिय्यत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इर्शाद

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं : “अगर तुम इतने रोज़े रखो कि सूख कर कमान की त़रह़ ख़मदार हो जाओ और इतनी नमाज़ें पढ़ो कि कील की त़रह़ सूख जाओ तब भी तुम्हारे अ़मल कामिल परहेज़ गारी के बिग़ैर क़बूल न होंगे।”

बा'ज़ अहले इ़ल्म का क़ौल है : “दुन्या की ह़लाल चीज़ों पर ह़िसाब है और ह़राम पर अ़ज़ाब है और ह़राम एक ऐसी बीमारी है जिस का इ़लाज फ़क़त येही है कि बन्दा ह़राम खाने से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पनाह चाहे।”

अश्आ़र

اُشَبِّـهُ مَنْ يَّتُوْبُ عَلٰى حَرَامٍ كَبَيْضٍ فَاسِدٍ تَحْتَ الْحَمَامِ

يَطُوْلُ عِنَاؤُهُ فِىْ غَيْرِ شُغْلٍ وَآخِرُهُ يَقُوْمُ بِلَا تَمَامِ

اِذَا كَانَ الْمُقَامُ عَلٰى حَرَامٍ فَلَا مَعْنٰى لِتَطْوِيْلِ الْقِيَامِ

तरजमा : (1) जो शख़्स ह़राम को तर्क किये बिग़ैर तौबा करे मैं उसे कबूतरी के नीचे पड़े हुए ख़राब अन्डे से तश्बीह देता हूं।

(2) कि उस (कबूतरी) की थकन बेकार काम में बढ़ती रहती है और आख़िरे कार वोह नाकाम हो कर उठ खड़ी होती है।

(3) जब ह़राम पर ही डटे रहना हो तो लम्बी लम्बी इ़बादतों का क्या फ़ाएदा।

ह़लाल खाने की अहम्मिय्यत :

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : “इत़ाअ़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ज़ानों में पोशीदा है और इस की कुन्जी दुआ़ है और ह़लाल खाना उस कुन्जी के दन्दाने हैं, अगर कुन्जी में दन्दाने नहीं होंगे तो दरवाज़ा भी नहीं खुलेगा और जब

www.dawateislami.net

ख़ज़ाना नहीं खुलेगा तो उस के अन्दर पोशीदा इत़ाअ़त तक कैसे पहुंचा जा सकता है लिहाज़ा अपने लुक़्मे की हिफ़ाज़त करो और अपने खाने को पाकीज़ा बनाओ ताकि जब तुम्हें मौत आए तो बुरे आ'माल की सियाही की जगह नेक आ'माल का नूर तुम्हारे सामने ज़ाहिर हो और अपने आ'ज़ा को ह़राम खाने के गुनाह से रोके रखो ताकि येह हमेशा रहने वाली ने'मतों से लज़्ज़त पा सकें।" **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـئًا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِی الْاَیَّامِ الْخَالِیَةِ ۝ (پ۲۹،الحاقة:۲۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : खाओ और पियो रचता हुवा, सिला उस का जो तुम ने गुज़रे दिनों में आगे भेजा।

और जो ह़राम खाने से इज्तिनाब न करे तो त़वील अ़र्से तक भूका रहने के बा'द थूहर का कड़वा और गर्म फल खाएगा तो येह कैसा बद तरीन खाना होगा और इस का ज़रर कितना शदीद होगा कि येह दिल के टुकड़े कर देगा और जिगर को चीर डालेगा, बदन को फाड़ देगा और जीना मुश्किल कर देगा।

एक लुक़्मे का असर :

ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मैं एक आयते मुबा-रका पढ़ा करता तो उस में मेरे लिये इ़ल्म के सत्तर दरवाज़े खोल दिये जाते फिर जब मैं ने उ-मरा का माल खाया और इस के बा'द जब मैं ने वोह आयत पढ़ी तो उस में मेरे लिये इ़ल्म का एक दरवाज़ा भी न खुला।"

मेरे इस्लामी भाइयो !

ह़राम ग़िज़ा एक ऐसी आग है जो फ़िक्र की चरबी पिघला

www.dawateislami.net

देती है और ह़लावते ज़िक्र की लज़्ज़त ख़त्म कर देती है और सच्ची निय्यतों के लिबास जला देती है और ह़राम ही से बसीरत का अन्धा पन पैदा होता है लिहाज़ा माले ह़लाल जम्अ़ करो और उसे मियाना रवी से ख़र्च करो खुद भी ह़राम से बचो और अपने घर वालों को भी इस से बचाओ और ह़राम ख़ोरों की सोह़बत में न बैठो और उन का खाना खाने से बचते रहो और जिस का ज़रीअ़ए मआ़श ह़राम हो उस की सोह़बत इख़्तियार न करो अगर तुम अपनी परहेज़ गारी में सच्चे हो तो न ही किसी की ह़राम पर रहनुमाई करो कि अगर वोह उसे खा ले तो उस का ह़िसाब तुम से लिया जाए और न ही ह़राम के ह़ुसूल में किसी की मदद करो क्यूं कि मुआ़विन भी अ़मल में शरीक ही होता है। **याद रखो !** ह़लाल खाने ही से आ'माल क़बूल होते हैं और फ़ाक़ा व तंगदस्ती को छुपाने और तन्हाई में रो रो कर आहें भरने को आ'माल की क़बूलिय्यत और रिज़्क़े ह़लाल कमाने के सिल्सिले में निहायत अहम मक़ाम ह़ासिल है।

यतीम का माल खाना :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِىْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ؕ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا ۠

(پ۴، النساء:۱۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो यतीमों का माल नाह़क़ खाते हैं वोह तो अपने पेट में नरी आग भरते हैं। और कोई दाम जाता है कि भड़कते धड़े में जाएंगे।

एक और जगह इर्शाद हुवा है :

www.dawateislami.net

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۪ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُوْلًا ۝ (پ۱۵،الاسراء:۳۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और यतीम के माल के पास न जाओ मगर उस राह से जो सब से भली है यहां तक कि वोह अपनी जवानी को पहुंचे और अ़हृद पूरा करो बेशक अ़हृद से सुवाल होना है।

नाप तोल में कमी :

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जहां तक हो सके नाप तोल में कमी करने से बचते रहो क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस फ़रमान में तुम्हें इस से बाज़ रहने का हुक्म दिया है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

اَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝ (پ۱۲،ھود:۸۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : नाप और तोल इन्साफ़ के साथ पूरी करो और लोगों को उन की चीज़ें घटा कर न दो और ज़मीन में फ़साद मचाते न फिरो।

एक और मक़ाम पर इर्शाद हुवा।

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ۝ وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ۝ (پ۳۰،المطففین:۱ تا ۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कम तोलने वालों की ख़राबी है वोह कि जब औरों से माप लें पूरा लें और जब उन्हें माप तोल कर दें कम कर दें।

मेरे इस्लामी भाई ! मुसल्मानों के किसी ह़क़ को दबा लेने पर ख़ुश मत होना क्यूं की ख़ियानत की मौजू-दगी में ब-र-कत बाक़ी नहीं रहती और थोड़ा सा ह़राम बहुत सारे ह़लाल को बरबाद

www.dawateislami.net

कर देता है। और ऐ भाई ! अगर तुम एक दिरहम की ख़ियानत करोगे तो शैत़ान मल्ऊ़न तुम्हारे साथ सत्तर दिरहमों में ख़ियानत करेगा।

मुनाफ़िक़ की तीन अ़लामतें :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : "तीन बातें ऐसी हैं कि जिस में होंगी वोह मुनाफ़िक़ होगा अगर्चे नमाज़, रोज़ा का पाबन्द ही हो : (1) जब बात करे तो झूट बोले (2) जब वोह वा'दा करे तो ख़िलाफ़ वर्ज़ी करे (3) जब अमानत उस के सिपुर्द की जाए तो ख़ियानत करे।" (صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان خصال المنافق، رقم ۵۹، ص ۵۰)

आग के दो पहाड़ :

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : "मैं अपने एक पड़ोसी से मिलने गया जो गन्दुम बेचा करता था, जब मैं उस के सिरहाने बैठा तो उसे बार बार येह कहते सुना : "आग के दो पहाड़, आग के दो पहाड़।" जब मैं ने उस की बीवी से इस के बारे में पूछा तो वोह बोली : "इस के पास दो पैमाने थे जब येह किसी से गन्दुम ख़रीदता तो उसे बड़े पैमाने से नापता और जब किसी को बेचता तो छोटे पैमाने से नाप कर बेचता था।" तब मैं समझा कि वोही दो बरतन इसे आग के पहाड़ों की सूरत में नज़र आ रहे हैं।

पानी के चन्द क़त़रों का वबाल :

किसी गाउं में एक दूध फ़रोश रहा करता था, वोह दूध में पानी मिलाया करता था, एक मर्तबा सैलाब आया और उस के मवेशी बहा कर ले गया तो वोह रोते हुए कहने लगा कि सब क़त़रे मिल कर सैलाब बन गए जब कि क़ज़ा उसे निदा दे रही थी :

www.dawateislami.net

ذٰلِکَ بِمَا قَدَّمَتْ یَدَاکَ وَاَنَّ اللّٰہَ لَیْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِیْدِ۠ (پ۱۷، الحج:۱۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : येह उस का बदला है जो तेरे हाथों ने आगे भेजा और **अल्लाह** बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता।

याद रखो ! चोरी और ख़ियानत हलाकत में डालने वाले और दीन के लिये शदीद ज़रर रसां हैं।

छ[6] जहन्नमी :

अल मुनाजात में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से इर्शाद फ़रमाया : "छ[6] अफ़राद जहन्नम और मेरे ग़ज़ब में हैं : (1) जिस की उ़म्र त़वील और अख़्लाक़ बुरे हों (2) दौलत मन्द हो कर चोरी करने वाला (3) फ़ासिक़ आ़लिम (4) तौबा किये बिग़ैर मरने वाला (5) किसी मोमिन को जान बूझ कर क़त्ल करने वाला (6) मुसल्मान का ह़क़ दबाने वाला और उस का ह़क़ खाने वाला।"

धोकेबाज़ हम में से नहीं :

अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने हमारे साथ धोका किया वोह हम में से नहीं।"

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب قول النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم، رقم ۱۰۱، ص ۶۵)

छ कलिमात :

मन्क़ूल है, बैतुल मुक़द्दस की एक चट्टान पर छ[6] कलिमात लिखे हुए पाए गए : "(1) हर गुनहगार वह़शत में मुब्तला होगा (2) हर नेकूकार मानूस होगा (3) हर ख़ौफ़ज़दा शख़्स भाग जाएगा (4) हर उम्मीद वार त़लब करेगा (5) हर क़नाअ़त पसन्द ग़नी होगा और (6) हर लालची फ़क़ीर होगा।"

www.dawateislami.net

झूटी क़सम खाना :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क़सम उठाने वाला या तो क़सम तोड़ कर गुनहगार होगा या अपनी क़सम पर शरमिन्दा होगा ।"

(السنن الکبری للبیھقی، کتاب الایمان، باب من کرہ الایمان باللہ...الخ، الحدیث ۱۹۸۳۹، ج۱۰، ص۵۲، والفظ لہ)

एक मर्तबा सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक सह़ाबी के क़रीब से गुज़रे, वोह सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने ग़ुलाम को मार रहे थे जब सरकारे अबद क़रार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ुलाम की चीख़ो पुकार सुनी तो उन सह़ाबी के पास तशरीफ़ ले आए, उन्हों ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा तो रुक गए इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इस ने तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा दिया तो तुम ने इसे मुआ़फ़ न किया तो मुझे देख कर क्यूं रुक गए ?" सह़ाबी ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को गवाह बनाता हूं कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आज़ाद है ।" तो नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया : "अगर तुम ऐसा न करते तो जहन्नम तुम्हारा चेहरा जला देती ।"

(رواہ مسلم، کتاب الایمان، باب صحبۃ الممالیک، الحدیث ۱۶۵۹، ص ۹۰۵ بنحوہ)

बहुत ज़ियादा क़समें उठाने की वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी का सामना करने से बचो, क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمٰنِكُمْ (پ۲،البقرۃ:۲۲۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** को अपनी क़समों का निशाना न बना लो।

झूटी क़सम की सज़ा :

इसराईलियात में है कि ह़ज़रते मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! जो तेरे नाम की झूटी क़सम उठाए उस की सज़ा क्या है ?" फ़रमाया : "मैं उस की ज़बान को आग के दो अंगारों के दरमियान पाट दूंगा।" अ़र्ज़ किया : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! तो जो झूटी क़सम के ज़रीए किसी मुसल्मान का माल लूट ले उस की सज़ा क्या है ?" फ़रमाया : "मैं जन्नत से उस का ह़िस्सा काट दूंगा।"

अ-ज़-मते ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से ना वाक़िफ़ :

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे पाक है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे इस बात का इज़्न दिया है कि मैं ह़ामिलीने अ़र्श में से एक फ़िरिश्ते का तज़्किरा करूं, उस के क़दम सब से निचली ज़मीन में गड़े हुए हैं और उस की गरदन अ़र्श से मुत्तसिल है, वोह अपना सर उठा कर अ़र्ज़ करता है : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! तू कितना अ़ज़ीम है।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "जो मेरे नाम की झूटी क़सम उठाता है वोह मेरी अ-ज़मत को नहीं जानता।"

(رواہ الحاکم، کتاب الایمان، باب تسبیح دیک رجلاہ...الخ، الحدیث،۷۸۸۳،ج۵،ص۴۲۲ نحوہ وبتصرفہ)

शराब नोशी :

शराब पीना कबीरा गुनाहों में से सब से बड़ा गुनाह है। **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाया करते थे : "जो शख़्स शराब का

www.dawateislami.net

एक घूंट पियेगा उस के सात दिन की नमाजे़ं और रोजे़ क़बूल नहीं होंगे ।'' (رواہ احمد فی مسندہ، الحدیث ۶۶۵۵، ج۲، ص۵۸۹، بلفظ صلاۃ اربعین صباحاً، ولم یذکر "لم یقبل..." الخ)

दस बुरी ख़स्लतें :

याद रखो ! शराब नोशी में दस बुरी ख़स्लतें हैं :

(1) येह बन्दे की अ़क़्ल में फ़ुतूर डाल देती है इस त़रह़ वोह बच्चों के लिये तमाशा और मज़ाक़ बन जाता है । इमाम इब्ने अबिद्दुन्या رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : ''मैं ने एक शराबी को पेशाब करते हुए देखा वोह अपने मुंह पर पेशाब मल रहा था और कह रहा था : ''इलाही عَزَّوَجَلَّ ! मुझे कसरत से तौबा करने वालों और पाकीज़ा रहने वालों में शामिल फ़रमा ।''

मज़ीद फ़रमाते हैं : ''मैं ने नशे में मदहोश एक शख़्स को देखा जिस ने क़ै की थी और कुत्ता उस का मुंह चाट रहा था तो वोह नशा करने वाला उस से कह रहा था : ''ऐ मेरे आक़ा ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को औलिया जितनी बुज़ुर्गी अ़त़ा फ़रमाए ।''

(2) येह माल को ज़ाएअ़ और बरबाद करती है और तंगदस्ती का सबब बनती है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने दुआ़ मांगी : ''या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! शराब के मु-तअ़ल्लिक़ बयाने शाफ़ी नाज़िल फ़रमा क्यूं कि येह माल को बरबाद और अ़क़्ल को ख़त्म कर देती है ।''

(3) येह अ़दावत और दुश्मनी का सबब है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

اِنَّمَا یُرِیۡدُ الشَّیۡطٰنُ اَنۡ یُّوۡقِعَ بَیۡنَکُمُ الۡعَدَاوَۃَ وَالۡبَغۡضَآءَ فِی الۡخَمۡرِ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : शैत़ान येही चाहता है कि तुम में बैर और दुश्मनी डलवा दे शराब

www.dawateislami.net

وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ٥ (پ۷،المائدۃ:۹۱)

और जूए में और तुम्हें **अल्लाह** की याद और नमाज़ से रोके तो क्या तुम बाज़ आए।

जब येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई तो ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! हम बाज़ आ गए।"

(4) शराब, खाने की लज़्ज़त और दुरुस्त कलाम से शराबी को मह़रूम कर देती है।

(5) बा'ज़ अवक़ात शराब, शराबी की बीवी को उस पर ह़राम कर देती है और वोह ज़िना में मुब्तला हो जाता है इस की सूरत येह होती है कि शराबी नशे में मदहोश हो कर अक्सर त़लाक़ दे देता है और बा'ज़ अवक़ात ला शुऊ़री त़ौर पर क़सम तोड़ डालता है तो अपनी ह़राम की हुई बीवी से ज़िना कर बैठता है।

बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का क़ौल है : "जिस ने अपनी बेटी को किसी शराबी के निकाह़ में दिया गोया उस ने अपनी बेटी को ज़िना के लिये पेश कर दिया।"

(6) येह हर बुराई की कुन्जी है और शराबी को बहुत से गुनाहों में मुब्तला कर देती है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने ख़ुत़्बे में इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! शराब नोशी से बचते रहो क्यूं कि येह तमाम बुराइयों की जड़ है।"

(7) शराब नोशी का सातवां नुक़्सान येह है कि येह शराबी को बदकारों की मजलिस में ले जाती है अपनी बदबू से इस के कातिब फ़िरिश्तों को ईज़ा देती है।

(8) येह शराबी पर आस्मानों के दरवाज़े बन्द कर देती है चालीस

www.dawateislami.net

दिन तक न इस का कोई अ़मल ऊपर पहुंचता है न ही दुआ़।
(9) शराब नोशी, शराबी पर अस्सी कोड़े वाजिब कर देती है लिहाज़ा अगर वोह दुन्या में इस सज़ा से बच भी गया तो आख़िरत में मख़्लूक़ के सामने उसे कोड़े मारे जाएंगे।
(10) येह शराबी की जान और ईमान को ख़त़रे में डाल देती है कि मौत के वक़्त उस का ईमान छिन जाने का ख़दशा रहता है।

शराब की नुहूसत :

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मैं ने एक शख़्स को नज़्अ़ के आ़लम में देखा, जब उसे कलिमए त़य्यिबा की तल्क़ीन की जाती तो वोह कहता : "ख़ुद भी पियो और मुझे भी पिलाओ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "जब शराबी मर जाए तो उसे दफ़्न कर दो और मुझे किसी जगह नज़र बन्द कर के उस की क़ब्र खोदो अगर उसे क़िब्ले से फिरा हुवा न पाओ तो मुझे क़त्ल कर देना।"

मेरे इस्लामी भाइयो !

येह तो शराबी की दुन्यवी सज़ा है और उख़रवी सज़ा तो शुमार से बाहर है उसे खौलता हुवा पानी पिलाया जाएगा, ज़क़्क़ूम खिलाया जाएगा, जहन्नम में जहन्नमियों का पीप पिलाया जाएगा और वोह ऐसे ही बहुत से अ़ज़ाबात में मुब्तला होगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी पनाह में रखे, आमीन।

تَمَّتْ بِالْخَیْر

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ وَحْدَہٗ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی مَنْ لَّا نَبِیَّ بَعْدَہٗ

www.dawateislami.net

......8 रूहानी इलाज......

❁...... هُوَاللّٰهُ الرَّحِيْمُ : जो हर नमाज़ के बा'द 7 बार पढ़ लिया करेगा, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शैतान के शर से बचा रहेगा और उस का ईमान पर ख़ातिमा होगा ।

❁...... يَامَلِكُ : 90 बार जो ग़रीब व नादार रोज़ाना पढ़ा करे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ग़ुरबत से नजात पा कर मालदार हो ।

❁...... يَاقُدُّوْسُ : का जो कोई दौराने सफ़र विर्द करता रहे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ थकन से मह़फ़ूज़ रहेगा ।

❁...... يَاعَزِيْزُ : 41 बार ह़ाकिम या अफ़्सर वग़ैरा के पास जाने से क़बल पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह ह़ाकिम या अफ़्सर मेह्रबान हो जाएगा ।

❁...... يَابَارِئُ : 10 बार जो कोई हर जुमुआ़ को पढ़ लिया करे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस के बेटा अ़ता होगा ।

❁...... يَافَتَّاحُ : 70 बार जो रोज़ाना पढ़ा करेगा, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुस्तजाबुद्दा'वात होगा (या'नी हर दुआ़ क़बूल हुवा करेगी) ।

❁...... يَاحَكِيْمُ : 80 बार जो रोज़ाना पांचों नमाज़ों के बा'द पढ़ लिया करे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ किसी का मोह़ताज न होगा ।

❁...... يَاجَلِيْلُ : 10 बार पढ़ कर जो अपने मालो अस्बाब और रक़म वग़ैरा पर दम कर दे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ चोरी से मह़फ़ूज़ रहे ।

मदीना : हर विर्द के अव्वल व आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये । (फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 168 ता 170 मुल्तक़तन)

www.dawateislami.net

नेकियों की जज़ाओं और गुनाहों की सज़ाओं से मु-तअ़ल्लिक़
आयात, अहादीस और हिकायात का म-दनी गुलदस्ता

قُرَّةُ الْعُيُوْنِ وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن

तरजमा बनाम

नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं

मुअल्लिफ़ :
फ़क़ीह अबुल्लैस नस्र बिन मुहम्मद समर क़न्दी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی
अल मु-तवफ़्फ़ा 375 हि.

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

मु-तर्जिमीन : **म-दनी उ़-लमा** (शो'बए तराजिमे कुतुब)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना

www.dawateislami.net

ख़ु-लफ़ाए राशिदीन के फ़ज़ाइल, अक़्वाल और ज़ोहदो तक़्वा का बयान

(जिल्द 1)

حِلْیَۃُ الْاَوْلِیَاءِ وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِیَاءِ

तरजमा बनाम

अल्लाह वालों की बातें

पहली क़िस्त

तज़्किरए ख़ु-लफ़ाए राशिदीन

मुअल्लिफ़

इमाम अबू नुऐम अहमद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी शाफ़ेई

عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی

अल मु-तवफ़्फ़ा 430 हि.

मु-तर्जिमीन : **म-दनी उ़-लमा** (शो'बए तराजिमे कुतुब)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना

www.dawateislami.net

सहाबए किराम, ताबिईन, तब्ए ताबिईन और औलियाए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم की मुबारक जिन्दगियों के बा'ज़ गोशों की झलक पर मुश्तमिल एक नादिर तालीफ़

उ़यूनुल ह़िकायात (मु-तर्जम)

(ह़िस्सए अव्वल)

मुअल्लिफ़

इमाम अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली अल जौज़ी

عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی

अल मु-तवफ़्फ़ा 597 हि.

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

मु-तर्जिमीन : **म-दनी उ़-लमा** (शो'बए तराजिम कुतुब)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना

www.dawateislami.net

ماخذ و مراجع

(۱)	قرآن مجید	کلام باری تعالیٰ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
(۲)	کنز الایمان فی ترجمۃ القرآن	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
(۳)	صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۴)	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج بن مسلم القشیری متوفی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم بیروت
(۵)	سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ الترمذی متوفی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت
(۶)	سنن ابی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی
(۷)	سنن النسائی	امام ابو عبد الرحمن بن احمد شعیب النسائی ۳۰۳ھ	دار السلام ریاض
(۸)	سنن ابن ماجۃ	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید القزوینی متوفی ۲۷۳ھ	دار الفکر بیروت
(۹)	الموطا للامام مالک	امام مالک بن انس اصبحی متوفی ۱۷۹ھ	دار المعرفۃ بیروت
(۱۰)	المسند للامام احمد بن حنبل	امام احمد بن حنبل متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت
(۱۱)	المسند لابی یعلی	شیخ الاسلام ابو یعلی احمد الموصلی متوفی ۳۰۷ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۱۲)	المستدرک للحاکم	امام ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ نیشاپوری متوفی ۴۰۵ھ	دار المعرفۃ بیروت
(۱۳)	المعجم الکبیر	امام سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی
(۱۴)	المعجم الاوسط	امام سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۱۵)	شعب الایمان	امام احمد بن حسین بیہقی متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۱۶)	سنن الکبریٰ للبیہقی	امام احمد بن حسین بیہقی متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۱۷)	ابن ابی الدنیا	امام ابو بکر عبد اللہ بن محمد القرشی متوفی ۲۸۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۱۸)	حلیۃ الاولیاء	امام ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصبہانی متوفی ۴۳۰ھ	المکتبۃ العصریۃ بیروت
(۱۹)	مجمع الزوائد	حافظ نور الدین علی بن ابو بکر ہیثمی متوفی ۸۰۷ھ	دار الفکر بیروت
(۲۰)	فردوس الاخبار	حافظ شیرویہ بن شہردار دیلمی متوفی ۵۰۹ھ	دار الفکر بیروت
(۲۱)	المصنف للامام عبد الرزاق	ابو بکر عبد الرزاق بن ہمام متوفی ۲۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۲۲)	المصنف لابن ابی شیبۃ	امام عبد اللہ بن محمد ابی شیبہ متوفی ۲۳۵ھ	دار الفکر بیروت
(۲۳)	الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	علاء الدین علی بن بلبان متوفی ۷۳۹ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۲۴)	روض الریاحین	علامہ عبد اللہ بن اسعد متوفی ۷۶۸ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۲۵)	کنز العمال	علامہ علاء الدین علی المتقی الہندی متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۲۶)	الاستیعاب	ابو عمر یوسف بن عبد اللہ القرطبی متوفی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۲۷)	مجمع البحرین	حافظ نور الدین علی بن ابو بکر ہیثمی متوفی ۸۰۷ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۲۸)	اتحاف السادۃ المتقین	علامہ سید محمد بن محمد زبیدی متوفی ۱۲۰۵ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۲۹)	الترغیب والترہیب	امام زکی الدین عبد العظیم المنذری متوفی ۶۵۶ھ	دار الفکر بیروت
(۳۰)	کتاب الزہد لابن مبارک	امام عبد اللہ بن مبارک متوفی ۱۸۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۳۱)	فیض القدیر شرح الجامع الصغیر	امام جلال الدین ابو بکر السیوطی متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۳۲)	تنزیہ الشریعۃ المرفوعۃ	علامہ ابو الحسن علی بن محمد الکنانی متوفی ۹۶۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۳۳)	تاریخ بغداد	حافظ ابو بکر احمد بن علی الخطیب البغدادی متوفی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۳۴)	کتاب الکبائر	امام شمس الدین محمد بن احمد بن عثمان الذہبی متوفی ۷۴۸ھ	اشاعت اسلام کتب خانہ
(۳۵)	سیر اعلام النبلاء	امام شمس الدین محمد بن احمد بن عثمان الذہبی متوفی ۷۴۸ھ	دار الفکر بیروت
(۳۶)	ذم الہوی	امام عبد الرحمن بن علی جوزی متوفی ۵۹۷ھ	مکتبۃ الکتاب والسنۃ پشاور
(۳۷)	بستان الواعظین	امام عبد الرحمن بن علی جوزی متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۳۸)	عیون الحکایات	امام عبد الرحمن بن علی جوزی متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۳۹)	بہار شریعت	صدر الشریعہ مفتی امجد علی اعظمی متوفی ۱۳۶۷ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
(۴۰)	ارمغان مدینہ	امیر اہل سنت مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा 245 कुतुबो रसाइल मअ़ अ़न्क़रीब आने वाली 16 कुतुबो रसाइल शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

उर्दू कुतुब

(1) राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (رَادُّ الْقَحطِ وَالْوَبَاء بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاء)

(2) करन्सी नोट के मसाइल (كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم فِيْ اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِم)

(3) दुआ़ के फ़ज़ाइल (اَحْسَنُ الْوِعَاء لِآدَابِ الدُّعَاء مَعَهٗ ذَيْلُ الْمُدَّعَاء لِاَحْسَنِ الْوِعَاء)

(4) ई़दैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الْجِيْدفِيْ تَحْلِيْلِ مُعَانَقَةِ الْعِيْد)

(5) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (اَلْحُقُوق لِطَرْحِ الْعُقُوْق)

(6) अल मल्फ़ूज़ अल मा'रूफ़ बिह मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (मुकम्मल चार ह़िस्से)

(7) शरीअ़त व त़रीक़त (مَقَالُ الْعُرَفَاء بِاِعْزَازِ شَرْعٍ وَّعُلَمَاء)

(8) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़)

(9) मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ व नजात व इस्लाह़)

(10) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (اِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِي)

(11) हुक़ूक़ुल इबाद कैसे मुआ़फ़ हों (اَعْجَبُ الْاِمْدَاد)

(12) सुबूते हिलाल के त़रीक़े (طُرُقُ اِثْبَاتِ هِلَال)

(13) औलाद के हुक़ूक़ (مَشْعَلَةُ الْاِرْشَاد)

(14) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान)

(15) अल वज़ी-फ़तुल करीमा

(16) कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान

(17) ह़दाइक़े बख़्शिश

अ़-रबी कुतुब

18، 19، 20، 21، 22......جَدُّ الْمُمْتَار عَلٰی رَدِّ الْمُحْتَار (المجلد الاول والثانی والثالث والرابع والخامس) (کل صفحات 570، 672، 713، 650، 483)

23......اَلتَّعْلِيْقُ الرَّضْوِی عَلٰی صَحِيْحِ الْبُخَارِی (کل صفحات:458)

24......كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم (کل صفحات:74) 25......اَلْاِجَازَاتُ الْمَتِيْنَة (کل صفحات:62)

26......اَلزَّمْزَمَةُ الْقَمَرِيَّة (کل صفحات:93) 27......اَلْفَضْلُ الْمَوْهَبِی (کل صفحات:46)

28......تَمْهِيْدُ الْاِيْمَان (کل صفحات:77) 29......اَجْلَى الْاِعْلَام (کل صفحات:70)

30......اِقَامَةُ الْقِيَامَة (کل صفحات:60)

www.dawateislami.net

शो'बए तराजिमे कुतुब

(1) अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) पहली जिल्द
(2) नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल (اَلْاَمْرُ بِالْمَعْرُوْف وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَر)
(3) म-दनी आक़ा के रोशन फ़ैसले (اَلْبَاهِر فِيْ حُكْمِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم بِالْبَاطِنِ وَالظَّاهِر)
(4) सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा ? (تَمْهِيْدُ الْفَرْش فِي الْخِصَالِ الْمُوْجِبَةِ لِظِلِّ الْعَرْش)
(5) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (قُرَّةُ الْعُيُوْن وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن)
(6) नसीह़तों के म-दनी फूल ब वसीलए अह़ादीसे रसूल (اَلْمَوَاعِظ فِي الْاَحَادِيْثِ الْقُدْسِيَّة)
(7) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (اَلْمَتْجَرُ الرَّابِح فِيْ ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِح)
(8) इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की वसिय्यतें (وَصَايَا اِمَام اَعْظَم عَلَيْهِ الرَّحْمَة)
(9) जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द अव्वल) (اَلزَّوَاجِر عَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر)
(10) जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द दुवुम) (اَلزَّوَاجِر عَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر)
(11) फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया (كَشْفُ النُّوْر عَنْ اَصْحَابِ الْقُبُوْر)
(12) दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी (اَلزُّهْد وَقَصْرُ الْاَمَل)
(13) राहे इ़ल्म (تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّم طَرِيْقَ التَّعَلُّم)
(14) उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम, ह़िस्सए अव्वल)
(15) उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम, ह़िस्सए दुवुम)
(16) एह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा (لُبَابُ الْاِحْيَاء)
(17) ह़िकायतें और नसीह़तें (اَلرَّوْضُ الْفَائِق)
(18) अच्छे बुरे अ़मल (رِسَالَةُ الْمُذَاكَرَة)
(19) शुक्र के फ़ज़ाइल (اَلشُّكْرُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ)
(20) हुस्ने अख़्लाक़ (مَكَارِمُ الْاَخْلَاق)
(21) आंसूओं का दरिया (بَحْرُ الدُّمُوْع)
(22) आदाबे दीन (اَلْاَدَبُ فِي الدِّيْن)
(23) शाहराहे औलिया (مِنْهَاجُ الْعَارِفِيْن)
(24) बेटे को नसीह़त (اَيُّهَا الْوَلَد)
(25) اَلدَّعْوَة اِلَى الْفِكْر
(26) इस्लाहे़ आ'माल (اَلْحَدِيْقَةُ النَّدِيَّة شَرْحُ طَرِيْقَةِ الْمُحَمَّدِيَّة)
(27) आ़शिक़ाने ह़दीस की ह़िकायात (اَلرِّحْلَة فِيْ طَلَبِ الْحَدِيْث)
(28) एह़याउल उ़लूम मुतर्जम (जिल्द अव्वल) (احياء علوم الدين)
(29) क़ूतुल क़ुलूब मुतर्जम (जिल्द अव्वल)

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ा–लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़्ह़ा	उ़न्वान	सफ़्ह़ा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हि़फ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि ''**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ'' अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''**म-दनी इन्आ़मात**'' पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''**म-दनी क़ाफ़िलों**'' में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बगी़चे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net